Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन्दगी

गुरुदत्त

3

blic Domain. Gu

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
167910
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

8 दिसम्बर, 1894 को लाहौर (अब पाकिस्तान) में जन्मे श्री गुरुदत्त हिन्दी साहित्य के एक देदीप्यमान नक्षत्र थे। वह उपन्यास-जगत् के बेताज बादशाह थे। अपनी अनूठी साधना के बल पर उन्होंने लगभग दो सौ से अधिक उपन्यासों की रचना की और भारतीय संस्कृति का सरल एवं बोधगम्य भाषा में विवेचन किया। साहित्य के माध्यम से वेद-ज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने का उनका प्रयास निस्सन्देह सराहनीय रहा है।

श्री गुरुदत्त के साहित्य को पढ़कर भारत की कोटि-कोटि जनता ने सम्मान का जीवन जीना सीखा है।

उनके सभी उपन्यासों के कथानक अत्यन्त रोचक, भाषा अत्यन्त सरल और उद्देश्य केवल मनोरंजन ही नहीं, अपितु जन-शिक्षा भी है। राष्ट्रसंघ के साहित्य-संस्कृति संगठन 'यूनेस्को' के अनुसार श्री गुरुदत्त हिन्दी भाषा के सर्वाधिक पढ़े जाने वाले लेखक थे।

प्रस्तुत है, उनके महत्त्वपूर्ण उपन्यास 'ज़िन्दगी' का शुद्ध एवं प्रामाणिक संस्करण, जिसे अधिकारी सम्पादकों के कुशल निर्देशन में तैयार किया गया है।

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परम्परा बुक्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़िन्दगी

गुरुदत्त

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

Central Library
167910
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

081
167910

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
089.9143
GUP-I

ISBN
978-81-904864-8-4

प्रकाशक
परम्परा बुक्स प्राइवेट लिमिटेड
412 कोणार्क अपार्टमेण्ट,
22 पटपड़गंज रोड, आई. पी. एक्सटेंशन,
दिल्ली-110092

सर्वाधिकार
ईशान दत्त, दिल्ली

Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Religious
All Yog & Organic Products

प्रथम संस्करण
जुलाई, 2007

कलापक्ष
परम्परा स्टूडियो, दिल्ली

मूल्य
एक सौ रुपये

मुद्रक
गोपसन्स पेपर्स लिमिटेड
ए-14, सेक्टर-60,
नोएडा (उ. प्र.) 201301

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

:1:

गोपीचन्द जब धनवान् हुआ, तो गोपीशाह कहलाने लगा।

विवाह के समय गोपी आढ़त की एक दुकान पर मुनीमी करता था। उसे दस रुपये महीना वेतन मिलता था और दुकान पर प्रातः आठ बजे से रात के आठ बजे तक काम करना पड़ता था। मध्याह्न के भोजन के लिए उसकी मां कभी दो परांठे मूली वाले और कभी चने की दाल वाले बनाकर एक पोटली में बांधकर उसे दे देती थी। मध्याह्न एक बजे अपनी दुकान के मालिक से एक अधेला लेकर वह पड़ोस के हलवाई से दही ख़रीदकर उसमें नमक-मिर्च डालकर परांठे खा लिया करता था।

मध्याह्न के उपरान्त रात को ही भोजन होता था। मां दुकान से पुत्र के लौट आने पर साग और रोटियां बना देती थी। मां-बेटे दोनों खाना खाकर और ठण्डा पानी पीकर सो जाया करते थे।

इस अवस्था में भी, महल्ले के ही एक व्यक्ति महेशचन्द्र ने अपनी लड़की धनवती का उद्धार करने के लिए गोपीचन्द की मां से कहा, "बहिन फूलां! लड़के का विवाह कब करोगी?"

गोपीचन्द की मां फूलांरानी जानती थी कि लड़की धनवती की मां जीवित नहीं है। इसी कारण उसने महेशचन्द्र को उत्तर देने के स्थान पर उससे ही पूछ लिया, "भैया! धनवती सयानी हो गयी है। उसके विवाह की बात पर विचार करो। लड़के अविवाहित भी रहें, तो काम चल जाता है।"

"कैसे चल जाता है?" महेश का प्रश्न था।

"गोपी बता रहा था कि शाहआलमी दरवाज़े के बाहर एक ढाबा है। वहां दो पैसे में बड़ी-सी एक रोटी और मुफ़्त में दाल मिल जाती है। वह कहता था कि एक आने में पेट ठसाठस भर जाता है। जब मैं नहीं रहूंगी, तो उसकी रोटी-पानी का प्रबन्ध वहां से हो जाया करेगा। परन्तु भैया! लड़की की बात दूसरी है।"

'बात दूसरी है' का अर्थ महेशचन्द्र समझता था। इसलिए बात समाप्त करने के लिए बोला, "उसी की बात तो कह रहा हूं। यदि तुम मानो, तो कल शिवालय में बैठकर शकुन दे दूं।"

"तो यह बात है? परन्तु भैया! देख लो, यहां गोपी के पिता तो हैं नहीं, और घर में जो कुछ पूंजी थी, सब धीरे-धीरे समाप्त हो चुकी है। गोपी के लाला को मैंने कहा था कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दो प्राणियों का निर्वाह दस रुपये में नहीं होगा। इस पर उसने कह दिया कि गोपी को कहो कि किसी अन्य स्थान पर काम ढूंढ़ ले। हमारी दुकान पर तो इससे अधिक की गुंजाइश नहीं है। किसी दूसरी जगह तो यह भी नहीं मिलेगा।"

महेश ने कह दिया, "बहिन! सब अपना-अपना भाग्य लेते हैं। मैं कमेटी-घर में चपरासी का काम करता हूं और बारह रुपये महीना वेतन मिलता है। निर्वाह हो ही जाता है। घर में पिता का छोड़ा हुआ कुछ है। उससे सर्दी-गरमी निकल जाती है, परन्तु पण्डित रामजीलाल कहते थे कि भाग्य का सूर्य जब उदय होगा, तो फिर कोई बादल उसे ढांप नहीं सकेगा।''

बात फूलांरानी की समझ में आ गयी। वह बोली, "भैया! तनिक भीतर आओ और हमारे घर की अवस्था देख लो। यदि लड़की के रहने योग्य समझो, तो उसे भेज दो। मैं भी समय निकालकर दो-तीन पैसे नित्य का काम कर लेती हूं। वह भी मेरे साथ काम कर लिया करेगी।"

महेश फूलांरानी के घर में गया। घर सर्वथा साफ़-सुथरा, धो-पोंछकर रखा हुआ था, परन्तु कमरे ख़ाली थे। एक कमरे में दो चारपाइयां थीं। उन पर बिछाने के लिए दरियां ही थीं। दो मोटे-मोटे तकिये थे। एक कमरे में कुशा का एक आसन रखा था और उसके सामने एक चौकी पर माला पड़ी थी। तीसरे कमरे में घर का टूटा-फूटा सामान रखा था। एक सन्दूक़ था, जिसमें मां-बेटे के पहनने के कपड़े थे। इस कमरे की दीवार में एक छोटी-सी अलमारी थी। फूलांरानी ने उस अलमारी को खोला, उसमें में एक सन्दूक़ची निकाली और उसे खोलकर महेश को दिखा दिया। एक पतली-सी सोने की ज़ंजीर थी, सोने की दो पतली-पतली चूड़ियां थीं और चांदी की दो पाज़ेब थीं।

फूलांरानी ने कहा, "भैया! बस, यह पूंजी है। अब चाहो, तो कल शकुन ले आ आना। कल त्रयोदशी है और लोग कहते हैं कि यह शुभ दिन होता है।"

महेशचन्द्र मकान के बाहर आया और दरवाज़े में खड़ी फूलांरानी को कहने लगा, "मैं समझता हूं कि तुम्हारे घर में स्थान तो है और अच्छा साफ़-सुथरा है। रहने वाली बाक़ी अपने-आप समझ लेगी।"

परिणामस्वरूप गोपीचन्द का विवाह हो गया।

गोपीचन्द समझ नहीं सका कि धनवती के पिता ने क्या देखा, जो लड़की को उसके हवाले कर दिया। इस पर भी वह प्रसन्न था।

विवाह के बाद गोपी बहू को लेकर अपने घर में आया, तो मां ने लोटे में जल ले बहू के सिर पर वार कर पी लिया और कहा, "बेटी! सौभाग्यवान् होओ, फूलो-फलो। भगवान् सब का मालिक है।"

गोपीचन्द मुसकरा रहा था। वह कमरा, जिसमें टूटा-फूटा सामान और एक सन्दूक़ पड़ा था, गोपी और उसकी पत्नी को सोने के लिए मिल गया।

गोपी ने अपने लाला से विवाह के लिए कुछ ऋण मांगा था। लाला गोपी के विवाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की बात सुनकर हंस पड़ा था। गोपी समझा कि लाला को उसके विवाह का विश्वास नहीं आया। उसने पूछा, "लालाजी ! हंसे क्यों हैं ?"

"तेरा श्वसुर कौन है ?" लालाजी ने मुसकराकर पूछा।

"हमारे महल्ले में ही रहते हैं। उनकी लड़की अच्छी और सुन्दर है। मैंने देखी है।"

"तो पसन्द है ?"

"लालाजी ! वह लड़की है। कौन मूर्ख है, जो किसी लड़की को पसन्द न करेगा ?"

"और तुम अपने को बुद्धिमान् मानते हो ?"

गोपीचन्द इस समय उन्नीस वर्ष का कुमार था। वह कुछ विचार कर बोला, "जी ! मेरी बुद्धि में यह आता है कि ठीक ही हो रहा है।"

"तब ठीक है। देखो, मैं तुम्हें ऋण में एक पैसा भी नहीं दूंगा। हां, मैं तुम्हारे विवाह पर सहायता के रूप में एक सौ रुपये दे सकूंगा।"

"सच ?" गोपीचन्द के मुख से निकल गया।

"हां !"

"तो लालाजी ! दे दीजिये। मेरा विवाह अगली पूर्णिमा को शिवालय में होने वाला है।"

"ठीक है। आज सायंकाल घर जाते समय रुपये लेते जाना।"

विवाह पर गोपी की मां ने बहू और लड़के के वस्त्रों पर पच्चीस रुपये व्यय कर दिये। घर की चूड़ियां, चेन तथा पाज़ेब सुनार से धुलवाकर बहू को पहनने के लिए दे दीं। पांच रुपये की मिठाई ली और शिव-मन्दिर में विवाह पर आने वालों में बांट दी।

पांच रुपये पण्डितजी को दक्षिणा देनी पड़ी। सब दे-दिलाकर फूलांरानी को मिले एक सौ रुपयों में से इक्यावन रुपये बचे थे।

रात जब पति-पत्नी अपने सोने के कमरे में जाने लगे, तो मां ने लड़की की झोली में इक्यावन रुपये डालकर कहा, "भगवान् इसमें बरकत करेगा।"

रात तो लड़का-लड़की आनन्द से सोये, परन्तु दिन निकलते ही पत्नी ने पूछ लिया, "सुना है, आपको दस रुपये वेतन मिलता है ?"

"हां !"

"इससे निर्वाह कैसे होता होगा ?"

"यह मां से पूछना। मैंने शिव-मन्दिर में बंटने वाली मिठाई कई वर्ष के बाद खायी है।"

लड़की विचार करती रही। उसे एक बात स्मरण थी कि उसके पिता के पास कभी रुपये बच जाते, तो वह उन्हें ब्याज पर चढ़ा देता था और उस पर एक पैसा प्रतिदिन के हिसाब से ब्याज मिल जाता था।

इस बात को स्मरण कर धनवती ने पति से कहा, "आपकी मां ने मेरी झोली में इक्यावन रुपये डाले हैं। मेरी राय है कि इन्हें किसी को उधार दे दें, तो इन पर ब्याज मिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जायेगा।"

"कौन उधार लेगा?"

"जिसे रुपयों की आवश्यकता होगी।"

गोपीचन्द ने दुकान पर हुण्डी-पर्चा होते देखा था। लाला भी कभी फ़सल के दिनों में हुण्डी पर बाज़ार से ऋण लेता था और फिर उस पर ब्याज देता था।

परन्तु उसने पूछा, "इन पचास रुपयों का क्या मिलेगा?"

"आप मुझ पर छोड़िये। मैं पिताजी से बात कर इसका प्रबन्ध करूंगी।"

और यह काम हो गया। महेश ने अपने एक साथी चपरासी को पचास रुपये ऋण में दिलवा दिये और उसकी बहू के पांच तोले सोने के कड़े गिरवी रखवा दिये। पांच रुपये ब्याज के पहले ही निकालकर लड़की को सोने के कड़ों के साथ दे दिये।

गोपीचन्द का यह पहला व्यापार था और उसने देखा कि बहुत अच्छा काम है। उसने सोने के कड़े और पांच रुपये अलमारी में पड़े आभूषणों के साथ रख दिये।

फिर एक दिन धनवती का पिता महेश अपनी लड़की से मिलने आया और चांदी की एक हसली लड़की के पास गिरवी रखने लगा।

धनवती ने पूछा, "पिताजी! यह किसकी है?"

"ब्रजलाल की है। वह बीवी की हसली चुराकर लाया था और पांच रुपये मांग रहा था। मेरे पास नहीं थे। तुम्हारे पास तो हैं। तुम्हें पचास रुपये का ब्याज दिलवाया था। वह तुम इसे दे दो।"

धनवती भीतर गयी और अलमारी में से पांच रुपये निकाल लायी। महेश ने ब्रजलाल को दो पैसे महीना प्रति रुपये के ब्याज पर एक महीने के ब्याज के दस पैसे निकालकर दे दिये और हसली के साथ एक कागज़ पर ब्रजलाल का नाम लिखकर लड़की से कहा, "इस कागज़ को इसके साथ बांधकर रख छोड़ो। जब ब्रजलाल रुपये देने आयेगा, तो रुपये लेकर हसली उसे वापस कर देना।"

ब्रजलाल तो हसली लेने नहीं आया, परन्तु गोपी एक अन्य समाचार लाया। उसने बताया, "मेरे लाला ने मेरे नाम पर चीनी के एक सौ बोरे ख़रीदे हैं। उनका विचार है कि इससे लाभ होगा।"

"यदि लाभ न हुआ, तो?" धनवती ने पूछ लिया।

"तो..तो..." गोपीचन्द उत्तर नहीं दे सका।

"मैं परमात्मा से प्रार्थना करूंगी कि लाभ हो।" धनवती ने कहा।

"और वह तुम्हारी बात मान लेगा! नहीं मानेगा, तो क्या करोगी?"

"कुछ नहीं।"

"हां। मैंने एक बार लालाजी से दो रुपये मांगे थे। लाला ने पूछा, "यदि न दूं, तो क्या करोगे?"

"मैंने कहा, कुछ नहीं। मैं क्या कर सकता हूं? इस पर लालाली ने कहा, "तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जाओ, रुपये नहीं मिलेंगे।"

धनवती ने कहा, "पर मैंने सुना है कि इसी लाला ने आपके विवाह के लिए आपको एक सौ रुपये दिये थे ?"

"हां, मैंने एक दिन पूछा था कि उस दिन आप दो रुपये उधार नहीं दे रहे थे और विवाह पर फोकट में एक सौ रुपये दे दिये हैं।"

"इस पर लालाजी ने कहा था कि तुमने ऋण मांगा था। ऋण तुम लौटा नहीं सकते, मैं जानता हूं, इसलिए नहीं दिये थे, परन्तु विवाह पर सौ रुपये परमात्मा के नाम पर दिये हैं। वह लौटा देगा। वह बहुत धनी है। उसे मघवन कहते हैं। उसे दिया हुआ सब वापस मिल जाता है।"

"तो परमात्मा से मांग लेना चाहिए ?" धनवती ने पूछ लिया।

"हां, कहते हैं, वह देता है। यदि नहीं देगा, तो जो कुछ है, वह तो हमारे पास ही रहेगा। इस कारण मांगने में हानि नहीं।"

और धनवती के विवाह के छह महीने उपरान्त परमात्मा ने दिया। गोपीचन्द ने मां और पत्नी को बताया, "लालाजी ने एक सौ बोरी चीनी मेरे नाम पर ख़रीदी थी। अब चीनी का दाम बढ़ गया है। प्रति बोरी पांच रुपये लाभ हुआ है और लाभ के पांच सौ रुपये लालाजी ने मुझे दिये हैं।"

धनवती और गोपी की मां आश्चर्य में गोपी का मुंह देखती रह गयीं। फिर मां ने पूछा, "तो तुमने लालाजी से कुछ कहा ?"

"कुछ नहीं। केवल उनके चरण स्पर्श कर पायलागूं कह दी है और वह बहुत प्रसन्न हैं। कह रहे था कि इनसे पत्नी के लिए कर्णफूल और चूड़ियां ला दूं।"

"ठीक है।" मां ने कहा।

इस पर पत्नी ने कहा, "पांच सौ की चूड़ियां नहीं आयेंगी। वह तो, सौ-सवा सौ में चार बन जायेंगी और शेष का क्या करेंगे ?"

इस पर मां और पुत्र धनवती का मुंह देखने लगे। धनवती ने कहा, "शेष मुझे दे दीजिये। मैं उनको ब्याज पर चढ़ाऊंगी।"

अगले दिन गोपीचन्द पत्नी के लिए चार चूड़ियां एक सौ बीस रुपये की ले आया और शेष पौने चार सौ रुपये उसने पत्नी को दे दिये। पांच रुपये की वह मिठाई लाया, जो महल्ले में तथा सम्बन्धियों में बांटी गयी।

बस, गोपीचन्द के धनवान् होने का मार्ग खुल गया।

इसके पचास वर्ष उपरान्त की यह कथा है।

गोपीचन्द अब गोपीशाह कहलाता था। नगर में उसके दस मकान थे, जिनका भाड़ा साढ़े तीन सौ रुपये महीना आता था। वह रुपया ब्याज पर देने का कारोबार करता था। उसकी तिजोरी में कितना रुपया था और कितने के आभूषण उसके पास गिरवी रखे हुए थे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
किसी को पता नहीं था। यह जानकारी केवल गोपीशाह को और उसके छोटे लड़के कृष्ण को ही थी।

गोपीशाह ने अपनी पहली लड़की परमेश्वरी का विवाह रेलवे के स्टेशनमास्टर से किया था। वह घर पर सम्पन्न और सुखी थी। उसके भी दो बच्चे थे। वह नगर के बाहर एक खुले मकान में रहती थी। गोपीशाह की दूसरी लड़की राधा नगर के एक धनी के पुत्र से विवाही गयी थी और वह भी अपने घर में सुखी थी।

गोपीशाह के चार पुत्र थे—उत्तमचन्द, ज्ञानचन्द, रामचन्द्र और कृष्णचन्द्र। तीन बड़े पुत्रों के विवाह हो चुके थे और सबसे छोटा कृष्णचन्द्र अब इक्कीस वर्ष से ऊपर हो चुका था।

कृष्णचन्द्र एम० ए० में पढ़ता था और अपने पिता के साहूकारे के काम में हाथ बंटाता था। इस पर भी वह साधु स्वभाव का हो गया था। एक बार वह एक स्वामी रामकृष्ण के सम्पर्क में आया, तो विचार बना बैठा कि विवाह नहीं करेगा।

कृष्णचन्द्र के एक सहपाठी मित्र के बड़े भाई थे सुन्दरदास। उनके घर पर ही स्वामी रामकृष्ण से कृष्णचन्द्र की भेंट हुई थी।

कृष्णचन्द्र अपने मित्र से मिलने उसके घर निस्बत रोड पर गया हुआ था। उस दिन स्वामीजी वहां आये हुए थे और उनके कई भक्त उनके दर्शनों के लिए वहां आ रहे थे।

कृष्णचन्द्र भी उनके दर्शन करने उनके कमरे में जा पहुंचा, जहां वह ठहरे हुए थे।

सुन्दरदास ने स्वामीजी को कृष्णचन्द्र का परिचय दिया —"यह हैं गोपीशाह के पुत्र कृष्णचन्द्र। इस समय एम० ए० की परीक्षा देकर परिणाम की प्रतीक्षा में हैं।"

स्वामीजी ने पूछ लिया, "पर्चे कैसे किये हैं?"

"जी, अपने विचार से बहुत अच्छे किये हैं। प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने की आशा कर रहा हूं।"

"और तब क्या करोगे?" स्वामीजी का प्रश्न था।

"जो कुछ मुझे करना है, वह तो अब भी कर रहा हूं। पिताजी के कारोबार में सहायता करता हूं।"

"वह क्या कारोबार करते हैं?"

उनके काम के कई रूप हैं। एक काम है साहूकारे का। वह रुपया ब्याज पर चढ़ाते हैं। कम्पनियों के हिस्से ख़रीदते तथा बेचते हैं। हुण्डी-पर्चे पर ऋण देते हैं और लोगों की वस्तुएं गिरवी रखकर उस पर भी ऋण देते हैं।

"पर इस प्रकार की आय हराम की होती है।" स्वामीजी के मुख से निकल गया।

"हराम की का क्या मतलब है?"

"जो उचित न हो, जो बिना परिश्रम के प्राप्त हो।"

"स्वामीजी! क्या परिश्रम के बिना आय हराम की होती है।"

"हां, धन परिश्रम का रूप है। जो बिना परिश्रम के प्राप्त हो, वह पाप है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तब तो मेरे बड़े भाई उत्तमचन्द बहुत धर्मात्मा हैं।" कृष्णचन्द्र ने मुसकराकर कहा, "वह रेलवे के दफ़्तर में एक क्लर्क हैं। घर से नौ बजे जाते हैं और सायंकाल आठ बजे वहां से लौटते हैं। जब आते हैं, तो बहुत थके होते हैं। रोटी खाते-खाते ऊंघने लगते हैं।"

"क्या वेतन मिलता है उनको ?"

"लगभग चालीस रुपये है।"

स्वामीजी ने कुछ विचार किया और कहा, "वेतन तो कम है, परन्तु फिर भी ईमानदारी की आय है। ईमानदारी स्वर्ग का द्वार है।"

"वह कहां है ?"

"है तो यहीं, पृथ्वी पर, सब स्थानों पर।"

स्वामीजी से कुछ अधिक बात नहीं हुई, परन्तु कृष्णचन्द्र के मस्तिष्क में हलचल मच गयी। वह इस बीजरूप बात पर विचार करता रहा। यह बीज अंकुर बना और फिर अंकुर से पौधा बन गया।

जब परीक्षा-फल निकला, तो कृष्णचन्द्र इतिहास के विषय में प्रान्त-भर में प्रथम रहा। प्रान्त में उन दिनों एक ही विश्वविद्यालय था और एम॰ ए॰ तक पढ़ाई कराने वाले दो ही कॉलेज थे। इस वर्ष पांच लड़के परीक्षा में बैठे थे और चार उत्तीर्ण हुए विद्यार्थियों में कृष्णचन्द्र प्रथम रहा था।

कृष्णचन्द्र के प्रोफ़ेसर ने उसे राय दी कि वह ट्रेनिंग कॉलेज में भर्ती हो जाये। ट्रेनिंग के बाद उसे किसी अच्छे स्कूल में सेवा-कार्य मिल जायेगा। उन दिनों प्रान्त में चालीस के लगभग हाई स्कूल थे। पंजाब के प्रत्येक ज़िले में एक-एक सरकारी स्कूल तो था ही, साथ ही कुछ प्राइवेट स्कूल और इस्लामिया स्कूल भी थे। लाहौर में चार स्कूल थे।

इस कारण प्रोफ़ेसर साहब की राय कृष्णचन्द्र को पसन्द आ गयी। वह सेवा-कार्य करने के लिए अपने मन को तैयार करने लगा।

परीक्षा-फल के जानने में रुचि कृष्णचन्द्र के सबसे बड़े भाई उत्तमचन्द की थी। वह स्वयं दसवीं श्रेणी की परीक्षा उत्तीर्ण कर रेलवे के दफ़्तर में नौकरी पा गया था।

अतः परीक्षा-फल घोषित होने के दिन उत्तमचन्द ने कृष्णचन्द्र से पूछ लिया, "सुना है, तुम पास हो गये हो ?"

"जी ! किससे सुना है ?"

"मां से।"

"हां, मैंने पिताजी से कहा था कि आज सब का मुंह मीठा करायें; क्योंकि मैं एम॰ ए॰ की परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया हूं। इस पर पिता ने मुझे चार आने दिये और कहा जाओ 'लाला भइया' की दुकान से गुड़ के सेम ले आओ। मैं लाया था और सबको बांटने के लिए मैंने मां को दिये थे।"

"हां, मां ने ही रोटी खाते हुए दिये हैं और बताया है कि तुम एम॰ ए॰ में पास हो गये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हो।"

उत्तमचन्द इस समय बात करता हुआ नींद अनुभव कर रहा था। इसलिए वह अपने कमरे में जाकर सो गया।

गोपीशाह की एक बड़ी-सी हवेली थी। उसमें दस कमरे थे। रसोईघर, खाना खाने का कमरा और बैठक सब पृथक्-पृथक् थे। चारों भाइयों को सोने के कमरे मिले हुए थे। मकाने के नीचे एक तहख़ाना था। उसमें घर की सम्पत्ति रहती थी। तहख़ाने की चाबी पिता अथवा कृष्णचन्द्र के पास ही रहती थी। कभी मां धनवती को अपने तथा बहुओं के आभूषण रखने अथवा निकालने होते थे, तो कृष्णचन्द्र को कहती और वह तहख़ाने का दरवाज़ा खोलकर मां को वहां ले जाता था और फिर काम हो जाने पर मां को बाहर कर तहख़ाने को ताला लगा दिया करता था।

आज, भोजन के उपरान्त कृष्ण पिता के सोने के कमरे में आया, तो उत्तमचन्द के अतिरिक्त दोनों भाई, ज्ञानचन्द और रामचन्द्र तथा उनकी पत्नियां और मां वहां पहले से ही बैठी हुई थीं। कृष्णचन्द्र की छोटी बहिन राधा भी मां के घर आयी हुई थी। वह भी वहां बैठी थी।

सबको बैठा देख कृष्णचन्द्र विचार कर रहा था कि उसकी पढ़ाई समाप्त होने पर खाये सेम की चर्चा करने सब वहां बैठे हैं। इस विषय में वह कुछ कहना चाहता था। अतः उसने वहां कमरे में बैठते ही कहा, "पिताजी! सेम बहुत मीठे थे, परन्तु आजकल लोग मोतीचूर के लड्डू तथा गुलभिस्त खाने की इच्छा करते हैं।"

गोपीशाह ने कहा, "लोग तो बहुत कुछ इच्छा करने लगे हैं और देखो, राधा भी एक इच्छा करती हुई आयी है।"

"राधा बहिन! क्या इच्छा कर रही हो?"

"भैया! तुम्हारे पास होने की खुशी में तो सेम ही से प्रसन्न हूं, परन्तु तुम्हारे विवाह पर तो बालूशाही खाऊंगी।"

"विवाह के पहले अथवा पीछे?" कृष्ण ने पूछ लिया।

"विवाह के पहले।"

"दादा उत्तमचन्द के विवाह पर क्या खाया था?" कृष्ण ने पूछ लिया।

राधा ने कहा, "विवाह के समय मैं दूसरी श्रेणी में पढ़ती थी। दादा दसवीं श्रेणी थर्ड डिवीज़न में पास कर सके थे। उस समय मैं छह वर्ष की थी। मुझे अब याद नहीं, क्या खाया था। इतना याद है कि दादा की बरात के आगे-आगे आतिशबाज़ी ख़ूब चली थी।"

"पर बहिन! मैं अभी विवाह नहीं करूंगा?"

पिता ने पूछ लिया, "क्यों?"

"मैं पहले कुछ काम-धन्धा कर लूं, तब विवाह की सोचूंगा।"

"वह तो तुम कर ही रहे हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या करता हूं?"

"साहूकारे के काम में मेरी सहायता करते हो।"

"यह भी कोई काम है?"

"कितने घण्टे नित्य काम करना पड़ता है?"

अब कृष्ण मन में विचार करने लगा। कॉलेज की पढ़ाई के दिनों में भी वह तीन घण्टे नित्य काम करता था और अब परीक्षा के उपरान्त उसे बैंक तथा अन्य कहीं पर भी जाना पड़ता था, तो लगभग चार-पांच घण्टे लग ही जाते थे। कृष्ण ने बताया, "पिताजी! यह तो एक क्लर्क तथा चपरासी का काम है। मैं प्रोफ़ेसर अथवा मास्टर बनूंगा।"

"उसमें कितने घण्टे नित्य काम करना पड़ेगा?"

"यदि मास्टर बना, तो पांच घण्टे नित्य और कहीं प्रोफ़ेसर बन गया, तो तीन घण्टे नित्य।"

"और वेतन क्या मिलेगा?" पिता का प्रश्न था।

"मास्टर बना, तो साठ रुपये महीना और प्रोफ़ेसर बना, तो सवा सौ रुपये महीना।"

"और यहां जानते हो, तुम्हारा कितना वेतन है?"

"कितना है?"

"पांच सौ रुपये महीना।"

कृष्णचन्द्र ने कोट की जेब उलटकर दिखा दी और कहा, "इसमें तो एक फूटा पैसा भी नहीं?"

"क्या जेब में रखने पर ही वेतन का पता चलता है।"

"पिताजी! और किस प्रकार पता चलता है?"

"तिजोरी में जमा होने पर। कभी बड़े भाई उत्तम से पूछा है कि उसकी तिजोरी में क्या जमा है?"

"पता नहीं! मैंने पूछा है। कुछ दिन हुए वह वेतन लाया था। उसकी जेब से रूमाल निकालते समय नोट भूमि पर गिर पड़े थे। दस-दस रुपये के तीन नोट थे और कुछ रुपये तथा कुछ रेजगारी भी थी। उसने बताया था कि वेतन के उनतालीस रुपये दस आने हैं। मैंने पूछा, रोटी-कपड़ा तो मां देती है। बच्चों का ख़र्च भी मां देती है। कितना जमा कर लिया है? उत्तम उत्तर नहीं दे सका। उसकी पत्नी यहां बैठी है। इससे पूछो, इसकी तिजोरी में क्या है?"

सब प्राणी उत्तमचन्द की पत्नी की ओर देखने लगे। उसने मुख नीचे किये हुए कहा, "पिताजी, हम तो आपके आश्रय ही हैं। पिछले वर्ष सिद्धेश्वर का विवाह किया था, तो सब कुछ आपने ही व्यय किया था। हमारे पास तो दस-बीस रुपये से अधिक कभी होते ही नहीं। सिद्धेश्वर के पिता कहते थे कि बीस वर्ष बाद जब वह रिटायर होंगे, तो उनको ग्रेचुइटी के दो हज़ार रुपये मिलेंगे।"

गोपीशाह हंसने लगा। हंसकर बोला, "मैं कृष्ण का वेतन पांच सौ रुपये महीना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
निकालता हूं। वह मैं बही पर लिखता हूं। उसमें से इसकी रोटी तथा कपड़े का ख़र्च पचास रुपये महीना मैं इसकी मां को देता हूं। दस रुपये महीना कृष्ण को जेब-ख़र्च देता हूं और शेष चार सौ चालीस रुपये उसकी तिजोरी में जमा हो रहे हैं।"

इस पर उत्तम की पत्नी माया ने पूछ लिया, "पिताजी! आप अपने बड़े लड़के को महीने में कितना देते हैं?"

"उसे कुछ नहीं देता। वह मेरे कारोबार में कभी रुचि ही नहीं लेता। इसलिए उसे कुछ भी वेतन नहीं मिल सकता। हां, तुम्हारा और उत्तम की मां का तथा ज्ञान और राम की पत्नियों का वेतन मैं बही पर लिखता रहता हूं। तुम्हारी मां का एक सौ रुपये महीना और बहुओं का अस्सी-अस्सी रुपये महीना। जानती हो, तुम्हें किस बात का वेतन देता हूं? तुम औरतें घर का काम-धन्धा करती हो। तुम सबके वेतन में से पचास-पचास रुपये महीना उत्तम की मां को घर का ख़र्च चलाने के लिए देता हूं। वह भी बही में तुम्हारे नाम लिख रहा हूं।

"मेरे मरने पर जो कुछ निकलेगा, उसमें से जो-जो जिसका बही में लिखा होगा; वह उसको मिलेंगा। मेरी शेष सम्पत्ति का मैंने इच्छा-पत्र लिख रखा है। दान-दक्षिणा देकर शेष सब में बराबर-बराबर बांट दिया जायेगा।

''मैं समझता हूं कि वह कुछ अधिक नहीं होगा। मैं भरपूर दान देना चाहता हूं।"

अब रामचन्द्र की पत्नी सुशीला ने पूछ लिया, "पिताजी! अपने अगले जन्म में वसूल करने के लिए आप कितना दान कर रहे हैं?"

"देखो सुशीला! अगले जन्म के लिए तो मैं नहीं जानता। दान-दक्षिणा, तो मैं इसी जन्म के लिए दे जाना चाहता हूं। यह सब परमात्मा ने दिया है और मैं उसी को लौटाकर जाना चाहता हूं। मैं तो ख़ाली हाथ ही आया था और ख़ाली हाथ ही यहां से जाऊंगा।"

बात समाप्त हो गयी। राधा ने कहा, "पिताजी! मेरी बात का तो कुछ भी उत्तर नहीं मिला।"

"विवाह की बात कह रही हो न? कृष्ण से पृथक् में बात कर लो। कदाचित् यह एम० ए० पढ़ा बुद्धिमान् लड़की को स्वीकार करने से पहले उसे देखना चाहेगा। यदि वह मान गया, तो फिर मेरे पास आना। मैं मान जाऊंगा। अब मैं सोना चाहूंगा।"

:2:

राधा के प्रस्ताव ने कृष्ण के मन में हलचल उत्पन्न कर दी। इस समय वह इक्कीस वर्ष की आयु का युवक था। सरकारी कॉलेज में लड़कों की बातें सुनकर वह अपने को सयाना अनुभव करता था। एक बात थी। उसकी कामनाओं पर स्वामी रामकृष्ण की बातों ने शीतल जल छिड़ककर उन्हें शान्त कर रखा था।

अगले दिन वह जब पिता का लेखा-जोखा लिखकर अवकाश पा सका, तो अपने मित्र सुन्दरदास के घर पर जा पहुंचा। सुन्दरदास वकील था और उस समय ज़िला-कचहरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से आया था और दूध ले रहा था। उसकी पत्नी रामेश्वरी समीप खड़ी पति को दूध लेते देख रही थी। कृष्णचन्द्र वकील साहब की बैठक में दाख़िल हुआ, तो रामेश्वरी ने ही पूछा, "आइये भाई साहब! दूध लेंगे?"

"नहीं! भाभी! मैं घर से खा-पीकर चला हूं। मां खाये-पिये बिना घर से बाहर जाने ही नहीं देती।"

"बहुत अच्छी है तुम्हारी मां! सुन्दरदास ने कह दिया, "मेरी तो मां अब है नहीं। जब थी, तब भी घर से जाने के समय कभी नहीं पूछती थी। हां, जब बाहर से खा-पीकर आता था, तो पूछ लिया करती थी—सुन्दर, भोजन करोगे?

"प्राय: मैं मिठाई-पूरी इत्यादि हलवाई की दुकान से खा-पीकर आया करता था और विचार किया करता था कि मां केवल पूछने के लिए ही पूछती है, खिलाने-पिलाने के लिए नहीं।"

रामेश्वरी और कृष्ण हंस रहे थे। सुन्दरदास मां की वह बात बीसियों बार पहले भी सुना चुका था और वह सदा हंसा करता था। वस्तुस्थिति यह नहीं थी। सुन्दरदास सबकी हंसी उड़ाया करता था, स्वर्ग सिधार गयों की भी और जीवितों की भी। उसके इस स्वभाव को कृष्ण और सुन्दरदास की पत्नी रामेश्वरी जानते थे।

कृष्णचन्द्र ने बैठते ही पूछा, "स्वामीजी आजकल कहां हैं?"

"क्यों? संन्यास लेने का विचार कर लिया है क्या?"

"नहीं भैया! बहिन विवाह के लिए कह रही है। उस दिन स्वामीजी कह रहे थे कि विवाह नरक का द्वार है। मैं इस विषय में उनसे राय करना चाहता हूं।"

"वह तो आज भी यहीं हैं। साथ के कमरे में आराम कर रहे हैं।"

"ओह! तो कब तक उनसे मिल सकूंगा?"

"देखो कृष्ण! यदि विवाह नहीं करना और संन्यास लेना है, तो उनसे मिलो, नहीं तो मेरा विचार है कि विवाह के बाद मिलना। जैसे मां का दिया खा-पीकर तुम यहां आते हो, वैसे ही बीवी से तृप्त होकर उनसे मिलना, तब ही तुम उनकी बातों पर भली-भांति विचार कर सकोगे। नहीं, तो मेरी वाली बात हो जायेगी। घर से भूखे, हलवाई की पूरी-मिठाई से ही पेट भरा करोगे।"

रामेश्वरी इस व्यंग्य का अर्थ समझती थी। वह हंस पड़ी। कृष्ण नहीं समझा कि पति-पत्नी किस बात पर हंस रहे हैं। इस पर भी उसने कहा, "मैं स्वामीजी से मिलना चाहूंगा।"

"ठीक है, मिल लो। तुम जानो, तुम्हारा काम जाने। ओ रुलिया,'' सुन्दरदास ने नौकर को आवाज़ दे दी। वह आया, तो उसने कहा, "देखो स्वामीजी क्या कर रहे हैं?"

रुलिया ने कह दिया, "वह जाने को तैयार हो रहे हैं।"

"तो जाओ कृष्ण! उनको प्रणाम कर अपनी इच्छा कह देना। वह तुम्हें भी साथ ले जायेंगे। तब मार्ग में चलते-चलते अपनी बात कर लेना।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्णचन्द्र लपककर उठा और बग़ल के कमरे से बाहर आ खड़ा हो गया। स्वामीजी जा रहे थे और कृष्णचन्द्र हाथ जोड़, नमस्ते कर उनके साथ ही मकान से निकल गया।

जब कृष्णचन्द्र स्वामीजी के साथ कोठी से निकला, तो सुन्दरदास ने पत्नी से कहा, "बस, यह भी गया। स्वामीजी की बातों में फंसा हुआ यह सीधा ऋषिकेश और रुद्र-प्रयाग जाकर ही सांस लेगा।"

वास्तविक बात रात गोपीशाह के परिवार में हुई। रात के भोजन के उपरान्त शाहजी के परिवार के सदस्य, जो घर पर होते थे, पिता के कमरे में एकत्र हो जाते थे। गोपीशाह अपनी चारपाई पर बैठ जाता था और बच्चे, पुत्र, पतोहू और पोते भूमि पर चटाई बिछाकर बैठ जाते थे।

आज कृष्णचन्द्र स्वामीजी के साथ उनके शिष्य के घर पर ही भोजन करके आया था। स्वामीजी से तीन घण्टे बात करके वह बहिन राधा के प्रस्ताव को अस्वीकार करने के लिए अपने मन को तैयार कर चुका था।

कृष्ण के घर आते ही शाहजी ने पूछा, "अब बताओ, लड़की देख आये हो?"

"नहीं पिताजी! मैं देखने ही नहीं गया। मैं स्वामी रामकृष्णजी से राय करने के उपरान्त ही लड़की देखने के लिए जाना चाहता हूं।"

"तो स्वामीजी से मिल लो। वह आजकल लाहौर में ही हैं?" गोपीशाह ने मुसकराकर कहा।

"आप उनसे मिले हैं क्या?"

"एक दिन सेठ सुदर्शन की बैठक में दर्शन किये थे। वह मेरा नाम और परिचय सुन, मुख मोड़कर सेठजी से बात करने लगे थे।"

कृष्ण पिता का मुंह देखने लगा। गोपीशाह ने अपने मन के भाव बता दिये—"कृष्ण! क्या कभी जहांगीर के मक़बरे पर गये हो?"

"जी! कई बार गया हूं।"

"कभी उसकी मीनार पर चढ़े हो?"

"कई बार चढ़कर आस-पास के दृश्य देखे हैं।"

"मीनार पर से कभी नीचे भूमि पर खड़े किसी आदमी को देखा है?"

"जी, बहुतों को देखा है।"

"मीनार पर से कैसे मालूम होते हैं भूमि पर के लोग?"

"जैसे कीड़े-मकोड़े भूमि पर चल रहे होते हैं।"

"बस, स्वामीजी ने मुझे इस प्रकार ही देखा प्रतीत होता है। जैसे जहांगीर के मक़बरे की एक मीनार पर खड़े भूमि पर रेंग रहे किसी मनुष्य की ओर देखते हैं, वैसे ही उन्होंने मुझे देखकर मुंह मोड़ लिया था।"

कृष्ण पिता के कथन का अभिप्राय नहीं समझा। पिता ने ही बात चलायी। उसने कहा, "मीनार पर चढ़े व्यक्ति को भूमि पर खड़ा व्यक्ति एक कुत्ता-बिल्ली जितना दिखाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
देता है।

"इसी कारण कृष्ण, मैं कहता हूं कि हम गृहस्थी उन्हें कुत्ते-पिल्ले के समान दिखाई देते हैं। यह इसलिए कि वह एक मीनार की चोटी पर बैठे देख रहे हैं, परन्तु मैं कहता हूं कि हम ठोस भूमि पर हैं और हमें हवा का कोई भी झोंका उड़ा नहीं सकता, जबकि स्वामीजी को मीनार से गिरा सकता है और उनकी जीवन-लीला समाप्त हो सकती है।"

अब कृष्ण को समझ में आया कि उसका पिता क्या कह रहा है। आख़िर एम० ए० तक पढ़ा था। उसने कहा, "परन्तु पिताजी! स्वामीजी जिस मीनार पर बैठे हैं, वह उनका अपना बनाया हुआ है। त्याग, तपस्या, ध्यान और चिन्तन से ही वह इस ऊंचाई पर पहुंचे हैं। इसलिए वह वहां से गिरेंगे नहीं।"

"यह कैसे कहते हो? कदाचित् अभी हवा का झोंका नहीं आया। कभी आया, तो पता चलेगा कि उनका मीनार उनकी कितनी रक्षा कर सकता है।"

"वह बता रहे थे कि मृत्यु के बाद कुछ नहीं रहता। जैसे प्याज़ के छिलके उतारते-उतारते, बीच में से कुछ भी नहीं निकलता, इसी प्रकार मनुष्य का यह जीवन है। जो कुछ प्याज़ के बाहर है, वही उसके भीतर भी होता है। वह वायु है और वायु वायु में मिल जाती है।"

धनवती मुसकराकर पिता-पुत्र की बातें सुन रही थी, परन्तु पिता हंस रहा था। उसने पूछ लिया, "तो तुम एक प्याज़ हो?"

"प्याज़ की भांति छिलका-ही-छिलका। बीच में कुछ भी नहीं। एक सर्वव्यापक परमात्मा है, जो बाहर और भीतर विद्यमान है।"

अब तो गोपीशाह खिलखिलाकर हंस पड़ा। हंसकर उसने उत्तम की पत्नी माया से कहा, "क्या घर में प्याज़ है?"

"जी, है!"

"तो एक उठा लाओ।"

माया रसोईघर में गयी और एक प्याज़ उठा लायी। गोपीशाह ने कहा, "इसे हमारे बुद्धिमान् बेटे के सामने रख दो।"

माया ने प्याज़ देवर के सामने रख दिया। गोपीशाह ने प्याज़ की ओर देखकर कहा, "अरे मूर्ख! भूमि पर पड़े क्या कर रहे हो? जाओ न, अपने भाई-बन्धुओं के पास, जो रसोई में रखे हैं?"

सब हंसने लगे। उत्तमचन्द की एक छोटी लड़की का नाम सरस्वती था। वह इस समय सात वर्ष की थी। वह हंस पड़ी। शाहजी ने पूछ लिया, "सरस्वती! हंसी क्यों हो?"

"बाबा! आप प्याज़ से कह रहे हैं न, वह सुन नहीं सकता, उसके कान नहीं हैं।"

"तो जो सुन न सके, उसे कैसे समझाया जाता है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उसके मुख पर चपत लगाकर।" सरस्वती ने हंसते हुए कहा।

"तो बेटी! इसके मुख पर एक चपत लगाकर कहो कि यहां से चला जाये।"

अब कृष्ण ने कहा, "यह नहीं जायेगा।"

"पर कृष्ण! तुम तो कहते हो कि तुम इस प्याज़ की भांति हो। तुम्हें मैं डांट दूं, तो तुम अपने कमरे में जाकर सो जाओगे।"

कृष्ण समझ रहा था कि उसका पिता क्या कह रहा है। बात गोपीशाह ने ही कही, "देखो कृष्ण! यदि मैं इसे जूतों से भी पीटूं, तो भी यह कुछ नहीं कहेगा। यहां से जायेगा भी नहीं, परन्तु तुम तो ऐसे नहीं हो, और तुम कहते हो कि तुम प्याज़ की गांठ की भांति छिलके-ही-छिलके हो।"

"पर यह तो स्वामीजी कहते हैं?"

"तो वह ग़लत कहते हैं। यह ठीक है कि प्याज़ के बाहर हवा है और भीतर भी हवा है, परन्तु प्याज़ हवा नहीं है। इसी प्रकार परमात्मा सर्वव्याप्त होने के कारण सब जगह पर है। वह हमारे बाहर भी है और भीतर भी है, परन्तु हम परमात्मा नहीं हैं। न ही यह प्याज़ हवा है। एक बात और सुन लो। इस हवा के अतिरिक्त प्याज़ और तुम्हारा शरीर एक समान नहीं है। यह तो कहता-सुनता नहीं और तुम बातचीत कर रहे हो। बात को समझने का प्रयत्न कर रहे हो और हमें समझा भी रहे हो।"

"तो स्वामीजी ग़लत कहते थे?"

"बिल्कुल!"

"परन्तु बड़े-बड़े और बहुत पढ़े-लिखे भी उनके चरण छूकर उनका मान करते हैं?"

"यह इसलिए कि वह एक मीनार पर चढ़े हुए हैं। तुम और मैं भूमि पर खड़े हैं। उन्हें हम कीड़े-मकोड़े के समान दिखाई देते हैं। देखो, तुम मनुष्य हो। जीवित-जाग्रत हो। इस कारण मरे हुए मनुष्य से भिन्न हो। तुम्हें विवाह की आवश्यकता है। किसी मृत शव को आवश्यकता नहीं होती। न ही यह प्याज़ विवाह की इच्छा करता है।"

"स्वामीजी कहते थे कि यह मन और बुद्धि है, जो इच्छा करते हैं और वे भी शरीर का अंग हैं।"

"और जब मनुष्य मर जाता है, तो मन और बुद्धि यहीं रहते हैं अथवा कहीं चले जाते हैं?"

"चले जाते हैं।"

"कहां?"

"आकाश में लीन हो जाते हैं।"

"तो वह आकाश हैं?"

"हां, उनका एक अंशमात्र हैं।"

"वह अंश इतने प्रबल हैं कि पुत्र-पौत्र उत्पन्न कर सकते हैं। तब तो पूरा आकाश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बहुत बलवान् होगा।"

"हां, वह तो है ही।"

"और वह बाल-बच्चे पैदा करता है?"

"ज़रूर करता है।"

"और वह तुम्हारे में भी है। तुम भी तो आकाश हो और वह विवाह करने को कहता है या नहीं?"

कृष्ण पिता का मुख देखने लगा। वह बोला कुछ नहीं। उसके गाल और कान लाल हो रहे थे। वह स्वयं भी शरीर में गरमी अनुभव करने लगा था।

पिता ने कहा, "तब तो तुम वही कर रहे हो, जो मैं कह रहा हूं। अन्तर यह है कि तुम जिसे मन कहते हो, उसे मैं जीवात्मा कहता हूं। यह ऐसे ही है, जैसे जब तुम छोटे थे, तो तुम्हारी मां तुम्हें कालू कहती थी और जब मेरे पास आने लगे, तो मैंने तुम्हारा नाम कृष्णचन्द्र रख दिया।

"देखो कृष्ण! कल राधा के साथ जाना और लड़की को देखकर पसन्द कर आना। यह प्याज़ विवाह नहीं कर रहा। प्याज़ में जो मन है, वह दिखाई नहीं देता, परन्तु तुम्हारे में जो मन है, वह तुमसे कह रहा है कि तुम्हें विवाह कर लेना चाहिए। साथ ही यह भी समझ लो कि जिसे तुम मन कहते हो, उसे मैं जीवात्मा कहता हूं।"

राधा ने पिता की बात पर नमक-मिर्च लगाने के लिए कह दिया, "पिताजी! लड़की पूर्णिमा के चांद की भांति सुन्दर है।"

पिता ने कह दिया, "भाई को दिखा दो।"

अगले दिन जब राधा ने कृष्णचन्द्र को चलने के लिए कहा, तो उसने पूछ लिया, "कहां?"

" मेरी ससुराल के पड़ोस में उसके माता-पिता रहते हैं। मैंने उसकी माताजी को कहला भेजा है कि तुम लड़की को देखने आ रहे हो।"

"बहिन!" कृष्ण ने पूछा, "तुमने देखी है?"

"तभी तो कह रही हूं कि वह पूर्णिमा का चांद है।"

"तो फिर तुम बात पक्की कर आओ। मैं देखने नहीं जाऊंगा।"

"क्यों?"

"नहीं, मुझे शर्म आयेगी।"

राधा हंस पड़ी। हंसते हुए बोली, "बस, कॉलेज में यही पढ़े हो?"

"नहीं बहिन, मुझे मंज़ूर है। मैं उसे देखने नहीं जाऊंगा।"

राधा पिता की बैठक में गयी। वह उस समय किसी व्यक्ति से लेन-देन की बात कर रहा था। राधा बैठक के द्वार पर बैठ गयी, तो गोपीशाह उठकर बाहर आ गया और पूछने लगा, "क्या बात है?"

"कृष्ण नहीं जा रहा। वह कहता है, उसे लाज लगती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो?"

"कहता है कि मैं बात पक्की कर आऊं।"

गोपीशाह हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, "मैं उसके मनोभाव को समझ गया हूं। अच्छा देखो, तुम जाओ और उसकी मां से बात पक्की कर लो। शेष के लिए उसके पिताजी से कहना कि मुझसे मिल लें।"

राधा कुछ न समझती हुई अपनी ससुराल को चली गयी। वह दो दिन से अपनी मां के घर केवल भाई से बात पक्की करने के लिए आयी हुई थी। वह गयी और सायंकाल लौटी। उस समय उत्तमचन्द और उसके दूसरे भाई अपने काम से आये हुए थे। राधा के आते ही पूरा परिवार पिता के कमरे में एकत्र हो गया। कृष्णचन्द्र अपने मित्र से मिलने गया हुआ था।

राधा ने बैठते हुए मां से कहा, "मां! मैं शकुन ले आयी हूं। कहां है कृष्ण?"

"वह अपने मित्रों से मिलने गया हुआ है।"

"यह मिठाई है, केसर है और फल हैं। साथ में एक सौ रुपया है।"

शाहजी ने कह दिया, "कृष्ण को आने दो। पहले उसका मुख मीठा कराकर दूसरों को देना।"

उत्तमचन्द ने कहा, "पिताजी! मैं आराम करने अपने कमरे में जा रहा हूं, जब कृष्ण आयेगा, तो मुझे बुला लें।"

"देखो उत्तमचन्द! नौकरी से त्याग-पत्र दे दो। कल से तुम मेरे साथ मेरे कार्यालय में काम करना आरम्भ कर दो। वहां इस प्रकार थकावट नहीं होगी।"

"माया कह रही थी कि आप कृष्ण को पांच सौ रुपये मासिक वेतन देते हैं। मुझे क्या देंगे?"

गोपीशाह हंस पड़ा। हंसते हुए पूछने लगा, "सरकारी दफ़्तर में वेतन पूछकर नौकरी करने गये थे क्या?"

"पिताजी! वह सरकार है। आप सरकार तो नहीं। वहां से अकारण निकाला नहीं जा सकता और दोष ढूंढ़ना भी सहज नहीं है, परन्तु आपकी नौकरी में तो न कोई नियम है, न कोई अफ़सर। बस, आप ही आप तो हैं। जिस दिन कुछ गड़बड़ समझ में आयी, लात मारकर पृथक् कर देंगे।"

"परन्तु इतना काम नहीं लूंगा कि थककर चूर हो जाओगे और फिर तुमने कुछ ख़राबी की, तो पिता होने के नाते क्षमा भी कर सकता हूं।"

"नहीं पिताजी! सरकारी नौकरी में मज़ा है। वर्ष में रेल के दो पास मिलते हैं। बच्चों के साथ कहीं भी घूमने जा सकता हूं।"

गोपीशाह हंस पड़ा। यह पहला अवसर नहीं था कि उसने अपने लड़के को सरकारी नौकरी छोड़ने के लिए कहा हो। कृष्ण ने बात की थी, तो शाहजी ने स्कूल-कॉलेज की नौकरी में घाटे की बात बतायी थी। कृष्ण ने इस प्रकार उत्तर नहीं दिया था, परन्तु भाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R० 89.9143
GUR-J
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वही थे। एक दुकानदार और बाबू में अन्तर स्पष्ट था। गोपीशाह इसे भ्रम मानता था, परन्तु बाबू बनने में उसे शोभा लगती थी।

पिता ने उत्तमचन्द से कहा, "अपनी पत्नी से राय कर लो। कदाचित् वह तुम्हें कुछ अक़्ल दे सके।"

माया समीप ही बैठी थी। वह बोल उठी, "पिताजी! आपके सुपुत्र तो मुझे मूर्ख समझते हैं। यह कहा करते हैं, तुम कुछ पढ़ी-लिखी तो हो नहीं। तुम क्या जानो, सरकारी नौकरी के बारे में? मैंने इनको कल बताया था कि आप कृष्ण को पांच सौ रुपये महीना वेतन देते हैं। इस पर यह कहते थे, पिताजी का विश्वास कैसे किया जा सकता है? वह अपने तहख़ाने में तो कभी घुसने नहीं देते।"

गोपीशाह हंस पड़ा और बोला, "ठीक है। अफ़सरों के जूते चाटने में भी एक स्वाद है।"

बात समाप्त हो गयी। उसी समय कृष्ण आ गया। उसके आते ही शाहजी ने पूछा, "कहां गये थे? मैंने तो तुमको बताया था कि राधा सायंकाल तुम्हारी ससुराल से शकुन लेकर आयेगी।"

Central Library
167910
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

"तो उन्होंने शकुन दे दिया है?" कृष्ण का प्रश्न था।

"हां!" उत्तर राधा ने ही दिया।

"बिना मुझे देखे ही?"

"लड़की के पिता ने तुम्हें देखा है और लड़की के मामा ने तुम्हारे विषय में जांच-पड़ताल भी की है।"

"क्या जांच-पड़ताल की है?" कृष्ण का प्रश्न था।

"मैंने पूछा नहीं और उन्होंने बताया नहीं, परन्तु शकुन देने का अर्थ यही है कि उन्होंने तुम्हें पसन्द कर लिया है।"

"लड़की कितनी बड़ी है?"

"इस समय सोलह वर्ष की है। उसने पिछले वर्ष दसवीं श्रेणी की परीक्षा दी थी और पास हो गयी थी। अब वह घर पर ही पढ़ती है।"

"क्या पढ़ती है?"

"मैंने पूछा नहीं। पिताजी ने हम लड़कियों को कुछ पढ़ाया नहीं। इस कारण मैंने पूछा नहीं। कहीं वह मुझसे न पूछने लगे कि मैं कितना पढ़ी हूं।"

गोपीशाह हंस पड़ा। उसने कहा, "तुम दोनों बहिनें तो बहुत पढ़ी हो। हां, ये लड़के बुद्धू हैं।"

"नहीं पिताजी!" ज्ञानचन्द ने कह दिया, "मैं भी मैट्रिक पास ही तो हूं। आपने मेरा विवाह दसवीं पास करते ही कर दिया था। इसलिए मैं आगे पढ़ नहीं सका। करुणा के पिताजी ने मेरी नौकरी लगवा दी थी और अब मज़े में हूं।"

करुणा ज्ञानचन्द की पत्नी का नाम था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोपीशाह ने बात बदल दी। उसने राधा से कहा, "यह मिठाई का थाल और फलों की टीकरी मां को दे दो। उसमें से केसर लेकर कृष्ण के माथे पर लगा दो और फिर सबका मुंह मीठा कराओ।"

राधा ने मिठाई तथा फल मां के सामने रख दिये। तिलक की रस्म पूरी की गयी, तो मां ने ही पहले कृष्ण के मुंह में एक लड्डू दिया और फिर सबको दो-दो लड्डू खाने को दिये।

अब गोपीशाह ने पूछा, "पक्की सगाई कब होगी ?"

"जब आप कहें।"

"मैं कल ज्योतिषी से पूछकर बताऊंगा।"

: 3 :

लगभग चार बजे कृष्ण पुनः सुन्दरदास के घर पर गया था। आज वह सुन्दरदास के साथ दूध लेता हुआ अपने मन की अवस्था बताने लगा। उसने मित्र से कहा, "मेरी बहिन और पिताजी मेरे विवाह का प्रबन्ध कर रहे हैं और मैं इसे झंझट समझता हूं।"

सुन्दरदास की पत्नी रामेश्वरी ने पूछ लिया, "इसमें झंझट क्या है ?"

"मेरा भाई ज्ञानचन्द दसवीं श्रेणी में अच्छे अंक लेकर पास हुआ था। उसका विवाह कर दिया, तो उसकी पढ़ाई बन्द हो गयी। मैं इसीलिए डरता हूं।"

"आप अभी और पढ़ना चाहते हैं ?"

"हां, प्रोफ़ेसर रहीमबख़्श ने कहा है कि मुझे बी०टी० कर लेनी चाहिए।"

"किसलिए ?"

"स्कूल में नौकरी करने के लिए।"

अब सुन्दरदास ने कहा, "तुम मूर्ख हो। स्कूलमास्टरी में क्या पड़ा है ? साठ रुपये महीने से अधिक वेतन नहीं मिलेगा। बूढ़े होने तक डेढ़ सौ तक हो सकेगा। यदि पढ़ना है, तो 'लॉ कॉलेज' में प्रवेश ले लो। मेरी तरह एक विख्यात वकील बन जाओगे।"

"और विवाह न करूं, तो ?"

"इसका विवाह से क्या सम्बन्ध है ? जब मैं बी०ए० में पढ़ता था, तो यह तुम्हारी भाभी मेरी पुस्तकें झाड़-फूंककर अलमारी में रखा करती थी ?"

"तो भाभी ने कहा नहीं कि पढ़ाई बन्द करो ?"

रामेश्वरी हंस पड़ी। हंसते हुए बोली, "मैं क्यों कहती ? मैं तो इनकी पढ़ाई में सहायता करती रहती थी।"

"भाभी ! तुम कितना पढ़ी हो, जो वकील साहब की पढ़ाई में सहायता करती थीं ?"

"पढ़ाई तो मैंने नौवीं श्रेणी तक ही की थी। जब मेरा विवाह हुआ था, तो मेरी पढ़ाई बन्द हो गयी थी। यह तो तुम्हारे मित्र के पिता कहते थे कि घर की पतोहू स्कूल में नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जायेगी। तब मैं घर पर ही पढ़ती थी और इनकी सेवा करती थी। मेरे इनके साथ रहने पर इनको सुख अनुभव होता था।"

"तो मैं भी विवाह कर लूं ?"

"हां!" उत्तर रामेश्वरी ने ही दिया, "और देखिये, आप भी वकील बन जाइये।"

"पर मैं पूछता हूं," सुन्दरदास ने पूछा, "तुम कहा करते हो कि तुम्हारे पिता बहुत पैसे वाले हैं ?"

"हां, मैं कारोबार में उनकी सहायता करता हूं और मुझे उनका सब हाल मालूम है।"

"क्या मालूम है ?"

"सन्दूकों के सन्दूक रुपये और मुहरों से भरे पड़े हैं। बैंकों में भी बहुत कुछ है। पिताजी ने किसी को न बताने की शपथ ले रखी है।"

"ठीक है। शपथ भंग नहीं करनी चाहिए। यह पाप है, परन्तु मैं तुम्हें एक बात बताता हूं। अपने पिताजी को बता देना।

"सरकार एक क़ानून बना रही है। वह क़ानून पास होते ही सब साहूकारों को अपना बही-खाता और हिसाब-किताब तथा वार्षिक लाभ-हानि सरकार को बतानी होगी और सरकार टैक्स लिया करेगी।"

"क्यों ?"

"यह इसलिए कि सरकार ने स्कूल, कॉलेज, रेल, तार, डाक, सड़कें इत्यादि बनायी हुई हैं और उन पर सरकार का ख़र्च होता है। वह सब टैक्स धनवानों से लिया जाया करेगा। नगरों में भी तो म्युनिसिपल कमेटियां बन रही हैं। वह भी अपने-अपने नगर में कर लिया करेंगी।"

"सरकार का ख़र्च पहले कहां से चलता था ?" कृष्णचन्द्र का प्रश्न था।

"सरकार कर तो पहले भी लेती थी, परन्तु वह व्यापार पर था। सरकार के काम में वृद्धि हो रही है। इस कारण केवल व्यापार पर कर लगाने से काम नहीं चलता।"

"तो ?" कृष्ण भौचक्का हो पूछने लगा।

"तो यह कि किसी रविवार को आना। तब तुम्हें सन्दूकों में बन्द करने के स्थान पर व्यापार में धन लगाने का उपाय बताऊंगा।"

"वह तो हम पहले भी करते हैं। पिताजी हुण्डी-पर्चा पर ऋण देते हैं।"

"यह कुछ नहीं। मैं कुछ ऐसा बताऊंगा, जिससे घर पर रुपयों की बरसात होने लगेगी।"

यह बात कृष्ण के दिमाग़ में उस समय भी थी, जब राधा उसकी ससुराल से आयी मिठाई बांट रही थी। वह विचार कर रहा था कि इतना धन कैसे और कहां से पिताजी के तहख़ाने में आ गया है ? क्या वहां भी रुपयों की बरसात हुई है ? वह लड्डू खाता हुआ सुन्दरदास की बात पर विचार कर रहा था।

यह बात वह पिताजी से कहना चाहता था, परन्तु सबके सामने नहीं। गोपीशाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अपने तहख़ाने की बात और बैठक में हुए लेन-देन की बात घर पर किसी से नहीं कहते थे। इसलिए कृष्ण उस समय चुप था। इस पर भी सुन्दरदास की बात उसके मस्तिष्क में चक्कर काट रही थी।

गोपीशाह के सबसे छोटे लड़के की ससुराल से शकुन आया था और सम्पूर्ण परिवार वहां एकत्र था। रामचन्द्र और उसके परिवार के लोग आये हुए थे। उत्तम के बड़े लड़के सिद्धेश्वर का विवाह हो चुका था। उसकी पत्नी भी वहां बैठी मिठाई खा रही थी।

इस समय बड़ी लड़की परमेश्वरी ने कहा, "पिताजी! इस अवसर पर आपको भी तो अपनी लड़कियों को कुछ देना चाहिए।"

"धनवती! अपनी इस भूखी लड़की को दो लड्डू और दे दो।"

"पिताजी! मैं लड्डू नहीं मांग रही।"

"तो क्या मांग रही हो?"

"जो एक सौ एक रुपये आये हैं, उसमें हमारा भी तो हिस्सा है।"

"ओह! हां, ठीक है।"

गोपीशाह ने अपने कमरे से चाबियों का गुच्छा निकाला और कृष्णचन्द्र को देते हुए कहा, "तनिक गिन डालो, यहां कितने प्राणी बैठे हैं?"

कृष्ण खड़ा हो गया और गिनने लगा। छोटे-बड़े तीस प्राणी थे। उसने गिनकर संख्या बतायी, तो पिता ने कहा, "जाओ, सन्दूक में से तीस मुहरें ले आओ और सबको एक-एक मुहर अपनी सगाई की ख़ुशी में दे दो।अभी तो कच्ची सगाई है। पक्की सगाई पर और अधिक दूंगा।"

सब बहुत प्रसन्न थे। कृष्ण गया और तीस चमचमाती स्वर्ण-मुहरें निकालकर ले आया। उसने बच्चों से देनी आरम्भ कीं और जब सबको दे चुका, तो उसके हाथ में तीन मुहरें शेष थीं। उसने पूछा, "तो पिताजी! आपको भी दूं?"

"तो मैं अपने परिवार में नहीं हूं क्या? फिर यह तुम्हारी मां भी तो है और तुम स्वयं भी तो हो।"

"पर पिताजी! आप तो बाज़ार में कुछ व्यय करते नहीं। आप इसका क्या करेंगे?"

"तुम दो तो। मैं जो चाहूं करूं। तुम मुझसे क्यों पूछ रहे हो?"

"पिताजी! मैं अपने मन से भी तो पूछ रहा हूं। मैं इस मुहर का क्या करूंगा?"

"यह तुम जानो। मैं तुम्हारी मां से राय कर इसका सदुपयोग करूंगा।"

कृष्ण ने माता-पिता को भी एक-एक मुहर दे दी और एक अपनी जेब में रख ली।

अगले दिन जब कृष्ण पिता के कार्यालय में आया, तो एक व्यक्ति हुण्डी का भुगतान करने आया हुआ था। वह मन में विचार कर रहा था कि पिताजी से पता करेगा कि उन्होंने अपनी मुहर का क्या किया। वह अपनी मुहर के विषय में भी विचार करना चाहता था, परन्तु उस व्यक्ति ने दाम गिनकर नोटों में सामने रखे हुए थे और हुण्डी की प्रतीक्षा में बैठा था। जब कृष्ण आया, तो शाहजी ने कहा, "इन लालाजी की एक हुण्डी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
का आज भुगतान हुआ है। वह ले आओ और लालाजी को वापस कर दो।"

"और ये रुपये?"

"यह मैं बैंक में भेज दूंगा।"

कृष्ण पिताजी से चाबियां लेकर तहख़ाने को चल दिया। पांच मिनट में वह आया और लुण्डी भाषा में लिखी एक हुण्डी ले आया। शाहजी ने वह हुण्डी सामने बैठे लाला को दे दी और कृष्ण से कहा, इन रुपयों को गिन लो और बंगाल बैंक में जमा करा आओ।"

लाला गया, तो कृष्ण ने रुपये गिनकर जेब में रखे और जेब से घड़ी निकालकर समय देखकर कह दिया, "अभी एक घण्टे में जाऊंगा।"

"हां, तो कल सायंकाल वाली मुहर का क्या करोगे?"

"पिताजी! अभी विचार नहीं किया। एक विचार यह है कि सुन्दरदास की पत्नी भाभी रामेश्वरी को माताजी की ओर से अपनी सगाई के उपलक्ष्य में दे आऊं।"

"उसे क्यों?"

"वह बहुत अच्छी है। मेरे साथ अपने भाई-जैसा व्यवहार करती है। जब परमेश्वरी और राधा को दिया है, तो उसे भी देना चाहिए।"

"परन्तु तुमने राधा और परमेश्वरी को तो अच्छा कभी नहीं कहा।"

"पिताजी! परमेश्वरी तो सदा कान खींचा करती थी। मेरे आठवीं श्रेणी में पढ़ने तक वह मुझे डांटती-डपटती रही है। रामेश्वरी भाभी ने तो मुझे कभी छुआ भी नहीं। कान खींचना, तो दूर की बात है।"

"परन्तु उसे तुम कब से जानते हो, मेरा मतलब है, वह तुमको कब से जानती है?"

कृष्ण ने आंखें मूंदकर एक-दो क्षण तक विचार किया और कहा, "मेरा सहपाठी है महेन्द्रदास। जब मैं बी० ए० में पढ़ता था, तब एक दिन उसके घर गया था। वहीं उसके बड़े भाई सुन्दर तथा उसकी पत्नी से परिचय हो गया। दोनों बड़े मिलनसार हैं। जब भी जाता हूं, दूध-मिठाई खाने को देते हैं और बहुत-सी बातें बताया करते हैं। कल मैंने उनसे कहा था कि राधा बहिन विवाह करने को कह रही हैं, परन्तु मैं विवाह नहीं करना चाहता। इस पर उन्होंने ऐसे ढंग से बात कही कि मैं विवाह के लिए मान गया हूं।"

"तब तो उन्हें मिठाई खिलानी चाहिए। अच्छा, देखो, मां से एक ख़ाली थाल ले लो और दो रुपये मैं देता हूं। बाज़ार से बढ़िया मिठाई उसमें लगवा लो और वकील साहब को दे आओ।"

"और पिताजी! वह कहते थे कि आप रविवार के दिन उनसे मिलने चलें, तो वह आपको सरकार द्वारा लगाये जाने वाले आयकर की बात बतायेंगे।"

"वह वकील क्या बतायेगा? उसे तो मुझसे पूछना चाहिए। मैंने एक ही जीवन में शून्य से यह सृष्टि की है। ईश्वर की कृपा से चार लड़के हैं, दो लड़कियां हैं। बच्चों के आगे भी बच्चे हैं और तुम जानते ही हो कि मैंने कितना धन पैदा किया है। तुम्हारे वकील

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मित्र का बैंक में कितना रुपया है? उसके नगर में कितने मकान हैं?"

"पिताजी! न मैंने बताया है कि हमारे पास कितना धन है, न उनसे पूछा है कि उनके पास कितना धन है। इतना देखता हूं कि वह निस्बत रोड पर कोठी में रहते हैं। दो नौकर हैं, एक मुंशी है, कोठी में एक माली भी है और घर का एक पृथक् जमादार भी है।"

"तो सुन लो, उसके बैंक में सौ-दो सौ रुपये से अधिक नहीं हैं।"

"वे हमसे अच्छा खाते-पीते हैं। गुड़ के सेम नहीं खाते। मेहमानों को केक-पेस्ट्री खिलाते हैं।"

"मैं समझता हूं कि वह अपनी कमाई को हराम कर रहे हैं।"

कृष्णचन्द्र हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, "स्वामी रामकृष्णजी कहते थे कि हमारी कमाई हराम की है।"

"क्यों?"

"यह परिश्रम के बिना पैदा हुई है।"

"और तुम भी यही समझते हो?"

"मैंने स्वामीजी से कहा, हमारा भाई उत्तमचन्द बहुत ही ईमानदार है; क्योंकि वह दफ़्तर में थककर चूर होकर आता है।"

पिता हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, "उसे तो मैं पशु मानता हूं और तुम्हारे स्वामीजी को मूर्ख। वह बैल के काम को ही परिश्रम कहते हैं। मैं समझता हूं कि वह इस विषय में कुछ नहीं समझते। उनके अपने विचार से देखा जाये, तो सबसे बड़े हरामख़ोर वह स्वयं हैं। वह दिन-भर में एक तिनका भी नहीं तोड़ते और दूध-रोटी इत्यादि ज़रूर खाते होंगे।"

कृष्णचन्द्र पिता की युक्ति पर हंस पड़ा। उसका पिता पहले भी इसी प्रकार की बातें किया करता था।

उस दिन भी, जब प्याज़ और मनुष्य में तुलना हो रही थी, तो पिता ने युक्ति से ही समझाया था कि वह प्याज़ नहीं है। प्याज़ इच्छा नहीं करता और वह इच्छा करता है।

इस पर भी उसके मन में एक संशय था। वह उसने अपने पिता को बता दिया। उसने कहा, "परन्तु पिताजी! मैं कभी-कभी विचार किया करता हूं कि जितना कुछ आपके पास है, वह इन चालीस-पैंतालीस वर्षों में कैसे एकत्र हो गया? मैं अपने आस-पास अपने महल्ले में ही देखता हूं कि कई बेचारे दिन-भर काम करते हैं और सर्दी-गरमी आपसे ऋण लेने आते रहते हैं और उनको ऋण उतारने में बहुत समय लग जाता है।"

"यह मैं जानता हूं।" शाहजी ने कह दिया, "परन्तु इसका रहस्य भी मैं जानता हूं। यह सब कुछ तुम्हारी मां और कुछ मेरी युक्ति का परिणाम है। यह सब कुछ हमारा अपने पर उतना ही व्यय करने के कारण है, जितने से जीवन चल सके। फ़ुज़ूलख़र्च तुम्हारी मां को और मुझे भी पसन्द नहीं। इनके अतिरिक्त एक अन्य बात है। परमात्मा तुम्हारी मां और मुझ पर बहुत दया कर रहा है और मैं उसकी दया का प्रतिकार उसे देना चाहता हूं। ये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तीन ही मुख्य कारण हैं, जिनसे मेरे पास धन एकत्र हो रहा है। ये तीन बातें हैं—बुद्धि से विचार कर व्यवहार करना, फ़ुज़ूलख़र्च न करना और ईश्वर पर भरोसा करना।

"देखो, मैं तुम्हें एक घटना सुनाता हूं। जब तुम्हारी मां से मेरे विवाह का निश्चय हुआ, तो हमारे घर पर हमारी पूंजी दो रुपये ही थी। मैं अपने लाला के पास गया, जिनकी मैं नौकरी करता था और मैं उनसे पचास रुपये ऋण मांगने लगा।

"लाला ने कह दिया, नहीं मिलेंगे। मैं ऐसे किसी को ऋण नहीं देता, जो लौटा नहीं सकता और मैं जानता हूं कि तुम ऋण उतार नहीं सकोगे। इसलिए नहीं दूंगा।

"परन्तु कृष्ण! लालाजी ने मेरे विवाह में सहायता के लिए मुझे एक सौ रुपये दिये। मैंने पूछा, यह कृपा क्यों की है, तो वह बोले, यह कृपा तुम पर नहीं। यह एक सौ रुपये मैंने परमात्मा को दिये हैं और वह मुझे लौटा देगा। मैं उस समय उनका अभिप्राय नहीं समझा। इस पर भी चुप रहा।

"मेरे विवाह को कुछ ही दिन हुए थे कि लालाजी ने मेरे नाम पर चीनी के एक सौ बोरे का सौदा किया।

"मैंने पूछा, लालाजी! इसका प्रतिकार मैं नहीं दे सकूंगा और कहीं सौदे में घाटा हुआ, तो मेरे पास देने को कुछ नहीं है।

"इस पर लालाजी ने कह दिया, यह मैंने तुमको नहीं दिये। यह परमात्मा को दिये हैं। मैं जब भी उसे देता हूं, तो उसका दुगुना-चौगुना कर वह मुझे वापस दे देता है। इसमें तुम उत्तरदायी नहीं हो।

"और कृष्ण! उस सौदे में मुझे पांच सौ रुपये का लाभ हुआ। मुझे वह मिला और लालाजी कहते थे कि उनका रुपया उनको वापस मिल गया है। तुमको पांच सौ रुपये का यह लाभ परमात्मा ने दिया है। अपनी पत्नी को आभूषण ले दो। यह उसके हैं।

"यह समझ लो कि मुझे जो कुछ मिला है, मैं समझता हूं, वह सब उसी सौदे के कारण है, जो लालाजी ने मेरे नाम पर किया था कि वह सब परमात्मा का ही दिया है। इसी कारण मैं उन धन-दौलत को फ़ुज़ूल की बातों में ख़र्च करना नहीं चाहता।

"कृष्ण! तुम्हारी मां में भी कुछ गुण हैं और वह उन गुणों का प्रयोग करती रहती है, जिससे उस समय का डाला गया बीज आज दस लाख से ऊपर हो गया है।"

"पर पिताजी! स्वामीजी कहते थे कि कि ब्याज लेना हरामख़ोरी है।"

"स्वामीजी इस विषय में कुछ नहीं जानते। जानते हो, बैंकों में क्या होता है?"

"क्या होता है?" कृष्ण का प्रश्न था।

"बैंक भी रुपये के ब्याज पर ही चलते हैं। और जानते हो, अनारकली बाज़ार में जो पंजाब नेशनल बैंक है, उसके मैनेजर का वेतन उतना ही है, जितना तुम्हारा है। मेरा मतलब पांच सौ रुपये महीना। तुम मेरे बैंक के मैनेजर हो। इस पर भी तुम दोनों में अन्तर है। वह अपनी वृद्धावस्था में पेंशन पर ही जियेगा और तुम तब तक लगभग एक लाख रुपये के मालिक होगे। इस कमाई को हराम कहना ग़लत है। हां, इसे इसकी सद्गति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करना कहा जा सकता है।"

कृष्णचन्द्र के सम्मुख एक नयी विचारधारा खुल गयी और वह गम्भीर विचार में मग्न हो गया। उसे मौन देख पिता ने कह दिया, "इस पर भी मैं तुम्हारे वकील मित्र से मिलना चाहूंगा। उसकी सुन लेने में हानि नहीं। कदाचित उसमें से भी कुछ तत्त्व की बात निकल आये। यह भी हो सकता है कि हमारी बात से उसे भी कुछ ज्ञान प्राप्त हो जाये।"

इस पर कृष्ण की हंसी निकल गयी। उसने कहा, "पिताजी! वह नगर के चोटी के वकीलों में हैं।"

"होगा! मैं भी अपनी प्रकार के आदमियों में चोटी का व्यक्ति हूं।"

परिणामस्वरूप, उस दिन मध्याह्नोत्तर अल्पाहार के समय कृष्ण मिठाई का एक थाल लेकर सुन्दरदास की कोठी पर जा पहुंचा।

कोठी के बरामदे में बैठा हुआ सुन्दरदास अल्पाहार ले रहा था और नित्य की भांति उसकी पत्नी रामेश्वरी उनके समीप ही बैठी थी।

: 4 :

कृष्ण के हाथ में मिठाई का थाल और उस पर रेशमी रूमाल देखकर रामेश्वरी हंस पड़ी और बोली, "तो हो गयी सगाई?"

"भाभी! अभी कच्ची सगाई हुई है। पक्की में तो भाई साहब और आपको भी निमन्त्रण दूंगा।"

"वह कब होगी?" सुन्दरदास ने पूछ लिया।

"आज पिताजी ज्योतिषी से मुहूर्त निकलवायेंगे।"

"तुम इतना पढ़-लिखकर भी मुहूर्त की बात मानते हो?"

कृष्ण ने थाल सामने मेज़ पर रख दिया। रामेश्वरी ने थाल पर से कपड़ा उठाया और मिठाई देख प्रसन्न होकर बोली, "देखने में तो भली प्रतीत होती होगी, परन्तु खाने में देखेंगे कि पेट में दर्द करती है अथवा नहीं?"

"भाभी, नहीं करेगी। नगर के सबसे मशहूर हलवाई की दुकान से लाया हूं। और भाई साहब! आपको रविवार अपने घर पर मध्याह्न के भोजन का निमन्त्रण देता हूं।"

"उस दिन क्या है?" रामेश्वरी ने पूछ लिया।

"मेरे पिताजी, भाईसाहब को कुछ पाठ पढ़ाना चाहते हैं और पिताजी का विचार है कि भाईसाहब से उनको भी कुछ सीख मिलेगी। इसलिए इस भेंट में मेरी भी रुचि है।"

"हां, मैंने कहा था, परन्तु मैंने तो तुम्हारे पिताजी को यहां बुलाया था।"

"इसमें क्या अन्तर पड़ जायेगा? भेंट में कुछ किताबें तो दिखानी हैं नहीं!"

"हां! मौखिक बात ही होगी।"

सुन्दरदास मान गया और आगामी रविवार अपनी घोड़ागाड़ी पर पति-पत्नी नगर में सूत्र मण्डी में गोपीशाह के घर महल्ला मोहलिया में जा पहुंचे। उस दिन शाहजी ने अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चारों लड़कों को भी खाने पर साथ में बैठने को कहा हुआ था। परिवार के शेष घटकों को पृथक् से भोजन कराने का प्रबन्ध था।

रसोईघर में भूमि पर आसन बिछाकर सामने चौकियों पर भोजन रखकर खाने का प्रबन्ध था। वकील साहब के घर पर मेज़-कुरसियों पर बैठकर खाने का प्रबन्ध रहता था।

अभी खाना परोसा ही जा रहा था कि बातचीत आरम्भ हो गयी। सुन्दरदास ने कहा, "मैं समझता हूं, ये आपके लड़के हैं।"

"हां, वकील साहब! मैंने इन्हें भी अपने साथ यहां बैठा लिया है। कदाचित कोई ज्ञान का शब्द इनके कान में भी पड़ जाये। मेरे लड़कों में कृष्ण ही कुछ तेज़ निकला है। जब इसने मैट्रिक की परीक्षा दी थी, तो इसकी मां ने इसके विवाह का प्रबन्ध किया था और यह घर से भाग गया था। मैं रावीतट पर मन्दिर में छिपे हुए देखकर इसे पकड़ लाया था। तब से ही मैंने इसे अपने बच्चों में सबसे अधिक बुद्धिमान् समझकर अपने व्यवसाय में शामिल कर लिया है। इसके दूसरे भाई तो विवाह का नाम सुनते ही हलाल की जाने वाली मुर्ग़ी की भांति अपने भाग्य की सराहना अथवा निन्दा करते हुए विवाह वेदी पर जा बैठे थे।"

सुन्दरदास को लगा कि बातें तो शाहजी समझदारी की कर रहे हैं। उसने एक प्रश्न पूछ लिया, "और आपकी लड़कियां भी तो हैं?"

"हां, दो हैं। दोनों आज अपनी ससुराल में हैं। दोनों इन तीनों से अधिक समझदार हैं। दोनों लड़कियों में छोटी अधिक सूझ-बूझ रखती प्रतीत होती है। वह स्कूल-कॉलेज में नहीं पढ़ी। घर पर ही हिन्दी के चार अक्षर पढ़कर ज्ञानी बन गयी है।"

"और शाहजी! आप कितना पढ़े हैं?"

"लुण्डी के बारह अक्षर! इस पर भी आप-जैसे विद्वानों की संगत का फल है कि जीवन को और उसके उद्देश्य को समझता हूं।"

"आपके जीवन का क्या उद्देश्य है ?"

धनवती ने भोजन परोस दिया था और सब खाने लगे थे। सुन्दरदास ने सबसे पहले खीर खानी आरम्भ कर दी। दूसरे भी खीर खा रहे थे, परन्तु उत्तमचन्द ने पहले चटनी चाटनी आरम्भ की थी। अभी शाहजी ने सुन्दरदास की बात का उत्तर नहीं दिया था कि सुन्दरदास ने पुनः बात करनी आरम्भ कर दी, "एक बात तो भली प्रतीत हो रही है कि आप धन का प्रयोग करना जानते हैं।"

"हां, इसीलिए मेहमानों का सत्कार करना जानता हूं।"

"और घर के प्राणियों का?"

"उनके लिए स्वास्थ्यप्रद भोजन रहता ही है। अभ्यागतों के लिए स्वास्थ्यप्रद से अधिक स्वादिष्ट भोजन का विचार किया, तो खीर, पूरी, चटनी-अचार, पांच प्रकार की भाजियों का प्रबन्ध हो गया। यह अतिथि-सेवा के लिए है।"

"नहीं, तो सूखी रोटी और दाल-भाजी लेते हैं?" सुन्दरदास ने मुसकराकर कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं वकील साहब! सूखी रोटी तो नहीं होती। गाय का घी हमारे यहां प्रयोग में लाया जाता है, परन्तु एक सब्ज़ी, आम का अचार और घी से चुपड़ी रोटी, यह हमारा दैनिक भोजन है। मेरे विचार में वह इस काशीफल की भाजी से अधिक पौष्टिक होता है। खीर से दलिया अधिक पौष्टिक है। पूरी के स्थान पर चुपड़ी रोटी श्रेष्ठ है।"

"परन्तु शाहजी! भोजन स्वाद हो, तो अधिक खाया जाता है। यह बात भी तो है?" सुन्दरदास ने व्यंग्यात्मक भाव में कहा।

"हां, शारीरिक आवश्यकता से अधिक खाया जाता है और फिर उसको बाहर निकालने के लिए ओषधि भी लेनी पड़ती है।"

सुन्दरदास ने बात बदल दी। उसने आधी खीर खायी थी और शेष को छोड़कर पूरी खाने लगा था। उसने कहा, "आपने इस कंजूसी से कितना कुछ एकत्र कर लिया है?"

"यह कंजूसी नहीं है।" गोपीशाह का कहना था, "कंजूसी तो आप कर रहे प्रतीत होते हैं। यह खीर आपने किसके लिए छोड़ दी है?"

"शेष बाद में खाऊंगा।"

"उस समय और मिल जायेगी। क्यों धनवती, देगची में और खीर है न?"

"जी, बहुत है।"

सुन्दरदास ने हंसते हुए कह दिया, "मैं समझता था कि सेठजी ने कंजूसी से कम न बनावायी हो।"

"नहीं वकील साहब! मैं कंजूस नहीं हूं। केवल बुद्धि से विचार कर व्यवहार करता हूं। आपको विदित हो, यह कृष्ण की मां महालक्ष्मी की भांति इस घर का प्रबन्ध करती है। यह कंजूस नहीं है, पर फ़ुज़ूलखर्च भी नहीं है।"

"तो आप मेहमानदारी के लिए ख़र्च को फ़ुज़ूल नहीं समझते?"

"जी नहीं! आपको प्रसन्न और तृप्त करना, तो बहुत लाभ की बात है। वैसे तो सब अतिथि पूजनीय होते हैं, परन्तु वकील तो आज के समाज का केन्द्र-बिन्दु बना हुआ है। सुना है, कांग्रेस के अधिकतर नेता वकील ही हैं।"

सुन्दरदास हंस पड़ा। उसे इस अनपढ़ सेठ से बात करने में रस आने लगा था। शाहजी ने पूरी खाते हुए कहा, "राजनीति वकीलों का काम नहीं है। इसमें अंगरेजी रीति-रिवाज का प्रयोग हो रहा है। इंग्लैण्ड की पार्लियामेण्ट में भी, सुना है, अधिकांश वकील ही हैं और वे ही वहां प्रधान बने हुए हैं। इस कारण वे अपने देश का बंटाधार तो करेंगे ही, हमारे देश का भी सत्यानाश करेंगे।"

"तो राज्य करना किनका काम है?" शाहजी का प्रश्न था।

"बुद्धिमानों और शूरवीरों का। वकील तो लोमड़ी की भांति चतुर और चञ्चल होते हैं। वे सब कुछ बिगाड़ देंगे।"

गोपीशाह की रुचि राजनीति में नहीं थी। इस कारण उसने बात बदल दी, "और साहूकारी में वकीलों का क्या योगदान है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक खेत के चारों ओर बाड़ का। मेरा अभिप्राय है रक्षा का।"

"हां, कृष्ण बता रहा था कि आप मुझे मेरे व्यवसाय के विषय में कुछ बताने वाले हैं।"

"वह मैं भोजन के उपरान्त पृथक् में बैठकर बताऊंगा। मैं अदालत में दीवानी मुक़द्दमे ही लेता हूं और दिन-रात नगर के साहूकारों की करतूतें देखता तथा सुनता रहता हूं।"

"परन्तु वकील साहब! मैंने इतना कुछ पैदा किया है कि आप स्वप्न में भी कल्पना नहीं कर सकते। इस पर भी पैंतालीस वर्ष में, जिसमें मैंने यह सब कुछ निर्माण किया है, कचहरी का मुंह नहीं देखा।"

"आज के ज़माने में यह असम्भव प्रतीत होता है?"

"आपको वकालत का काम करते कितने वर्ष हुए हैं?"

"छह वर्ष हुए हैं।"

"क्या इन छह वर्षों में आपने मुझे कभी किसी अदालत में देखा है?"

"हां, यह तो है। मगर इसका कारण मैं यह समझता हूं कि आप वस्तुएं गिरवी रखकर ही ऋण देते हैं।"

"हां, यह भी एक कारण है, परन्तु मेरा व्यापार इसके अतिरिक्त भी है। हुण्डी-पर्चे पर भी धन देता हूं। इसमें मैं बुद्धि का प्रयोग तथा देनदारों से सदा सज्जनता का व्यवहार करता हूं। इसके अतिरिक्त ईश्वर के आश्रय पर रहने के कारण अभी तक आपके भाई-बन्धुओं से बचता चला आता हूं।"

"यह विस्मयजनक ही है। लोग कह रहे हैं कि रुपये का लेन-देन सरकार को अपने हाथ में ले लेना चाहिए।"

"तब ठीक है। सरकार का दिवाला पिट जायेगा। साथ ही देश भी निर्धन हो जायेगा।"

"यह आप कैसे कह सकते हैं?"

"देखिये वकील साहब! मैं अपने अनुभव से बताता हूं। मैंने यह धन परिश्रम से पैदा किया है। इसलिए जब कोई उधार लेने आता है, तो मैं अपने और अपनी पत्नी के परिश्रम का विचार कर ऋण मांगने वाले की परीक्षा करता हूं। साथ ही ईश्वर का भरोसा कर निर्णय लेता हूं और प्रायः मेरा निर्णय ठीक ही होता है और बहुत ही कम लोग हैं, जो मेरा रुपया देने से भागे हैं।"

"तो आपको कोई 'नादिहन्द' नहीं मिला?"

"बहुत-से ठग आते हैं। मैं जब ठोक-बजाकर देखने लगता हूं, तो प्रायः भाग जाते हैं। इस पर भी एक-दो बार भूल हुई है। ग़लत व्यक्ति को ऋण दे बैठा था। जब उन्होंने वापस नहीं किया, तो मुक़द्दमा करने के स्थान पर उनसे समझौता करने में ही अपना हित समझा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक बार बजाजे में कपड़े की एक छोटी-सी दुकान का स्वामी दो हज़ार रुपये लेने आया। मैंने पूछा, इतने रुपये का क्या करोगे? वह बोला, लाला बांकेलाल की दुकान नीलाम हो रही है, सरकारी नीलामी है। मैं जानता हूं कि उसकी दुकान में कितना माल है। इस कारण मैं बोली देना चाहता हूं। बोली मेरे नाम होते ही मुझे दो हज़ार रुपया पेशगी देना पड़ेगा।

"मैंने कुछ विचार किया और कह दिया, मेरे पास इस मतलब के लिए इतना धन नहीं है। मैंने उसे ऋण नहीं दिया। वह कहीं से धन लेकर दुकान ले बैठा। दुकान् की बोली पन्द्रह हज़ार रुपये लगी थी। डेढ़ हज़ार उसने पेशगी जमा करा दिया और शेष के लिए यत्न करने लगा। एक़ बजाज ने ही उसे शेष धन दे दिया और दुकान की चाबी उसे मिल गयी। माल की बिक्री शीघ्र नहीं हो सकी और दुकान का ख़र्च बढ़ता गया। उसके पास और रुपया नहीं था, जो दुकान में बिकाऊ माल डाल सकता। वह तीन वर्ष से अब तक ऋण नहीं उतार सका। अब उसने दिवाले की अर्ज़ी दे दी है।

"मैं इन सबकी सम्भावना पहले ही समझ रहा था। मेरा अनुमान ठीक निकला। यह इसलिए कि मैं बुद्धि का प्रयोग करता हूं। बुद्धि के प्रयोग के लिए ज्ञान भी प्राप्त करता हूं और फिर ईश्वर का चिन्तन कर निर्णय लेता हूं। वैसे इस समय मेरा एक लाख रुपये के लगभग व्यापार में लगा हुआ है।"

"इस झञ्झट से बचने के लिए आप कम्पनियों के हिस्से ख़रीदा करें,तो अधिक ठीक होगा।"

"इस विषय में मैं आपसे पृथक् से बात करूंगा।"

"और आप इन लड़कों को भी कुछ कारोबार करा दीजिये।"

"देखिये वकील साहब! स्वतन्त्र व्यापार करने के लिए कुछ आवश्यक आधार होते हैं। जैसे—तीक्ष्ण बुद्धि का होना, तीव्र स्मृति का होना और फिर चादर देखकर अपने पांव फैलाना। ये आधार मुझे सिवा कृष्ण के अन्य किसी में दिखाई नहीं दिये।

"यह बड़े साहब हैं। नाम है उत्तमचन्द, परन्तु नाम के ही उत्तम हैं, बुद्धि में नहीं। इन्हें किसी व्यवसाय के लिए धन दूंगा, तो यह छह महीने में उसका होम कर देंगे।"

"अब यह दूसरे हैं, ज्ञानचन्द। यह आजकल लाहौर के असिस्टेण्ट स्टेशनमास्टर हैं। वेतन तो अस्सी रुपये ही मिलता है, परन्तु ऊपरी आय में यह मैले के कीड़े की भांति प्रसन्न रहते हैं। इस पर भी वह आय, जैसे आती है, वैसे ही चली जाती है।"

"कहां चली जाती है?"

"मैं जानता हूं, परन्तु बताऊंगा नहीं। ऊपर की आय, जैसे ऊपर से आती है, वैसे ही ऊपर को चली जाती है। खाना-पीना, मकान, सब मैं करता हूं। पूछिये, इन महापुरुषों ने कितना जमा किया है?"

सुन्दरदास ज्ञानचन्द की ओर देखने लगा।

ज्ञानचन्द ने उत्तर नहीं दिया। वह खीर का कटोरा उठाकर अंगुली से पोंछ-पोंछकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चाट रहा था।

बात गोपीशाह ने ही आगे चलायी, "यह रामचन्द्र है। यह अमृतसर में गुड्स क्लर्क है और दो बार माल चोरी करते पकड़ा जा चुका है, परन्तु इसकी पत्नी के भाग्य से छूट जाता रहा है और नौकरी पर अभी तक बहाल है।"

इसी प्रकार की बातों में भोजन समाप्त हुआ, तो रामेश्वरी धनवती के पास बैठकर उसका इतिहास जानने का यत्न करने लगी और गोपीशाह सुन्दरदास के साथ अपने कार्यालय में जा बैठा। दो घण्टे तक बातचीत हुई। तब सुन्दरदास बैठक से निकला और कृष्ण को ढूंढ़ने लगा। वह अपने कमरे में बैठा एक पुस्तक पढ़ रहा था। सुन्दरदास और गोपीशाह वहां पहुंचे, तो कृष्ण प्रश्न-भरी दृष्टि से उनकी ओर देखने लगा। सुन्दरदास ने कहा, "कृष्ण! तुम्हारी भाभी को ढूंढ़ रहा हूं। उसे कहो कि मैं जा रहा हूं।"

"तो हो गयी बात?"

"हां, परन्तु गुप्त है।"

कृष्ण को पता था कि रामेश्वरी उसकी मां के पास बैठी है। वह वहां गया और उसे बुला लाया। रामेश्वरी आयी, तो सुन्दरदास ने हाथ जोड़कर नमस्ते करते हुए गोपीशाह से कहा, "मैं आपसे पुन: मिलूंगा।"

"इस परिचय के उपरान्त तो मैं भी आपसे मिलने की इच्छा करने लगा हूं।"

"तब ठीक है। बीस निस्बत रोड पर आप कभी भी सायं चार बजे से सात बजे तक आ सकते हैं। मैं भी आपसे मिलना चाहूंगा।"

जब सुन्दरदास चला गया, तो गोपीशाह कृष्ण को लेकर अपनी बैठक में चला गया। उसे बैठाकर उसने कहा, "तुम्हें हमारे परस्पर वार्तालाप के विषय में नहीं पूछना चाहिए था। मेरे साथ पृथक् में बात करनी चाहिए थी। मैं तुम्हें बता देता कि क्या बात हुई है।"

"पिताजी!" कृष्णचन्द्र ने कहा, "मैंने यह नहीं पूछा कि क्या बात हुई है। मैंने तो यह जानना चाहा था कि जो बात वह करना चाहता था, वह हो गयी है अथवा नहीं। उसे हां अथवा न में ही उत्तर देना चाहिए था। यह उसने व्यर्थ में ही कह दिया था कि वार्तालाप गुप्त है।"

पिता समझ गया था कि उसका लड़का भी उसकी भांति ही युक्ति करता है। इसलिए वह प्रसन्न था। उसने कहा, "देखो, तुम मेरे कारोबार में काम करते हो। इस कारण मैं तुम्हें उसकी बात बताऊंगा। वह मुझसे यह कहने आया था कि उसके साझेदारी में एक कम्पनी चलाऊं। मैंने अभी तक उसकी बात स्वीकार नहीं की। मैंने उसे यह बताया है कि मैं व्यक्तिगत व्यवसाय में विश्वास रखता हूं, परन्तु मैंने उसके प्रस्ताव को अभी रद्द भी नहीं किया है। हां, मैंने उसे अपने मन की बात बता दी है।

"मैंने कहा है कि मेरी पूर्ण सम्पत्ति में कुछ तो तुम्हारा वेतन और कुछ घर के प्राणियों का एलाउंस जमा है। शेष जितना बचेगा, उसमें से दस प्रतिशत अपने परिवारवालों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
देकर शेष मैं दान-दक्षिणा में दे देना चाहता हूं। मैं प्रतीक्षा कर रहा हूं कि तुम अनुभव प्राप्त कर घर-गृहस्थी चलाने लगो, तो वह दान-दक्षिणा का काम तुम पर छोड़कर स्वयं संन्यास ले लूं।

"इस प्रकार हम दोनों ने अपने-अपने मन की बात बतायी है और वह अभी तक किसी निश्चित स्तर तक नहीं पहुंचा। मैंने उससे कहा है कि उसे भी अपनी आय से कुछ धर्मार्थ निकालना चाहिए। उसने इसका कुछ उत्तर नहीं दिया।''

"और," कृष्णचन्द्र ने पूछ लिया, "वह व्यापार में कितना धन लगाने की बात कर रहा है?"

"उसने कहा है कि प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी के कम-से-कम 'शेयर होल्डर' होने चाहिए। जो-जो जितनी पूंजी लगानी चाहेंगे, अपने परिवार के उतने घटक उसमें सम्मिलित कर लेंगे।"

"मैंने यह भी पूछ था कि किस बात की कम्पनी खोली जाये, तो उसने बताया कि साहूकारे के काम की। बाद में, कोई मिल या कारख़ाना भी चलाया जा सकता है।"

"बस, यहीं तक बात हुई है। तुम भी विचार करो और बताओ, तुम्हारे मित्र से साझेदारी करनी चाहिए अथवा नहीं। तुम्हारी मां से भी बात करूंगा।"

बस, इतनी बात हुई? कृष्ण भी विचार करने लगा कि क्या होना चाहिए?

:5:

कृष्ण की पक्की सगाई हो गयी। जिस दिन पक्की सगाई की रस्म मनायी गयी, उस दिन बिरादरी वालों और सम्बन्धियों को भी निमन्त्रण भेजा गया।

कृष्ण का श्वसुर भी एक वकील था। उसकी लड़की शकुन्तला दसवीं श्रेणी तक पढ़ी थी। दोनों पक्ष के लोग एकत्र हुए और कृष्णचन्द्र तथा उसकी बहिनों, भाइयों तथा अन्य सम्बन्धियों को बहुत कुछ दिया गया। साथ ही विवाह की तिथि भी निश्चित हो गयी।

इस दिन सुन्दरदास भी आया हुआ था। रस्म के उपरान्त सुन्दरदास ने ही कृष्णचन्द्र से पूछा, "अब और पढ़ोगे? लॉ कॉलेज का प्रवेश अगले महीने पन्द्रह तारीख़ को होने वाला है।"

"मैं आगे नहीं पढ़ूंगा।"

"क्यों?"

"मैंने पढ़ाई के विषय में विचार किया है और पिताजी से सलाह की है। हमारा दोनों का यही मत है कि मुझे क़ानून को समझने की बुद्धि होनी चाहिए और उसका प्रयोग आना चाहिए। परीक्षा उत्तीर्ण करने की आवश्यकता नहीं है। इसके लिए घर पर अध्ययन करूंगा।"

"और मेरे प्रस्ताव के विषय में कुछ बात हुई है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां! उन्होंने आपकी बात को जैसे समझा है, वैसा बता दिया है, परन्तु अपने मन की बात नहीं बतायी। पिताजी कह रहे थे कि मेरे विवाह के उपरान्त आपसे पुनः मिलेंगे।"

"तुम्हारे श्वसुर लाला गिरिधारीलाल एक दिन तुम्हारे विषय में पूछ रहे थे।"

"क्या पूछ रहे थे?" कृष्ण ने उत्सुकता से पूछ लिया।

"यही कि तुम मुझसे मिलते रहते हो और मैं तुम्हारे विषय में क्या जानता हूं। तुम आगे क्या करना चाहते हो?"

कृष्ण ने बताया, "वह एक दिन मुझे भी मिले थे और अपनी गाड़ी में बिठाकर सैसिल होटल में चाय पिलाने ले गये थे।"

"वहां की चाय स्वाद थी?"

"चाय के बर्तन तो बहुत बढ़िया थे। मेज़-कुरसियां भी आराम देती थीं, परन्तु चाय तो घर पर अधिक स्वाद होती है।"

"कभी पिलाओ, तो पता चले।"

"अभी चलिये! माताजी बनाकर पिला देंगी।"

शकुन सीतला-मन्दिर में मिला था और वे मन्दिर के बाहर खड़े बात कर रहे थे।

कृष्ण घर पहुंचा, तो उसके माता-पिता, भाभियां, भाई और बच्चे वहां पहले से ही पहुंचे हुए थे। आज गोपीशाह ने घर के सब प्राणियों को पांच-पांच मुहरें दीं। उत्तमचन्द ने कह दिया, "ऐसा प्रतीत होता है कि पिताजी कृष्ण के विवाह के उपरान्त संन्यास लेने वाले हैं।"

गोपीशाह हंस पड़ा और बोला, "तुमने अपने आज तक के जीवन में पहली बार कुछ अक्ल की बात कही है।"

"तो आप सच ही संन्यास ले रहे हैं।"

"तुम्हारी माता से नहीं। हां, तुमसे और ज्ञानचन्द तथा रामचन्द्र से संन्यास लेने का विचार कर रहा हूं।"

"उस समय भी मुहरें बांटेंगे?" उत्तमचन्द का अगला प्रश्न था।

"हां, मुट्ठी भर-भरकर।"

"तब ठीक है!"

"क्या ठीक है?" उत्तमचन्द की पत्नी माया ने पूछ लिया।

"यही कि तुम कभी लड़ोगी, तो घर से निकाल सकूंगा।" उत्तमचन्द ने हंसकर कह दिया।

"वह तो आप अब भी निकाल सकते हैं।"

गोपीशाह ने हंसते हुए कहा, "ठीक है, निकाल सकता है, परन्तु उत्तम, तुम्हारी पत्नी तुमसे अधिक धनवान् होगी और तुम्हारे वेतन की चिन्ता नहीं किया करेगी।"

"पिताजी! तब तो और भी ठीक होगा। आख़िर मुझे भी तो कुछ देंगे ही?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छा, सुनो! कृष्ण के श्वसुर लाला गिरिधारीलाल कह रहे थे कि मुझे शहर की चार-दीवारी से बाहर कहीं मकान लेकर रहना चाहिए। इसके साथ ही मैं विचार कर रहा हूं कि कृष्ण के विवाह से पहले ही मैं अपनी सम्पत्ति का बंटवारा कर दूं। तब तुम अपने-अपने मकान जहां चाहो, बना सकोगे।"

"पिताजी! मैंने इस विषय में विचार किया है और एक योजना बनायी है।" उत्तमचन्द ने बात बता दी।

"तब तो तुम में बुद्धि का विकास होने लगा है।"

"वह तो पहले भी था। अब तो केवल उसको प्रकट करने का अवसर मिला है।"

"ठीक है और ज्ञानचन्द तुम?" गोपीशाह ने अपने दूसरे लड़के से पूछ लिया।

"मुझे तो दादा की बात फ़ज़ूल ही समझ आ रही है। मैं रेलवे रोड पर रहता हूं और विचार किया करता हूं कि वहां रहता हुआ भी मूर्खता कर रहा हूं।"

"क्या मूर्खता कर रहे हो? खुली हवा में रहते हो।" उत्तमचन्द का प्रश्न था।

"खुली हवा में रहने की नहीं, वरन् मां से पृथक् मकान में रहने की, परन्तु समझ नहीं आ रहा कि दस हज़ार का मकान लिया है, वह किसको देकर इस मकान में आ जाऊं?"

"ज्ञान, वह मकान मुझे दे दो।" उत्तमचन्द ने कह दिया।

"परन्तु तुम्हारे पास दस हज़ार रुपया है, जो मकान लेना चाहते हो?"

"भैया, मकान तो तुम्हारा ही रहेगा और तुम अपने ग़रीब भाई से मकान का भाड़ा नहीं लोगे।"

ज्ञानचन्द हंस पड़ा और बोला, "विचार करूंगा।"

बात गोपीशाह ने कह दी। उसने कहा, "कृष्ण! तुम्हारा श्वसुर कह रहा है कि तुम्हारे लिए एक मकान निस्बत रोड पर ले दूं। यदि तुम विवाह के पहले ही उस मकान में चले जाओ, तो वह और तुम्हारी पत्नी बहुत प्रसन्न होंगे।"

कृष्ण ने कुछ नहीं कहा और पिताजी का मुंह देखता रह गया।

धनवती ने बन्द करने के लिए बात कही, "कल से घर पर दर्ज़ी बिठा दीजिये। बहू के लिए कपड़े बनवाने हैं।"

"और आभूषण?" गोपीशाह ने पूछ लिया।

"आभूषण मेरे पास हैं। उनको सुनार से धुलवाना पड़ेगा।"

रात में जब सब सो गये, तो धनवती ने पति के कमरे में आकर पूछा, "तो आप सचमुच ही संन्यास ले रहे हैं?"

"हां, पुत्रों से। तुम से नहीं। तुम मेरे साथ रहोगी।"

"तो यह संन्यास होगा?"

"हां! संन्यास का अभिप्राय है त्याग। वह त्याग लड़कों का होगा, तुम्हारा नहीं। मुझे कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा है कि हम दोनों सौ वर्ष की आयु तक जीवन का भोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करेंगे।"

"यह कैसे हो सकेगा?"

"मैं कृष्ण के लिए कल निस्बत रोड वाली कोठी देखने जाऊंगा। यदि वह कुछ बड़ी हुई, तो विवाह वहीं होगा।"

"परन्तु तहख़ाने की वस्तुएं और फिर उसमें रखे लोगों के आभूषण?"

"हां, उसका प्रबन्ध करना है, परन्तु पहले निस्बत रोड वाली कोठी देखनी है।"

"मैं भी उसे देखने आपके साथ चलूंगी।"

इस समय कृष्णचन्द्र भी वहां आ गया। पिता ने उसकी ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखा, तो उसने पूछ लिया, "पिताजी! क्या हुआ है?"

"मेरी जीवन-मीमांसा की परीक्षा का समय आ रहा प्रतीत होता है। वैसे तो, मैं पहले ही यह विचार कर रहा था कि अब मुझे अपने जीवन में करवट लेनी चाहिए। यह इसलिए नहीं कि मैं जो कुछ कर रहा था, वह भूल लगती थी, वरन् इसलिए कि मैं अपने जीवन के परम उद्देश्य के लिए विचार कर रहा था। तुम्हारी मां जानती थी कि मैं एक दिन यह सब कुछ छोड़-छाड़कर इस घरेलू जीवन से पृथक् होना चाहता हूं। बात केवल यह हुई कि तुम्हारे श्वसुर ने अपनी लड़की से प्रेमवश उसकी सुख-सुविधा के लिए उसे पूर्ण परिवार से पृथक् कर देने का आग्रह किया है। मैं भी कुछ ऐसा ही विचार करने लगा हूं।"

"आप जो कुछ करना चाहते हैं, अपने समय पर कीजिये। उसके लिए समय से पूर्व कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं। यदि ऐसा करने में सगाई टूटती है, तो टूट जाये। इसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए।"

"कृष्ण! मैं समझता हूं कि उनकी बात स्वीकार न करने पर सगाई तो नहीं टूटेगी, हां, एक कटुता उत्पन्न हो जायेगी। अपने कार्यक्रम को कुछ वर्ष पहले आरम्भ करके, मैं इस थोड़ी-सी बात के लिए, कटुता उत्पन्न करना नहीं चाहता।"

"तो क्या करना चाहते हैं?" धनवती का प्रश्न था।

"अभी नहीं बताऊंगा। वह अभी मन में स्पष्ट भी नहीं है। कल उस कोठी को देखने जाने के लिए तैयार हो गया हूं। उसे देखकर ही अपनी योजना को अन्तिम रूप दूंगा।"

धनवती को अपने पति की सूझ-बूझ पर अगाध विश्वास था। इसलिए वह सन्तुष्ट होकर बोली, "ठीक है, कृष्ण तो साथ जायेगा ही। उसके लिए ही तो मकान लिया जा रहा है। मैं भी साथ चलूंगी, जिससे मैं भी अपना सुझाव दे सकूं।"

इस प्रकार अगले दिन मध्याह्न के समय नियत स्थान पर गोपीशाह, धनवती और कृष्णचन्द्र लाला गिरिधारीलाल से मिले और भाड़े की गाड़ी में निस्बत रोड की बिकाऊ कोठी को देखने चल पड़े। कोठी निस्बत रोड ओर मैक्लाड रोड के संगम पर थी। दोनों सड़कों पर उसका मुख था। बड़ी कोठी थी, तेरह-चौदह कमरे थे। ड्रांइगरूम, किचन, डाइनिंगरूम इत्यादि पृथक्-पृथक् थे। कोठी का मालिक भी उस समय वहां उपस्थित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। कोठी को देख गोपीशाह ने कह दिया, "कोठी किसी अंगरेज के रहने के योग्य है। एक हिन्दुस्तानी परिवार के लिए उपयुक्त प्रतीत नहीं होती।"

कोठी देखने के उपरान्त गोपीशाह ने गिरिधारीलाल को पृथक् में खड़ा कर पूछ लिया, "आपने अपनी लड़की को यह दिखायी है?"

"जी हां! उसने पसन्द की है।"

"परन्तु इतनी बड़ी कोठी में वह अकेली तो नह ीं रह सकती। इतनी बड़ी कोठी के लिए उसे अनेक सेवक-सेविकाएं रखने पड़ेंगे अथवा पूरे परिवार को यहां लाकर रखना पड़ेगा। साथ ही कोठी सुरक्षित भी नहीं है। कोई भी कोठी की चार-दीवारी लांघकर कोठी में आ सकता है। आप कहते हैं कि कोई सरकारी अफ़सर इसमें रहता था। मैं उसका मुक़ाबला नहीं कर सकता। मैं शासक श्रेणी का नहीं हूं, जिससे चोर डाकू यहां आने से भयभीत हों। फिर मेरे पास बन्दूक-पिस्तौल भी नहीं। इस पर भी मैं इस कोठी को ले सकता हूं, परन्तु यहां आने के पूर्व इसमें परिवर्तन कराने पड़ेंगे। यह सब विवाह के दिन तक नहीं हो सकेंगे।"

गिरिधारीलाल ने कहा, "ठीक है, इस पर भी मैं चाहूंगा कि शीघ्रातिशीघ्र उस शहर के भीतर की चूहेदानी से निकल आयें, तो ठीक है।"

गोपीशाह ने कह दिया, ''वह कोठी मैं कृष्णचन्द्र की पत्नी शकुन्तला के नाम पर ख़रीद लूंगा और चाहूंगा कि जब यह रहने योग्य हो जाये, तो वह अपने पूरे परिवार को यहां आने का निमन्त्रण दे दे। जो उसके साथ आना चाहेगा, वह आ जायेगा।"

चाहता गिरिधारीलाल भी था कि कोठी शकुन्तला के नाम ख़रीदी जाये, लेकिन वह अपना मुंह नहीं खोल सका। इस पर भी उसने बात रखने के लिए कह दिया, "मैं समझता हूं कि कोठी शकुन्तला के नाम ख़रीद देने के स्थान पर कृष्णजी के नाम पर ख़रीदी जाये।"

"यह उसकी इच्छा पर हो सकता है। देखिये लालाजी! आप घर जाकर लड़की से पूछकर बताइयेगा कि वह मकान अपने नाम पर चाहती है अथवा अपने पति के नाम पर। मुझे इसमें कुछ भी आपत्तिजनक प्रतीत नह ीं होता।"

गिरिधारीलाल ने कहा, "मैं आपको कल इस विषय में लड़की की इच्छा बताऊंगा। आप मालिक को कोठी का 'बयाना' दे दें, जिससे ख़रीद पक्की हो जाये। क्या दाम मांग रहा है?"

"चालीस हज़ार रुपये।"

"आइये, उससे बात करें।"

दोनों समधी वहां आ गये, जहां धनवती, कृष्ण और कोठी का मालिक खड़े थे। बात गिरिधारीलाल ने ही आरम्भ की, "लालाजी! ठीक-ठीक दाम बता दीजिये।"

कोठी के मालिक ने कहा, "मैंने चालीस हज़ार मांगा है। यदि सौदा पक्का होता है, तो चार हज़ार कम कर सकता हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"तो छत्तीस हज़ार ठीक है न ?" गोपीशाह ने पूछ लिया।

"शाहजी ! यदि आप कहते हैं, तो मैं मान रहा हूं।"

"देखिये !" गोपीशाह ने कहा, "मैं आपको पांच हज़ार पेशगी अभी दे सकता हूं। रसीद लिखी जानी चाहिए। साथ ही मकान के काग़ज़ दिखाने होंगे।"

"ठीक है। किसी 'वसीका-नवीस' के पास चलते हैं और यह सौदा पक्का कर देते हैं।"

वहां से सब लोग महल्ला मोहलिया में गोपीशाह के मकान में चले आये। तब, शाहजी के घर का सेवक 'वसीका-नवीस' को बुला लाया और लिखत-पढ़त होने के उपरान्त शाहजी ने पांच हज़ार रुपये देकर उसकी रसीद ले ली।

:6 :

लिखत-पढ़त होते-होते सायंकाल हो गया था। उस समय तक उत्तमचन्द और ज्ञानचन्द भी आ गये थे। ज्ञानचन्द रेलवे रोड पर एक मकान में रहता था, परन्तु अपने माता-पिता से सम्पर्क बनाये हुए था। पति-पत्नी दोनों जानते थे कि पिता के पास बहुत धन है और उसमें अपना भाग बनाये रखना चाहिए। कभी किसी दिन ज्ञानचन्द को काम पर सायंकाल जाना होता था, तो पिता से मिलने में बाधा पड़ जाती थी।

ज्ञानचन्द के बच्चे स्कूल और कॉलेज में जाते थे। वे अपने मित्रों से मिलते-जुलते रहते थे।

रामचन्द्र अमृतसर में रहता था। वह सप्ताह में एक-आध दिन ही लाहौर आता था। इस पर भी उसने पिता की हवेली में अपने कमरे को ताला लगा रखा था।

आज रामचन्द्र और उसकी पत्नी अमृतसर में थे। ज्ञानचन्द अकेला ही था। उसकी पत्नी करुणा रेलवे रोड वाले मकान में ही थी।

जब 'वसीका-नवीस' और गिरिधारीलाल चले गये, तो बात ज्ञानचन्द ने ही कही। उसने पूछा, "आपने मकान ले लिया है ?"

"हां, यह मकान की ख़रीद कृष्णचन्द्र अथवा उसकी पत्नी के नाम में होगी ?"

"यह तो ठीक नहीं हो रहा।"

"यह ख़रीद कृष्ण के वेतन के धन से होगी, जो एकत्र हो चुका है। मैं समझता हूं कि उसका इससे अधिक मेरे पास जमा है।"

"और पिताजी ! मेरा क्या जमा है ?"

"वेतन के खाते में कुछ भी नहीं। तुमने मेरे काम में कभी एक तिनका भी नहीं तोड़ा। हां, पुत्र के नाम पर तुम्हारा बहुत कुछ है। वह सब, मैं एक दिन तुम लोगों को दे दूंगा।"

"और यह लेन-देन समेट लेंगे ?"

"मैं समझता हूं यह व्यापार मैं कृष्ण को दे दूंगा। वह इसे समझने लगा है और वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चाहे, तो इसे इसी रूप में चला भी सकता है। इसके अन्य कई रूप हैं। कुछ दिन हुए कृष्ण के मित्र ने भी एक रूप का सुझाव दिया था। वह कृष्ण के विचार करने की बात है। भविष्य में व्यापार अथवा उद्योग उसे ही करना है।"

"परन्तु पिताजी ! आज दुनिया में बड़े-बड़े कारख़ाने खुल रहे हैं। टाटा स्टील मिल ही है। करोड़ों रुपयों का काम है।"

"हां, मैं जानता हूं। मैंने उसके कुछ शेयर ख़रीदे हुए हैं, परन्तु वे शेयर मेरे व्यक्तिगत हैं। टाटा का कारोबार साझा है और मुझे पता चला है कि वह उसमें सरकारी सहायता मांग रहा है।"

"पर सरकार सहायता क्यों देगी ?"

"इसलिए कि सरकार की अपनी रेलगाड़ियां चलती हैं और उसके लिए लोहा-इस्पात की आवश्यकता है। अभी तक यह विलायत से मंगवाया जाता है, परन्तु दाम बहुत देना पड़ता है। रेल की पटरियां तथा डब्बों में लगने वाली चादरों के लिए टाटा से ख़रीदने में स्टील सस्ता पड़ेगा।"

ज्ञान नहीं जानता था कि उसका पिता इस विषय में इतना कुछ समझता है। वैसे रेल विभाग में यह जांच-पड़ताल हो रही थी कि कितने मूल्य का लोहे का सामान इंग्लैण्ड से आता है।

उसे यह भी विदित था कि ऊंचे स्तर पर इस नीति का विरोध हो रहा था कि सरकार किसी हिन्दुस्तानी कम्पनी को सहायता देकर उससे माल ख़रीदे। उन अफ़सरों का कहना था कि इससे इंग्लैण्ड के व्यापार में कमी होगी, परन्तु इसका एक दूसरा पक्ष भी था। वह यह कि हिन्दुस्तान में व्यापार और उद्योग में उन्नति होने से इंग्लैण्ड को हानि नहीं होगी। कारण यह कि वहां के विशेषज्ञ, इञ्जीनियर और प्रबन्धक यहां अधिक संख्या में आयेंगे, तो भारी-भारी वेतन लेकर वे हिन्दुस्तान की सब बचत को चूस कर ले जायेंगे। इसलिए सरकारी पक्ष में दो विचार के लोग हो गये थे।

वास्तव में, दोनों ठीक थे। बात यह थी कि अंगरेज यह समझते थे कि हिन्दुस्तानियों को कभी उतना तकनीकी ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता, जितना अंगरेजों को है। इस कारण व्यापार की अपेक्षा अफ़सरों के वेतन द्वारा लूटना अधिक फलदायक होगा।

कुछ अंगरेज अफ़सरों ने यहां हिन्दुस्तानी औरतों से सम्बन्ध बनाकर एक नयी 'एंग्लो-इण्डियन' जाति की सृष्टि करना आरम्भ कर दी थी। वह 'एंग्लो-इण्डियन' लोग रंग-रूप से तो अंगरेजों से मिलते थे, परन्तु बुद्धि में न अंगरेज थे, न हिन्दुस्तानी थे।

ज्ञान इस बात की चर्चा अपने विभाग में सुनता रहता था। इसलिए वह पिता की बात को समझ रहा था।

पिता कह रहा था, "मैं व्यापार में व्यक्ति को प्रधान मानता हूं। जब बहुत से लोग मिलकर किसी बोझ को उठाना चाहें, तो सम्मिलित शक्ति में प्रत्येक की शक्ति का प्रयोग उतना नहीं हो सकता, जितना पृथक्-पृथक् व्यक्ति के बोझ उठाने पर होता है। इसलिए मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चाहता हूं कि मुख्य व्यक्ति आगे हों और पीछे वाले व्यक्तियों के परिश्रम को एकत्र कर बड़े-बड़े काम चलाये जायें।''

ज्ञानचन्द अपने कुछ अफ़सरों की यह चर्चा सुन रहा था कि इंग्लैण्ड और जर्मनी में एक-एक कारख़ाने में बीस-बीस, तीस-तीस हज़ार कर्मचारी काम करते हैं, परन्तु उसमें इतनी बुद्धि नहीं थी कि वह पूंजीपतियों की युक्तियों को पिता के सम्मुख रख सके। इसलिए वह चुप कर गया।

परन्तु कृष्णचन्द्र ने कह दिया, "ज्ञान भैया! तुम यह विद्या नहीं जानते, इसलिए बहस व्यर्थ है।"

"और तुम जानते हो?"

"हां, आज यूरोप में एक नया विचार उत्पन्न हुआ है। वह है 'संघ-शक्ति' का, परन्तु यह अर्थशास्त्र में बहुत हानि पहुंचायेगा।

"इस पर भी 'संघ-शक्ति' का स्वर बल पकड़ रहा है। यह बल है बहुमत का। इसका अभिप्राय है—कम पढ़े-लिखे तथा मूर्खों का हो-हल्ला। यह राजनीति में तो चल सकता है, परन्तु व्यवसाय में यह अत्यन्त हानिकर सिद्ध होगा।"

"परन्तु कृष्ण, इंग्लैण्ड और फ्रांस में तो चल रहा है।"

"कहां चल रहा है? इंग्लैण्ड में अभी तक सीमित मतदान का नियम है। स्त्रियों को मतदान का अधिकार नहीं है। साथ ही, वहां एक हाउस है। जिसे 'हाउस ऑफ़ लार्ड्ज़' कहते हैं। वह 'हाउस ऑफ कामन्स' द्वारा पारित किसी भी बात को रोक सकता है।

"फ्रांस में तो अवस्था इससे भी बुरी है। यूरोप के अन्य देशों में अभी राजे-महाराजे हैं। आर्थिक दृष्टि से जर्मनी ने बहुत उन्नति की है। वहां के राजा को कैसर कहते हैं और उसकी इच्छा सर्वोपरि मानी जाती है और अंगरेज अर्थ की दृष्टि से जर्मनी का मुक़ाबला नहीं कर सकते।

"हां, अंगरेज में एक गुण यह है कि वह प्रथम दर्जे का चालबाज़ है। उसने चालाकी को एक सुन्दर नाम दे रखा है। वह इसे 'डिप्लोमेसी' कहता है। इसका वास्तविक अर्थ है—कहना कुछ और करना कुछ और, अन्यथा जर्मनी आर्थिक दृष्टि से इंग्लैण्ड से आगे बढ़ा हुआ है।"

"इंग्लैण्ड से जापान भी कई बातों में आगे बढ़ा हुआ है।"

"परन्तु पिताजी ने टाटा के शेयर ख़रीदे हुए हैं," ज्ञानचन्द ने कहा।

अब गोपीशाह ने कहा, "शेयर का व्यापार, मेरा व्यक्तिगत व्यापार है। मैंने तीस हज़ार के शेयर ख़रीदे हुए हैं। अभी तक उसका लाभ नहीं हुआ। इस पर भी मैं लाभ की आशा करता हूं और उनको बेच नहीं रहा। यह मेरा व्यक्तिगत व्यापार है।"

कृष्ण पिता की बात को समझ रहा था, परन्तु परिवार में और कोई इसे नहीं समझता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अगले दिन से विवाह की तैयारियां होने लगीं। कृष्णचन्द्र की सास, शकुन्तला की मां आयी और अपने पति का सन्देश धनवती को दे गयी। शाहजी उस समय सट्टा-बाज़ार में गये हुए थे। कृष्ण घर पर था। वह पिता के कारोबार की कुछ लिखा-पढ़ी कर रहा था।

शकुन्तला की मां आयी, तो मां कृष्ण को बुलाने जा पहुंची, " कृष्ण! तुम्हारी सास आयी है।"

"तो फिर?"

"वह तुमसे कुछ कहना चाहती है।"

"मां, अभी दो-चार मिनट में आया। यह काग़ज़-पत्र समेट लूं, तो आता हूं। तुम शकुन्तला की माताजी को कुछ खिलाओ-पिलाओ।"

धनवती हंस पड़ी और बोली, "वह यहां का पानी नहीं पियेगी।"

"मां, ऐसी बात नहीं है। तुम पूछो तो।"

धनवती गयी, तो कृष्णचन्द्र सामने डेस्क पर रखे काग़ज़ और रजिस्टर समेटने लगा। उसे इस काम में चार-पांच मिनट लगे।

जब वह मां के कमरे में पहुंचा, तो शकुन्तला की मां कान्ता दूध पी रही थी। कृष्ण समझ गया कि उसका अनुमान ठीक है कि वह आधुनिक युग के व्यक्ति हैं।

कृष्ण ने अपनी सास के चरण स्पर्श किये और कहा, "बताइये, क्या काम है मुझसे?"

"मैं शकुन्तला के पिता का एक सन्देश लेकर आयी हूं।"

"हां, बताइये।"

"निस्बत रोड वाली कोठी शकुन्तला अपने नाम नहीं चाहती।"

"क्यों?"

"उसने मुझे नहीं बताया। पिता-पुत्री पृथक् कमरे में बातचीत करते रहे हैं। बातचीत के उपरान्त पिता ने कहा है कि मैं आपको यह बताने यहां आऊं कि कोठी की लिखत-पढ़त आप अपने नाम अथवा जिस नाम पर आपके पिताजी चाहें, करा लें।"

"परन्तु माताजी, पिताजी ने ही तो कहा है कि रजिस्ट्री शकुन्तला के नाम हो सकती है।"

"नहीं, शकुन्तला ऐसा नहीं चाहती। उसने कहा है कि वह उसे स्वीकार नहीं करती।"

कृष्ण मन-ही-मन इससे प्रसन्न था। इस पर भी वह जानना चाहता था कि इस निर्णय लेने में शकुन्तला के मन में क्या कारण क्या है, जो शकुन्तला की मां बता नहीं रही थी।

इसलिए कृष्ण ने कह दिया, "पिताजी बाज़ार गये हुए हैं। आयेंगे, तो कह दूंगा। वैसे पिताजी चाहते थे कि रजिस्ट्री एक-दो दिन में हो जाये, तो वहां जो रद्दो-बदल कराना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है,वह कराना आरम्भ कर दें। कुछ बातों की स्वीकृति कमेटी से लेनी पड़ेगी। इसमें भी समय लगेगा।"

धनवती शकुन्तला की मां को दर्जियों के पास ले गयी और लड़की के कपड़ों के बनवाने की बात करने लगी।

गोपीशाह बाज़ार से लौटा, तो उसने बताया, "टाटा के शेयर की क़ीमत बढ़ रही है।"

"तो आप उनको बेचने वाले हैं ?" कृष्ण ने पूछा।

"नहीं! मैंने हिस्से बेचने के लिए नहीं ख़रीदे। मैं इस उद्योग में अपना सहयोग देना चाहता हूं। मैं समझता हूं कि यह उद्योग देश के लिए लाभकारी सिद्ध होगा।"

अब कृष्ण ने बताया कि शकुन्तला की मां आयी थी और कह गयी है कि लड़की कोठी की रजिस्ट्री अपने नाम नहीं चाहती।

"तो तुम्हारे नाम चाहती है ?"

अब कृष्ण ने अपनी सास के शब्द दुहरा दिये। उसने बताया कि वह कहती थी कि शकुन्तला कोठी अपने नाम कराना नहीं चाहती। वह किसके नाम हो, अब आप जानें और आपका काम जाने।

गोपीशाह हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, "मेरे परिवार में एक विलक्षण व्यक्ति आ रहा है। वह कुछ-कुछ तुम्हारी मां के विचारों से मिलती-जुलती प्रतीत हुई है। अच्छा कृष्ण! तुम कल कोठी के मालिक के साथ जाकर 'वसीका-नवीस' से मिल लो और रजिस्ट्री के दस्तावेज़ मुकम्मल करा कर कोठी अपने नाम करा लो।"

"पर पिताजी!" कृष्ण ने कहा, "मैं इसे अपने नाम नहीं कराना चाहता।"

"क्यों ?"

"मुझे इसमें कुछ तत्त्व प्रतीत नहीं हो रहा है; क्योंकि लाला गिरिधारीलालजी को अथवा उनकी लड़की को लाभ प्रतीत हुआ है, इसलिए मैं भी इसमें लाभ समझूं, मुझे यह युक्ति समझ नहीं आ रही।"

"परन्तु कृष्ण! मैं कल उनके सामने कह चुका हूं कि यह कोठी उनकी लड़की अथवा तुम्हारे नाम करवा दूंगा।"

"आप क्यों मान आये थे, यह मैं नहीं जानता, परन्तु मैं नहीं मानता। मैं उनका हमारे पारिवारिक विषय में हस्तक्षेप अनुचित मानता हूं।"

"परन्तु मैं यह तुम्हारे वेतन के जमा धन में से ही तुम्हारे लिए ख़रीद रहा हूं।"

"अभी आप अन्य किसी को वेतन दे नहीं रहे। जब सबको देने लगेंगे, तो मैं भी ले लूंगा।"

"देखो कृष्ण! विवाह के तुरन्त बाद मैं अपनी जमा पूंजी को बांट देना चाहता हूं और यह कोठी उसी बंटवारे का आरम्भ है।

कृष्ण कह नहीं सका कि दूसरों को वेतन और अन्य रूप में धन न दिया जाये। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चुप रहा, परन्तु अपने विषय में विचार करने लगा कि विवाह के उपरान्त वह माता-पिता और भाई-भावजों से कैसा व्यवहार करेगा।

कोठी में परिवर्तन और नया निर्माण, विवाह के उपरान्त तक चलता रहा। शकुन्तला की डोली पुराने मकान में ही आयी।

गोपीशाह की हवेली बहुत बड़ी थी, परन्तु उसका परिवार भी बहुत बड़ा था। विवाह के अवसर पर घर के दूर-दराज़ के सब सम्बन्धी भी आये हुए थे। इसलिए शकुन्तला को विवाह के उपरान्त पति की संगत नहीं मिली थी। वह स्त्री-वर्ग के साथ ही सोती थी।

अभी परिवार के सब लोग विदा नहीं हुए थे कि गोपीशाह कृष्णचन्द्र को लेकर अपने कार्यालय में बैठ गया और बही-खाते से पूर्ण सम्पत्ति का वृत्तान्त तैयार कराने लगा। कृष्ण के वेतन का बकाया तैंतालीस हज़ार रुपये के लगभग बनता था। धनवती का बकाया आठ हज़ार रुपये बना था। लगभग इतना ही माया और करुणा इत्यादि का भी बना था।

कृष्ण के अतिरिक्त लड़कों के नाम कुछ भी जमा नहीं था; क्योंकि उनको वेतन नहीं दिया गया था। शाहजी के विचार में उन्होंने परिवार की सेवा कभी नहीं की थी।

पूरी सम्पत्ति, वेतन देकर तथा उस सम्पत्ति का अस्सी प्रतिशत दान-दक्षिणा में निकालकर, एक लाख छियासठ हज़ार रुपये के लगभग शेष थी। वह राशि शाहजी ने परिवार के तीस प्राणियों में बराबर-बराबर बांट दी। एक भाग लगभग पांच हज़ार पांच सौ रुपया बना। महल्ला मोहलिया वाली हवेली उत्तमचन्द को मिल गयी और ज्ञानचन्द तथा रामचन्द्र को नगर में एक-एक मकान और कुछ नक़द मिल गया।

शेष नक़द दान-दक्षिणा में गया। वह राशि लगभग आठ लाख रुपये थी।

जब सब गिनती हो गयी, तो विवाह के दस दिन उपरान्त शाहजी ने परिवार के सब सदस्यों को बुला लिया और उनको बताया, "मैं अपना वर्तमान कार्य बन्द कर रहा हूं। मैंने बताया था कि वे पारिवारिक सदस्य, जो परिवार की सेवा करते रहे हैं, उनका मैंने अपने विचार से वेतन निश्चय किया हुआ था। वेतनधारियों में हैं—कृष्ण, उत्तमचन्द की मां और उसकी पत्नी माया, रामचन्द्र की पत्नी सुशीला, ज्ञानचन्द की पत्नी करुणा, सिद्धराम की पत्नी मोहिनी, गेंदाराम की पत्नी सुहागिन। इनके वेतन में जमा राशि मैंने गिन ली है। कृष्ण के हिसाब में तैंतालीस हज़ार छह सौ रुपये बनता है। उसमें से छत्तीस हज़ार की कोठी ले दी है और दो हज़ार के लगभग ठीक कराने में लगा है। शेष पांच हज़ार रुपये, मैं कृष्ण को दे रहा हूं।

"इसी प्रकार उत्तमचन्द की मां के हिसाब में आठ हज़ार चार सौ रुपये बने हैं। उत्तमचन्द और रामचन्द्र की पत्नियों के हिसाब में भी आठ हज़ार दो-दो सौ रुपये जमा हैं। सिद्धराम और गेंदाराम की पत्नियों के पांच हज़ार पांच-पांच सौ रुपये जमा हैं। यह दोनों परिवार में बाद में सम्मिलित हुई थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"इन सब रुपयों के मैंने चैक काट दिये हैं। अपना भाग भी मैंने निकालकर पृथक् कर लिया है।"

"पिताजी!" उत्तमचन्द ने पूछ लिया, "वह भी बता दें, आपने कितना निकाल लिया है?"

गोपीशाह हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, "मैंने अपना वेतन उस दिन से गिना है, जिस दिन से मैंने अपने लालाजी की दुकान की मुनीमी छोड़ी थी। पहले मैंने अपना वेतन पचास रुपये महीना बांधा था। दो वर्ष के उपरान्त वह एक सौ रुपये कर दिया था और जब से उत्तम का विवाह किया है, मैं पांच सौ रुपये महीना निकालता रहा हूं। लगभग पचास रुपये महीना घर के ख़र्च में देता रहा हूं। वह सब निकालकर मेरा इस समय अपने कारोबार से वेतन के हिसाब में बीस हज़ार रुपये के लगभग बनता है। इनके मूल्य के मैंने अनारकली बाज़ार के तीन मकान अपने नाम रख लिये हैं।

"गुमटी बाज़ार के दो मकान और अनारकली बाज़ार का एक मकान मैंने तुम्हारी माता को काम के वेतन में दे दिये हैं।"

"यह सब कुछ देकर मेरे पास आठ लाख तीस हज़ार की सम्पत्ति बचती है। इसका अस्सी प्रतिशत मैंने दान देने का फ़ैसला किया है। जो छह लाख चौंसठ हज़ार के लगभग बनता है। शेष एक लाख छियासठ हज़ार के लगभग बचता है, वह मैं घर के सब प्राणियों, छोटे-बड़ों में, जो मेरे साथ सीधा सम्बन्ध रखते हैं, बराबर-बराबर बांट रहा हूं। मेरे परिवार में छोटे-बड़े तीस प्राणी हैं। इनमें से प्रत्येक को लगभग पांच हज़ार पांच सौ रुपये मिल जायेंगे।".

"तो इसका अभिप्राय यह है कि मुझ लाखोंपति के बेटे को केवल पांच हज़ार मिलेगा," उत्तमचन्द ने उद्विग्न होकर कहा।

"तो इसे भी छोड़ दो।"

"क्यों?"

"इसलिए कि तुम लखपति के बेटे को पांच हज़ार की क्या परवाह हो सकती है?"

सब हंसने लगे। धनवती ने कहा, "देखो उत्तम! तुम, तुम्हारी पत्नी, तुम्हारी लड़की, दो पुत्र और दो पतोहुएं, सब सात प्राणी हुए और सबका उनतालीस हज़ार के लगभग बना। इतना तुम जीवन-भर में भी पैदा नहीं कर सके।"

उत्तमचन्द की पत्नी माया बोल उठी, "माताजी! इनकी बात का विचार न कीजिये। ये नहीं जानते कि क्या कह रहे हैं।"

अन्य किसी ने आपत्ति नहीं की। प्रायः सब जानते थे कि सबको आशा से अधिक मिल रहा है, अन्यथा यह सम्पत्ति पिताजी की अपनी पैदा की हुई है। यदि वह कुछ भी न दें, तब भी वे झगड़ा नहीं कर सकते।

कृष्णचन्द्र की पत्नी शकुन्तला भी बैठी सुन रही थी। वह अपने श्वसुर की न्याय-बुद्धि को देखकर चकित हो रही थी। उसके पिता लाला गिरिधारीलाल ने कहा था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कि शाहजी सर्वथा अनपढ़ हैं। वह क़िस्मत के धनी हैं, जिस वस्तु को हाथ लगाते हैं, वह सोना हो जाती है।

गिरिधारीलाल का यह भी कहना था कि अपने पति से कहकर वह पिता की गतिविधियों को अपने हाथ में करने का यत्न करे, जिससे भाग्य का भरोसा करने पर धोखा खाने से पहले जितना बचा सके, बचा ले।

परन्तु शकुन्तला देख रही थी कि यह अनपढ़ों अथवा केवल भाग्य पर जीने वालों की बात नहीं है। यह व्यक्ति बहुत ही तीक्ष्ण बुद्धि रखता है। शकुन्तला को देख गोपीशाह ने कह दिया, "बेटी शकुन्तला! यह परिवार के घटकों को मिल रहा है। तुम अभी-अभी परिवार की घटक बनी हो। इसलिए तुम्हारा इसमें भाग नहीं है, परन्तु तुमको मैंने अपने परिवार की सर्वश्रेष्ठ उपज दे दी है। उसे सावधानी से प्रयोग करोगी, तो किसी दिन तुम भी कुछ ऐसा ही करने का अवसर पाओगी, जो कुछ मैंने किया है। मुझे प्रसन्नता है कि मैं साढ़े छह लाख से ऊपर धर्मार्थ दे रहा हूं।"

"पिताजी! यह धन किस स्थान पर लगाने वाले हैं?" शकुन्तला का प्रश्न था।

"कृष्ण का एक मित्र है, सुन्दरदास वकील। कल मैं उससे सलाह करने के बाद ही विचार कर सकूंगा। एक दिन पहले उससे बातचीत हुई थी। मुझे यह समझ आया था कि वह क़ानून और धर्म की बात समझता है। इसमें उससे बात करने के बाद निर्णय लूंगा।"

अब कृष्ण ने कहा दिया, "पिताजी! निस्बत रोड वाली कोठी में कब चलेंगे?"

"यह भी कल ही बताऊंगा। यदि मैं वहां न जा सका, तो तुम मुहूर्त निकलवा लेना और चले जाना।"

: 7 :

उस दिन मध्याह्न के समय शकुन्तला ने पति से पूछ लिया, "आपके पिताजी को मेरे आपके घर आने का दु:ख हुआ प्रतीत होता है।"

"नहीं तो! उनकी किस बात से तुम यह परिणाम निकाल रही हो?" कृष्ण ने पूछा।

"मुझे कुछ ऐसा समझ आया है कि मेरे पिताजी के कथन ने कि वह मेरे नाम नगर से बाहर एक कोठी ले दें, उन्हें नाराज़ कर दिया है। वह कोठी मेरे नाम पर कर देने को राज़ी हुए हैं, परन्तु उनका मानना इस सम्बन्ध को टूटने से रोकने के लिए था। मुझे तब ही यह समझ आया था कि मेरे पिताजी का विवाह से पूर्व इस प्रकार का सुझाव देना अनधिकार चेष्टा थी, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि आपके पिताजी इसे भूले नहीं हैं और उन्होंने न केवल अपने आपको हमसे पृथक् कर लिया है, अपितु पूरे परिवार को ही खण्डित कर दिया है।"

कृष्ण ने बात स्पष्ट कर दी, "उनका संन्यास लेने का विचार तो बहुत पुराना है। जब मैं नौवीं श्रेणी में पढ़ता था, तो पिताजी ने एक दिन पृथक् में बैठाकर मुझसे बहुत से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न किये थे, उसमें प्रमुख प्रश्न था, "ईमानदारी क्या होती है?" मैंने उसी समय अपनी बुद्धि और ज्ञान के अनुसार बताया था, "जो जैसा हो, उसे वैसा ही प्रकट करना ईमानदारी है।

"मेरे इस उत्तर से वह बहुत प्रसन्न हुए और कहने लगे, देखो कृष्ण, तुम बहुत समझदार प्रतीत होते हो। कम-से-कम अपने दूसरे भाइयों से अधिक बुद्धिमान् लग रहे हो। यदि इस कारण तुम अपनी पढ़ाई के साथ-साथ कुछ मेरे व्यवसाय में सहायता करो, तो तुम बहुत लाभ में रहोगे। तब मेरे यह पूछने पर कि पढ़ाई कैसे होगी, पिताजी ने कहा था—मेरे काम से पढ़ाई में हानि नहीं, वरन् सहायता मिलेगी। हां, जो समय तुम खेल-कूद तथा मित्रों से व्यर्थ की बातों में व्यतीत करते हो, वह नहीं रहेगा।

"उसी दिन उन्होंने यह भी बताया कि वह इस काम को जीवन-भर नहीं करेंगे। एक दिन इस सब को छोड़-छाड़कर पृथक् हो जायेंगे। इस पर मैंने उनसे पूछा था—तो आप कुछ काम भी करते हैं?

"नहीं करता, तो घर का ख़र्च कैसे चलता?" उनका कहना था।

"उस समय तक मेरे तीनों भाइयों का विवाह हो चुका था। तीनों काम-धन्धा कर रहे थे। बहिनों के भी विवाह हो चुके थे। सबके विवाह पर पिताजी ने खुले दिल से व्यय किया था। हमारे घर का ख़र्च कुछ अधिक नहीं था। सादा और पौष्टिक भोजन। बहुत ही साधारण वस्त्र पहनना और कोई व्यर्थ की वस्तु ख़रीदकर नहीं लाना। हमारे घर में मेहमानों का बहुत अधिक सत्कार होता है और जिस दिन कोई मेहमान भोजन के समय आ जाये, तो पूरे परिवार की एक प्रकार से दावत हो जाती है, परन्तु वैसे हर रोज़ मूंग की दाल और आम का अचार ही होता है। भोजन के उपरान्त गुड़ के सेम की एक-एक टुकड़ी। यह भी अपने बचपन से ही देखता आ रहा हूं। हमारे यहां गाय का दूध तो निरन्तर पिया जाता है, परन्तु दही, पनीर अथवा खोआ इत्यादि की वस्तुएं नहीं बनतीं अथवा लायी जातीं। हम सब मोटे, परन्तु साफ़-सुथरे वस्त्र पहनते हैं। वे घर पर ही सिले हुए होते हैं। जो भाई सरकारी कार्य करते हैं, वे अपने कोट-पायजामे, तो दर्ज़ी से सिलवाते हैं, परन्तु अन्य सब वस्त्र घर के सिले ही पहनते हैं। इस प्रकार पिताजी के विचारानुसार हम धन के व्यय को पुण्य समझते हैं।

"इस मितव्ययिता से ही यह धन एकत्र हुआ है और धन का नियम है कि बुद्धिमान् धन से धन का निर्माण कर लेते हैं। पिताजी वही करते रहे हैं, परन्तु पिताजी की यह धारणा है कि जीवन-यात्रा का लक्ष्य धन नहीं, कुछ और है।"

"लक्ष्य का क्या मतलब है?" शकुन्तला ने आश्चर्य से कहा।

कृष्ण ने कहा, "मुझसे उनकी इस विषय पर बात हुई है। वह सब प्राणियों में परमात्मा का वास मानते हैं। अतः किसी भी प्राणी के जीवन को लम्बा अथवा स्वस्थ करना वह परमात्मा को प्रसन्न करना मानते हैं। उनका यह भी कहना है कि कुछ व्यक्ति स्वयं अपने में बैठे परमात्मा की अवहेलना कर ऐसे कर्म करने लगते हैं, जिनसे परमात्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रसन्न नहीं होता, अर्थात् दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार करना, जैसा वह अपने साथ पसन्द नहीं करते। ऐसे व्यक्ति परमात्मा की रुचि के विरुद्ध कार्य करते हैं। उसके साथ वह सम्बन्ध नहीं रखते। अब वह अपने इस विचार को व्यापक रूप में व्यवहार में लाना चाहते हैं। उनका यह विचार आज से कई वर्ष पूर्व से बन रहा है। अब वह अपनी शक्ति का लाभ परिवार के भीतर सीमित न रखकर अधिक व्यापक क्षेत्र में लगाना चाहते हैं।

"इसलिए मैं जानता हूं कि इसमें तुम्हारा अथवा तुम्हारे पिताजी का किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है। यह विचार बनते हुए कई वर्ष लगे हैं और अब वह अपनी सबसे छोटी सन्तान को जीवन में स्थिर कर अपने कार्य-क्षेत्र को विस्तार दे रहे हैं।"

यद्यपि शकुन्तला इस जीवन-लक्ष्य को ठीक-ठीक समझ नहीं सकी थी, तथापि उसकी बाल-बुद्धि में यह ठीक ही प्रतीत हुआ। उसने भी कहा, "हां, मेरी माताजी भी एक दिन एक पुस्तक में से पढ़कर बता रही थीं कि जब कोई मनुष्य सब प्राणियों में एक ही आत्मा का वास समझ लेता है, तब उसे शोक-मोह नहीं रह जाता। उसे न किसी से घृणा रहती है, न किसी से विशेष प्रेम रहता है।"

"हां!" कृष्ण ने मुसकराते हुए कहा, "यह हमारे धर्मग्रन्थ वेद का वचन है। वहां कहा गया है कि सब प्राणियों में परमात्मा का वास है। इसलिए किसी को भी दुःख देना परमात्मा को नाराज़ करना है।"

"तब ठीक है," शकुन्तला का कहना था, "मुझे सन्देह हुआ था कि आपके पिताजी मुझसे नाराज़ हैं।

"नहीं, वरन् जिस दिन तुम्हारी माताजी यह कहकर गयी थीं कि तुमने कोठी अपने नाम कराने से इनकार किया है, उस दिन से पिताजी के मन में तुम्हारे लिए विशेष आदर उत्पन्न हो गया है। वह तुम्हारे पिताजी को अदूरदर्शी और तुम्हें बुद्धिमान् समझने लगे हैं।"

"अब आप क्या करेंगे ? जीवन में कुछ तो करना ही है।"

"कुछ तो कर ही रहा हूं। शेष के लिए विचार करूंगा।"

"मैं कल मां से मिलने गयी थी। पिताजी ने कहा था कि आपको वकालत पास कर लेनी चाहिए। आप-जैसे समझदार व्यक्ति के लिए उस काम में उन्नति के लिए बहुत स्थान है।"

कृष्ण हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, "मेरे एक अन्य शुभचिन्तक ने भी यही सुझाव दिया है, परन्तु पिताजी ने कहा है कि क़ानून तो पढ़ना चाहिए, परन्तु एक पेशे के रूप में नहीं, वरन् ज्ञान के रूप में। उसका प्रयोग वैसे ही करना चाहिए, जैसे ज्ञान का प्रयोग अन्य क्षेत्रों में किया जाता है।"

"कैसे किया जाता है ?" शकुन्तला का प्रश्न था।

"ज्ञान बिक्री की वस्तु नहीं है। इसे बेचने के लिए नहीं, वरन् निर्बलों की सहायता के लिए पढ़कर समझना आवश्यक है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और धन कमाने के लिए क्या करना चाहिए ?" शकुन्तला ने अगला प्रश्न किया।

कृष्ण ने कहा, "हमारे शास्त्रों में मनुष्य के लिए चार पुरुषार्थ बताये गये हैं। एक धर्म, दूसरा अर्थ, तीसरा काम और चौथा मोक्ष। तो शकुन्तलाजी! करने के लिए ये चार हैं। इनमें सबसे ऊपर धर्म है। धन दूसरे स्थान पर आता है। काम, अर्थात इच्छाओं की पूर्ति तीसरे दर्जे पर आती है और मोक्ष अन्तिम लक्ष्य है। पुरुषार्थ का मूल धर्म है। अर्थ उसके उपरान्त ही आता है। कामनाएं भी कुछ श्रेष्ठ होती हैं, कुछ मध्यम श्रेणी की और कुछ निकृष्ट। यह सब-की-सब धर्मानुसार होनी चाहिए।

"धर्म का आधार है, 'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्,' अर्थात जो बात अपने अनुकूल नहीं, वह दूसरों के साथ भी व्यवहार में नहीं लानी चाहिए। कामनाएं शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक ह्रास उत्पन्न करने वाली नहीं होनी चाहिए। शरीर, मन और बुद्धि परमात्मा की देन है। इसलिए इनमें ह्रास होने से रोकना चाहिए। ऐसी कोई कामना उत्पन्न नहीं करनी चाहिए, जिनसे इनमें ह्रास उत्पन्न हो। इससे परमात्मा प्रसन्न होता है।

"कामनाओं की पूर्ति से जो कुछ सञ्चय किया जा चुका है, उसका ह्रास होता है। इस कारण कामनाओं पर लगाम लगाकर रखनी चाहिए। इनको अर्जित की सीमा के भीतर ही रखना चाहिए।"

"परन्तु मैंने कुछ और पूछा था," शकुन्तला ने कहा।

"हां! मैं समझ रहा हूं, परन्तु इस पृष्ठभूमि पर ही मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर देने वाला हूं।"

"स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मन और स्वस्थ बुद्धि ही कर्म का आश्रय स्थान है। कर्म अर्थ का स्रोत है। अतः धर्मयुक्त कर्म करने से अर्थ की प्राप्ति होनी चाहिए।"

शकुन्तला ने मुसकराते हुए कहा, "मैं उस कर्म के विषय में ही पूछना चाहती थी कि आप क्या कर्म करना चाहते हैं? वैसे आपका शरीर स्वस्थ है। आपका ज्ञान भी मुझसे अधिक है, अर्थात आपका मन भी स्वस्थ है, बुद्धि भी श्रेष्ठ प्रतीत होती है, तो आप क्या कर्म, मेरा अभिप्राय है, क्या व्यवसाय करेंगे?"

"यह पिताजी के निर्णय लेने के उपरान्त कल बताऊंगा। यदि पिताजी ने अपनी योजना में मेरी सहायता मांगी, तो बता दूंगा और उस सहायता के उपरान्त मेरा क्या कुछ फ़ालतू रह जाता है, उसे जानकर ही निश्चय करूंगा।"

शकुन्तला समझ गयी कि पति अपने पिता के कार्य में सहायता करना धर्म समझेगा और उसके उपरान्त ही, जो कुछ समय बचेगा, उसमें जीविका अर्जन करने का यत्न करेगा।

इस पर वह गम्भीर विचार में निमग्न हो गयी। कृष्ण ने उसे मौन एवं विचार-मग्न देख पूछ लिया, "क्यों, क्या विचार कर रही हो?"

शकुन्तला ने बताया, "मैं पिताजी के घर में बढ़िया पहनना, स्वादिष्ट भोजन,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सुखकारक सामान, घोड़ागाड़ी और फिर समय-समय पर नाटक इत्यादि का भोग करती रही हूं। मैं यही विचार कर रही हूं कि ये सब आपकी जीवन-मीमांसा के अनुकूल होंगे अथवा नहीं।"

"हो भी सकते हैं और नहीं भी। यदि ये सब धर्मानुसार और अपनी सामर्थ्यानुसार होंगे, तो इनमें कौन आपत्ति कर सकता है?"

यद्यपि शकुन्तला सर्वथा आश्वस्त नहीं थी, तथापि इस पर उसे सन्तोष ही हुआ। एक बात, जो उसने पिछले दस-बारह दिन में अनुभव की थी, वह भोजन सम्बन्धी थी। उसने कह दिया, "मैं एक ही प्रकार का भोजन दिन और रात खाती-खाती ऊब चुकी हूं। प्रात:-सायं मूंग की दाल और आम का अचार अब खाने को जी नहीं चाहता।"

"देखो शकुन्तला! एक-दो दिन में हम कोठी में चले जायेंगे। वहां तुम घर की और भोजनालय की स्वामिनी होगी। तुम अपने साधनों में, जो चाहोगी, भोजन बना सकोगी। पिताजी के संन्यास लेने के साथ मां भी संन्यास ले लेंगी। तब तुम अपने मन-पसन्द भोजन बना सकोगी। केवल धर्म, स्वास्थ्य और साधनों का ध्यान रखना पड़ेगा।"

"धर्म का क्या अर्थ है? क्या मूली-गाजर और अण्डे-मांस में भी धर्म निर्णायक होगा?"

"अण्डे और मांस खाने में अधर्म नहीं है, वरन् इनके उपलब्ध करने में है। भोजन उपलब्ध कराने में धन की उपलब्धि पर विचार करना होगा।"

इस सिद्धान्तात्मक बात को कार्यरूप में लाने का अवसर अभी नहीं था। इसलिए शकुन्तला मौन हो गयी।

परन्तु उसे विस्मय हुआ कि उसी रात खाने के समय सबकी थालियों में रबड़ी भी रखी थी।

जब शकुन्तला खाने के लिए बैठी और उसने अपनी थाली में एक कटोरी में रबड़ी, उस पर पिस्ता तथा बादाम और इलायचीदाना काटकर छिड़का हुआ देखा, तो विस्मय से पति का मुख देखने लगी। कृष्ण मुसकरा रहा था।

"तो आपने मेरी बात माताजी से कह दी है?"

"हां! मैंने यह कहा है कि मैं आज से घर में स्वतन्त्र हूं। इस कारण रसोई का प्रबन्ध मेरे हाथ में होगा और माताजी ने यह प्रबन्ध मेरे हाथ में दे दिया है। मैंने दो बातें की हैं। एक तो माताजी को सेवा-मुक्त कर दिया है। वह पिताजी के घर का काम करती थीं और उनसे वेतन पाती थीं। मैं माताजी को अपने सेवा में नहीं रख सकता। इसलिए मैंने अपने रसोईघर में एक पाचक रख लिया है। वह तब तक रहेगा, जब तक तुम किचन का चार्ज नहीं ले लेतीं और मेरे कहने पर उस पाचक ने भोजन के 'मीन्यु' में यह परिवर्तन कर दिया है।"

"कौन पाचक रखा है?"

"अपने को। आज भोजन मैंने बनाया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह! तो यह रोटियां आपने पकायी हैं? बनी तो ठीक ही प्रतीत होती हैं।"

"हां! जब मैं बनाने लगा, तो मां ने कहा, सेवक न सही, पर तुम्हारी मां बनकर तो तुम्हारा खाना बना सकती हूं। अतः मां ने सहायता करनी आरम्भ की, तो फिर माया भाभी भी आ गयी। मैंने उससे भी कह दिया था कि आज से घर का स्वामी मैं हूं। इसलिए यह काम मेरा है। तुम सब सहायता कर सकती हो, परन्तु मां-भाभी के नाते, वेतन के लिए नहीं।"

"इस पर खाना बनाया तो सबने ही है। मैंने केवल आग जलायी है।"

शकुन्तला हंस पड़ी। धनवती सदा की भांति मुसकरा रही थी। माया, करुणा इत्यादि कृष्ण का मुंह देख रही थीं। बात शकुन्तला ने ही आरम्भ की। उसने कहा, "तो आपका अभिप्राय यह है कि कल से मैं भी रसोई का कार्य करूं?"

"तुम्हारी इच्छा है, वैसे ही, जैसे मेरी इच्छा थी खाना बनाने की और घर के अन्य प्राणी मेरे साथ आकर बनाने लगे। तुम भी बनाने आ सकती हो।"

"देखो कृष्ण!" धनवती ने कह दिया, "जब तक मेरे परिवार के घटक यहां हैं, मुझे उनकी सेवा करने का अधिकार है। सेवा वेतन के बिना भी की जाती है। स्नेह के अधीन ही मैं यह कर रही हूं। यह माया इत्यादि भी इसी नाते कार्य कर रही हैं, वेतन के लिए नहीं। इनके साथ भी यही बात है। तुम्हारे पिता जब देते हैं, तो हम इनकार नहीं कर सकते। वह वेतन समझ कर दें अथवा परिवार के प्राणी समझ कर दें, यह उनके विचार करने की बात है। यह भी समझ लो कि कोई किसी की मां है, अथवा पत्नी है, यह पृथक् बात है। इसका लेन-देन के साथ सम्बन्ध नहीं है। सम्बन्ध पृथक् है और लेन-देन की बात पृथक्। यही कारण है कि लेन-देन न्यूनाधिक हो सकता है, परन्तु सम्बन्ध तो जीवन-भर के लिए एक स्थिर बात है।"

शकुन्तला समझ रही थी कि इन लोगों में आकर लेन-देन की बात करना व्यर्थ है। वह अपने पिताजी के विचार करने के ढंग और इस परिवारवालों के विचार करने के ढंग में स्पष्ट अन्तर देखने लगी थी।

अब रबड़ी खाते हुए उसने पूछ लिया, "यह आपने बाज़ार से मंगवायी है?"

"नहीं," कृष्ण ने रबड़ी खाते हुए कहा, "मैंने मां से कहा कि मैं कुछ विशेष बनाना चाहता हूं। मां ने यह रबड़ी बनायी और ऊपर से बादाम, पिस्ता और इलायचीदाना डालकर इसको यह रूप-रंग दे दिया है।"

अब शाहजी ने कहा, "तुम्हारे विवाह से पूर्व मैं एक दिन वकील साहब के घर विवाह का कार्यक्रम बनाने गया, तो उन्होंने सेवक से कहा, शाहजी के लिए चाय ले आओ। तब शकुन्तला की माताजी और अन्य बच्चे भी आ गये और इनका सेवक बहुत बढ़िया चीनी के बर्तन में, जिन पर फूल, बेल-बूटे बने हुए थे, ट्रे में रखे हुए चाय ले आया। साथ में अंगरेजी ढंग की मिठाई थी। मेरी चाय वकील साहब ने स्वयं बनायी। प्याले में दो चम्मच दूध और शेष चाय का पानी था। फिर चीनी डाल, मीठी कर पीने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लिए मिल गयी। सब बहुत स्वाद से पी रहे थे और मेरे दिमाग़ में यह विचार आ रहा था कि मैं गरम पानी पी रहा हूं अथवा दूध और चाय। इससे मुझे कड़वे पानी का ही स्वाद आ रहा था। सब कह रहे थे, चाय लिप्टन की है, बहुत स्वादिष्ट है।

"यहां कभी-कभी ही चाय बनती है। जब बनती है, तो तीन हिस्से दूध और एक हिस्सा चाय का पानी और फिर साथ खाने को कुछ नमकीन होता है। यह सब हमें स्वाद लगता है। इस कारण स्वाद स्वभाव की बात है, परन्तु खाने का उद्देश्य शरीर में बल और मांस-मेदादि बनाना पृथक् बात है। इसका स्वाद के साथ कोई सम्बन्ध नहीं होता।

"साथ ही स्वाद स्वभाव से बनता है। किसी को नमकीन पसन्द है और किसी को मीठा। पसन्द बनायी जाती है, परन्तु क्या पुष्टिकारक है और क्या हानिकारक, यह स्वाद से पृथक् बात है। यह शरीर के नियमों से होता है।"

इस प्रकार शकुन्तला इस नये घर के प्राणियों के विचार करने के ढंग को समझने लगी थी, परन्तु कृष्ण ने उस दिन प्रातः मां से कहा था, "मां, स्वाद बदलने में समय लगेगा। इसलिए जब तक स्वभाव नहीं बदलता, तब तक किसी को दण्ड देना भी ठीक नहीं।"

बस, काम बन गया और घर में रबड़ी बन गयी। शकुन्तला ने उस रात पेट-भर खाना खाया।

रात सोने के समय कृष्ण को भी समझ आया कि आज पत्नी बहुत प्रसन्न है। उसने हंसते हुए कहा, "आज तो रबड़ी का स्वाद आ रहा है।"

"मुझे भी अन्तर प्रतीत हो रहा है, परन्तु कल कुछ अन्य बनवाइयेगा। मूंग की दाल की भांति यह नित्य खाने की वस्तु नहीं है। नित्य रबड़ी खाने लगे, तो बीमार हो जायेंगे।"

"हां! यह गुण मूंग की दाल में है। मैं बचपन से अब तक इसे खाता रहा हूं और मुझे स्मरण नहीं कि मुझे कभी ज्वर भी आया हो। पेट तो कभी ख़राब हुआ ही नहीं।"

"ठीक है।" शकुन्तला ने पति के प्रति आभार प्रकट करने के लिए प्रेम से उसके अंग-संग लगते हुए कहा, "आज तो शरीर में जान आ रही प्रतीत होती है।"

: 8 :

अगले दिन से गोपीशाह ने उन लोगों को, जिनके आभूषण उसके पास गिरवी रखे हुए थे, यह कहना आरम्भ कर दिया कि वह कारोबार कृष्ण को दे रहा है। जो अपनी वस्तु उसके पास सुरक्षित नहीं समझते, वे अपनी वस्तु एक सप्ताह में छुड़ाकर ले जायें। साथ ही कृष्ण अपना मकान निस्बत रोड पर ले रहा है। जो कृष्ण से सम्बन्ध रखेंगे, उनको उससे मिलने के लिए वहीं जाना पड़ेगा।

कृष्णचन्द्र प्रायः सब ऋण लेने वालों का जाना-बूझा हुआ था। ऐसे बहुत कम ऋणी थे, जिन्होंने अपनी वस्तुएं छुड़ाने का यत्न किया। तीस हज़ार ऋण में से तीन हज़ार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ही वापिस आया था। इसका अभिप्राय यह था कि शेष वस्तुए कोठी में ले जानी थीं।

वहां पर शाहजी ने एक कोठरी में सुरक्षित स्थान भी बनवा लिया था और वस्तुएं वहां रखी जाने लगी थीं।

एक रविवार गोपीशाह कृष्णचन्द्र को लेकर सुन्दरदास की कोठी पर जा पहुंचा। दोनों साढ़े चार बजे सायंकाल वहां पहुंचे थे। सुन्दरदास उस समय टेनिस क्लब में जाने वाला था।

सुन्दरदास जाता-जाता रुक गया। शाहजी ने पूछा, "हम आपसे भविष्य में काम के विषय में परामर्श करने आये हैं। यदि आज ठीक नहीं, तो कोई अन्य दिन बता दीजिये, जिससे हम घण्टे-दो घण्टे आराम से बैठकर बातें कर सकें।"

"आइये शाहजी! मैं किसी आवश्यक काम से नहीं जा रहा था। क्लब तो कचहरी के सहयोगियों से मेल-मुलाक़ात का ही साधन है। यदि आप चाहें, तो बात अभी हो सकती है।"

अत: तीनों वकील साहब की बैठक में जा बैठे। गोपीशाह ने अपने घर के विघटन का वृत्तान्त बताकर कहा, "मैं उस साढ़े छह लाख रुपये के विषय में विचार करने आया हूं। मेरा विचार है कि यह रुपया और उससे होने वाली आय का सदुपयोग यही है कि उससे एक बैंकिंग कम्पनी खोली जाये और उसमें मुनासिब 'गारण्टी' पर, परन्तु बहुत ही कम ब्याज पर उपकारी कार्यों में धन लगाया जाये। आप बताइये, यह दान-दक्षिणा का ढंग ठीक है अथवा नहीं और यदि ठीक है, तो इसे ट्रस्ट के रूप में किस प्रकार चलाया जाये?"

"देखिये शाहजी!" सुन्दरदास ने बात समझते हुए कहा, "यह काम तो उपकारी है, परन्तु भयावह भी है। लोग धोखा देकर धन ले जायेंगे और धीरे-धीरे पूंजी समाप्त हो जायेगी।"

गोपीशाह ने कहा, "आपने दो बातें मिला दी हैं। एक तो यह कि योजना में उपकारी कार्यों के लिए पूंजी प्रस्तुत की जाये और दूसरी यह कि पूंजी को ऋण में देने अथवा कारोबार में लगाने में सावधानी की कितनी आवश्यकता है।"

सुन्दरदास समझता था कि कृष्ण के पिता क़ैंची से कतरने की भांति युक्ति करते हैं। इस कारण पहली ही बात पर जब शाहजी ने उसको निरुत्तर कर दिया, तो वह सावधान होकर बोला, "जहां तक इसके उपकारी कार्य में लगाने की बात है, वह सर्वथा ठीक है। कई देशों में सरकारें नये-नये कारोबार चलाने के लिए नाम-मात्र के ब्याज पर ऋण देती हैं, परन्तु इस प्रकार ऋण देने में सर्वत्र पूंजी की हानि होती है। सरकारें इस प्रकार की हानि सह जाती हैं; क्योंकि ऐसी हानि पूरे देश के रहने वालों में बंट जाती है।"

"यह ठीक है।" गोपीशाह का कहना था, "इस पर भी सरकारी कार्यों में सावधानी और जांच-पड़ताल उस प्रकार की नहीं हो सकती, जैसी निजी क्षेत्र में हो सकती है। साथ ही निजी क्षेत्र में धन का प्रयोग हम अपने विचार से जातीय उपकार में लगायेंगे। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण आप विचार कर बताइये कि यह कार्य ठीक है अथवा नहीं।

"दूसरी बात यह कि इसका प्रबन्धक-ट्रस्ट कैसा हो? तीसरी बात, प्रबन्ध का व्यय कितना और किस प्रकार पूरा हो?"

"तो ऐसा कीजिये। मैं आपको पूर्ण योजना बनाकर एक सप्ताह में दे दूंगा।"

"ठीक है। बनाइये और यदि आप स्वयं इसके प्रबन्ध में सहयोग देना चाहें, तो किस प्रकार दे सकेंगे, यह भी बताइये।"

"यह योजना बन जाने के उपरान्त बताऊंगा। अभी तो यह बताइये कि आप चाय लेंगे अथवा कॉफ़ी?"

गोपीशाह हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, "गाय-बैल की भांति जहां पहुंचे, खाने लगे। क्यों, यही आपकी जीवन-मीमांसा है?"

"शाहजी! यह नवीन सभ्यता के लक्षण हैं। खाते हुए दिमाग़ सही काम करता है। कई वकील तो कहते हैं कि जब वे मुक़द्दमा तैयार करते हैं, तो हलकी शराब सामने रखकर थोड़ी-थोड़ी सिप करते हुए भली-भांति विचार कर सकते हैं।"

"तो आप भी ऐसा करने लगे हैं?"

"मैं अभी मद्य के सेवन तक नहीं पहुंचा। अभी चाय और कॉफ़ी तक ही पहुंचा हूं, परन्तु अन्य लोग तेज़ी से आगे बढ़ रहे हैं?"

"वकील साहब! उनको बढ़ने दीजिये। यह ख़रगोश और कछुए की दौड़ की-सी बात होगी। हम कछुए, ख़रगोश से पहले ही लक्ष्य पर पहुंचेंगे। तेज़ भागने वाले और मद्य के नशे में विचार करने वाले पीछे रह जायेंगे।"

"इस पर भी चाय तो पी ही जा सकती है।"

सुन्दरदास ने मेज़ पर रखी घण्टी बजायी। सेवक आया, तो वकील साहब ने कह दिया, "बीवीजी से कहो, कृष्ण और कृष्ण के पिताजी आये हैं। कुछ चाय-पानी का प्रबन्ध कर दें।"

जब तक डाइनिंगहॉल में चाय इत्यादि लगायी जा रही थी, तब तक सुन्दरदास ने अपने मन में उठ रहे विचार प्रकट करने आरम्भ कर दिये। उसने कहा, "शाहजी! मुझे एक बात समझ में नहीं आयी। वह यह कि आप घर में मूंग की दाल और आम के अचार के साथ ही रोटी खाते हैं। आपका यह मीनू दिनों-दिन अनिवार्य रूप में चलता है, परन्तु आप मेहमानदारी बहुत बढ़िया करते हैं। कृष्ण की माताजी भी बढ़िया भोजन बना सकती हैं। यह मैं आपके घर पर देख आया हूं। कृष्ण के विवाह पर शान-शौक़त भी देखी है। बरात में पूरे मार्ग पर आतिशबाज़ी और गोले चलते रहे थे। बाजे भी तीन थे और नगर के सबसे बढ़िया थे। लड़की के आभूषण और वस्त्र भी, जो आपने दिखाये थे, मैंने देखे हैं। मेरी तो सामर्थ्य से बाहर के हैं। आपके जीवन और दिखावे में इतना अन्तर देखकर मन में विचार करता हूं कि यह सब किसी सही दिमाग़ का व्यवहार है अथवा विक्षिप्त मन का।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गोपीशाह और कृष्णचन्द्र दोनों हंस पड़े। गोपीशाह ने ही उत्तर दिया, "आपने समाचार पत्रों में दुकानों के विज्ञापन देखे हैं अथवा नहीं? विज्ञापन दिखाने के लिए होते हैं और व्यवहार अपने अभ्युदय के लिए होता है। दिखावा और वास्तविक हित की बात में अन्तर होता ही है।

"यही कारण है कि सर्वथा सरल जीवन रखते हुए भी मैंने लड़कों और लड़कियों के सम्बन्ध श्रेष्ठ एवं धनी-मानी लोगों के घर में बनाये हैं। घर पर सादा जीवन रखते हुए मेरे परिवार के लोग कम बीमार होते हैं। हमारा डॉक्टर-हकीमों इत्यादि पर ख़र्च बहुत कम होता है।

"कोई दुर्घटना न हो, तो मैं एक सौ वर्ष तक जीवन की आशा रखता हूं।"

सुन्दरदास ने मुसकराते हुए कहा, "तो आप देखने में कुछ और वास्तव में कुछ और लगते हैं।"

"हां! आप ठीक समझे हैं, परन्तु यह देखने वाले पर निर्भर करता है कि वह देखे कि मैं वास्तव में क्या हूं। मूर्खों के लिए मैं शाह हूं, जो आपने भी बरात देखकर जाना है, और वास्तव में मैं क्या हूं, वह आप हमारा घर देखकर समझ गये होंगे।"

"इस पर भी शाहजी! बाहर और भीतर में यह अन्तर बहुत है।"

"हां! बाहर से मैं एक फ़ुज़ूलख़र्च धनी व्यक्ति हूं, परन्तु फूहड़ और फ़ुज़ूलख़र्च कभी धनी नहीं होते। वे सदा दिवालिया होते हैं। मैं आपको एक रहस्य की बात बताता हूं। प्राय: सरकारी अधिकारी, विशेष रूप से रेलवे-विभाग के अफ़सर, जो हज़ार-हज़ार रुपये वेतन लेने वाले हैं, दो-दो, चार-चार सौ रुपये उधार लेने आते रहते हैं। मैं विस्मय करता हूं कि ये इतना वेतन कहां व्यय कर देते हैं। मैं बिना किसी प्रकार की ज़मानत के एक पैसा नहीं देता—विशेष रूप से इन अफ़सरों को, जिनकी बदली मेरे ज्ञान के बिना भी हो सकती है। वे बेचारे बहुत परेशान होते हैं और अपनी घड़ियां और क़ीमती वस्तुएं गिरवी रख जाते हैं। ये वह लोग हैं, जो बाहरी टीप-टाप की बहुत महिमा मानते हैं। मुझ-जैसा मूंग की दाल खाने वाला, तो पिछले पचास वर्ष में शून्य से लखपति बन गया है और अब मैं परिवारवालों को दे-दिलाकर साढ़े छह लाख का सदुपयोग करने की योजना बना रहा हूं।

"वकील साहब! जिस दिन मेरी सगाई हुई थी, कृष्ण के नाना हमारा मकान देखने आये थे। हमारा घर तो सर्वथा धो-पोंछकर रखा हुआ था, परन्तु उस साफ़-सुथरे घर में बिछाने की केवल दो चटाइयां और दो ही चारपाइयां थीं। मैं दस रुपये महीना लाता था। उससे मां-बेटे का भोजन कठिनाई से चलता था और मां कातने तथा बीज निकालने इत्यादि का कुछ काम कर दो-तीन पैसे नित्य पैदा करती थी, तो ही काम चलता था।

"मेरे श्वसुर ने मां को कहा कि इसका विवाह कर दो। मां ने घर दिखा दिया। इस पर भी सगाई हो गयी। वह समझता था कि जिस परमात्मा ने पैदा किया है, वह खाने को भी देगा और वह चार आने के लड्डू देकर सगाई कर गया। जिस बात ने हमारे जीवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का कांटा बदला है, वह मेरे लालाजी हैं, जिनकी दुकान पर मैं मुनीमी करता था। उनकी एक बात है।

"मैंने उनसे पचास रुपये ऋण मांगे थे। उन्होंने पूछा, क्या करोगे इन रुपयों से ? मैंने बताया कि मां मेरा विवाह कर रही है। इस पर लालाजी ने ऋण देने से इनकार कर दिया, परन्तु उसी रात जब मैं दुकान से घर आने लगा, तो लालाजी ने दस-दस रुपये के दस नोट देते हुए कहा, यह विवाह पर ख़र्च करने के लिए हैं।"

"मैंने पूछा, लालाजी ! मैंने तो पचास रुपये मांगे थे ?"

"वह कहने लगे, वे तुमने ऋण मांगे थे। मुझे विश्वास है कि तुम ऋण नहीं लौटा सकोगे, इसलिए ऋण नहीं दिया। ये सौ रुपये मैंने तुमको नहीं दिये, ये मैंने परमात्मा को दिये हैं और मैं जानता हूं कि वह इन रुपयों को ब्याजसहित लौटा देगा। वह धोखा नहीं देता। मैं चकित रह गया। विवाह के उपरान्त मैंने पत्नी से यह बात कही, तो वह बोली, तब तो हम भी उससे ही मांगा करेंगे और उसको ही दिया करेंगे।"

"बस, तब से मैं जो कुछ भी देता हूं, परमात्मा को ही देता हूं और वह इतना दयालु है कि एक-एक के दस-दस लौटा देता है।"

रामेश्वरी खाने के कमरे में चाय लगवाकर बुलाने आयी हुई थी। वह भी शाहजी की बात को ध्यान से सुन रही थी। जब गोपीशाह कह चुका, तो उसने पूछ लिया, "तो परमात्मा ने कभी धोखा नहीं दिया ?"

"नहीं," गोपीशाह ने कहा, "जब-जब भी मैंने उसका चिन्तन कर कहीं धन लगाया है, तो कई गुना होकर मुझे मिला है। इसके साथ विशेष बात यह है कि मैंने वस्तुओं का प्रयोग करते हुए भी सदैव यही ध्यान में रखा है कि वस्तु उसकी ही दी हुई है और उसका प्रयोग मितव्ययता से करना चाहिए। मुझे एक महात्मा ने बताया था कि इस पृथ्वी पर जो कुछ भी दिखाई देता है, सब परमात्मा का बनाया हुआ है। इस कारण परमात्मा की दी हुई वस्तुओं को सबमें बांटकर प्रयोम में लाना चाहिए। इससे धन का कभी अभाव नहीं होता। एक के दस-दस और कभी-कभी तो इससे भी अधिक मिलता है।"

"तो आइये, चाय ठण्डी हो रही है।" रामेश्वरी ने कह दिया।

वकील साहब और दोनों अभ्यागत रामेश्वरी के पीछे-पीछे खाने के कमरे में जा पहुंचे। वहां वकील साहब के दोनों लड़के अरुण और निरंजनकुमार बैठे सबके आने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

सेठजी भीतर गये, तो दोनों बच्चे उठकर हाथ जोड़ नमस्ते कहने लगे। वे वकील साहब के साथ कृष्ण के विवाह पर गये थे और शाहजी को पहचानते थे। कृष्ण से तो उनका बहुत अच्छा परिचय था।

कृष्ण ने बड़े लड़के अरुण से पूछा, "तुम अभी तक खेलने नहीं गये ?"

"आज हमारे स्कूल में लड़के नाटक खेल रहे हैं। हम चाय पीकर वहां जाने वाले हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कैसा नाटक खेल रहे हैं?" कृष्ण ने कुरसी पर बैठते हुए पूछ लिया।

उत्तर अरुणकुमार ने ही दिया। उसने कहा, "हमारे मास्टरजी ने एक ड्रामा लिखा है। नाटक का नाम है 'लौट के बुद्धू घर को आया'।"

"तो यह बात है? परन्तु, जो लौटकर घर आ जाये, वह बुद्धू नहीं होता। उसे तो बुद्धिमान् कहा जाता है। इसका मतलब यह है कि जाने के समय, जो भटक गया, वह बुद्धू है, परन्तु लौटकर आया, तो बुद्धू नहीं रहा। उसने बुद्धि का प्रयोग किया है, उसे बुद्धिमान् माना जाता है।"

"पर चाचाजी!" अरुण ने कृष्ण को सम्बोधन कर कहा, "था तो वह बुद्धू ही, अन्यथा भटकता क्यों?"

"हां, भटकने के समय वह भूला हुआ कहा जा सकता है, परन्तु घर आकर तो उसने यह सिद्ध कर दिया कि घर लौटने की बुद्धि रखता है। यदि उसमें बुद्धि न होती, तो वह लौट ही नहीं सकता था।

"वह भूल कर सकता था, परन्तु उसने भूल सुधार ली है और घर लौट आया है।"

गोपीशाह हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, "कृष्ण ठीक कहता है। यदि बुद्धि न होती, तो वह लौटकर कैसे आता?"

"और चाचाजी! यह बुद्धि कहां मिलती है?" अरुण ने पूछा।

उत्तर सुन्दरदास ने दिया, "बुद्धि के व्यापारी शाहजी यहां आये हुए हैं। मैं यत्न कर रहा हूं कि इनसे कुछ मोल ले लूं।"

दोनों लड़के शाहजी की ओर देखने लगे। गोपीशाह मुसकरा रहा था। अरुण ने पूछा, "बाबा! बुद्धि कितने में मिलती है?"

सब हंसने लगे, परन्तु गोपीशाह गम्भीर भाव में कहने लगा, "इसका दाम रुपये-आने-पाइयों में नहीं लिया जाता। यह परमात्मा के घर में निर्मित होती है। मैं उसके घर तक पहुंचने का मार्ग जानता हूं और उस मार्ग पर गया भी हूं। कुछ उससे मांग कर भी लाया हूं, परन्तु देने वाला परमात्मा है। वह उस मार्ग पर चलनेवालों की योग्यता देखता है और योग्यता के अनुसार ही देता है। मैं किसी स्कूल-कॉलेज में नहीं पढ़ा। इसलिए मेरे भाग में वह बहुत कम आयी है।"

"तो आपके पास वह सब नहीं है?"

"परमात्मा की सब बुद्धि तो किसी के पास भी नहीं है। सब उससे मांगकर ही पाते हैं और वह योग्यता देखकर ही देता है। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि बुद्धि वह देता है, परन्तु बुद्धि प्राप्त करने की योग्यता हममें होनी चाहिए। पहले योग्यता प्राप्त करो, फिर उसके घर तक जाने का मार्ग मैं बता दूंगा।"

"क्या योग्यता प्राप्त की जाये?"

"उस योग्यता का नाम है 'अनुशासन'। अपनी इन्द्रियों की मांग पर शासन ही अनुशासन कहलाता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय तक रामेश्वरी ने सबके लिए चाय बना दी थी। सब पीने लगे। शाहजी ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "देखो बच्चो! इन्द्रियां दस हैं—आंख, कान, नाक, जिह्वा और त्वचा। ये पांच ज्ञानेन्द्रियां कहलाती हैं और पांच हैं कर्मेन्द्रियां—हाथ, पांव, वाणी, गुदा और उपस्थ। इन दसों इन्द्रियों के पीछे इनका चौधरी है—मन। चौधरी, अर्थात मन पर शासन करने वाला। शासन को अनुशासन भी कहते हैं। इस चौधरी को अपने क़ाबू में रखो, तो सब इन्द्रियों पर क़ाबू हो जायेगा।

"देखो, मैं समझाता हूं। तुम एक मकान बना रहे हो। बनाने के लिए मज़दूर, राजगीर तथा अन्य काम करने वाले लोग हैं। उनका एक जमादार हैं। यदि वह जमादार तुम्हारे कहे अनुसार काम करे, तो वह तुम्हारे शासन में होगा। इसे अनुशासन कहते हैं। और क्या कराओ और क्या न कराओ, यह बुद्धि बताती है। बुद्धि परमात्मा देता है, परन्तु उनको देता है, जो पहले अनुशासन का अभ्यास कर लेते हैं। परमात्मा लोगों की परीक्षा लेकर जान जाता है कि मांगने वाले का अपने मन पर कितना अनुशासन है।"

अरुणकुमार अब भी नहीं समझा। वह टुकुर-टुकुर शाहजी का मुख देखता रह गया। इस पर वकील साहब ने कह दिया, "देखो, कुछ दिन हुए तुम कह रहे थे कि नगर में गौहरजान का गाना होगा। तुम मुझे और माताजी को भी चलने और गाना सुनने के लिए कह रहे थे। कचहरी में उसका गाना कराने वाले गाना सुनने के टिकट बेचने भी आये थे, परन्तु हमने फ़ैसला किया था कि नहीं जायेंगे। यह अनुशासन था। मन तो कहता था कि सुनना चाहिए। बहुत मीठी आवाज़ है, लेकिन बुद्धि ने कहा, नहीं, वह गाना सुनने योग्य नहीं होगा। बुद्धि की विजय हुई, मन की नहीं। यह अनुशासन है।"

"परन्तु पिताजी! मेरी बुद्धि तो कहती थी कि सुनने जाना चाहिए था।"

"यह तुम्हारा मन कहता था। बुद्धि तो तुममें है ही नहीं। तुम्हारी बुद्धि का काम तो अभी मैं और तुम्हारी माताजी ही करते हैं।"

"तो आपने बुद्धि परमात्मा से प्राप्त की है?"

"हां, हम नित्य उससे मांगते हैं और परमात्मा जितनी-जितनी योग्यता हममें देखता है, उतनी-उतनी बुद्धि देता जाता है।"

"मैं समझता हूं कि शाहजी को अधिक बुद्धि मिली है। इसलिए कहा था कि यह बेचते हैं और इन्होंने आज तुम्हें इसके ख़रीदने का मार्ग दिखा दिया है।"

छोटा निरंजन कुछ भी नहीं समझ रहा था। अरुण नौवीं श्रेणी में पढ़ता था और निरंजन छठी श्रेणी में था। निरंजन मज़े में छुरी से काट-काटकर पेस्ट्री खा रहा था।

चाय समाप्त हुई, तो गोपीशाह ने पूछा, "आप कब तक कुछ विचार कर सकेंगे?"

"आगामी रविवार तक।"

"तो ऐसा कीजिये कि उस दिन आप सपरिवार हमारे घर मध्याह्न का भोजन कर लें।"

इन पर रामेश्वरी ने कहा, "नहीं पिताजी! उस दिन आप, माताजी, कृष्ण और कृष्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की बहू हमारे घर पर भोजन करेंगे।"

"क्यों कृष्ण, क्या विचार है?" शाहजी ने लड़के से पूछ लिया।

"पिताजी, ठीक तो है। शकुन्तला का परिचय भाभी से करा दिया जाये, तो लाभ ही होगा। अब शीघ्र ही हम इनके पड़ोस में भी तो आने वाले हैं।"

सुन्दरदास ने पूछ लिया, "कब आ रहे हो कोठी में?"

"कोठी पर एक चौकीदार और एक माली रखे जा चुके हैं। म्युनिसिपैलिटी से गाय रखने की मंज़ूरी हो चुकी है और गाय बछड़े सहित हमारे साथ ही यहां आयेगी। मैंने कोठी में नया फ़र्नीचर लगवाया है। अभी तीन बेडरूम ही तैयार हुए हैं। एक पिताजी के लिए, दूसरा मेरे अपने लिए, तीसरा किसी मेहमान के लिए।"

"आने का मुहूर्त तो पिताजी की योजना बन जाने के उपरान्त ही बनेगा।"

"और भाइयों का क्या विचार है?"

उत्तर गोपीशाह ने दिया, "ज्ञानचन्द तो पहले ही रेलवे रोड पर पृथक् रहता है। उसने हमसे अपना सम्बन्ध बनाये रखने के लिए एक कमरे में अपना ताला लगा रखा है। रामचन्द्र प्रायः लाहौर से बाहर ही रहता था। अब चार-पांच वर्ष से वह अमृतसर में है। उसने भी अपने एक कमरे पर ताला लगाकर अधिकार किया हुआ है। अब उत्तमचन्द ने उनको एक कमरा ख़ाली कर देने के लिए नोटिस दे दिया है और वह अपने मकान से आय करने का विचार कर रहा है। उत्तमचन्द, उसकी पत्नी माया और पुत्रों में विचार-विनिमय हो रहा है। वे अभी तक किसी परिणाम पर नहीं पहुंचे।"

: 9 :

शकुन्तला को जब कृष्ण ने बताया कि अगले रविवार वकील सुन्दरदासजी के घर मध्याह्न के भोजन का निमन्त्रण है, तो उसके मुख से अनायास ही निकल गया, "ओह!"

"क्यों! क्या बात है?" कृष्ण ने पूछा।

"पिताजी कहते थे कि आपका मित्र सुन्दरदास नीमपागल है।"

कृष्ण खिलखिलाकर हंस पड़ा। हंसते हुए पूछने लगा, "और पिताजी का मेरे बारे में क्या विचार है?"

शकुन्तला मुसकराती हुई पति का मुंह देखने लगी। कृष्ण समझ गया कि अवश्य ही कुछ मज़ेदार बात होगी, जो उसके बारे में लाला गिरिधारीलालजी ने कही होगी। अतएव उसने कह दिया, "यदि नहीं बताना चाहतीं, तो न सही। मैं नहीं पूछता।"

"बताने की तो है।" शकुन्तला ने कहा, "लेकिन मैं यह विचार कर रही हूं कि उन्हीं शब्दों में बताऊं, जिनसे पिताजी के कहने का ठीक-ठीक भाव प्रकट हो सके।"

"ठीक है, बताओ।"

शकुन्तला ने कहा, "पिताजी एक दिन कहते थे कि आपकी पीठ पर केसर लदा है, परन्तु आप ऊंट हैं, उस केसर का मूल्य नहीं समझते।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्ण खिलखिलाकर हंस पड़ा और बोला, "इस पर भी उन्होंने अपनी चांद के समान लड़की को ऊंट के गले में बांध दिया है।"

"यह तो एक अलंकार है। उनका अभिप्राय यह था कि आप एम० ए० पास हैं। यह है केसर, परन्तु आप ऊंट हैं, जो उस केसर का प्रयोग नहीं जानते। उनका कहना था कि यदि आप बुद्धिमान् होते, तो अब तक पिताजी की पूर्ण सम्पत्ति के स्वामी बन चुके होते। इस कारण आप ऊंट ही हैं, जो सीधे मार्ग पर चले जा रहे हैं, बिना यह जाने कि आपकी पीठ पर क्या लदा हुआ है।"

कृष्ण ने गम्भीर होकर कहा, "मैं कभी-कभी उनसे अपनी शिक्षा का प्रयोग पूछने जाया करूंगा। अब मैंने वकालत के ग्रन्थ पढ़ने आरम्भ कर दिये हैं और यह ज्ञान भी उस केसर के साथ ही बांधा जा रहा है। मैं उसका प्रयोग भी जानना चाहूंगा।"

"पिताजी मुझसे कई बार कह चुके हैं कि आपको नित्य उनसे मिलने के लिए जाना चाहिए।"

"नित्य तो बहुत कठिन है, परन्तु अब पहले से अधिक मिलने जाया करूंगा और उनसे कहूंगा कि ऊंट को भी थोड़ी-सी बुद्धि दे दें, तो वह अनुभव करेगा।"

"परन्तु मेरी राय मानें, तो आप यह ऊंट और केसर की बात उनसे न कहें। बिना कहे ही यह कह सकते हैं कि मेरी प्रेरणा से आप उनसे मिलने आते हैं।"

"ठीक है, हमें आपस की बातचीत किसी अन्य को नहीं बतानी चाहिए। पति-पत्नी का सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्ठ होता है। इस सम्बन्ध में किसी दूसरे को नहीं आना चाहिए।

"देखो रानी, मैंने पिताजी वाला कार्य आरम्भ कर दिया है। पिताजी ने अपने उन ऋणियों को, जिनके आभूषणादि गिरवी रखे हुए हैं, नोटिस दिया था कि वह अपने व्यवसाय से संन्यास ले रहे हैं और उनके स्थान पर मैं लेन-देन का कार्य करूंगा। जिनको मुझ पर विश्वास नहीं है, वे अपने ऋण का रुपया देकर अपनी गिरवी रखी वस्तुएं ले जा सकते हैं। अभी तक बहुत कम लोग धन वापस लेने आये हैं। लगभग तीस हज़ार रुपये में से तीन हज़ार से भी कम धन वापस आया है। मैं ऐसी ही आशा करता हूं। इसका कारण यह है कि लोग धन का प्रबन्ध तुरन्त नहीं कर सके, परन्तु बहुत संख्या में लोग आकर अपना विश्वास मुझमें प्रकट कर चुके हैं। इसलिए मुझे अभी से आय होने लगी है। पिताजी के साथ यह तय था कि मूलधन पिताजी की दान-दक्षिण के खाते का है और ब्याज मेरा होगा। इसलिए वह तीन हज़ार वापस करने वाले लगभग दो सौ रुपये ब्याज के दे गये हैं।

"नया ऋण लेने वालों को मैं अपनी पूंजी में से दे रहा हूं। लगभग पांच सौ रुपया इन सात-आठ दिनों में ऋण पर दे चुका हूं। इस ऋण पर मैं छह प्रतिशत प्रतिवर्ष से लेकर बारह प्रतिशत तक ब्याज लेता हूं। यह धन की मात्रा और ऋण लेने की अवधि पर निर्भर करता है।

"दादा उत्तमचन्द के दफ़्तर का एक एंग्लो-इण्डियन बीस रुपये ऋण लेने आया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
था। उससे दो मास का ब्याज एक रुपया चार आने अग्रिम काटकर ही मैंने उसे बीस रुपये दिये थे, परन्तु महल्ले के एक विद्यार्थी की मां अपने कान की बालियां गिरवी रखने आयी थी। वह बोली, "लड़के के पिता ने इस मास ख़र्च नहीं भेजा और कल फ़ीस देनी है। मुझे पन्द्रह रुपये चाहिए थे। इस कारण मैं सोलह रुपये ऋण के मांग रही हूं।'' मैंने उससे ब्याज नहीं लिया। केवल पन्द्रह रुपये ही दिये और कहा, जब रुपये लौटाने आयेगी, तो ब्याज ले लूंगा। इस प्रकार बिना पेशगी ब्याज लिये पन्द्रह रुपये दे दिये हैं।"

शकुन्तला ने पूछ लिया, "और यदि वह विद्यार्थी की माता ऋण न दे सकी, तो क्या करेगी?"

"कुछ नहीं। पन्द्रह रुपये से अधिक दाम की बालियां मेरे पास हैं।

"मेरे पिताजी तो इस काम को घृणास्पद मानते हैं। सूदख़ोरों का काम समाज में भी बहुत हीन समझा जाता है।"

कृष्ण का कहना था, "लोगों का यह विचार ठीक भी है। इसमें कारण है, परन्तु जहां तक मुझे ज्ञात है, ऋण लेने वाले पिताजी से दुखी नहीं हुए। उनके मुंह से पिताजी के लिए प्रशंसा और स्तुति ही सुनाई दी है। मेरी जानकारी में केवल एक ऐंग्लो-इण्डियन ने ही झगड़ा किया था। वह व्यक्ति क्लब में जुए में दो सौ रुपये हार कर चौबीस घण्टे की मियाद क्लब के अधिकारियों से लेकर आया था। पिताजी ने उसे दो सौ रुपये देकर लिखवा लिया। वह अपनी पत्नी का लॉकेट गिरवी रखने के लिए लाया था। पिताजी ने उससे दो मास का ब्याज एक पैसा प्रति रुपया पेशगी ले लिया था। सवा छह रुपये ब्याज काटकर दो सौ तीन रुपये बारह आने उसे देकर दो सौ दस रुपये की रसीद लिखवा ली और लॉकेट की पहचान और वज़न लिखकर उसके हस्ताक्षर करवा लिये।

"उसकी पत्नी ने पुलिस में लॉकेट चोरी हो जाने की रिपोर्ट कर दी। पति ने पुलिस में लिखा दिया कि लॉकेट हमारे पास है। लॉकेट और रसीद पुलिस ने अपने अधिकार में ले ली। पति चोरी के अपराध में पकड़ा गया। अदालत में उस साहब ने कहा था कि क्योंकि हम सूद बहुत लेते हैं, इसलिए अदालत को नोटिस में लाने के लिए उसने यह लॉकेट की चोरी की और फिर हमारे पास गिरवी रखकर पुलिस को बता दिया है।

"पिताजी ने अदालत में स्पष्ट कर दिया कि इस व्यक्ति ने जुए में रुपया हारा था और जुआरियों से हम कड़ा ब्याज लेते हैं। जब जुए में अनायास ही आय होती है, तो हम इनसे अपना भाग लेते हैं।

"हमारे पास लिखत-पढ़त सब ठीक थी। पति को दो मास की क़ैद हुई। उसे कार्यालय से सेवा-मुक्त किया गया। उसकी पत्नी ने हमारे दो सौ दस रुपये दिये और लॉकेट वापस ले लिया। इसके अतिरिक्त मेरी जानकारी में अन्य कोई मामला नहीं है। कभी कोई विधवा अपनी आवश्यकता के लिए धन लेने आती है, तो हम बिना ब्याज के भी दे देते हैं।"

और शकुन्तला का प्रश्न था, "न-दिहन्द भी होते होंगे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"हमारे पास ऐसा एक-आध मामला ही आया है। एक बार मण्डी में एक झल्लीवाला बीमार होने पर हकीम साहब का इलाज कराता हुआ दस रुपये का ऋणी हो गया। वह दस रुपये पिताजी से लेने आया, तो उसके पास ज़मानत के लिए कुछ भी नहीं था। पिताजी ने उसे दस रुपये देकर उससे रसीद लिखा ली। वह बेचारा अभी तक रुपये देने नहीं आया। अगले मास उसकी रसीद रद्द हो जायेगी। उसकी मियाद पूरी हो जायेगी। वह झल्लीवाला अब भी, जब कभी मिलता है, तो ऋण लौटाने में देरी के लिए पिताजी से क्षमा मांगा करता है। पिताजी उसे कहा करते हैं, जब होंगे, तब दे देना।"

एक दिन कृष्णचन्द्र अपने श्वसुर की बैठक में जा पहुंचा। लाला गिरिधारीलाल ने पूछा, "सुनाओ बरख़ुरदार! कैसे आये हो?"

कृष्णचन्द्र ने मुसकराकर कहा, "शकुन्तला ने कहा था कि मुझे कभी-कभी आपसे मिलते रहना चाहिए।"

"तब ठीक है, यहां बैठकर अपने मुवक्किलों से मेरी बातचीत सुनते रहना चाहिए। जब कुछ समझ में नहीं आये, तो उस व्यक्ति के चले जाने के बाद पूछ लिया करो।"

उस दिन तीन घण्टे वकील साहब की बैठक में पांच व्यक्तियों की बातें सुनकर वह घर पहुंचा, तो शकुन्तला ने पूछा, "पिताजी के पास गये थे?"

"हां, उनकी बैठक में उनके काम का अनुभव प्राप्त करने गया था। मैंने पिताजी को बताया है कि तुम्हारे कहने पर आया हूं। इस पर वह बहुत प्रसन्न हुए। मैं आज तीन घण्टे उनकी संगत में रहा हूं। मैं समझता हूं कि मेरे ज्ञान में भारी वृद्धि हुई है।"

"क्या ज्ञान की बात सीखकर आये हैं?" शकुन्तला ने मुसकराते हुए पूछ लिया।

"यही कि किसी से रिआयत नहीं करनी चाहिए। एक व्यक्ति का अपने मालिक-मकान से झगड़ा हो गया था। उस व्यक्ति ने बताया कि वह मकान का भाड़ा नियमपूर्वक देता रहा है। न तो मकान का किरायानाम लिखा गया है, न ही मालिक-मकान किराये की रसीद देता था। अब उसने तीन वर्ष के किराये की वसूली के लिए अदालत में दरख़्वास्त दे दी है।

"पिताजी ने कहा, किराया तो देना ही पड़ेगा। इस पर भी मुक़द्दमा लड़ा जा सकता है। उसको शपथ लेकर अदालत में कहना चाहिए कि उसने किराया नहीं दिया, इसमें कारण है। वे कारण बताये जा सकते हैं।

पिताजी ने आगे कह दिया, "परन्तु मेरी फ़ीस अभी जमा करा दो, तो कल मैं अदालत में हाज़िर हो जाऊंगा।"

"इस पर मुवक्किल ने पूछा कि फ़ीस कितनी है। पिताजी ने बताया कि एक पेशी के दस रुपये तथा अतिरिक्त पेशियों के पांच सौ रुपये। यह राशि वह जमा करा दे, तो वह एक उपाय कर सकते हैं, जिससे किराया न देना पड़े। किराया एक हज़ार से ऊपर बनता था।"

"उस आदमी ने कहा कि पांच सौ बहुत अधिक हैं, परन्तु पिताजी ने कह दिया, पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं ऐसी तज़वीज़ उपस्थित करने वाला हूं कि वह दस हज़ार रुपये मूल्य की है। यदि वह इतने रुपये दे दे और मेरे नाम वकालतनामा लिख दे, तो वह अपनी तज़वीज़ बता सकते हैं।

"उस व्यक्ति ने पांच सौ रुपये नोटों के रूप में सामने रख दिये, तो पिताजी ने बताया, "देखो, कल मैं तुम्हारे बयान करा दूंगा। तुम बयानों में यह कहना कि इस मकान में पहले भी किरायेदार थे। पहले के मालिकमकान ने यह मकान नये मालिक को पन्द्रह हज़ार रुपये में बेचा था। इस मुद्दई के पास केवल सात हज़ार रुपये थे। उसने तुमसे रुपया मांगा और तुमने उसे आठ हज़ार रुपये दिये थे और तब उसने यह मकान ख़रीद लिया। उसने यह कहा था कि जब तक यह रुपया नहीं लौटाता, मकान पर क़ब्ज़ा तुम्हारा होगा। इस प्रकार इसने अभी तक आठ हज़ार लौटाया नहीं है और तुमने किराया उसके ब्याज के एवज़ में नहीं दिया।"

"वकील साहब की योजना सुनकर वह व्यक्ति बहुत प्रसन्न हुआ और वह झूठे बयान अदालत में देने का विचार कर रहा है।"

शकुन्तला को पिताजी की और भी इस प्रकार की कलाबाज़ियों का ज्ञान था इसलिए वह कहने लगी, "बस, यही सीखने के लिए तो पिताजी आपको वहां आने को कहा करते हैं।"

"हां, परन्तु शकुन्तला! यह तो सरासर बेईमानी है।"

"बेईमानी, तो वह मुद्दालह करेगा। पिताजी तो उससे सत्य बोलने की सौगन्ध लेकर सत्य कहने को कहेंगे। बेईमान तो वह मुद्दालह है। पिताजी तो इसमें कुछ भी नहीं।"

कृष्णचन्द्र ने कहा, "ऐसा हमारे यहां नहीं होता। हम तो जो मन में विचार करते हैं, वही करते हैं, वही बही पर लिखते हैं। उसी का रसीद-पर्चा बनाते हैं।"

"लिखत-पढ़त तो," शकुन्तला ने बताया, "पिताजी के यहां भी ठीक-ठीक ही होती है।"

"हां, यह भी मैं देख आया हूं। पिताजी ने उस पांच सौ की रसीद नहीं दी, जो मुद्दालह ने अपने झूठे बयान अदालत में लिखाने के लिए दिये थे। रसीद केवल दस रुपये की बनायी गयी थी।"

"हमारा काम करने का ढंग दूसरा है। मुझे स्मरण है कि एक व्यक्ति पिताजी से ब्याज के विषय में झगड़ा करने लगा, तो पिताजी ने पूछ लिया कि तुम क्या काम करते हो?"

"वह बोला, 'मैं एक अंगरेजी फ़र्म में मैनेजर हूं। तीन सौ रुपया महीना वेतन लेता हूं।'

"पिताजी का प्रश्न था—तब भी तुमको ऋण लेने की आवश्यकता पड़ी है?

"शाहजी! उसने कहा, मुझे शराब पीने की आदत है। कल मैं दफ़्तर से वेतन लेकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
शराबख़ाने के बाहर से गुज़रा, तो विचार आया कि एक-दो घूंट पी लेनी चाहिए। मैं भीतर चला गया। पीने लगा, तो साथ ही खाने के लिए प्याज़ के पकौड़े मंगा लिये। पकौड़े बहुत स्वादिष्ट बने थे। बस, खाता गया और पीता गया। फिर तो तांगे में बैठकर ही घर पहुंच सका था, परन्तु जब घर पहुंचा, तो जेब ख़ाली थी। पर्स जेब में नहीं था। अगले दिन पत्नी ने पूछा कि वेतन नहीं मिला ? मैंने कह दिया, कल बैंक बन्द था, आज मिलेगा और अपनी हीरे की अंगूठी गिरवी रख तीन सौ रुपये ऋण लेने आया हूं। आप तीन सौ रुपये का छह मास में उनत्तीस रुपये दो आने ब्याज काट रहे हैं। यह बहुत अधिक है।

"पिताजी ने अंगूठी जेब में रखकर कहा, सूद पहले लूंगा।

"इस पर वह आदमी धमकी देने लगा कि आपको चोरी में पकड़वा सकता हूं।

"हम दोनों ने उसे बांहों से पकड़कर घर से निकाल दिया। तीन-चार दिन के उपरान्त उस मैनेजर की बीवी आयी और तीन सौ उनत्तीस रुपये देकर अंगूठी ले गयी। हम इसे ईमानदारी समझते हैं। उस मैनेजर की पत्नी ने बताया कि वह साहब पुलिस में रिपोर्ट लिखाने गये हैं, परन्तु पुलिस पिताजी को भली-भांति जानती है कि बिना लिखत-पढ़त के यहां लेन-देन नहीं होता। इस कारण थानेदार ने कह दिया, अदालत में जाओ, गोपीशाह चोर नहीं है। न ही वह चोरी का माल ख़रीदता है।"

शकुन्तला अपने श्वसुर और पिता की बातों में तुलना करने लगी।

रविवार को माता-पिता और पुत्र तथा पतोहू सुन्दरदास के घर भोजन पर गये। भोजन हुआ और वकील साहब शाहजी और उनके लड़के को अपनी बैठक में बैठे बैंकिंग कम्पनी की योजना बता रहे थे। रामेश्वरी शकुन्तला से परिचय बढ़ा रही थी।

रामेश्वरी ने शकुन्तला से पूछ लिया, "तुम कॉफ़ी पीती हो अथवा नहीं ?"

"भाभी ! मुझे वह कड़वी प्रतीत नहीं होती। पिताजी के घर में तो नित्य पिया करती थी। यहां इनके घर में दिन में दो बार तो दूध मिलता है। खाने में मूंग की दाल। अब कुछ दिन से एक मीठी 'डिश' माताजी के सुपुत्र की सिफ़ारिश से मिलने लगी है।"

"तब तो तुम बहुत कष्ट में प्रतीत हो रही हो ?"

"कष्ट तो नहीं। मैं बीमार नहीं हुई। दुर्बलता भी अनुभव नहीं करती। हां, मुंह कुछ फीका-फीका-सा रहता है।"

"तो आजकल आम का अचार नहीं मिलता ?" रामेश्वरी ने मुसकराते हुए पूछ लिया।

"वह तो लेती ही हूं। उसके खाने से भूख भी ख़ूब लगती है।"

"और," धनवती ने मुसकराते हुए कहा, "यह कहती है कि इसका वज़न बढ़ रहा है।"

"वह तो किसी नये जीव ने बढ़ाना आरम्भ कर दिया होगा।" रामेश्वरी ने मुसकराकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कह दिया।

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। अभी परसों ही तो रजस्वला हुई हूं।"

रामेश्वरी ने पूछा, "फिर कैसे कहती हो कि तुम्हारा वज़न बढ़ रहा है ?"

शकुन्तला ने बताया, "मेरी माताजी एक दिन हमारी दाल-रोटी देखकर चिन्ता व्यक्त करने लगी थीं। मैं जब भी उनके घर जाती हूं, तो पिताजी ने मेरा भार देखना आरम्भ कर दिया है। मुझे ससुराल में आये एक मास के लगभग हुआ है और इस दौरान मैं तीन बार तोली जा चुकी हूं। एक महीने में मेरा वज़न तीन सेर बढ़ा है। पिताजी का विचार है कि चरबी बढ़ रही है; क्योंकि मैं चलती-फिरती कम हूं। यह मेरा विचार नहीं है। मैं नित्य माताजी के साथ रावी तक पैदल जाती-आती हूं।"

इस प्रकार की बातें होती रहीं। रामेश्वरी का विचार था कि लड़की समझदार है, यद्यपि अनुभवहीन है।

बैठक में सुन्दरदास ने अपनी योजना बतायी। योजना एक काग़ज़ पर लिखी हुई थी। वह उसे देखकर बताने लगा। उसने कहा, "एक ट्रस्ट बनाया जाये, जिसका नाम हो—चेरिटेबल ट्रस्ट टू प्रमोट स्माल ऐण्टरप्राइज़ेस।

"मैं आपके साढ़े छह लाख में अपने पास से भी दस हज़ार डालना चाहूंगा। यह इसलिए कि मैं भी इसका ट्रस्टी बनूंगा। इसलिए इसमें अपना भाग डालना चाहता हूं।

"ट्रस्ट के तीन सदस्य होंगें। एक आप, दूसरे कृष्णचन्द्र और तीसरा मैं।"

"ट्रस्ट का काम होगा :

1. ईमानदार, बुद्धिमान्, योग्य तथा साहसी व्यापारियों अथवा लघु उद्योग-धन्धे वालों को सस्ते ब्याज पर धन उपलब्ध कराना;

2. व्यापार अथवा उद्योगों में हिस्से ख़रीदना अथवा सक्रिय व्यापार में सहयोग देना;

3. ट्रस्ट का काम लाभ तथा हानि से रहित होगा;

4. इसकी आय इसको चालू रखने में ही व्यय होगी।

इन चार उद्देश्यों के साथ यह ट्रस्ट रजिस्टर्ड कराने का यत्न किया जाये। ट्रस्ट का कार्यालय अभी 30 निस्बत रोड पर ही रखा जाये। उसमें दो अथवा तीन कमरे भाड़े पर लिये जायें।

गोपीशाह ने कहा, "मेरा विचार है कि कृष्ण को ट्रस्टी न बनाया जाये। यह अभी इसका मैनेजर ही रहे। इसका सामान्य-सा वेतन ही निश्चय किया जाये। यह दिन में कुछ समय ही काम करेगा। तीसरी ट्रस्टी रामेश्वरीजी हों।"

"यह तो उनसे पूछकर ही हो सकता है।"

"आप पूछ लीजिये।"

"यह मैं उनसे अलग में पूछूंगा। इस विषय में उनकी स्वीकृति अथवा अस्वीकृति एक-दो दिन में बता दूंगा।"

"ठीक है। आप काग़ज़ात तैयार कर लें। मैं समझता हूं कि रामेश्वरीजी को मान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जाना चाहिए। यदि वह न मानें, तो तीसरा ट्रस्टी ढूंढ़ना पड़ेगा।"

इस प्रकार दो घण्टे के विचार-विनिमय के उपरान्त बात तय हो गयी।

रामेश्वरी से जब सुन्दरदास ने बात की, तो उसने पूछ लिया, "शाहजी को मेरे विषय में क्या पता है?"

"यह तुम स्वयं उनसे जाकर पूछ लो।"

"और आपने नह ीं पूछा कि मेरे किस गुण के कारण उन्होंने इस ट्रस्ट में मेरा नाम ट्रस्टियों में रखने का विचार बनाया है।"

"तुम बताओ कि तुम यह काम कर सकोगी?"

"आपके साथ रहते हुए मुझे इससे भय प्रतीत नहीं होता।"

"तो इसमें भय भी है?"

"हां! सारा रुपया गरम तवे पर जल की बूंद की भांति विलीन भी हो सकता है। मैं इस परिणाम से डरती हूं।"

"देखो देवि! तुम इतनी पढ़ी-लिखी तो हो कि काम को समझो और कर सको। फिर मैं भी तो हूं। शेष बात रही सफलता-असफलता की, तो सेठजी का कहना है कि उन्हें परमात्मा पर अगाध विश्वास है। वह उनका पथ-प्रदर्शन करेगा।"

रामेश्वरी मान गयी, तो ट्रस्ट के काग़ज़ात तैयार कर काम चालू हो गया।

:10:

जिस दिन ट्रस्ट की रजिस्ट्री हुई, उसी दिन कृष्ण अपनी पत्नी को लेकर निस्बत रोड वाली कोठी पर चला गया। कोठी में सोने के लिए कमरे थे, एक ड्रांइगरूम था, बरामदा था और छोटा-सा 'लॉन' भी था। लॉन में माली फूल लगा रहा था।

महल्ला मोहलिया वाला मकान छोड़ने पर कृष्ण ने अपने बड़े भाई उत्तमचन्द को बुलाकर कहा, "दादा! मैं कल कोठी में जा रहा हूं।"

"वहां तुम्हारा काम नहीं चलेगा।"

"क्यों?"

"गिरवी रखने वाले वहां नहीं पहुंच सकेंगे। प्राय: औरतें ही आभूषण गिरवी रखने आती हैं।"

कृष्ण ने मुसकराते हुए कहा, "मैं इस काम को समेट रहा हूं।"

"तो क्या करोगे?"

"अभी तो पिताजी के ट्रस्ट में दो सौ रुपया महीना पर मैनेजर नियुक्त हो गया हूं। ट्रस्ट ने कोठी में तीन कमरे भाड़े पर लिये हैं। उनका भाड़ा एक सौ रुपया महीना होगा। इस प्रकार तीन सौ रुपया महीना की आय तो है ही। इसके अतिरिक्त कुछ हाथ-पांव मारूंगा और मेरा विचार है कि एक-आध वर्ष में छोटा-मोटा व्यापार भी करने लगूंगा।"

उत्तमचन्द की दफ़्तर में उन्नति हो गयी थी और उसका वेतन अब पचास रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महीना हो गया था। इस कारण वह कृष्ण की सैकड़ों में बात करते सुन मुंह देखता रह गया। उसने कहा, "ज्ञानचन्द और रामचन्द्र अपने कमरे खोलकर नहीं दे रहे हैं। मैं उनको भाड़े पर चढ़ाना चाहता था, पर वे ख़ाली ही नहीं करते।"

"क्या कहते हैं?"

"ज्ञानचन्द ने तो स्पष्ट कह दिया है कि ख़ाली कराना है, तो कचहरी में जा सकता हूं। रामचन्द्र ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने भी ताला नहीं खोला।"

"और सिद्धराम तथा गेंदाराम क्या करना चाहते हैं?"

"दोनों भाई पिताजी की सम्पत्ति में से अपना भाग लेकर अमृतसर में दुकान करना चाहते हैं। वह वहां दरबार साहब के चौक में कपड़े की फुटकर बिक्री के लिए दुकान ले रहे हैं। वे भी अपने कमरों को ताला लगा गये हैं और आजकल अमृतसर में हैं।"

"वे तुमसे अधिक समझदार प्रतीत होते हैं।"

"मैं तो कोर्ट से डिग्री लेकर सबको निकलवा देता, परन्तु तुम्हारी भाभी कहती है कि घर का मामला कचहरी में नहीं जाना चाहिए।"

"तो दादा! ऐसा करो, पूरे घर को ताला लगाकर मेरे घर में आ जाओ। वहां मैं तुम्हें एक बेडरूम प्रयोग करने के लिए दे दूंगा।"

"अपनी भाभी से कहो। वह कहेगी, तो मैं मान जाऊंगा।"

इस प्रकार कृष्ण ने माताजी से कहा कि माया भाभी को कोठी में आकर रहने का निमन्त्रण दे दें।

Central Library
167917
Gurukul Kangri (University) Haridwar

धनवती का कहना था, "कह तो सकती हूं, परन्तु तुम्हारा और तुम्हारे भाई का स्वभाव नहीं मिलता। इसलिए पहले अपनी पत्नी से बात कर लो।"

"माताजी! उससे बात की है। वह कहती है कि यदि माया भाभी चलना चाहें, तो उसे बहुत प्रसन्नता होगी।"

इस प्रकार जिस दिन कृष्ण अपना बिस्तर बांधकर जाने को तैयार हुआ, उत्तमचन्द भी अपनी पत्नी के साथ अपना सामान एक तांगे में लादकर उसके पीछे-पीछे चल दिया।

धनवती और गोपीशाह का निश्चय था कि वे हरिद्वार जाकर रहेंगे। ट्रस्ट की मीटिंग पर ही वे लाहौर आया करेंगे। वे सब काम सुन्दरदास और कृष्ण पर छोड़कर जा रहे थे।

ट्रस्ट ने अपना एक क्लर्क और चपरासी रख लिये थे, जो कृष्ण के कोठी में पहुंचने से पहले ही कार्यालय में काम पर हाज़िर होने लगे थे।

उन दिनों ट्रिब्यून और सिविल मिलिटरी गज़ट, अंगरेजी के ये दो दैनिक-पत्र लाहौर से निकलते थे। उर्दू में साप्ताहिक-पत्र भी थे। इनमें हिन्दुस्तान सबसे अधिक प्रचलित था।

इन तीनों समाचार पत्रों में विज्ञापन निकलवाया गया कि इस ट्रस्ट से लघु उद्योगों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और व्यापार के लिए रुपया मिल सकता है तथा रुपये लेने की शर्तें ट्रस्ट के कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं।

रामेश्वरी देवी के ट्रस्ट के मेम्बर बनने से उसका सम्पर्क कृष्ण और शकुन्तला से बढ़ गया था। वह ट्रस्ट के कार्यालय में नित्य एक चक्कर लगाने जाती थी।

ट्रस्ट की स्थापना के तीन महीने उपरान्त जालन्धर के एक युवक ने याचिका दी। उसे पांच हज़ार रुपये ऋण की आवश्यकता थी। वह बाइसिकलों की दुकान करना चाहता था।

युवक का नाम था रामकुमार। कृष्ण ने उसकी अर्ज़ी पर उसे लाहौर बुलवाया। वह आया, तो उसे बताया गया कि रुपया चार प्रतिशत ब्याज पर मिल सकता है, परन्तु वह व्यापार का विवरण लिखकर दे। साथ ही कोई ज़ामिन भी उपस्थित करे।

इतने कम ब्याज पर रुपया कहीं नहीं मिल सकता था। बैंक के ब्याज की दर थी आठ और दस प्रतिशत। वह भी ज़मानत मांगता था। इस कारण युवक ने यत्न किया और ज़मानत लाहौर से ही मिल गयी। एक ज्ञानीशाह थे, जिनके नगर में अनेक मकान थे, उन्होंने ज़मानत दे दी, तो रुपया दे दिया गया।

बस, यह आरम्भ था। जब 'रामकुमार साइकिल मार्ट' जालन्धर में खुल गयी, तो फिर अन्य लोग भी धन के लिए याचिका करने लगे।

ट्रस्ट की बैठक प्रतिमास प्रतिपदा के दिन हुआ करती थी और गोपीशाह बैठक में सम्मिलित होने के लिए हरिद्वार से आया करता था। वह प्राय: अकेला ही आता था, परन्तु पिछली बार वह हरिद्वार गया, तो यह समाचार लेकर गया था कि शकुन्तला चार मास के गर्भ से है। अत: अगली बार जब वह ट्रस्ट की बैठक में लाहौर आया, तो धनवती भी उसके साथ आ गयी। धनवती जिस दिन आयी, शकुन्तला की मां कान्ता भी लड़की से मिलने आयी हुई थी। धनवती सीधी स्टेशन से आयी थी और शाहजी के कमरे में सामान रखकर कृष्ण के कमरे में आयी, तो शकुन्तला और उसकी मां दोनों उठकर धनवती का सत्कार करने लगीं। धनवती बिना सूचना के आयी थी, इसलिए मां-बेटी दोनों को आश्चर्य हुआ।

धनवती कान्ता से गले मिली और शकुन्तला की पीठ पर हाथ फेरकर व प्यार देकर उससे उसका स्वास्थ्य पूछने लगी।

शकुन्तला ने कहा, "माताजी! आपने तो मुझे मन से निकाल ही दिया प्रतीत होता है। आज ग्यारह महीने के उपरान्त आपके चरण छूने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।"

धनवती का कहना था, "कृष्ण के पिता तुम्हारा समाचार प्रतिमास लाते रहते हैं। उन्होंने ही पिछले मास कहा था कि तुम पेट से हो। इसलिए मैं यहां तुम्हारे पास रहने के लिए आयी हूं।"

इस पर कान्ता ने कहा, "मैं इसे अपने पास चलकर रहने के लिए कहने आयी हूं। यह मान ही नहीं रही।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बहिनजी! अब मैं आ गयी हूं। मैं समझती हूं कि आपको कष्ट करने की आवश्यकता नहीं रहेगी। मैं इसके प्रसव तक यहीं रहूंगी।"

"आपको कष्ट होगा।" कान्ता का कहना था।

"आपके इसे अपने घर ले जाने से कम ही होगा।"

शकुन्तला का कहना था, "माया बहिन भी कह रही थीं कि हरिद्वार लिखने की आवश्कता नहीं। वह जो यहां रहती हैं।"

कृष्ण अभी कार्यालय में था। जब शाहजी ने वहां पहुंचकर उसे बताया कि इस बार उसकी मां भी आयी है, तो वह शकुन्तला के कमरे में आ गया। मां के चरणस्पर्श कर हाथ जोड़ उसने पूछ लिया, "माताजी कैसे आयी हैं?"

"रेल से और फिर स्टेशन से तांगे में बैठकर।"

"मैंने यह नहीं पूछा। मेरा प्रश्न यह है कि स्वास्थ्य तो ठीक है, जो लाहौर याद आया है।"

"देखो कृष्ण! मेरा तुम्हारे पिता से विवाह हुए अब इक्यावन वर्ष हो चुके हैं। मैं इन इक्यावन वर्षों में एक दिन भी उनका घर छोड़कर नहीं गयी। उन्होंने एक वर्ष से अपना मकान हरिद्वार में बनाया हुआ है, इसलिए मैं वहीं रहती हूं। तुम अपने पिताजी को यहां रखो, तो मैं भी यहां रह सकूंगी।"

शकुन्तला इसका अभिप्राय यह समझी कि उसकी सास लाहौर में रहने के लिए तब ही तैयार होगी, जब उसके श्वसुर भी लाहौर में रहेंगे। इसलिए उसने कहा, "ठीक है माताजी! हम पिताजी को यहां रखने के लिए उनके पांव पकड़ लेंगे।"

"अभी तो एक वर्ष के लिए मैं ही उनको यहां ले आयी हूं। बाद में, तुम जानो और वह जानें।"

इस पर कृष्ण ने कहा, "मैं इससे उलट समझा था। मेरा विचार था कि माताजी के मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया है और वह हरिद्वार में अपना परलोक सिद्ध करने गयी हैं, तो पिताजी उनके पीछे-पीछे वहां चले गये हैं।"

"हां! तुम बात को वस्तुस्थिति से उलट समझे हो।"

इस पर शकुन्तला ने कहा, "इस एक वर्ष में हम उनको यहां हमेशा रहने के लिए मना लेंगे।"

कान्ता गयी, तो गोपीशाह भीतर आ गया और शकुन्तला का स्वास्थ्य-समाचार पूछने लगा।

उत्तमचन्द पिताजी से सायंकाल मिला। उसने शिकायत कर दी कि ज्ञानचन्द और रामचन्द्र महल्ला मोहलिया वाले मकान के कमरे नहीं खोलते।

"क्या कहते हैं?"

"वह कहते हैं कि हमारा वह मकान परिवार का साझा है और साझा ही रहेगा। उसे एक भाई को देना अनुचित है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाहजी ने कहा, "अच्छा देखो, मैं इस बार यहां कुछ अधिक समय के लिए रहने आया हूं। मैं यत्न करूंगा कि इस गांठ को खोलकर जाऊं।"

"तो आप आज रात की गाड़ी से नहीं जा रहे?"

"नहीं!"

"तब ठीक है। मैं दोनों भाइयों को अपनी ओर से बुला भेजता हूं।"

"और अपने लड़कों को भी बुला लो। सुना है, वे भी अपने कमरे नहीं खोल रहे।"

"उनसे मैं स्वयं निबट लूंगा। आप भाइयों से फ़ैसला करा दीजिये।"

जब से कृष्ण इस कोठी में रहने लगा था और रामेश्वरी का इस घर में आना-जाना हुआ था, घर में रहन-सहन और खान-पान उन्नत ढंग से होने लगा था। अब घर के सब रहने वालों को प्रात: 'बेड टी' मिलने लगी थी। प्रात:काल अल्पाहार में लस्सी और मक्खन, साथ में हलवाई की दुकान की बनी मठरी और नमकीन भी मिलती थी।

मध्याह्न का भोजन घर पर बनता था और खाने के कमरे में मेज़-कुरसी पर बैठकर खाया जाता था। पाचक रखा हुआ था और अन्य सेवक भी थे। सब्ज़ी के साथ प्राय: कभी नमकीन और कभी मीठे चावल भी बने होते थे। साथ में दही का रायता होता था।

जब प्रतिदिन यही होने लगा, तो गोपीशाह ने कृष्ण से पूछ लिया, "मैं तुम्हारे स्वभाव में बहुत अन्तर देख रहा हूं। मैं समझता था कि तुम महीने में एक दिन मेरे यहां आने पर ही मेरे लिए फ़ुज़ूलख़र्च किया करते हो, परन्तु अपने को मेहमान समझकर और तुम्हें मेहमानदारी के नाते यह सब करते देखकर क्षम्य मानता था, और अब तो मुझे यहां रहते हुए सप्ताह से अधिक हो चला है और नित्य ही मध्याह्न को चावल का पुलाव और रात को पूरी, खीर, रबड़ी, हलवा इत्यादि देखकर समझ गया हूं कि तुम्हारा स्वभाव बदल गया है।"

कृष्ण का कहना था, "पिताजी! घर की रसोई का प्रबन्ध शकुन्तला के अधीन है। मैं उसे घर के प्रबन्ध के लिए डेढ़ सौ रुपये महीना देता हूं। वह उसमें ही जो कुछ खिला दे, वही सन्तोष से खा लेता हूं।"

"परन्तु क्या डेढ़ सौ रुपये महीना कुछ अधिक नहीं? मेरे समय में घर में पन्द्रह व्यक्ति थे और पचास-साठ रुपये महीने में घर के प्राणियों के भोजन की व्यवस्था और मेहमानदारी भी हो जाती थी।"

"पिताजी! मुझे मालूम है, परन्तु शकुन्तला का कहना है कि थोड़ा अधिक व्यय करने से सुख और आराम बहुत होता है। उसने एक बात यह भी कही है कि नौकरों वाले घर में कुछ टीप-टाप भी रखनी पड़ती है, अन्यथा वे मालिक के प्रति आदर करना छोड़ देते हैं।"

गोपीशाह ने कहा, "यह सब युक्तियां तुम्हारे श्वसुर के मस्तिष्क की उपज प्रतीत होती हैं।"

"हो सकती हैं, परन्तु मुझसे तो यह शकुन्तला ने ही कहा है। इसलिए मैंने कहा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि इसी डेढ़ सौ में जैसा चाहे प्रबन्ध करें।"

"तो सुन लो," गोपीशाह ने कहा, "मैं अपना वही खाना खाऊंगा, जिसके खाने का मुझे अभ्यास है। यदि तुम खिलाओगे, तो ठीक, नहीं तो मेरा खाना पृथक् बनने लगेगा।"

"पिताजी ! इसकी आवश्यकता नहीं। आप जो कुछ और जैसा खाना चाहेंगे, वैसा और वही बन जायेगा।"

"बस, दोनों वक्त प्रात: और सायं दूध तथा मध्याह्न और रात के भोजन में मूंग की दाल और आम का अचार होना चाहिए।"

"मैं शकुन्तला से कह दूंगा और आपको आपकी इच्छानुसार ही खाने को मिला करेगा।"

अगले दिन प्रात: नाश्ते के समय शकुन्तला और कृष्ण के लिए तो लस्सी इत्यादि आयी, पिताजी तथा माताजी के लिए डबल प्रबन्ध था। एक वही, जो उनके अपने लिए होता था और दूसरा शाहजी तथा धनवती के लिए गाय का दूध आने लगा और साथ में एक-एक चपाती।"

"पिताजी !" शकुन्तला का कहना था, "आपके लिए वह भी है, जो आपने कहा था और वह भी है, जो हम सब ले रहे हैं। इस पर भी, जो आपको रुचिकर हो, आप वही ले लीजिये।"

"मैं तो दूध और चपाती ही लूंगा।"

"ठीक है। आपका जो मन चाहे, लीजिये। जो न लेना चाहें, वह मत लीजिये।"

इसी प्रकार मध्याह्न के भोजन के समय शाहजी और माताजी के लिए दुहरा खाना था। मीठा पुलाव, दही, इमली की चटनी और रोटी, मूंग की दाल और आम का अचार।

शकुन्तला ने कह दिया, "पिताजी ! आप अपनी रुचि अनुसार लीजिये।"

"मैंने अपनी रुचि बता दी है।"

"जी ! तभी तो वह भी है, जो आप चाहते हैं और वह भी है, जो हम खिलाना चाहते हैं। आप अपनी रुचि अनुसार लीजिये।"

"पर इससे तो ख़र्च डबल हो जायेगा।"

"उसके लिए मैं आपके सुपुत्र को ख़र्च बढ़ाने के लिए नहीं कह रही।"

"तो अधिक कहां से आता है ?"

"उसी में से प्रबन्ध हो रहा है, जो आपके सुपुत्र इस काम के लिए देते हैं।"

जब इस प्रकार दुहरा प्रबन्ध होने लगा, तो एक दिन शाहजी ने कृष्ण से पूछ लिया, "तुम्हारी पत्नी का तो दिवाला पिट जायेगा।"

"नहीं पिताजी ! ऐसा नहीं हो रहा। वह प्रतिमास कुछ-न-कुछ बचाया करती थी। अब उस बचत में कुछ कमी हो रही प्रतीत होती है।"

"अर्थात धन-सञ्चय में बाधा आ गयी है।"

"धन-सञ्चय शकुन्तला नहीं करती। वह मैं कर रहा हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या करते हो ?"

"मैंने जापान की दो कम्पनियों की एजेंसी ले ली है। उनके माल के ऑर्डर बाज़ार से लेकर भेजा करता हूं। यह काम पिछले पांच-छह मास से होने लगा है। इस समय लगभग पचास हज़ार के माल के ऑर्डर भिजवाये हैं। यह एजेंसियां लगभग चार-पांच सौ मासिक की आय देने लगी हैं। वह मैं जमा कर रहा हूं। आय के ब्याज से अधिक लाभ हो रहा है।"

गोपीशाह चुप हो गया। इस पर भी उसने अपनी दाल-रोटी लेना जारी रखा।

: 11 :

उत्तमचन्द के आग्रह पर गोपीशाह ने रामचन्द्र और ज्ञानचन्द को बुला भेजा। रामचन्द्र अमृतसर के स्टेशन पर 'गुड्स क्लर्क' था। उसका पत्र आया कि आजकल काम बहुत बढ़ गया है और 'स्टाफ़' के कई लोग छुट्टी पर हैं, इसलिए कार्यालय से अवकाश नहीं मिलता। अवकाश पाते ही आऊंगा, परन्तु ज्ञानचन्द ने पिताजी के पत्र के उत्तर में कहला भेजा, "मैं आना नहीं चाहता। मैं अनुभव करता हूं कि मुझसे छल किया गया है। मैं विचार कर रहा हूं कि मुझसे जो धोखा-धड़ी की गयी है, उसका क्या इलाज करूं।"

इस पर उत्तमचन्द ने पिता से कहा, "मैं विचार कर रहा हूं कि पुलिस में रिपोर्ट कर उनके ताले तुड़वा दूं।"

पिता ने पूछा, "पुलिस में रिपोर्ट करने की क्या आवश्यकता है ?"

"मेरे वकील ने यह बताया है कि यदि ताला टूटने पर उन्होंने अदालत में नावाजिब दख़ल का दावा कर दिया, तो दो वर्ष की क़ैद तक का दण्ड मिल सकता है।"

"किस वकील से राय की है ?"

"कृष्ण के श्वसुर लाला गिरिधारीलाल से।"

"और उसने इस समस्या का क्या सुझाव दिया है ?"

"लालाजी का कहना है कि मुझे अदालत में एक अर्ज़ी देनी चाहिए कि वह मकान उसको पिताजी ने दिया है, परन्तु उसके भाई इस पर क़ब्ज़ा किये बैठे हैं। उनको आज्ञा दी जाये कि वे कमरे ख़ाली कर दें।"

"किसी अन्य वकील से भी राय करो।" शाहजी का कहना था।

"सुन्दरदासजी से भी राय की है। उनका तो कहना है कि ताले तोड़कर मकान पर अधिकार कर लूं और यदि किसी को अदालत में जाना है, तो ज्ञानचन्द और रामचन्द्र को जाना चाहिए, न कि मुझे। जब वे अदालत में जायेंगे, तो घर के पुरखा हम भाइयों में सुलह करा देंगे।"

"मैं समझता हूं कि यह मार्ग सुगम है।" गोपीशाह का कहना था।

"परन्तु कृष्ण एक अन्य मार्ग बता रहा है।"

"वह क्या कहता है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"उसका कहना है कि मैं मामा गोपी को साथ लेकर ज्ञानचन्द के घर जाकर उससे बातचीत कर निर्णय कर लूं। यदि परस्पर कोई निर्णय न हो सके, तो फिर सालिस डाल लिया जाये। वह अदालत में जाने के पक्ष में नहीं है।"

"मैं समझता हूं कि कृष्ण की बात मान जाओ या सुन्दरदास की बात मान लो। दोनों अवस्थाओं में तुम अदालत में नहीं जाओगे। तुम्हारे भाई जायेंगे। तब उनको बीच में सालिस डालकर फ़ैसला करने के लिए प्रेरणा दी जा सकेगी।"

उत्तमचन्द अभी अनिश्चित मन ही था कि क्या करे, तभी उसे एक अदालती सम्मन आ गया कि वह सितम्बर की पन्द्रह तारीख़ को सबजज की अदालत में उपस्थित होकर बताये कि क्यों न मकान नम्बर 30 महल्ला मोहलिया का क़ब्ज़ा ज्ञानचन्द को दे दिया जाये ?

उत्तमचन्द का सम्मन उसके कार्यालय के पते पर पहुंचा था। उस दिन घर पहुंचकर उसने कृष्ण और पिताजी को बताया कि ज्ञान ने पिताजी की सम्पत्ति के बंटवारे पर आपत्ति की है। इसका एक अदालती सम्मन उसे मिला है।

"परन्तु बंटवारा तो मैंने किया है। इसका सम्मन मुझे भी तो आना चाहिए।"

"कदाचित आपको हरिद्वार के पते पर भेजा गया हो।"

गोपीशाह ने कह दिया, "अब तुम सुन्दरदास से मिल लो।"

"पिताजी ! मैं कल लाला गिरिधारीलालजी से मिलने का विचार कर रहा हूं।"

"ठीक है। जो कुछ वह कहें, मुझे बताना।"

अगले दिन रविवार था। उत्तमचन्द को कार्यालय से अवकाश था। इसलिए वह प्रात: का अल्पाहार लेकर लाला गिरिधारीलाल की बैठक को चल दिया।

वह दिन के दूसरे प्रहर में लौटा और अपने कमरे में जाकर सो रहा। मध्याह्न के भोजन के समय भी, जब वह अपने कमरे से नहीं निकला, तो गोपीशाह ने उसकी पत्नी से पूछा, "तुम्हारा पति वकील से मिलने गया था, लौटा है अथवा नहीं ?"

"वह लौट आये हैं।" माया ने बताया, "और चादर ताने सो रहे हैं।"

"देखो बेटी, जाओ और उसे जगाकर ले आओ। उसे कहो, भोजन का समय हो गया है।"

माया अपने कमरे में गयी और बांह से पकड़कर अपने पति को ले आयी।

जब उत्तमचन्द खाने की मेज़ पर बैठा, तो गोपीशाह ने पूछ लिया, "बरख़ुरदार उत्तमचन्द ! तुम वकील साहब से मिलने गये थे, वह मिले अथवा नहीं ?"

उत्तमचन्द ने मेज़ की ओर देखते हुए कहा, "मिले हैं। उन्होंने मेरा मुक़द्दमा लेने से इनकार कर दिया है।"

"क्यों ?"

"यह इसलिए कि उन्होंने ज्ञानचन्द की ओर से दावा दायर किया है। नियम के अनुसार दोनों पक्षों का एक ही वकील नहीं हो सकता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
यह समाचार सुनकर वहां बैठे सब अवाक् रह गये।

बात उत्तमचन्द ने ही बतायी, "मैंने जब अपना सम्मन दिखाया, तो वह बोले, "तुम किसी दूसरे वकील को कर लो। मैंने ज्ञान और राम की ओर से मुक़द्दमा करना मंजूर कर लिया है। ये सम्मन मैंने ही निकलवाये हैं।"

"मैंने पूछा, इस सम्मन में पिताजी का नाम भी है, परन्तु उन्हें सम्मन नहीं मिला। उन्होंने पूछा, वह कहां हैं? मैंने बताया, यहीं लाहौर में हैं। उनका कहना था कि उनको सम्मन हरिद्वार रजिस्टर्ड डाक द्वारा भिजवाया गया है। मेरा कहना था कि आप तो मुझे बता रहे थे कि मुझे मुक़द्दमा लड़ने के लिए क्या करना चाहिए। उन्होंने कहा कि तुम आये नहीं। इस बीच ज्ञानचन्द और रामचन्द्र आये थे और उन्होंने उनकी ओर से मुक़द्दमा ले लिया है।"

"क्या तारीख़ है पेशी की?" शाहजी ने पूछा।

"आगामी बुधवार है।"

"ऐसा करो। भोजन करो और मेरे साथ सुन्दरदास के पास चलो।"

इस पर मायादेवी बोल उठी, "मैं इन्हें कल से ही कह रही हूं कि सुन्दरदास से मिल लें, परन्तु यह कहते थे, वह बेईमान है। फ़ीस भी लेगा और मुक़द्दमे पर हाज़िर भी नहीं होगा।"

"मालूम होता है," शकुन्तला ने कहा दिया, "यह बात पिताजी ने दादा को बतायी होगी।"

अब उत्तमचन्द ने स्वीकार किया, "पिछली बार, दो सप्ताह पूर्व, जब मैं गिरिधारीलालजी से मिलने गया था, तो मैंने उन्हें बताया था कि मैं लाला सुन्दरदास से बात करने का विचार कर रहा हूं। इस पर उन्होंने कहा था कि सुन्दरदास महाबेईमान वकील है, फ़ीस भी ले लेगा और फिर पेशी के दिन हाज़िर भी नहीं होगा।"

सब हंस पड़े। शकुन्तला बोली, "नगर के सब वकीलों के विषय में पिताजी के कुछ ऐसे ही विचार हैं।"

उसी दिन सायंकाल गोपीशाह उत्तमचन्द को लेकर सुन्दरदास की बैठक में जा पहुंचा। वहां वकील साहब को सम्मन दिखाया, तो उन्होंने पढ़कर कहा, "परन्तु शाहजी! आपको भी तो सम्मन मिलने चाहिए।"

"हां, लाला गिरिधारीलालजी ने बताया है कि मेरे नाम के सम्मन हरिद्वार भेजे गये हैं।"

"तो इस पेशी में कुछ नहीं होगा। सम्मन पुनः आपके नये पते पर भेजे जायेंगे।"

"और यदि मैं स्वयं अदालत में हाज़िर होकर सम्मन ले लूं, तो क्या होगा।"

"यह हो सकता है, परन्तु इससे क्या लाभ होगा?"

"मैं मुक़द्दमा शीघ्र समाप्त करने के लिए कह रहा हूं। इस ज़िन्दगी में मेरा यह दूसरी बार अदालत में हाज़िर होने का अवसर है। मैं सदा इस बात का यत्न करता रहा हूं कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अदालत के बाहर ही फ़ैसला करने। आज से नौ-दस वर्ष पहले की बात है। एक शराबी वकील अपनी पत्नी के गले का हार गिरवी रख गया था। वह दो वर्ष तक ब्याज देने नहीं आया। दो वर्ष के उपरान्त उसने दावा कर दिया कि उसकी पत्नी का हार चोरी हो गया है और उसे सन्देह है कि वह मेरे पास है। उसने अदालत में दावा किया था कि कोई चोर उसकी चोरी कर शाहजी के पास हार बेच गया है। मैं जब अदालत में उपस्थित हुआ, तो मैंने वकील साहब की पांच सौ रुपये की रसीद अदालत में पेश कर दी। वकील साहब ने कहा, मैंने अपने जानकारी में यह रसीद नहीं लिखी। ऐसा प्रतीत होता है कि मुझे शराब पिलाकर मुझसे हस्ताक्षर करवा लिये हैं। लेख पहचानने वालों ने यह बताया कि पूरी रसीद ही वकील साहब की लिखी हुई है। अदालत ने लेख पहचाननेवालों पर विश्वास कर उनका मुक़द्दमा ख़ारिज कर दिया। मैंने मामले को शीघ्रातिशीघ्र समाप्त करने के लिए उससे फ़ैसला कर लिया था। मेरी यह जीवन-मीमांसा है कि अदालतों में आने-जाने में लगाये जाने वाले समय का उपयोग कहीं अन्यत्र करना चाहिए।"

सुन्दरदास ने कह दिया, "तब ठीक है। आप अदालत में हाज़िर होकर सम्मन वहीं से प्राप्त कर लीजिये।"

ज्ञानचन्द और रामचन्द्र का दावा था कि यह मकान जद्दी मकान को गिराकर बनाया गया है। उस जद्दी मकान का बंटवारा होना चाहिए। उसको किसी एक लड़के को देने का अधिकर गोपीशाह को नहीं है।

"तो फिर ?" शाहजी का प्रश्न था।

"इसमें," सुन्दरदास ने बताया, "आपको पुराने मकान को नया बनवाने पर व्यय किये धन का हिसाब-किताब उपस्थित करना चाहिए और उस पुराने मकान के मूल्य का, दोनों पार्टियों में निश्चय होने के उपरान्त पुन: बंटवारा होना चाहिए। यह भूल आपको मान लेनी चाहिए।"

"उस पुराने मकान की क़ीमत कौन निश्चय करेगा ?"

"इसके लिए कमीशन नियुक्त होगा।"

"हम उस मकान का वृत्तान्त बताकर ज्ञानचन्द वग़ैरा पर ही नहीं छोड़ सकते कि वह उसकी क़ीमत बता दें ?"

"हां, आप उस मकान का वृत्तान्त, यदि कोई प्रमाण है, तो उसको अपने बयान के साथ दे दें और फिर फ़ैसला अदालत पर छोड़ दें।"

गोपीशाह का कहना था, "मैं चाहता हूं कि दो-चार पेशियों में बात समाप्त हो जाये और यदि ज्ञानचन्द चाहे, तो मैं घर पर फ़ैसला करने के लिए भी तैयार हूं।"

तारीख़ के दिन गोपीशाह अदालत में उपस्थित हो गया। उसने मुक़द्दमे के सम्मन वहीं अदालत के कमरे में प्राप्त किये और फिर सुन्दरदास ने कह दिया, "सारी बात अभी तय हो सकती है। मेरा मुवक्किल स्वीकार करता है कि मकान में ज्ञानचन्द और रामचन्द्र का भाग उनको मिलना चाहिए। यह एक मंज़िला तीन कमरों वाला पुराना मकान था और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वर्तमान हवेली साढ़े तीन मंज़िल की और बारह कमरों वाली है। इस नयी इमारत पर सब रुपया गोपीशाह ने अपनी कमाई से लगाया है। इस कमाई को ख़र्च करने का अधिकार गोपीशाह का अपना है। उस पुराने मकान का मूल्य इस काम के जानकार से लगवाया जा सकता है और उस मूल्य का बंटवारा चारों भाइयों में करने के लिए मुद्दालह रज़ामन्द है।"

इस बयान पर गिरिधारीलाल ने यह आपत्ति की कि गोपीशाह ने जान-बूझकर दोनों लड़कों को धोखा देने का यत्न किया है। इस कारण उस पर फ़ौजदारी मुक़द्दमा दायर करने की आज्ञा दी जाये।

सुन्दरदास ने कह दिया, "मेरा मुवक्किल स्वीकार करता है कि उससे भूल हुई है और उस भूल से, जो हानि मुद्दइयों को हुई है, वह इस अदालत में निश्चय कर मुद्दइयों को दिलवायी जा सकती है।"

गिरिधारीलाल शाहजी के वारण्ट निकलवाने के लिए कहता रहा। सबजज ने कह दिया, "इस विषय पर अदालत विचार कर अगली पेशी पर बतायेगी।"

इस हुक्म पर गिरिधारीलाल बहुत प्रसन्न था, परन्तु घर पर जब यह बात शकुन्तला को विदित हुई, तो वह गम्भीर हो विचार करने लगी कि उसके पिता ने उसके श्वसुर को धोखेबाज़ और झूठा सिद्ध करने का यत्न क्यों किया ?

मुक़द्दमे की अगली पेशी, तो दो महीने में होनी थी, परन्तु दो दिन उपरान्त जब उसकी मां कान्ता उसे मिलने के लिए आयी, तो लड़की ने मां से मिलने से इनकार कर दिया। मां के आते ही वह उठकर अपने सोने के कमरे में चली गयी और भीतर से द्वार बन्द कर लिया।

कान्ता बाहर प्रतीक्षा करने लगी। उसका विचार था कि लड़की किसी काम से अपने सोने के कमरे में गयी है, परन्तु जब वह बाहर नहीं आयी, तो मां ने उसके सोने के कमरे का दरवाज़ा जोर से खटखटाया।

शकुन्तला ने भीतर से पता किया, "कौन है ?"

उत्तर मिला, "तुम्हारी मां हूं।"

"मां ! यहां से चली जाओ। मैं तुम्हारे घरवालों में से किसी का भी मुंह देखना नहीं चाहती।"

"क्यों ?"

"यह पिताजी से जाकर पूछ लेना। अब इस घर में मत आना। नह ीं, तो धक्के दे-देकर निकलवा दूंगी।"

कान्ता कुछ न समझती हुई लौट गयी।

उसने घर पर अपने पति को शकुन्तला का व्यवहार बताया, तो गिरिधारीलाल हंस पड़ा। पत्नी ने पूछा, "क्या बात है ?"

"दो दिन हुए कचहरी में उसके श्वसुर को हथकड़ी लगाकर बन्दी बनाये जाने की अर्ज़ी मैंने दी थी और जज साहब ने कहा है कि वह अगली पेशी पर हुक्म देंगे। उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
श्वसुर ने यह बात घर पर बतायी होगी, तभी शकुन्तला हमसे नाराज़ हो गयी है।"

"परन्तु आपने ऐसा क्यों किया है?"

"मैं अपने पेशे का कर्तव्यपालन कर रहा था। इसी बात की कमाई तो मैं खाता हूं। मेरे मुवक्किल इससे प्रसन्न हुए हैं। यदि मैं उस बूढ़े व्यापारी को एक बार हथकड़ी लगवा सका, तो मुझे लाभ होगा।"

कान्ता मुंह देखती रह गयी। वह अपने पति के इस कार्य पर लज्जित थी, परन्तु वह पति को समझा नहीं सकी। इसलिए चुप ही रही।

दूसरी ओर यही घटना ज्ञानचन्द ने घर पर अपनी पत्नी करुणा को सुनायी, तो पत्नी का मुख क्रोध से लाल हो गया। उसके मुख से अनायास ही निकल गया, "यह तो आपने घोर पाप किया है।"

"इसमें पाप क्या है? पिताजी ने पैतृक सम्पत्ति में से मेरा भाग मुझे नहीं दिया। यह मेरे साथ धोखा हुआ है।"

"परन्तु उन्होंने अपनी कमाई में से आपको कुछ तो दिया है और वह उस पैतृक सम्पत्ति से अधिक ही था। देखिये, मुझे, आपको, आपके दोनों पुत्रों को और पुत्रवधुओं को और आपकी लड़की को, हम सात प्राणियों का मिलाकर जो पैंतीस हज़ार मिला है, क्या वह उस पैतृक सम्पत्ति से अधिक नहीं बनता?"

"वह तो उन्होंने पिता होने के नाते दिया है।"

"और पुत्र होने के नाते आपने पिताजी को हथकड़ी लगवानी चाही है?"

"तुम नहीं जानतीं। क़ानून ऐसा ही है।" ज्ञानचन्द का कहना था। परन्तु यह उक्ति करुणा को पसन्द नहीं आयी। वह उठी और अपने सोने के कमरे में जाकर लेट रही। उस रात खाना नहीं बना। उनकी लड़की रजनी दसवीं श्रेणी की परीक्षा देने वाली थी। इस कारण वह देख नहीं रही थी कि घर पर भोजन नहीं बना।

ज्ञानचन्द स्वभाववश भोजन के पूर्व शराब के दो पैग लेकर खाने के कमरे में भोजन की प्रतीक्षा करने लगा, परन्तु उस दिन भोजन नहीं आया।

जब पिता की भूख तीव्र हुई, तो उसने रजनी को आवाज़ दी। रजनी आयी, तो उसने कहा, "आज खाना नहीं आया, क्या बात है?"

रजनी ने कहा, "मां अपने कमरे में लेट रही हैं। कहती हैं उनकी तबीअत ठीक नहीं, इस कारण आप खाना बाज़ार से ले आइये।"

ज्ञानचन्द पत्नी के कमरे में गया और पूछने लगा, "क्यों, क्या बात है?"

"शरीर में शिथिलता अनुभव हो रही है। काम करने को चित्त नहीं करता।"

"मैं खाना लाने के लिए बाज़ार जा रहा हूं। तुम्हारे लिए क्या लाऊं?"

"कुछ नहीं। मैं कुछ भी खाऊंगी, तो उलटी आ जायेगी।"

इस पर भी ज्ञानचन्द गया और समीप के होटल से तीन प्राणियों के लिए भोजन ले आया, परन्तु करुणा ने न कुछ खाया, न पिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानचन्द खाना खाकर सोने के लिए तैयार हो गया। लड़की को मां की चिन्ता लगी, तो वह उसके कमरे में आ बैठी। उसने कहा, "मां! कुछ तो खा लो।"

"नहीं, मैं नहीं खाऊंगी।"

"क्यों?"

"मेरा मन इस जीवन से ही उचाट हो गया है, खाकर क्या करूंगी?"

लड़की कुछ न समझती हुई मां का मुंह देखती रही।

उसका पिता आया, तो उसने रजनी से कहा, "तुम जाओ और सो जाओ, तुम्हारी मां की ख़बरदारी मैं करूंगा।"

पन्द्रह वर्ष की रजनी पति-पत्नी के सम्बन्धों की बात समझती थी। इसलिए वह उठी और अपने कमरे में चली गयी।

परन्तु आधे घण्टे उपरान्त माता के कमरे से मां की चीख़ों की आवाज़ आयी, तो वह भागी-भागी मां के कमरे में जा पहुंची।

पति पत्नी को अपने नीचे दबाये हुए था और मां चीख़ें मार रही थी।

"पिताजी, पिताजी!" कहती हुए रजनी आयी, परन्तु माता-पिता को उस अवस्था में देखकर वह लौटने लगी थी कि मां ने कहा, "रजनी! इधर आओ। मेरी सहायता करो। यह मेरा गला घोंट रहे हैं।"

विवश पति पत्नी के पलंग से नीचे उतरकर बोला, "क्यों झूठ बोल रही हो?"

"तो अपने कमरे में जाइये। मैं आज यह काम नहीं कर सकती।"

पिता का नशा आधा उतर चुका था। वह कुंवारी लड़की को वहां देख चुपचाप अपने कमरे में चला गया।

रजनी मां के पास बैठ पूछने लगी, "मां! क्या हुआ था?"

"तुम आज यहीं सो रहो। आज मेरा चित्त ठीक नहीं है।"

लड़की ने कमरे का दरवाज़ा बन्द कर लिया और मां के कमरे में सो गयी।

अगले दिन स्टेशन पर पिता की ड्यूटी प्रातः छह बजे थी। इसलिए रजनी की जाग खुलने और पत्नी के कमरे का द्वार खुलने से पहले ही वह काम पर चला गया।

जब रजनी की जाग खुली, तो उसने मां को भूमि पर बैठे अपनी माला फेरते देखा।

वह शौचादि के लिए चली गयी। जब स्नान कर वह आयी, तो मां पुनः पलंग पर लेट गयी थी। रजनी ने पूछा, "मां! चाय लाऊं?"

"नहीं!"

"तुमने रात भी कुछ नहीं खाया।"

"हां, और अब भी नहीं खाऊंगी।"

"तो सच ही शरीर छोड़ने वाली हो?"

"हां!"

"पर क्यों?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस जीवन से भी ऊब गया है।"

रजनी स्कूल नहीं गयी, परन्तु जब वह मां को कुछ भी खाने के लिए तैयार नहीं कर सकी, तो चाचा कृष्ण की कोठी पर जाने का विचार करने लगी। उसे विदित था कि उसका दादा आजकल लाहौर में आया हुआ है। इस कारण दस बजे के लगभग जब वह मां को कुछ भी लेने के लिए तैयार नहीं कर सकी, तो चुपचाप मकान से बाहर निकली और निस्बत रोड वाली कोठी पर जा पहुंची। वहां सब काम नियमपूर्वक चल रहा था।

रजनी कोठी में पहुंची, तो कृष्ण ने अपने कार्यालय में बैठे-बैठे उसे कोठी में प्रवेश करते देखा, परन्तु इसे सामान्य बात समझकर वह अपने काम में लगा रहा।

परन्तु कुछ ही मिनट में सेविका बुलाने आयी, "माताजी बुला रही हैं।"

"कौन माताजी ?" शकुन्तला को भी माताजी कहा जाता था और धनवती लाहौर में आ गयी थी, तो उसे भी माताजी बुलाया जाता था।

सेविका ने कहा, "बड़ी माताजी !"

कृष्ण ने अपने काग़ज़ इत्यादि समेटे और मां के कमरे में जा पहुंचा। रजनी धनवती के पास बैठी रो रही थी।

कृष्ण आया, तो धनवती ने कहा, "कृष्ण! इस लड़की के साथ इसके घर चले जाओ और देखो इसकी मां को क्या हुआ है।"

रजनी ने कहा, "माताजी ! आप भी चलें, तब बात हो सकेगी। मां चाचाजी को कुछ नहीं बतायेगी।"

धनवती ने एक क्षण तक मन में विचार किया और कृष्ण से बोली, "तो सड़क से तांगा पकड़ो, तब तक मैं तैयार होती हूं।"

रजनी घर से एक घण्टा-भर अनुपस्थित रहकर चाचा और दादी को लेकर अपने मकान पर आ पहुंची। ज्ञानचन्द अभी कार्यालय से नहीं आया था। रजनी ने कहा, "पिताजी दो बजे के उपरान्त आयेंगे। आज उनकी ड्यूटी प्रातः छह बजे से दो बजे तक की है।"

करुणा लड़की के साथ कृष्ण और अपनी सास धनवती को देख विस्मय में सबको देखती रह गयी। वह अभी तक पलंग पर लेटी हुई थी।

धनवती ने कहा, "यह लड़की कह रही है कि रात ज्ञान तुम्हारा गला घोंटकर तुम्हारी हत्या करने वाला था।"

"नहीं माताजी ! यह लड़की समझी नहीं। वह शराब के नशे में प्यार करना चाहते थे, परन्तु मुझे उनसे घृणा होने लगी है। इसलिए मैं चीख़ें मार रही थी। यह अपने कमरे से आयी, तो वह मुझे छोड़कर चल दिये।"

"और तुमने खाना-पीना छोड़ दिया है, परन्तु क्यों ?"

"मैं इस पतित शरीर को छोड़ देना चाहती हूं।"

"परन्तु क्या इससे अच्छा शरीर कहीं अन्यत्र दिखाई देता है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दिखाई तो अन्धकार ही दे रहा है, परन्तु माताजी! यहां तो अन्धकार से भी अधिक है। कल इसके पिता ने एक बात बतायी है। मैं इस घर से चली जाना चाहती हूं, परन्तु कैसे चली जाऊं? माता-पिता ने इस शरीर का बन्धन इसके पिता से किया हुआ है। इसलिए इस शरीर को ही यहां छोड़ जाने का विचार कर लिया है।"

"पर क्यों?"

"कल कचहरी में क्या हुआ है?" करुणा का प्रश्न था।

"जो कुछ भी हुआ हो, तुम्हारा इससे क्या सम्बन्ध है?"

"उससे तो नहीं, परन्तु करने वाले से तो इस शरीर का सम्बन्ध है।"

"वह इस शरीर कें रहते भी छूट सकता है।" धनवती का कहना था।

"कैसे?"

"छूट सकता है। उठो, स्नान करो और तब मैं बताऊंगी कि कैसे सम्बन्ध छूट सकता है।"

करुणा समझ रही थी कि वह पति के साथ झगड़ा करेगी, तो उसके माता-पिता इतने वर्ष के विवाहित जीवन के उपरान्त यह पसन्द नहीं करेंगे। इस कारण वह मरेगी नहीं, तो कहां जायेगी? अब अपनी सास से कहते हुए कि पति से सम्बन्ध-विच्छेद कर सकेगी, उसने यह समझा कि वह उसे आश्रय दे देंगी।

इस कारण वह उठी और स्नानादि के लिए स्नानागार में चली गयी।

मकान की बैठक में कृष्ण, धनवती और रजनी बैठे प्रतीक्षा कर रहे थे। धनवती ने रजनी से पूछा, "तुम्हारे भाई कहां हैं?"

"दोनों की रेल के महकमों में नौकरी लग गयी है और दोनों लाहौर से बाहर काम पर गये हैं। एक भटिण्डा और दूसरा पानीपत।"

"उनकी बहुएं?"

"वे भी उनके साथ ही हैं।"

"तो तुम यहां अकेली रहती हो?"

"तो क्या करूं?"

"कभी-कभी हमारे घर आ जाया करो। वहां तुम कभी रात में भी रह सकती हो।"

"और यहां माताजी को अकेली छोड़ दूं? साथ ही मैं इस वर्ष दसवीं श्रेणी की परीक्षा देने वाली हूं।"

"पढ़ाई, तो हमारे यहां भी हो सकेगी। वहां तुम्हें एक कमरा मिल जायेगा।"

"यहां माताजी अकेली रह जायेंगी। वह इसे पसन्द नहीं करेंगी।"

"और माताजी मान जायेंगी, तो चलोगी?"

"तब चलूंगी।"

कृष्ण ने कहा, "तुम चाय बनाना जानती हो?"

"जी, रोटी भी बना सकती हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"तो जब तक तुम्हारी मां स्नान कर आती है, उनके लिए चाय बनी दो।"

रजनी उठी और रसोईघर में चली गयी।

उसने आने के उपरान्त कृष्ण ने पूछा, "माताजी, क्या समझी हैं?"

"ऐसा प्रतीत होता है कि कल अदालत में जो कुछ हुआ है, वह ज्ञान ने पत्नी को बताया है और पत्नी ने उसे पसन्द नहीं किया, तो दोनों में झगड़ा हुआ है और वह सच ही पत्नी का गला घोंटना चाहता है।"

"शकुन्तला भी अपने पिताजी से बहुत नाराज़ प्रतीत होती है।"

"सब धन के पीछे पागल हो रहे हैं।"

: 12 :

करुणा को स्नान करने में और धुले वस्त्र पहनने में आधा घण्टा लगा। ज्योंही वह आयी, रजनी एक ट्रे में चार व्यक्तियों के लिए चाय और बिस्कुट लेकर आ गयी।

धनवती ने कहा, "देखो करुणा! समझदार प्राणी की भांति व्यवहार करो। आत्महत्या तो किसी दूसरे की हत्या करने से भी अधिक बड़ा पाप है। यह बिस्कुट खाकर चाय पी लो। मैं यहां तुम्हारे घरवाले के आने तक बैठूंगी और उसे बताकर तुम्हें अपने घर ले जाऊंगी।"

"तब तो माताजी और भी खराबी होगी। वह इस घर में ही चकला बना लेंगे।"

"पर तुम तो उससे सम्बन्ध तोड़ना चाहती हो न? फिर इसे चकला बनाये अथवा कुचला बनाये, तुम्हें इससे क्या?"

"पर रजनी तो है?"

"यह भी हमारे साथ चल सकती है। वहां तुम सबके लिए स्थान है।"

"पर कृष्ण भैया पर बोझ बढ़ जायेगा।"

"नहीं बढ़ेगा। बताओ कृष्ण! भाभी को घर में स्थान दोगे या नहीं?"

"जी, भाभी एक दूसरी माताजी ही तो हैं। इनके हाथ का बना खाना खाता रहा हूं। यह मां तुल्य हैं।"

"क्यों करुणा, है न ठीक? ज्ञान आये, तो उसे नोटिस दे दो और हमारे साथ चलो।"

कृष्ण ने घड़ी में समय देखा। बारह बज रहे थे। उसने कहा, "भैया को आने में अभी दो घण्टे हैं। मैं कुछ देर के लिए एक काम पर जा रहा हूं। पौने दो बजे आ जाऊंगा।"

कृष्ण गया, तो रजनी अपने कमरे में जाकर स्कूल की पढ़ाई करने लगी। धनवती और करुणा में बात होने लगी। धनवती ने पूछ लिया, "मुक़द्दमे की क्या-क्या बात तुमको बतायी गयी है?"

करुणा ने बताया, "आपके सुपुत्र कह रहे थे कि उन्होंने अपने पिता को क़ैद कराने का प्रबन्ध कर दिया है।"

इसके उपरान्त उसने उस पूर्ण वार्तालाप को दुहरा दिया, जो उसके और उसके पति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के बीच हुआ था। करुणा ने कहा, "दिन-प्रतिदिन इनके विचार करने का ढंग ही बदल रहा है। यह नित्य रात मद्यपान कर मुझे तंग करते हैं। रजनी के उपरान्त मेरी सन्तान नहीं हो रही। इस पर भी ये नित्य रात को मुझे चक्की पीसने पर लगा देते हैं। इसी विवेकहीनता की पराकाष्ठा रात को हुई है। पिताजी ने सन्तान को अपनी जीवन-भर की कमाई अपने जीवन में ही दे डाली है और देकर प्रसन्नता अनुभव करते हैं, परन्तु पुत्र निर्लज्जों की भांति पिता को जेल में डलवाना चाहता है। मैं इस घर में रहना नहीं चाहती। मुझे यही समझ आया कि जीवित रहकर तो घर छूट नहीं सकेगा और घर छोड़कर जीवित रहना कठिन हो जायेगा। इसलिए जीवन को ही समाप्त कर देना ठीक होगा।"

धनवती ने कहा, "आने दो उस मूर्ख को। यदि वह समझ न सका, तो फिर तुम मेरे साथ चल देना। वहां ज्ञान के पिता से बात कर तुम्हारे जीवन-भर का प्रबन्ध करा दूंगी।"

"मुझे बताया गया कि क़ानून है कि पत्नी को बलपूर्वक घर में रखा जा सकता है।"

"परन्तु ऐसे पति के घर में नहीं, जो नित्य शराब पीकर पत्नी को तंग करता रहे।"

करुणा यह बात सुनकर विस्मय में सास का मुंह देखती रह गयी।

एक बजे के लगभग करुणा उठी और अपने, रजनी, माताजी, कृष्ण और पति के लिए भोजन तैयार करने लगी। कृष्ण और ज्ञान दोनों इकट्ठे ही घर आये।

कृष्ण रेलवे स्टेशन पर भाई को ढूंढ़ता हुआ जा पहुंचा था। ज्ञानचन्द स्टेशनमास्टर के कमरे में बैठा मिल गया। ज्ञानचन्द कृष्ण को देखकर विस्मित रह गया। कृष्ण समीप रखी कुरसी पर बैठकर बोला, "मैं आज आपके साथ घर चलने के लिए आया हूं।"

"वहां क्या है?"

"देख आया हूं कि भाभी रूठी हुई पलंग पर लेट रही है। उसने रात से कुछ खाया-पीया नहीं है। किसी ने सूचना दी थी कि भाभी आत्महात्या करने का यत्न कर रही है। इस कारण माताजी और मैं वहां गये थे। हम दोनों ने भाभी को शान्त करने का यत्न किया है। अब माताजी वहां हैं और मैं आपको घर ले चलने के लिए आया हूं।"

ज्ञानचन्द ने सामने दीवार पर लगी घड़ी में समय देखा और कहा, "अभी मेरी ड्यूटी दो घण्टा और है। जब तक कोई दूसरा नहीं आ जाता, मैं ड्यूटी छोड़कर नहीं जा सकता।"

"मैं यहा बैठूंगा।"

"आपको हमारे झगड़े का समाचार किसने दिया है?"

"रजनी रोती हुई कोठी पर पहुंची थी। इसलिए माताजी ने यही उचित समझा कि तुम दोनों की सुलह करा दी जाये।"

"माताजी कैसे करा सकेंगी?"

"यत्न तो करेंगी ही।"

अब ज्ञान उठकर कमरे से निकल गया। कृष्ण इसका कारण नहीं समझ सका था। वह धैर्यपूर्वक बैठा भाई के आने की प्रतीक्षा करता रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांच मिनट में ही वह आया। उसके साथ स्टेशन के भोजनालय का सेवक दो व्यक्तियों के लिए चाय और बिस्कुट लिये हुए आ गया।

कृष्ण ने कह दिया, "मैं इस समय चाय नहीं पीता।" इस पर भी उसने एक बिस्कुट उठा लिया और ज्ञानचन्द ने चाय लेनी आरम्भ कर दी।

ज्ञानचन्द स्टेशन का काम देखता रहा और कृष्ण बैठा प्रतीक्षा करता रहा। दो बजे से पांच मिनट पहले ही ज्ञानचन्द के स्थान पर एक दूसरा असिस्टेण्ट आया, तो ज्ञानचन्द ने रजिस्टर पर अपने हस्ताक्षर किये और कृष्ण के साथ घर को चल दिया।

स्टेशन से ज्ञान के घर तक का मार्ग पांच मिनट का था। दोनों भाई वहां पहुंचे, तो खाने के कमरे में पांच व्यक्तियों के लिए भोजन लगा था और करुणा तथा धनवती खाने के कमरे के द्वार पर खड़ी थीं।

ज्ञानचन्द ने मां को देखते ही पूछा, "मां, यहां भी आ गयी हो ?"

"हां! मूर्ख पुत्र को कुछ सूझ-बूझ की बात बताने आयी हूं। वस्त्र बदल आओ। खाना ठण्डा हो रहा है।"

ज्ञान इसकी आशा नहीं करता था। वह समझ रहा था कि मां तुरन्त मुक़द्दमा वापस लेने की बात कहेगी। इस कारण वह विचार करता हुआ कि उसकी किस बात का क्या उत्तर देगा, वस्त्र बदलने के लिए अपने कमरे में चला गया।

जब कृष्ण आया, तो रजनी भी आ गयी और सब खाना खाने लगे। रजनी की उपस्थिति में बातचीत नहीं हुई। सब चुपचाप खाना खाते रहे।

भोजन समाप्त हुआ, तो कृष्ण ने लड़की को कहा, "तुम जाओ और अपनी पढ़ाई करो।"

रजनी गयी, तो धनवती ने कहा, "देखो, करुणा कह रही है कि यह तुम्हारे घर में नहीं रहेगी। यदि बलपूर्वक रखा गया, तो यह भूखी रहकर शरीर का अन्त कर देगी।"

"मां! मैं इन धमकियों से नहीं डरता। मरने की बात बहुत लोग करते हैं, परन्तु मरना इतना सुगम नहीं है, जितना यह समझ रही है। आत्महत्या करने वाले लोग रेल के नीचे सिर देकर मरते हैं, खाना-पीना छोड़कर नहीं। यह तो मुझे डराकर मुझसे मुक़द्दमा वापस कराना चाहती है।"

"और तुम मुक़द्दमा वापस लेना नहीं चाहते ?"

"मैं अपना हक़ छोड़ना नहीं चाहता ?"

"ठीक है। तुम-जैसे बुद्धिमान् से यह आशा भी नहीं की जा सकती। सब अपने हक़ पर ही जीवित रह सकते हैं। परन्तु ज्ञान! तुमको तुम्हारे पिता ने बुला भेजा था कि जो कुछ कसर रह गयी है, वह पूरी कर आओ।"

"मुझे आशा नहीं थी कि पिताजी-जैसे क़ानून से अनभिज्ञ व्यक्ति क़ानूनी बात समझ सकेंगे।"

"पर तुम तो पढ़े हो ना। आकर उनको समझा देते, तो बात फोकट में बन जाती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या फ़ीस दी है वकील को और कचहरी में क्या कुछ देना पड़ा है मुक़द्दमे के लिए ? यदि तुम आते, तो कदाचित् यह सब ख़र्च नहीं करना पड़ता।"

"मां ! कुछ अधिक ख़र्च करना नहीं पड़ा। दोनों भाइयों ने मिलकर ख़र्च किया है। आज तक मुक़द्दमे पर कुल पांच सौ रुपये ख़र्च हुए हैं। वकील साहब को अभी केवल दो सौ रुपये दिये हैं। शेष मुक़द्दमे के बाद देने की बात है।"

"अर्थात् जब तुम्हारे पिताजी जेल में डाल दिये जायेंगे, तो उस ख़ुशी में वकील को और दोगे। यही न ?"

इसके पूर्व कि ज्ञान मुक़द्दमे की बात करता, करुणा उठकर खड़ी हो गयी और बोली, "माताजी ! मैं इस पातकी के घर पर रहना नहीं चाहती। यदि यह जाने से रोकेंगे, तो मैं रात से पहले-पहले मिट्टी का तेल डालकर जल मरूंगी।"

"माताजी ! आप जाइये। लातों के भूत बातों से नहीं समझते। मैं देखूंगा कि यह किस तरह जलकर मरती है ?"

अभी तक कृष्ण वार्तालाप में किसी प्रकार भाग नहीं ले रहा था। उसने पूछा, "तो भैया ! हम जायें ?"

"तुम्हें बुलाया किसने है ?"

"ठीक है, भाभी ! चलो ! देखें, तुम्हें कौन रोकता है ?"

कृष्ण ज्ञान से अधिक बलवान् था। वह यूं भी भाई से चार इंच ऊंचा था।

करुणा उठकर लड़की को आवाज़ देने लगी, तो ज्ञानचन्द ने पत्नी की बांह पकड़नी चाही, परन्तु कृष्ण सतर्क था। उसने भाई को पकड़ लिया और दोनों भाई आपस में गुत्थम-गुत्था होने लगे। इस हो-हल्ला में रजनी आयी, तो करुणा रजनी को बांह से पकड़कर मकान के बाहर निकल गयी। कृष्ण ने भाई को धकेलकर उसके सोने के कमरे में बन्द कर दिया।

करुणा इत्यादि नीचे आयीं, तो मकान का चौकीदार उन्हें देखने लगा। कृष्ण ने चौकीदार से कहा, "स्टेशनमास्टर साहब भीतर अपने कमरे में हैं। हमारे जाने के बाद उनके कमरे का द्वार खोलकर उनसे मिल लेना।"

इतना कहकर कृष्ण ने एक ख़ाली तांगा रुकवाया और सबको लेकर मोची दरवाज़े के थाने में जा पहुंचा। वहां उसने करुणा की ओर से रिपोर्ट लिखवा दी कि मेरा पति मेरी हत्या करना चाहता था, इसलिए मैं उसे कमरे में बन्दकर यह रिपोर्ट लिखवाने आयी हूं। मैं अपनी सास के साथ 30 नम्बर निस्बत रोड वाली कोठी में जा रही हूं।

रिपोर्ट लिखाकर नीचे हस्ताक्षर कर सब निस्बत रोड वाली कोठी को चल दिये।

थानेदार ने एक कांस्टेबल मकान पर भेजकर पता करना चाहा कि वहां क्या वारदात हुई है।

ज्ञानचन्द के कमरे का दरवाज़ा चौकीदार ने खोला, तो ज्ञानचन्द बाहर निकल आया। चौकीदार ने बताया कि बीवीजी और लड़की उनके साथ चली गयी हैं, जिनको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लड़की बुलाकर लायी थी।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानचन्द विचार करने लगा कि क्या करना चाहिए? एक बात उसके मन में आयी कि उसकी पत्नी अब समय से पूर्व ही बूढ़ी हो गयी है। वह इस समय तैंतालीस वर्ष की थी।

ज्ञानचन्द ने विचार किया कि वह गयी, तो ठीक है। वह दूसरा विवाह कर लेगा। उसने चौकीदार से कहा, "जाओ, बाहर बैठो। वह पिताजी के घर गयी है, आ जायेगी।"

चौकीदार मकान के द्वार पर जा बैठा, परन्तु एक घण्टे में ही पुलिस वहां आ पहुंची। चौकीदार ने कांस्टेबल को बैठक में बिठाया और भीतर स्टेशनमास्टर को ख़बर देने चला गया। ज्ञानचन्द बाहर आकर सिपाही से पूछने लगा, "कैसे आये हो?"

हैड कांस्टेबल ने कहा, "थाने में एक करुणादेवी ने रिपोर्ट लिखायी है कि उसका ख़ाविन्द शराब पीकर और उसका गला दबाकर उसे मार डालना चाहता था। इस कारण वह ख़ाविन्द का घर छोड़कर अपनी सास के साथ उसके घर जा रही है। मैं तहक़ीक़ात करने आया हूं।"

स्टेशनमास्टर साहब ने सिपाही को एक रुपया दिया और कहा, "मेरी औरत को भ्रम हो गया है। रात, मैं कुछ अधिक पी गया था। इस कारण वह समझी कि मैं उसका गला घोंट रहा हूं। हक़ीक़त में मैं प्यार कर रहा था।"

कांस्टेबल ने रुपया जेब में रखा और सलाम कर तथा सन्तुष्ट होकर चल दिया।

कोठी पर गोपीशाह और शकुन्तला चिन्तित मन धनवती की प्रतीक्षा कर रहे थे। तीन बजे के लगभग कृष्ण सबको लेकर वहां आ पहुंचा। उसने पिताजी को बताया कि वह भाभी से थाने में रिपोर्ट लिखवा आया है कि वह यहां पर है।

गोपीशाह समझ गया कि कृष्ण को क़ानून का परिचय हो रहा है। उसने कह दिया, "साढ़े चार बजे सुन्दरदास के पास चले जाना और क्या कुछ करना चाहिए, इसका पता कर आना।"

सायंकाल कृष्णचन्द्र सुन्दरदास से मिलने गया। पूरा वृत्तान्त सुनकर सुन्दरदास ने कहा, "अपनी भाभी से एक पत्र लिखवा दो कि वह जब तक शराब पीना नहीं छोड़ेगा, तब तक वह उसके घर में नहीं आयेगी। यह पत्र रजिस्टर्ड डाक द्वारा जाना चाहिए।"

परन्तु अगले दिन शकुन्तला और उसकी मां की घटना भी चर्चा का विषय बन गयी। उस समय रामेश्वरी आयी हुई थी। उसने इस घटना की बात जब वकील साहब को बतायी, तो वह हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, "औरतों की आत्मा और बुद्धि पतियों की अपेक्षा अधिक निर्मल प्रतीत होती है।"

परन्तु इस सारी घटना की पराकाष्ठा दो दिन उपरान्त तब हुई, जब रामचन्द्र की पत्नी अमृतसर से लाहौर में निस्बत रोड वाली कोठी पर आ पहुंची। गोपीशाह ने पूछा, "सुनाओ सुशीला! तुम कैसे आयी हो? बुलाया था, तुम्हारे पति को और आयी हो तुम! क्या खबर लायी हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सुशीला ने कहा, "पिताजी! आपने अपने लड़के को कुछ भी तो अकल नहीं सिखायी। मैं उनसे तंग होकर चली आयी हूं।"

"तुम्हारे विवाह को कितने वर्ष हुए हैं?"

"पिताजी! यह गिनती तो आपको याद होगी। मुझे तो यह पता है कि मैं आपके लड़के से पांच वर्ष छोटी हूं और जबसे विवाही गयी थी, आपकी छत्र-छाया में ही रहती थी। केवल एक वर्ष से ही आपका छत्र सिर पर से हटा है। तब से ही मुसीबतों की बाढ़ आ गयी है। आज किंचित् मात्र बात पर घर से निकाल दी गयी हूं। घर से निकलकर मुझे आपकी और माताजी की याद आ गयी और मैं यहां चली आयी।"

"राम ने ऐसा क्या किया है, जो तुम्हें घर छोड़ना पड़ा है?"

सुशीला ने बताया, "विनोद ने यह बताया था कि आपके वारण्ट निकलते-निकलते रुके हैं। चार दिन हुए, वह पिता के स्थान पर कचहरी में आया हुआ था। जब मैंने वारण्ट की बात सुनी, तो सारी बात पूछी और समझी। आज मध्याह्नोत्तर जब वह घर आये, तो मैंने अपने मन की प्रतिक्रिया बता दी। मेरा कहना था कि इतनी कृतघ्नता तो मैंने पहले कभी उनमें नहीं देखी। इस पर वह आग-बबूला हो गये। उनका लांछन था कि मेरा आपसे अनुचित सम्बन्ध रहा है, तभी आप मुझको—जब से मेरा विवाह हुआ था—वेतन देते थे। इस प्रकार की बात सुनकर मुझसे नहीं रहा गया। मैंने उनसे कहा कि वह महापातकी हैं, जो अपनी सती-साध्वी पत्नी पर यह लांछन लगाते हैं।

"इस पर उन्होंने मेरी चोटी पकड़ी और मुझे घर से निकालकर कहा, "इस पातकी के घर पर तुझ-जैसी साध्वी को नहीं रहना चाहिए। मैं कुछ देर घर के बाहर खड़ी रही। वहां खड़े-खड़े मुझे माताजी की याद आयी, तो मैं यहां चली आयी हूं।"

"विनोद क्या करता है?" गोपीशाह ने बात बदल दी।

"वह कॉलेज में पढ़ता है।"

"और उसने पिता को समझाया नहीं कि मुझे क़ैद कराना न केवल व्यर्थ था, वरन् पाप भी था?"

"वह इससे प्रसन्न नहीं था। इसीलिए उसने मुझे मुक़द्दमे की बात बता दी, जिससे मैं पिताजी को मना कर दूं। जब मुझे घर से निकाला गया था, वह कॉलेज गया हुआ था।"

गोपीशाह ने कुछ विचार कर कहा, "मैं समझता हूं कि हम सबको पुनः महल्ला मोहलिया में चलकर ही रहना होगा।"

कृष्ण समीप बैठा भाभी की बात सुन रहा था। उसने कह दिया, "पिताजी! पिद्दी का क्रोध चिद्दी पर निकाल रहे हैं। भला मैंने कौन-सा अपराध किया है कि आप यहां से जाने की बात सोच रहे हैं?"

"तुमसे नाराज़ नहीं हूं कृष्ण! तुम्हारे दोनों काम यहां उन्नति कर रहे हैं। ट्रस्ट का काम भी और तुम्हारी एजेंसी का काम भी। मैं समझता हूं कि तुम्हारे काम का केन्द्र यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोठी है और यहां बहुत झमेला नहीं होना चाहिए। करुणा अपनी लड़की के साथ आ गयी है। उसका शराबी पति उसे लेने नहीं आयेगा। अब सुशीला भी आ गयी है। मैं समझता हूं कि एक-दो दिन में विनोद और कदाचित् उसका भाई मनोज भी आ जायेंगे। इतना बड़ा परिवार इस कोठी में तुम्हारे व्यवसाय में बाधक होगा।"

"क्यों माया!" गोपीशाह ने अपनी बड़ी पतोहू उत्तमचन्द की पत्नी से पूछ लिया, "तुम्हारी क्या राय है?"

माया का कहना था, "पिताजी! अपने पुत्र से पूछ लीजिये। मैं तो यहां और वहां में कोई अन्तर नहीं देखती। मेरे दोनों लड़के लाहौर से बाहर रहते हैं। उनकी बहुएं उनके साथ हैं। इस कारण मेरे लिए तो यहां और वहां समान रूप हैं।"

"उत्तमचन्द क्या कहेगा? मेरे ये तीनों पुत्र सोलह आने गधे निकले हैं।"

इस पर उत्तमचन्द बोल उठा, "परन्तु पिताजी! मैंने तो गधापन नहीं किया। मैंने तो अपनी पत्नी को घर से नहीं निकाला।"

"तो तुम शहर के मकान में चलकर रहना चाहते हो?"

"मैं तो आपके अथवा कृष्ण के साथ रहने में सुख ही अनुभव करता हूं।"

अगले दिन गोपीशाह की भविष्यवाणी सिद्ध हो गयी। विनोद और मनोज दोनों लाहौर आ पहुंचे।

"सुनाओ! तुम कैसे आये हो?" गोपीशाह ने पूछ लिया।

विनोद ने कहा, "हम आपसे बोर्डिंगहाउस में रहने के लिए सहायता लेने आये हैं।"

"तो घर से निकाल दिये गये हो?"

"मां के चले आने पर वह घर नहीं रहा। वहां भांति-भांति की लड़कियां आने लगी हैं। पिताजी शराब तो पहले भी पीते थे, परन्तु कल तो एक शराब पिलाने वाली भी घर में आ गयी।"

"और जो धन मैंने तुम्हारे नाम पर दिया था?"

"वह पिताजी ने अपने बैंक में जमा करा दिया है?"

"ठीक है। रात रहो, तुम्हारी बात पर विचार किया जायेगा।"

अगले दिन दो बातें की गयीं। एक तो नगर के भीतर वाले मकान को खोलकर उसकी सफ़ाई करानी आरम्भ कर दी गयी। वह मकान एक वर्ष से बन्द पड़ा था। दूसरे, सायंकाल सुन्दरदास की बैठक में घर की नवीन समस्या पर विचार होने लगा।

सुन्दरदास का कहना था, "आपके दोनों लड़कों को भ्रष्ट चरित्र वाला सिद्ध किया जा सकता है और उनको विवश किया जा सकता है कि वह अपनी-अपनी पत्नियों और बच्चों को ख़र्च दें।"

गोपीशाह ने कहा, "मैं कचहरी नहीं जाना चाहता।"

"तो मुझसे क्या पता करने आये हैं?"

गोपीशाह ने कहा, "दो बातें हैं। एक तो ज्ञान और रामचन्द्र अपनी-अपनी बीवियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और बच्चों को तंग न कर सकें, इस विषय में कोई कार्यवाही की जाये। दूसरे यह कि विनोद और मनोज का यहां लाहौर में पढ़ाई अथवा किसी काम-धन्धे का प्रबन्ध किया जाये।"

सुन्दरदास ने कहा, "मनोज तो अभी स्कूल में पढ़ता है। उसे आप वहीं स्कूल के बोर्डिंगहाउस में दाख़िल करा दें। इसका ख़र्च वहां भेज दिया करें और विनोद को मेरे पास छोड़ दीजिये, उसे मैं किसी व्यापार में लगवा दूंगा।"

"औरतों की उचित स्वतन्त्रता में उनके पति बाधा न डाल सकें, इसकी व्यवस्था होनी चाहिए। यदि उनके पति कचहरी में जायें, तो बात दूसरी है, इनको नहीं जाना चाहिए। उसमें भी क़ानूनी दृष्टि से वे निर्दोष सिद्ध होनी चाहिए।"

"यही ठीक है।" सुन्दरदास ने कह दिया, "मैं कल आपकी दोनों बहुओं की ओर से उनके अपने-अपने पतियों के नाम पत्र लिख छोडूंगा। मेरा मत है कि कुछ भी लुकाव-छुपाव रखना ठीक नहीं। सब बात स्पष्ट और सरल भाषा में लिखी जानी चाहिए। आप और वे उन पत्रों को पढ़ लें और उचित समझें, तो डाक द्वारा भेज दें।"

: 13 :

सुन्दरदास ने सीधी-सरल भाषा में शाहजी की दोनों पतोहुओं की ओर से पत्र लिख दिये। दोनों पत्रों में साझा लेख यह था कि—"मेरा आपसे विवाह हुए पर्याप्त समय हो चुका है। मैं इस दौरान आपके उच्छृंखल जीवन को देखकर भी धर्म के सूत्र से बंधी उसको सहन करती रही, परन्तु पिछले दस अक्टूबर के दिन कचहरी में आपके अपने पिता के प्रति अनुचित और क्रूर व्यवहार से आपके व्यवहार की पराकाष्ठा हो गयी है। इस पर, मुझे भी अपने व्यवहार पर विचार करने पर विवश होना पड़ा है। आपके अपने पिता के साथ व्यवहार को देखकर—जो सदा दयावान्, सहानुभूतियुक्त और सर्दी-गरमी में सहारा देते रहे हैं—मैं यह समझती हूं कि आप मेरे साथ कुछ भी क्रूरतापूर्ण और अयुक्त व्यवहार कर सकते हैं। आपके पिता ने अपनी जीवन-भर की कमाई अपनी सन्तान में बांट दी है और आप उन्हें धोखेबाज़ सिद्ध करने के यत्न करने में लगे हैं। पैतृक मकान आपके दादा ने चार सौ रुपये में ख़रीदा था और इसके स्थान पर आपके पिता ने अपने गाढ़े पसीने की कमाई में से प्रत्येक को पांच-पांच हज़ार रुपया दिया है। सम्पत्ति के उत्तराधिकारी हम तीस व्यक्ति थे। वह चार सौ रुपये वाले मकान का हिस्सा आपको मिलता, तो चौदह-चौदह रुपये से भी कम हमारे हिस्से में आता। आप पांच हज़ार तो डकार गये और चौदह रुपये के लिए पिताजी को दण्ड दिलवाना चाहते हैं।

"ऐसे कृतघ्न व्यक्ति के साथ मैं नहीं रहूंगी। मेरा भविष्य आपके साथ रहकर बिगड़ेगा। यह धर्म नहीं, अधर्म हो जायेगा।

"मैं अब उसी हवेली में जाकर रहने लगी हूं, जिसके विषय में आपका पिताजी से झगड़ा है। पिताजी आपको चौदह रुपये देकर आपसे भरपाई लिखा लेना चाहते हैं, परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मैं तो कुछ भी लिये-दिये बिना आपसे भरपाई चाहती हूं।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां, मेरा पांच हज़ार रुपया, जो आपके पिताजी ने मुझे दिया था, वह मुझे लौटा देने का प्रबन्ध करें।"

दोनों के पत्रों में थोड़ा-बहुत अन्तर भी था। करुणा के पत्र में लिखा गया था, "रजनी मेरे साथ है। आपके रहन-सहन को देखकर मैं उस कुंवारी लड़की का आपके साथ रहना उचित नहीं समझती। वह मेरे पास ही रहेगी।"

सुशीला के पत्र में लिखा था, "आपके दोनों लड़के मेरे साथ हैं। मैं उनकी पढ़ाई का यथायोग्य प्रबन्ध कर रही हूं।"

ये दोनों पत्र अगले दिन गोपीशाह को मिल गये। पत्र अपने कार्यालय में बैठे हुए सुन्दरदास ने पढ़कर सुनाये थे। शाहजी ने धन्यवाद किया और कहा, "मैं दोनों बहुओं को पत्र सुनाकर हस्ताक्षर करवा लूंगा और आपके पास आऊंगा। आप भेज दीजियेगा।"

"नहीं शाहजी, पत्र तो नगर के डाकख़ाने से भिजवाने चाहिए और रजिस्टर्ड डाक से पहुंच की रसीद के साथ जाने चाहिए।"

गोपीशाह पत्र लेकर चला गया। सायंकाल जब सुन्दरदास कचहरी से लौटा, तो चपरासी ने बताया, "आपके लिखने के पैड के नीचे, ये दो सौ रुपये के नोट पड़े थे।"

सुन्दरदास स्मरण करने लगा कि वे नोट कहां से आ गये। एकाएक उसे समझ आया कि अवश्य शाहजी ने पत्रों की लिखाई के दिये हैं। इस बात को समझते ही उसकी हंसी निकल गयी। वह अभी नोटों को हाथ में पकड़े हुए हंस ही रहा था कि रामेश्वरी पति को चाय के लिए बुलाने आ गयी। पति को हंसते हुए देख, वह विस्मय में पति का मुंह देखती रह गयी। सुन्दरदास ने ही बताया, "देखो, आज कृष्ण के पिताजी मेरे काम की फ़ीस दे गये हैं।"

"अरे, तो यह आपको फ़ीस लेने के योग्य समझते हैं?"

"ज़रूर समझते होंगे। तभी तो इस पैड के नीचे चुपचाप रख गये हैं। अभी भगवती ने बताया है कि यह यहां पड़े थे।"

"तो यह उनको वापस कर दीजियेगा?"

"नहीं, मेरा ऐसा विचार नहीं है। उन्होंने एक दिन बताया था कि पचास रुपये से उन्होंने दस-बारह लाख एकत्र कर लिया है। ऐसे भाग्यशाली का प्रसन्नतापूर्वक दिया रुपया हमारे पास ज़ामिन रूप हो जायेगा।"

"परन्तु उनको बताना तो चाहिए कि रुपये मिल गये हैं।"

"हां, मैं अभी उनको कोठी में जाकर उनको धन्यवाद कर कहूंगा कि वह रुपये मैंने अपने घर में रख लिये हैं और देखना चाहता हूं कि एक भाग्यशाली के रुपये कितने बच्चे देते हैं।"

सुन्दरदास ने चाय पी और रामेश्वरी को साथ लेकर 30 निस्बत रोड पर जा पहुंचा। वहां कोठी में भीड़-भाड़ कम प्रतीत हुई। इस कारण रामेश्वरी ने पूछा, "कृष्णजी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी कोठी आज ख़ाली-ख़ाली प्रतीत होती है।"

"हां!" कृष्ण ने उत्तर दिया। उसने कहा, "तीनों भाभियां और उनके बच्चे महल्ला मोहलिया वाले मकान में चले गये हैं।"

"और वे पत्र, जो मैंने लिखकर दिये थे?" सुन्दरदास ने पूछा।

"पिताजी ने हस्ताक्षर कराकर रजिस्टर्ड डाक से भिजवा दिये हैं।"

"पिताजी कहां हैं?"

"माताजी और पिताजी कहीं गये हैं। अब आने ही वाले होंगे। आप चाय लेंगे अथवा कॉफ़ी?" कृष्ण ने पूछ लिया।

सुन्दरदास और रामेश्वरी दोनों हंस पड़े। उत्तर रामेश्वरी ने दिया। उसने कहा, "कृष्ण भैया! मालूम होता है कि तुम पिताजी की ख़ून-पसीने से एकत्र की गयी सम्पत्ति इस क़ॉफी-चाय में बहा दोगे?"

कृष्ण भी हंसने लगा। इस समय शकुन्तला एक बड़ी-सी ट्रे में क़ॉफी और बादाम का हलवा ले आयी।

अब सुन्दरदास ने कहा, "तो तुम पति-पत्नी दोनों ने साज़िश की है कि शाहजी की सम्पत्ति इन चीनी के बर्तनों में बहानी है?"

सब हंस रहे थे कि धनवती और गोपीशाह भी वहां आ पहुंचे। सबको हंसता देख, शाहजी विस्मय में पूछने लगे, "क्या बात है? शकुन्तला ने बहुत कुछ खाने को दिया प्रतीत होता है।"

"हां!" सुन्दरदास ने कहा, "यह आपके बेटे, छोटे साहबज़ादे और उनकी श्रीमती जी आपकी जीवन-भर की कमाई इन कप-प्लेटों में लुटा रहे हैं और आपसे बिना पूछे इतना कुछ बनाकर ले आये हैं?"

"परन्तु वकील साहब! यह मेरी कमाई में से नहीं है। यह तो अब अपनी कमाई में से आपको खिला-पिला रहे हैं।"

अब रामेश्वरी ने मुसकराते हुए कह दिया, "और आप भी तो धन-दौलत से ऊब गये प्रतीत होते हैं। आते-जाते दूसरों को मेज़ पर काग़ज़ों के नीचे छिपा-छिपाकर सौ-सौ के नोट फेंकते जा रहे हैं।"

अब तो गोपीशाह भी हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, "हां, कृष्ण ने समझाया है कि अधिकारी-अनधिकारी की जांच किये बिना बांटने से तो अधिकारी देखकर बांटना अधिक ठीक होगा। इसलिए मैंने अपनी जीवनचर्या में परिवर्तन कर दिया है। अब मैं अपनी कमाई गिन-गिनकर नहीं बांटता, अब अधिकारी और अनधिकारी को देखकर बांटता हूं।"

"तो आप मुझको अधिकारी समझते हैं?"

"बिल्कुल! मैं विचार कर रहा था कि कहीं मूल्यांकन करने में भूल तो नहीं कर रहा? चनों के भाव में कहीं मोती तो नहीं ले रहा हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु शाहजी! माल का दाम माल बेचने वाला लगाता है अथवा माल ख़रीदने वाला?"

"अभी तक बाज़ार की यही प्रथा है कि ग्राहक न्यूनाधिक होने पर वस्तु का मूल्य न्यूनाधिक होता है। तभी तो सोने का दाम विलायत की ख़रीद से बढ़ता है और ख़रीद बन्द करने पर गिर जाता है।"

"परन्तु शाहजी! यह ढंग ग़लत है। इससे तो परिश्रम करने वाला कभी भूखा भी मर सकता है।"

"नहीं वकील साहब! कारीगर भूखा इसलिए नहीं मरता कि उसके माल के ख़रीदार कम हो गये हैं। उसको अभाव तब प्रतीत होगा, जब उसकी उपज घटिया होने लगेगी अथवा बाज़ार में मूर्ख ख़रीदार एकत्र होने लगेंगे। सोना भी अपने गुणों के कारण ही दाम प्राप्त करता है अथवा पीतल ख़रीदने वालों के सोने के बाज़ार में आ जाने से सोने का मूल्य कम हो सकता है।"

शकुन्तला ने सबके लिए क़ॉफी बना दी थी और सब पीने लगे थे। धनवती और गोपीशाह भी। सुन्दरदास को विस्मय तो हुआ, परन्तु उसने इसका उल्लेख नहीं किया। उसने बात अपने सौ-सौ रुपये के नोटों की ओर ही धकेल दी। उसने कहा, "रामेश्वरीदेवी कह रही थी कि आपको दो सौ रुपये के नोट वापस कर दूं, परन्तु मैंने इस आशा से अपनी सेफ़ में रख लिये हैं कि भाग्यशाली के हाथों से दिया हुआ धन मेरे सेफ़ में धन की लहर-बहर लगा देगा।"

"ऐसा कीजिये," गोपीशाह ने कहा, "कि कुछ दिन तक वहां रखिये और यदि उनमें जनन-शक्ति दिखाई दे, तो उनको तब तक रखिये, जब तक वे बच्चे देते रहें और कहीं उनसे हानि दिखाई देने लगे, तो उनको किसी शराबी-कबाबी को दे दीजियेगा। मुझे अपनी कमाई की श्रेष्ठता पर सन्देह हो गया है। उस कमाई से एक पुत्र तो उत्तमचन्द है, जो सर्वथा मन्द-बुद्धि निकला। दो अन्य हैं। वे दोनों शराबी और वेश्यागामी हो गये हैं। चौथे साहब यह हैं। यह बीवी को लेकर 'बाइसकोप' हॉल में तसवीरें देखने जाने लगे हैं। कृष्ण कहता है कि उसमें बहुत शिक्षाप्रद तसवीरें दिखायी जाती हैं। मैं भी एक दिन गया था और आधे घण्टे में ही वापस चला आया था, परन्तु अपनी कमाई को इन मार्गों पर जाता देख उसके जमा करने में दोष प्रतीत होने लगा है?"

"क्यों कृष्ण, तुम्हारे पिताजी ठीक कहते हैं कि तुममें झूठी कामनाओं के नाटक देखने की रुचि उत्पन्न हो गयी है?"

कृष्ण का कहना था, "एक दिन शकुन्तला ने वहां जाने का प्रस्ताव किया, तो मैं मान गया। उस दिन कार्लाइल की पुस्तक 'फ्रांस की क्रान्ति' के आधार पर बना चित्र चल रहा था। मैंने वह पुस्तक पढ़ी थी और उसको चित्रपट पर दुहरायी जाती देख बहुत आनन्द आया। वह चित्र ज्ञानवर्धक सिद्ध हुआ। तब से हम कभी-कभी चित्र देखने चले जाते हैं। अच्छे-बुरे चित्र मिले-जुले आते हैं। संयोगवश जिस दिन पिताजी देखने गये थे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उस दिन चार्ली [illegible] चित्र था। वह पिताजी को पसन्द नहीं आया, परन्तु मैं तो यह विचार कर जाता हूं कि अच्छे-बुरे में से अच्छे को स्मरण रखूंगा और बुरे को हॉल से निकलते ही मस्तिष्क से निकाल दूंगा।"

"लेकिन मैं कहता हूं'', गोपीशाह ने कहा, "बुरे चित्र भी मस्तिष्क में एकत्र होते रहते हैं। वे किसी भी समय मन को कलुषित कर कुकर्म करने की प्रेरणा देने लगेंगे।"

सुन्दरदास ने बात बदल दी। उसने कहा, "स्वामी रामकृष्ण भी ऐसी ही बातें करते रहते थे। वह कहते थे कि मस्तिष्क में एक छोटा-सा स्थान है, जहां मन तथा बुद्धि का निवास है। मन स्मरण रखने का यन्त्र होता है। बालक जब से होश संभालता है, तब से ही उसमें स्मृतियां एकत्र होती रहती हैं और वे कभी अनजाने में फूट पड़ती हैं, तो मनुष्य को उलटे मार्ग पर ले जाती हैं।"

"स्वामीजी आजकल कहां हैं?" गोपीशाह का प्रश्न था।

"उनका पता नहीं चल रहा। कुछ मास हुए, उनके कपड़े गंगा के किनारे एक निर्जन स्थान पर पड़े मिले थे। यह कहा जा रहा है कि उन्होंने गंगाजी में प्रवाह ले लिया है।"

"हो सकता है।" गोपीशाह का कहना था, "वह विक्षिप्त मन तो थे ही।"

"विक्षिप्त?" सुन्दरदास का प्रश्न था?

"हां, मेरा अभिप्राय है, जिसका मस्तिष्क ठीक दिशा में न चले। वहां एक रामकृष्ण मिशन है। मैं कभी-कभी वहां जाया करता था। वहां भी मज़ेदार साधु आया करते थे। यह स्वामी रामकृष्ण भी जब लाहौर में आते थे, तो प्रायः वहां जाया करते थे। एक दिन वहां एक स्वामी भूमानन्दजी मिले। यह स्वामी रामकृष्ण भी वहां बैठे हुए थे। तब यह भगवा वस्त्र नहीं पहनते थे। श्वेत धोती, कुरता, सिर से नंगे और पांव में चप्पल। बस, यही उनकी पोशाक हुआ करती थी। मैंने उनसे पूछा, आपकी जेब में कितना कुछ है, तो वह बोले, "पृथ्वी-भर की धन-दौलत मेरी जेब में है। मैं चुप रहा। भूमानन्द बता रहे थे कि मन तथा बुद्धि जड़ हैं। जब तक कोई चेतन उनको जाग्रत न करे, वे काम नहीं करते। इस पर रामकृष्णजी बोले, चेतन ब्रह्म तो सर्वव्यापक है। वह जब चाहता है, किसी के मन और बुद्धि को जाग्रत कर देता है। मैंने पूछ लिया, अकारण अथवा किसी कारण से? वह कहने लगे, मैं नहीं जानता। यह कोई भी नहीं जान सकता।

"मेरे मुख से अकस्मात् निकल गया, सबकी बात छोड़िये। आपकी बात तो हो सकती है। यदि आप जानते होते, तो आपको पता होता कि पृथ्वी-भर की सम्पत्ति तो क्या, आपकी जेब में एक फूटी कौड़ी भी नहीं है। आप अपनी जेब की बात भी नहीं जानते, तो ब्रह्म की बात क्या जानेंगे? वह बोले, दोनों में क्या सम्बन्ध है? मेरा कहना था, चोली-दामन का। ब्रह्म सर्वव्यापक है और वह आपकी जेब में भी है। आप उसमें की बात नहीं जानते। अभिप्राय यह कि आप ब्रह्म को नहीं जानते। मुझे कोई पागल समझ वह हंसकर चुप कर रहे। मैं समझ रहा था कि वह निरुत्तर होकर चुप कर गये हैं। अतः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मैंने ही उनको समझाना उचित समझा। मैंने कहा, देखिये महाराज! मन जड़ है। जड़ वस्तु स्वयं हिलती-डुलती नहीं। इस कारण मन को जाग्रत करने वाला कोई होता है, जिससे यह स्मरण की हुई बात को बताने लगता है, परन्तु यह स्मरण कराने वाला परमात्मा नहीं होता। परमात्मा स्मरण कराता, तो बुरी बात स्मरण नहीं कराता।

"क्यों?" उनका प्रश्न था।

"मैंने कहा, इसलिए कि परमात्मा निर्मल, शुद्ध-बुद्ध है।"

"तो बुरी बात कौन याद दिलाता है?"

"जिसका स्वभाव बिगड़ गया होता है। वह जीवात्मा है। वह परमात्मा नहीं, कोई अन्य है।"

"अब उन्होंने भी दलील देनी आरम्भ कर दी। उन्होंने कहा कि परमात्मा उपाधि-भेद से अच्छी-बुरी बात करता है।"

"मेरा कहना था, अर्थात् वह परिस्थिति बदलने पर दुष्ट स्वभाव वाला भी हो सकता है। तो भगवन्! वैसे ब्रह्म तो आप हैं ही। आप दुष्ट स्वभाव तो नहीं, परन्तु अबुद्ध व्यवहार को प्रकट कर रहे हैं?

"स्वामी भूमानन्दजी ने उनकी सहायता कर दी। उन्होंने कहा, "ठीक है। यह भूले हुए हैं और तुम ठीक हो। मतलब यह है कि दोनों एक-दूसरे से भिन्न हैं। यह उपाधि-भेद से है अथवा किसी अन्य कारण से है, यह एक दुर्बलता ही है। प्रश्न यह नहीं कि तुममें जो ब्रह्म है, वह ठीक है अथवा इन महात्माजी का ब्रह्म ठीक है। बात यह है कि दोनों दुर्बल हैं, क्योंकि उपाधि बलवान् है।

"एकाएक महात्मा रामकृष्ण उठे और चल दिये। भूमानन्दजी हंस पड़े और बोले, "यह इनके आत्मा का दोष नहीं है, यह इनकी बुद्धि का दोष है। बुद्धि ही उपाधि है। इस कारण दोनों के ब्रह्म भिन्न-भिन्न हैं। कुछ लोग भिन्न-भिन्न ब्रह्म को जीवात्मा कहते हैं। वे उसे ब्रह्म कहते हैं। ये नाम-भेद हैं। ऐसा एक उपनिषद् में भी कहा गया है कि ब्रह्म तीन हैं। परमात्मा नियन्ता है, जीवात्मा दुर्बल और अज्ञानी है और प्रकृति जड़ है। यह तीनों को एक समझते हैं। इसलिए कि इन्हें भेद करना नहीं आता।

"मैं भूमानन्दजी का मुख देखता रह गया। भूमानन्दजी ने आगे कहा, "यह महात्मा न्यून और अपुष्ट भोजन करने से अबुद्ध हो रहा है। यह कभी भी कोई अबुद्ध कार्य करते हुए चल बसेंगे।

"देखिये वकील साहब! भूमानन्दजी ने कहा था, इनके गुरु शंकराचार्य का अन्त भी अल्पायु में इसीलिए हो गया था। स्वामी विवेकानन्द का शरीर भी छोटी आयु में ही छूट गया था। वही बात मुझे आज स्मरण आ गयी है। अवश्य ही इन महानुभाव ने आत्महत्या की है। ऐसा प्रतीत होता है कि गंगा के किनारे बैठ, वह समझने लगे होंगे कि यह तो परमात्मा है, बीच में यह शरीर-रूपी उपाधि उस पूर्ण ब्रह्म से मिलने से उन्हें रोक रही है। इस कारण उन्होंने शरीर को ऐसे नष्ट कर दिया है, जैसे घटाकाश को पूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आकाश में मिलाने के लिए घड़े को तोड़ दिया जाता है।"

सुन्दरदास शाहजी की बात सुनकर अपने मन की प्रतिक्रिया पर विचार करने लगा था, जो महात्माजी के लापता होने पर बनी थी।

महात्मा रामकृष्ण सुन्दरदास के सहपाठी थे और दोनों में मतभेद होते हुए भी सहानुभूति थी। इसलिए, वह विचार करता था कि आहार ठीक न होने के कारण उनकी विचार-शक्ति क्षीण होने लगी थी।

इस पर भी वह यह सोचता था कि यदि इस आत्महत्या से ब्रह्म में ब्रह्म मिल गया हो, तो हानि नहीं हुई।

गोपीशाह ने आगे कहा, "मैं जीवन-भर एक समान सरल व सस्ता भोजन करता रहा हूं, परन्तु वास्तव में दूध और घी का प्रयोग सदा करता था। यही कारण है कि आज बहत्तर वर्ष का होने पर भी मेरा मन आत्महत्या करने को नहीं करता। आत्महत्या को मैं किसी दूसरे की हत्या करने से भी अधिक पाप समझता हूं। यह तो परमात्मा से विद्रोह करना है। यह उसके द्वारा नियत की गयी कर्मयोग की अवधि को कम कर उससे बचने का उपाय है। चोरी करना पाप है, परन्तु चोरी के फलस्वरूप मिले जेल को तोड़कर भाग जाना तो और भी अधिक पाप होगा।"

सुन्दरदास ने बात बदल दी, "तो आपके गुरु का नाम स्वामी भूमानन्द है।"

"नहीं, मैं इस लम्बे जीवन में अनेक महात्माओं के चरण स्पर्श करता रहा हूं, परन्तु बात उनकी मानता हूं, जो मेरी बुद्धि को समझा सकते हैं। कुछ दिन से शकुन्तला कह रही है कि यदि मैं उनके समान भोजन करूं, तो मैं उनके समान समझने के योग्य हो जाऊंगा। अब जो ये लोग खाते हैं, वही खीर-पूरी खाकर, मैंने यह अनुभव प्राप्त करना आरम्भ किया हुआ है।"

"भोजन में परिवर्तन कब से किया है?"

"अभी दस-पन्द्रह दिन हुए हैं।"

"पेट तो ख़राब नहीं हुआ।"

"यत्न कर रहा हूं कि ख़राब न हो। कम खाता हूं और चबा-चबाकर खाता हूं।"

अब रामेश्वरी ने बातों में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "तब तो पिताजी! आपके इस व्यवहार का परिणाम जानने के लिए कुछ दिन ठहरना चाहिए। मैं समझती हूं कि शकुन्तला के प्रसव तक तो इस परिवर्तन का परिणाम सामने आने ही लगेगा।"

सब हंसने लगे।

: 14 :

दावे की तारीख़ थी, तो ज्ञानचन्द और रामचन्द्र दोनों भाई अदालत में उपस्थित थे। सुन्दरदास ने दोनों भाइयों के बयान सौगन्धपूर्वक अदालत में कराये। पहले ज्ञानचन्द के बयान हुए। उसने अपने बयानों में अपने दावे का समर्थन करते हुए कहा, "मेरे पिता लाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोपीशाह ने अपनी सम्पत्ति अपनी सन्तान में बांट दी है। वह बंटवारा न्यायोचित नहीं हुआ। एक जद्दी मकान, जो महल्ला मोहलिया में था, उसको बंटवारे में सम्मिलित नहीं किया गया। मेरा दावा है कि उसको छिपाकर गोपीशाह ने हम सबको धोखा दिया है।"

इस बयान के उपरान्त सुन्दरदास ने ज्ञानचन्द पर जिरह की। उसने पूछा, "वह जद्दी मकान आपने देखा है ?"

"मेरे होश संभालने से पूर्व उसे नया बना दिया गया था।"

"आपको मालूम है कि वह मकान आपके दादा ने ख़रीदा था ?"

"नहीं, मुझे मालूम नहीं।"

"कभी किसी से सुना है कि वह कितने का मोल लिया गया था ?"

"इसका कभी ज़िक्र नहीं हुआ।"

"आपको उस जद्दी मकान के विषय में क्या मालूम है ?"

"बस, यही कि वर्तमान हवेली के स्थान पर पहले एक मकान था। वह हमारे दादा का था।"

"गोपीशाह के बंटवारे में उनके अतिरिक्त किसी अन्य की कमाई का धन था ?"

"मुझे पता नहीं।"

"क्या गोपीशाह ने अपने पिता से कुछ नक़द भी प्राप्त किया था ?"

"मुझे ज्ञात नहीं।"

"इस बंटवारे में शाहजी ने सम्पत्ति में क्या-क्या गिना था ?"

"एक पर्चा पिताजी ने पढ़कर सुनाया था। उसमें उन्होंने कहा था कि यह सब सम्पत्ति मेरी अपनी पैदा की हुई है। इसमें मकान हैं। बैंकों में रुपये हैं। कम्पनियों के हिस्से हैं और तिजोरी में नक़द है। पिताजी ने यह भी बताया था कि सब जो देय है, उसे देकर, आठ लाख कुछ हज़ार रुपये ही हैं। उसमें से उन्होंने अस्सी प्रतिशत दाने देने का निश्चय किया है। शेष को शाहजी ने तीस भागों में बराबर-बराबर बांट दिया। घर के सब छोटे-बड़े प्राणी गिने गये, जो तीस थे। प्रत्येक को पांच-पांच हज़ार रुपया मिला है।"

सुन्दरदास ने पूछा, "पिताजी की सम्पत्ति में महल्ला मोहलिया वाली हवेली भी थी अथवा नहीं।"

"थी!"

"उसकी क़ीमत कितनी आंकी गयी थी ?"

"चार हज़ार रुपये।"

"यह क़ीमत आपको ठीक मालूम होती है अथवा नहीं ?"

"मेरा विचार है, ठीक ही है।"

"वह हवेली किसको दी गयी है ?"

"भाई उत्तमचन्द को उसके पांच हज़ार के बदले में दी गयी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपके दावे से यह प्रकट होता है कि हवेली का दाम चार हज़ार रुपये बताया गया है, पुराने जद्दी मकान का चार सौ रुपया मूल्य में सम्मिलित नहीं है।"

"जी ! मेरा भी यही दावा है।"

"शेष सम्पत्ति के बंटवारे के विषय में आपको कुछ कहना है ?"

"कहना तो बहुत कुछ है, परन्तु क़ानून नहीं है। इसलिए कहना नहीं चाहता।"

सब हंस पड़े।

रामचन्द्र से सुन्दरदास ने एक ही प्रश्न पूछा, "मिस्टर रामचन्द्र ! पुराने जद्दी मकान के स्थान पर जो हवेली बनायी गयी है, उसका मूल्य बंटवारे की जायदाद में था अथवा नहीं ?"

"था !"

"कितना था ?"

"चार हज़ार रुपये।"

सबजज ने ज्ञानचन्द और रामचन्द्र के वकील गिरिधारीलाल से पूछा, "आपके मुवक्किलों का मुक़द्दमा क्या है ? बंटवारे की जायदाद में नये मकान का मूल्य सम्मिलित है, तो कैसे कहते हैं कि जद्दी मकान को बंटवारे में सम्मिलित नहीं किया गया ?"

गिरिधारीलाल ने कहा, "मुझे तारीख़ दी जाये। मैं इस विषय में पूरी जानकारी प्राप्त कर अर्ज़ी दूंगा।"

परन्तु सबजज नहीं माना। उसने ज्ञानचन्द और रामचन्द्र का दावा ख़ारिज कर दिया।

ज्ञानचन्द और रामचन्द्र चुप मुंह लटकाये हुए बाहर निकले, तो गोपीशाह ने साथ चलते हुए कहा, "बरख़ुरदार ! शराब पीनी छोड़ दो। तब तुम्हें समझ आने लगेगा कि तुम्हारा बाप गधों के आगे मोतियों का चारा डाल रहा था।"

ज्ञानचन्द इस बात को भी नहीं समझ सका।

गोपीशाह ने सुन्दरदास से कहा, "वकील साहब ! आज आप कृष्ण के घर पत्नी और बच्चों सहित चाय पर आमन्त्रित हैं।"

सुन्दरदास ने कहा, "आने का यत्न करूंगा।"

सुन्दरदास, रामेश्वरी और उनके दोनों लड़के अरुणकुमार तथा निरंजनकुमार ठीक चार बजे 30 निस्बत रोड पर आ पहुंचे। वहां ज्ञानचन्द और रामचन्द्र भी आये बैठे थे। उन्हें देखकर सुन्दरदास आश्चर्य से शाहजी का मुंह देखता रह गया।

गोपीशाह ने सुन्दरदास का आशय समझकर कह दिया, "जब मैं आपको चाय का निमन्त्रण दे रहा था, तो ज्ञान समीप खड़ा सुन रहा था। आपके चले जाने पर यह बोला, "पिताजी ! हमको चाय का निमन्त्रण नहीं देंगे ?"

"मेरे मुंह से निकल गया, तुमको ईश्वर ने स्थायी निमन्त्रण दे रखा है। उसे दोहराने की आवश्यकता नहीं है। बस, ये दोनों भी समय पर आ गये हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन्दरदास ने कहा, "मैं आपसे एक बात कहने आया था, परन्तु अब इन दोनों के सामने कुछ नहीं कहूंगा।"

"तो हम कुछ देर के लिए बाहर चले जाते हैं। आप अपनी बात कह सकते हैं।" ज्ञानचन्द ने कहा।

"नहीं," गोपीशाह का कहना था, "ज्ञान! तुम्हें बाहर जाने की आवश्यकता नहीं। यदि वकील साहब को कुछ कहना है, तो सबके सामने ही कहेंगे। नहीं, तो कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है।"

"तो इनके सामने ही कह दूं?" सुन्दरदास ने शाहजी से पूछ लिया।

''देखिये वकील साहब! मैं इनको बिल्कुल गधा समझता हूं। इसलिए जैसे मनुष्य किसी गधे के सामने कुछ भी चोरी नहीं रखते, यही बात हमारे विषय में है।"

ज्ञान का मुख लज्जा और क्रोध से लाल हो गया, परन्तु पिता ने उसकी चिन्ता न करते हुए सुन्दरदास से कहा, "हां बताइये! क्या कहना चाहते हैं?"

"यही कि उस दिन मेज़ की राइटिंग पैड के नीचे सौ-सौ के दो नोट रखे मिले थे और आज मैं कचहरी का कोट उतारने लगा, तो उसकी जेब में वैसे ही सौ-सौ रुपये के पांच नोट निकल आये हैं?"

शाहजी ने हंसते हुए पूछा, "वकील साहब! पहले यह बताइये कि पहले दो नोट, जो आपने अपने 'सेफ़' में रखे थे, उनके वहां रखने से क्या हुआ?"

उत्तर रामेश्वरी ने दिया, "उन्होंने वहां बच्चे देने आरम्भ कर दिये हैं। उनको वहां रखे हुए एक महीना बारह-तेरह दिन हुए हैं। अब वहां दो के स्थान पर चालीस हो गये हैं।"

"तब ठीक है," शाहजी का कहना था, "इनको भी उनके साथ रख दें। शीघ्र ही 'सेफ़' में नोट रखने का स्थान नहीं रहेगा। मैं समझता हूं कि उनमें से कुछ निकालकर बैंक में एक नया खाता खोलकर जमा कराने आरम्भ कर दें और फिर हमारे ट्रस्ट की जमा पूंजी में जमा करा दें।''

ज्ञानचन्द और रामचन्द्र इसका अर्थ न समझते हुए टुकुर-टुकुर पिता का मुंह देख रहे थे।

धनवती ने कहा, "देखिये! शकुन्तला ने आज फिर कॉफ़ी बनायी है।"

पौना घण्टा तक कॉफ़ी इत्यादि ली जाती रही। किसी ने ज्ञानचन्द और रामचन्द्र से बात नहीं की। मुक़द्दमे की बात होती रही।

सुन्दरदास का कहना था, "मैं समझता हूं कि गिरिधारीलाल का सितारा उच्च है, तभी लाहौर में मूर्खों की सृष्टि बहुत हो रही है और उसे प्रचुर मात्रा में ग्राहक मिल रहे हैं।"

कॉफ़ी समाप्त हुई, तो रामचन्द्र ने पूछा, "माताजी! विनोद कहां है, मैं उससे मिलना चाहता हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"अपनी मां के पास है।"

"कहां पढ़ता है? वह अपने कॉलेज नहीं जाता और उसका नाम कॉलेज रजिस्टर से कट चुका है।"

"जहां तक मुझे मालूम है, वह लाहौर के अनारकली बाज़ार में किसी के साथ साझेदारी में दुकान चलाता है।"

"किस चीज़ की दुकान है?"

"सुना है, बिसाती की है। मैं तो कभी वहां गयी नहीं, परन्तु कृष्ण कभी-कभी वहां जाता है और वहां का समाचार लाता है।"

"कृष्ण भैया! कहां है उसकी दुकान?"

"नीले गुम्बज के चौक में है। प्रत्यक्ष रूप में दुकान चलने लगी है। अभी तक वह बिसाती और स्टेशनरी दोनों प्रकार का माल बेचता था, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि वहां स्टेशनरी का चलन अधिक है। इसलिए वह उसी पर ज़ोर दे रहा है।"

"परन्तु भैया!" कृष्ण ने आगे कह दिया, "तुम वहां मत जाना। वह तुम्हारा अनादर भी कर सकता है।"

"तो?"

"उससे मिलने का मार्ग उसकी माता द्वारा है और वह अपनी शहरवाली हवेली में रहती है।"

शाहजी के ट्रस्ट ने दस हज़ार रुपये उसे और उसके एक साझीदार को ऋण दिया था और कृष्ण दुकान का माल और हिसाब देखने सप्ताह में एक-आध बार जाया करता था।

इस समय तक ट्रस्ट का काम आरम्भ किये एक वर्ष के लगभग हो चुका था और लगभग बीस युवकों को विभिन्न प्रकार के कारोबार 'ट्रस्ट' ने खुलवा दिये थे।

शर्त के अनुसार अभी मूलधन में से वापसी आरम्भ नहीं हुई थी, परन्तु लगभग डेढ़ लाख रुपये का ब्याज कृष्ण एकत्र कर रहा था।

ज्ञानचन्द ने अपनी पत्नी आदि के विषय में कुछ नहीं पूछा। सुन्दरदास गया, तो ज्ञानचन्द और रामचन्द्र भी चले गये। जब तक वे वहां रहे, किसी ने उनसे किसी प्रकार की बात नहीं की। सबने यही समझा, मानो वे वहां हैं ही नहीं।

दोनों के चले जाने के उपरान्त धनवती ने पति से पूछा, "आपने इनको किस लिए यहां निमन्त्रित किया था?"

शाहजी ने कहा, "मैंने निमन्त्रित नहीं किया। इन्होंने स्वयं अपने को यहां आने का निमन्त्रण दिया था। घर में कोई भी चाय-पानी के लिए आये, तो यह मेरी नीति है, उसकी अभिलाषा ज़रूर पूरी करता हूं।"

एक दिन गोपीशाह प्रातः शहरवाली हवेली में रहने वाले प्राणियों का समाचार लेने गया। वहां जाने पर उसे पता चला कि ज्ञानचन्द वहां गया था और बलपूर्वक अपनी पत्नी को पकड़कर ले जाने का यत्न करने लगा था, परन्तु उत्तमचन्द तथा घर के दूसरे प्राणियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ने उसे पुलिस में पकड़वा दिया है।

गोपीशाह पुलिस चौकी पहुंचा, तो थानेदार ने बताया, "हमने ज्ञानचन्द के ख़िलाफ़ महल्ले में जाकर बलपूर्वक एक घर में घुसने का मामला दर्ज किया है और उसे मजिस्ट्रेट के हुक्म से हवालात में रखा हुआ है। कल छीना-झपटी में करुणादेवी की एक बांह पर छुरी से चोट भी आयी थी। यह चोट, तो पुलिस का केस नहीं है; क्योंकि चोट मामूली है और पुलिस का केस नहीं बन सकता, परन्तु किसी घर में घुस जाना पुलिस का केस है। उस पर 'ट्रैसपास' का मुक़द्दमा चलाया जायेगा।"

थानेदार ने आगे बताया कि उसकी ज़मानत पर छोड़ने की आज्ञा आ चुकी है, परन्तु अभी तक उसका कोई ज़ामिन नहीं आया।

गोपीशाह उसकी ज़मानत देना नहीं चाहता था। इसलिए पुत्र को हवालात में मिले बिना चला आया।

वह घर पहुंचा, तो शकुन्तला की मां निस्बत रोड वाली कोठी की ड्योढ़ी में एक कुरसी पर बैठी आंचल से आंखें पोंछ रही थी। गोपीशाह ने उसे देखा, तो पूछ लिया, "समधिन बहिन! यहां बैठी क्या कर रही हो?"

"अपने भाग्य को कोसती हुई आंसू बहा रही हूं।"

"क्यों, क्या हुआ है?"

"शकुन्तला ने धक्के दे-देकर कोठी से निकलवा दिया है और यहां आपकी प्रतीक्षा में बैठी हूं।"

"कृष्ण से मिली हो?"

"नहीं! वह आज गुजरांवाला गया हुआ है। पता चला है कि रात के आठ बजे तक आयेगा। मैं विचार कर रही थी कि उसके आने तक प्रतीक्षा करूं या नहीं?"

"मेरा विचार है," गोपीशाह ने कहा, "आज तो आप जाइये! रात देर तक यहां बैठने से वकील साहब को कष्ट होगा। कल दस बजे के लगभग आ जाइयेगा। कृष्ण इसी कमरे में बैठा मिलेगा। यह उसका दफ़्तर है।"

"तो आप इसमें कुछ नहीं कर सकते?"

"देखिये बहिनजी! लड़का सयाना है और बहू कृष्ण को अतिप्रिय है। इस कारण मैं बहू के विषय में लड़के से कुछ नहीं कहूंगा। हां, यदि वे किसी विषय पर मेरी सम्मति मांगेंगे, तो अपनी बुद्धि के अनुसार अवश्य दूंगा। अपने आप उनके किसी काम में हस्तक्षेप नहीं करूंगा।"

निराश कान्तादेवी उठी। उसने कहा, "मैं कल फिर आऊंगी और अपनी अर्ज़ी लड़की के घरवाले के सामने रखूंगी।"

"ठीक है।"

कान्ता उठी और हस्पताल रोड की ओर चल पड़ी। लाला गिरिधारीलाल का मकान वहीं था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गोपीशाह भीतर आया, तो शकुन्तला गम्भीर विचार में मग्न बैठक में बैठी थी। शाहजी ने आते ही पूछा, "क्यों, किस विचार में बैठी हो ? देखो, मैं दो मिनट से खड़ा देख रहा हूं, परन्तु तुम्हारा ध्यान ही भंग नहीं हुआ।"

"पिताजी, आप चाय लेंगे अथवा कॉफ़ी ?"

"जो तुम पिलाना चाहो। आजकल मैंने अपने आपको तुम दोनों के अधीन कर रखा है। देखो शकुन्तला! कृष्ण की सूझ-बूझ पर मुझे अगाध विश्वास है। विवाह से पहले भी मेरे कारोबार में उसकी सहायता लाभकारी ही होती थी और अब ट्रस्ट के काम में भी वह कठिन मार्ग उसकी सहायता से पार हो रहा है। वकील साहब तो कहते थे कि लोग मेरी पूर्ण सम्पत्ति एक-दो वर्ष में लेकर मुकर जायेंगे, परन्तु एक वर्ष में ट्रस्ट हानि नहीं उठा रहा, वरन् अपना ख़र्च निकालने लगा है। साथ ही बीस-पच्चीस युवकों का कल्याण हो रहा है। मैं इससे सन्तुष्ट हूं। सबसे बड़ी बात यह है कि कृष्ण ने अपने काम में उन्नति की है। इससे मुझे उसकी बुद्धि पर विश्वास है। इसीलिए कहता हूं कि तुमको जो रुचिकर हो, वही पी लूंगा।"

शकुन्तला उठकर खाने के कमरे में चली गयी। जब से उत्तमचन्द और माया तथा अन्य प्राणी कोठी से गये थे, तब से शकुन्तला ने अपनी सहायता के लिए एक पाचक रख लिया था। धनवती ने कहा भी था कि पाचक की आवश्यकता नहीं है, मैं जो हूं। लेकिन शकुन्तला का कहना था कि आप सेवक के स्थान पर नहीं हैं। आप तो मालिक हैं। मालिक क्या करे, क्या न करे, यह उसकी इच्छा पर है। मालिक की काम करने में रुचि हो अथवा न हो, सेवक से तो कहकर काम कराया जा सकता है। इसीलिए सेवक रखा गया है।

अतः शकुन्तला सेवक को चाय लाने के लिए कहने गयी, तो धनवती उसके पीछे-पीछे चली गयी।

शकुन्तला पाचक से अल्पाहार लाने को कहकर बाहर आयी। धनवती भीतर ही रही। जब वह बाहर आयी, तो गोपीशाह ने कहा, "शकुन्तला! तुम्हारी मां बाहर बैठी रो रही थी।"

"तो अभी तक वह बाहर बैठी है ?"

"मैंने उसे कल कृष्ण के पास आने के लिए कह दिया है। वह चली गयी है, परन्तु जब मैं आया था, तो अपनी आंखों से ढुलक रहे आंसू पोंछ रही थी।"

"माताजी का कोई दोष प्रतीत नहीं होता।" शकुन्तला ने कहा। "परन्तु वह पिताजी की कमाई पर पलती हुई उनकी-सी बात करने लगती हैं। इसलिए मैंने उनसे कह दिया था कि वह मुझसे मिलने न आया करें। कई दिन के बाद आज फिर आयी थीं और मैंने उन्हें डांटकर बाहर निकाल दिया था। मैं समझी थी कि वह चली गयी हैं, परन्तु आप कहते हैं कि वह आपके आने तक बैठी थीं।"

"यह जानकर कि वह बाहर बैठी थीं, तुम्हें दुःख हुआ है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"हां! परन्तु इस बात का कि वह मेरा भाव नहीं समझीं और बाहर बरामदे में बैठी रहीं।"

शाहजी ने कहा, "वह बैठी रही हैं, तो अवश्य किसी कारण से। दो मास हुए, तब भी तुमने उनसे मिलने से इनकार कर दिया था, परन्तु वह पुनः आयी थीं, तो पूछना चाहिए था कि आज वह किस मतलब के लिए आयी हैं?"

"यह मेरा सुख-समाचार पूछने आयी होंगी और क्या काम हो सकता है?"

"मैं समझता हूं कि तब की डांट खाकर वह पुनः आयी हैं, तो केवल सुखो-समाचार पूछने की बात नहीं होगी। उससे बड़ी बात की सम्भावना हो सकती है। तुम्हें माताजी को बिठाकर आराम से पूछना चाहिए था कि तुम्हारे मना करने पर भी वह क्यों आयी हैं?"

शकुन्तला मुंह देखती रह गयी। बात शाहजी ने ही जारी रखी—"देखो शकुन्तला! मेरे लड़कों ने मुझ पर झूठा मुक़द्दमा चलाया था। इस पर भी वे चाय लेने आये, तो मैंने उन्हें डांटकर भगाया नहीं। उन्हें चाय पिलायी। तुम्हारी मां ने तो तुम्हारा कुछ अनर्थ नहीं किया। फिर भी, तुमने उनका अनादर किया है। मैं समझता हूं कि यह ठीक नहीं हुआ।"

शकुन्तला गम्भीर होकर विचार करने लगी। गोपीशाह ने कहा, "देखो बेटी! मां का सम्बन्ध सन्तान के साथ पिता से अधिक होता है। नौ मास तक वह उसे पेट में रखकर उसका पालन-पोषण करती रहती है और फिर कम-से-कम पांच वर्ष तक उसकी प्रत्येक आवश्यकता का ध्यान रखती है। इसीलिए मां को लक्ष्मी का स्वरूप मानते हैं।"

इसी समय धनवती आ गयी। उसके साथ सेवक था, जिसने हाथ में ट्रे पकड़ी हुई थी। ट्रे में कॉफ़ी के प्याले थे और गाजर के हलुए की प्लेटें थीं।

तीनों खाने-पीने लगे, तो गोपीशाह ने बताया, "मैं शहरवाले मकान पर गया था और वहां करुणा की बांह पर पट्टी बंधी देखकर पूछा कि यह क्या हुआ है, तो वह रोकर बताने लगी कि उसके घरवाले ने चाकू मारा था। वह उसे बलपूर्वक अपने साथ ले जाने का यत्न कर रहा था। अकस्मात् उस समय बड़े भाई आ गये और भीतर से सुशीला बहिन और रजनी भी निकल आयीं और सबने उसके हाथ-पांव बांध उसे कमरे में बन्द कर दिया और पुलिस को बुला भेजा। पुलिस आयी और उसे पकड़कर ले गयी। मैं थाने में गया था। वहां पता चला कि ज्ञान को दूसरे के मकान में बलपूर्वक घुस जाने के अपराध में पकड़कर रखा गया है। मजिस्ट्रेट ने उसे दो हज़ार की ज़मानत पर छोड़ने की आज्ञा दे दी है। ज्ञान ने अपने किसी मित्र को ज़मानत के लिए कहला भेजा था, परन्तु अभी तक उसकी ज़मानत नहीं हुई। मैं कल कृष्ण को उसकी ज़मानत भरने के लिए कह दूंगा।

"परन्तु वह फिर मकान में घुसने का यत्न करेगा।" धनवती का कहना था।"

"एक बार उसे छुड़ा दूंगा। दूसरी बार नहीं।"

शकुन्तला अपने श्वसुर की बात सुनकर विचार में निमग्न हुई बैठी रही।

: 15 :

गिरिधारीलाल के घर पर हलचल मची हुई थी। शकुन्तला की मां को पता था कि आज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
शकुन्तला के श्वसुर पर उसके पुत्रों द्वारा चलाये गये मुक़द्दमे की तारीख़ है। अत: कचहरी जाने से पूर्व कान्ता ने पूछा था, "क्या आज शकुन्तला के श्वसुर का मुक़द्दमा है ?"

"हां ! क्यों ?"

"वह शकुन्तला का श्वसुर है, दामाद का पिता है और फिर उसने कुछ पाप भी नहीं किया, जिसके लिए आप उसे क़ैद कराने का यत्न कर रहे हैं।"

"नहीं, वह क़ैद नहीं होगा। उसने क़ैद होने वाला कोई भी अपराध नहीं किया।"

"परन्तु उस दिन तो आप कह रहे थे कि उसे एक बार तो हथकड़ी लगवा दूंगा, पीछे भले ही वह छूट जाये।"

"मुवक्किलों को ख़ुश करने के लिए ऐसा कहना ही पड़ता है। वैसे मैं समझता हूं कि आज दावा ख़ारिज हो जायेगा।"

"तब ठीक है। आपको चाहिए कि जब वह छूटे, तो उसे बधाई दीजियेगा और अपने व्यवहार के लिए क्षमा मांगियेगा।"

"यह वकीलों का व्यवहार नहीं है। मैंने उसके लड़कों से दो सौ रुपये फ़ीस ली थी और कहा था कि उनके पिता को एक बार तो जेल की हवा खिला दूंगा। अब उनके सामने अपनी भूल नहीं मान सकता।"

कान्ता जो चाहती थी, उसे पति को करने पर राज़ी नहीं कर सकी। इसलिए चुप रही।

सायंकाल जब वकील साहब घर आये, तो पत्नी ने पूछ लिया, "शकुन्तला के श्वसुर के मुक़द्दमे का क्या हुआ ?"

"पुत्रों का दावा ख़ारिज हो गया है।"

"तब मैं शकुन्तला के घर उसके श्वसुर को और शकुन्तला को बधाई देने जाऊंगी।"

"जैसा मन में आये करो, लेकिन मेरी यह राय है कि कुछ दिन चुप रहो। फिर एक दिन चलना। मैं भी चलूंगा और उनसे तथा लड़की से मिल आयेंगे।"

उस समय, तो कान्ता मान गयी, परन्तु उसके मन में खिचड़ी पकती रही। फ़ैसले के कुछ ही दिन बाद वह मध्याह्नोत्तर घर से निकली और 30 निस्बत रोड जा पहुंची। कोठी के चौकीदार ने मना नहीं किया। वह जानता था कि वह बहू की मां है, परन्तु वह भीतर गयी, तो शकुन्तला ने उसे देखते ही पूछा, "मां ! तुम फिर आ गयी हो ?"

"तुमसे मिलने को जी कर आया था।"

"तो देख लिया न कि मैं जीवित-जाग्रत हूं। अब यहां से तुरन्त चली जाओ। मैं तुम्हारा और पिताजी का मुंह भी देखना नहीं चाहती। तुमने पिताजी को समझाया नहीं कि इस मुक़द्दमे में उन्हें हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।"

"बेटी ! यह तो उनका पेशा है, परन्तु मैं तो वकालत नहीं करती। मेरा इसमें क्या दोष है ?"

शकुन्तला ने बहस में पड़ने के स्थान पर वहां से उठ जाना उचित समझा। जाते-जाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वह कह गयी, "यहां से चले जाओ। इस स्थान का वातावरण ठीक नहीं।"

शकुन्तला भीतर अपने कमरे में चली गयी और कान्ता बैठकघर से निकल बाहर बरामदे में जा बैठी। उसका विचार था कि कृष्ण आयेगा, तो उसे समझायेगी कि उनके नाराज़ होने का कोई कारण नहीं।

चपरासी ने देखा कि बहू की मां बरामदे में बैठी है, तो वह आकर पूछने लगा, "माताजी! यहां किस कारण से बैठी हैं?"

"कृष्णजी की प्रतीक्षा कर रही हूं।"

"वह तो प्रात:काल से गुजरांवाला गये हुए हैं। रात नौ बजे के लगभग आयेंगे।"

"और उनके पिताजी?"

"वह शहरवाले मकान पर गये हैं। प्राय: चार बजे आ जाया करते हैं।"

"तो मैं उनसे मिलूंगी।"

चौकीदार बाहर द्वार पर जा बैठा और कान्तादेवी प्रतीक्षा करने लगी। साढ़े तीन बजे से प्रतीक्षा करते-करते पांच बज गये। न तो कोई भीतर से उसके विषय में पूछने आया, न ही शाहजी आये। इस प्रतीक्षा और तिरस्कार से उसके आंसू निकल आये।

उसने अपने आंचल से आंसू पोंछने आरम्भ किये, तो वे और वेग से बहने लगे। इसी समय गोपीशाह आ गया।

गोपीशाह के कहने पर वह कोठी से निकल अपने मकान की ओर पैदल ही चल पड़ी।

लाला गिरिधारीलाल कचहरी से लौटे, तो कान्ता घर पर नहीं थी। उसने शकुन्तला की छोटी बहिन से पूछ लिया, "मां कहां है?"

"वह बताकर नहीं गयी। अढ़ाई बजे के लगभग वह यहां से गयी थी और अभी तक नहीं लौटी।

गिरिधारीलाल ने घड़ी में समय देखा, पांच बज रहे थे। वह मन में विचार करने लगा कि कहां गयी होगी? यह कान्ता का नित्य का व्यवहार था कि वह वकील साहब के साथ सायं की चाय लिया करती थी।

वकील साहब ने चाय ली, पन्द्रह-बीस मिनट आराम किया और फिर दफ़्तर में जा बैठे और अपने ग्राहकों से मिलने लगे।

छह बजे के लगभग कान्ता घर पहुंची। उस समय गिरिधारीलाल अपने काम में व्यस्त था। कान्ता ने अकेले ही चाय ली और अपने कमरे में जाकर लेट रही।

रात के खाने के समझ पति से भेंट हुई, तो पति ने पूछा, "कहां गयी थीं?"

"मेरा चित्त शकुन्तला से मिलने को किया, तो उसकी कोठी को चल पड़ी थी। घर पर वह अकेली थी, परन्तु उसने मुझसे मिलना पसन्द नहीं किया। मैं वहां उसके घरवाले की प्रतीक्षा करती रही। जब पता चला कि वह लाहौर से बाहर गया है, तो मैं चली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आयी।"

"तुम भी महामूर्ख हो। मैंने कहा भी था कि कुछ दिन ठहरकर चलेंगे, परन्तु तुम मूर्खों की भांति चल पड़ीं और वहां से दुत्कार खाकर आयी हो।"

कान्ता ने कहा, "मन नहीं माना, तो चली गयी थी। उसके श्वसुर मिले थे। उन्होंने कहा है कि मुझे कृष्ण से मिलना चाहिए। वह अपनी पत्नी को समझा देगा, तो फिर मां-बेटी में मेलजोल होने लगेगा। ऐसा प्रतीत होता है कि शाहजी की मेरे साथ सहानुभूति है।"

"वह बहुत ही धूर्त व्यक्ति है।"

कान्ता चुप रही, परन्तु अगले दिन वकील साहब के कचहरी चले जाने पर वह कृष्ण से मिलने चल दी। वह ग्यारह बजे के लगभग निस्बत रोड पर पहुंची, परन्तु उस समय भी कृष्णचन्द्र अपने कार्यालय में नहीं था। वहां का क्लर्क कान्ता को पहचानता था। उसने पूछा, "आप बहिनजी से मिलने आयी हैं?"

"हां! परन्तु उनसे पहले कृष्णजी से मिलना चाहती हूं।"

"कृष्णजी तो कहीं काम पर गये हैं, परन्तु बहिनजी भीतर आपकी प्रतीक्षा कर रही हैं।"

इस 'प्रतीक्षा' का अभिप्राय समझने के लिए कान्ता चुप हो गयी। वह विचार करने लगी थी कि यह प्रतीक्षा डांटने के लिए है अथवा धक्के देकर कोठी से निकालने के लिए? इस पर भी उसने पूछा, "बहिनजी ने आपसे क्या कहा है?"

"जी! कुछ समय पूर्व वह आयी थीं और कह गयी थीं कि बाबूजी से मिलने के लिए माताजी आ रही हैं। वह आयें, तो उनको भीतर भेज देना। मैं बैठक में बैठी उनकी प्रतीक्षा कर रही हूं।"

कान्ता अभी तक शंकित मन थी, परन्तु अब भीतर जाने के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं था। वह कोठी में चली गयी।

बैठक में शकुन्तला उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। मां के आने पर वह उठी और हाथ जोड़कर नमस्कार कर कहने लगी, "मां! क्षमा करना, कल के व्यवहार के लिए मैं क्षमा चाहती हूं। मुझे पता चला था कि तुम बाहर बरामदे में बैठी यहां पिताजी की प्रतीक्षा करती रही थीं।"

कान्ता इस परिवर्तित व्यवहार पर विस्मय करती हुई एक सोफ़े पर बैठ गयी और पूछने लगी, "सुनाओ, स्वास्थ्य कैसा चल रहा है?"

"शरीर तो ठीक ही है, परन्तु मन रुग्ण था। कल यहां पिताजी ने उसकी चिकित्सा की है और आज मैं स्वस्थ अनुभव कर रही हूं।"

"क्या कष्ट था मन को?" कान्ता इस नयी परिस्थिति पर भौचक्की हो लड़की का मुंह देख रही थी। बात लड़की ने ही की। उसने कहा, "कल पिताजी शाम को घर आये, तो बताने लगे कि उस समय तक तुम बाहर बैठी उनके लड़के की प्रतीक्षा करती रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
थीं। तुम तो साढ़े तीन बजे आयी थीं। मतलब यह है कि अढ़ाई घण्टे बाहर बैठी रही थीं। मुझे इसका और तुम्हारे साथ किये अपने व्यवहार का बहुत ही अफ़सोस है। मैं क्षमा चाहती हूं।"

कान्ता अब आश्वस्त अनुभव करने लगी। उसने साहस कर पूछा, "कल तुम्हें क्या हुआ था ?"

"पिताजी के व्यवहार से मेरे मन में उठी प्रतिक्रिया थी, परन्तु उस अरुचि की जो प्रतिक्रिया मेरे व्यवहार पर हुई थी, वह अनुचित थी। मां! तुम्हारे दामाद और उनके पिताजी ने कल मुझे समझाया है कि मेरे पिताजी का व्यवहार इस परिवार के साथ अयुक्तिसंगत और अनुचित था। इस पर भी तुम्हारे प्रति मेरा व्यवहार अनादरयुक्त नहीं होना चाहिए था। तुम मां हो और एक लड़की का अपनी मां से अनादरयुक्त व्यवहार ठीक नहीं। पिछले मास भी जब तुम आयी थीं, तो मैंने तुम्हारा अनादर किया था। इस सबके लिए मैं तुमसे क्षमा मांगती हूं।"

शकुन्तला के इस बदले हुए व्यवहार पर कान्ता विस्मय कर रही थी। उसने कहा, "देखो शकुन्तला! मैं तुमसे नाराज़ नहीं हूं। यद्यपि तुम्हारे पूर्व के व्यवहार पर प्रसन्न भी नहीं हूं, परन्तु मैं तुमसे रुष्ट नहीं हुई। इसीलिए आज फिर आयी हूं। हां, मैं यह समझ रही थी कि कृष्णजी की सिफ़ारिश से मिलने का यत्न करूंगी। ईश्वर का धन्यवाद है कि तुम मां के अन्तर्मन को समझ गयी हो। जिसने भी तुम्हें समझाया है, मैं उसका उपकार मानती हूं। मैं कल यही कहने आयी थी कि तुम्हारे पिता, जो कुछ अपने व्यवसाय में करते हैं, मेरा उससे कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। मैं उनकी पत्नी हूं, इसलिए उनके कामों पर आपत्ति नहीं कर सकती। तुमसे मेरा सम्बन्ध दूसरा है। यह कुछ प्राप्त करने अथवा तुम्हें कुछ देने के लिए नहीं है। केवल जन्म देने के कारण ही है और यह सम्बन्ध बिना किसी स्वार्थ के है।"

"मां! छोड़ो इस इतिहास को। मुझे अपने व्यवहार पर लज्जा आ रही है। कल तुम्हारे दामाद ने भी यही कहा था कि मां-बेटी का सम्बन्ध सांसारिक व्यवहार से अधिक घनिष्ठ होता है।"

"बताओ, प्रसव कब होने वाला है ?" कान्ता ने बात बदल दी।

"फ़रवरी के दूसरे सप्ताह में आशा है। पिताजी का कहना है कि घर पर डॉक्टर का तथा परिचारिका का प्रबन्ध कर दिया जायेगा। हस्पताल का स्थान उन लोगों के लिए ख़ाली रखना चाहिए, जो डॉक्टर इत्यादि की सेवाएं घर पर उपलब्ध कराने की सामर्थ्य नहीं रखते। पिताजी का कहना है कि यदि वे लोग—जो डॉक्टर की सेवाओं का दाम घर पर दे सकते हैं—ही हस्पतालों का प्रयोग करें, तो वह बेचारे निर्धनों के अधिकार पर छापा हो जायेगा। उनके सुपुत्र का विचार है कि मुझे वहां सुविधा अधिक होगी।"

"और तुम क्या चाहती हो ?" कान्ता का प्रश्न था।

"मेरा विचार है कि यहां की विख्यात लेडी डॉक्टर नरूला को दिखाते रहना चाहिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और प्रसव का स्थान और प्रबन्ध उसकी राय से ही करना चाहिए।"

कान्ता लड़की को इस प्रकार व्यावहारिक बात करते देख प्रसन्न थी। उसने कह दिया, "तुम्हारा विचार ठीक है। यद्यपि तुम्हारे पिता इससे उलट विचार करते हैं। उनका कहना था कि धनवान् व्यक्तियों का यह अधिकार है कि वे सब सुविधाओं का प्रयोग करें, जो समाज और राज्य उपलब्ध करा सकता है। यदि इन हस्पतालों का प्रयोग हम लोग नहीं करेंगे—जो उनके लिए सरकार को धन देते हैं—तो कौन करेगा ?"

शकुन्तला ने केवल यह कहा, "मां! बस, यही अन्तर है पिताजी और शाहजी में। शाहजी कहते हैं कि ये समाज-कल्याण के कार्य जो सरकार करती है, वे दान-दक्षिणा का रूप ही हैं। दान-दक्षिणा के पात्र तो निर्धन लोग होते हैं। हमें उस दान-दक्षिणा के कार्य पर अपना दिया वापस लेने के लिए भीड़ नहीं लगानी चाहिए।"

मां डेढ़ घण्टा-भर लड़की के पास बैठी रही। इस समय धनवती आयी और समधिन का सुख-समाचार पूछ बताने लगी, "कल इस लड़की ने आपसे ठीक व्यवहार नहीं किया था। इस पर घर में बहुत विचार हुआ है। कृष्ण के पिताजी का विचार है कि शकुन्तला से पाप हो गया है और उसे पाप का प्रायश्चित्त करना चाहिए।"

"क्या प्रायश्चित्त बताते हैं शाहजी ?"

"वह तो इक्कीस दिन का व्रत बता रहे हैं। मैंने यह प्रायश्चित्त इस समय रोक दिया है। मेरा कहना था कि गर्भावस्था में उपवास करना पेट में पल रहे बच्चे के लिए कष्टदायक हो जायेगा। इसलिए कृष्ण की राय में प्रायश्चित्त प्रसव के उपरान्त तक स्थगित कर दिया गया है।"

धनवती की इस बात से कान्ता को यह समझ आया कि इस घर के सब प्राणी बहुत ही सूझ-बूझ की बात करते हैं।

धनवती ने बताया कि शाहजी कहते हैं कि इस जन्म के पापों का फल इस जन्म में ही समाप्त हो जाये, तो ठीक है, अन्यथा पुनः मनुष्य-जीवन मिलना कठिन हो जायेगा। प्रायश्चित्त यह है कि इक्कीस दिन तक शकुन्तला उपवास करे और प्रभु-चिन्तन करे।

इसकी तुलना में कान्ता अपने घर की बात पर विचार कर रही थी। उसे कोई लड़का नहीं था। दो लड़कियां ही थीं। एक का विवाह हो चुका था और दूसरी का होने वाला था। उसके विवाह की तैयारी भी हो चुकी थी। इस पर भी उसका घरवाला झूठे-सच्चे मुक़द्दमे कर धन बटोरने के पीछे लगा हुआ था।

गोपीशाह के मुक़द्दमे में भी उसके पति ने मुक़द्दमा लिया और मुद्दालह को क़ैद कराने का वचन पहले ही दे दिया और उस वचन के प्रतिकार में बड़ी फ़ीस भी ले ली, परन्तु मुक़द्दमा देखना पीछे आरम्भ किया। बाद में, उसका पति कहने लगा था कि गोपीशाह छूट जायेगा, परन्तु वह क़ैद कराने की फ़ीस तो पहले ही ले चुका था।

इस घर और अपने घर में अन्तर देखकर कान्ता विस्मय से अपनी समधिन धनवती का मुंह देखती रह गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कान्ता अभी बैठी ही थी कि कृष्ण अपने भाई ज्ञानचन्द को ज़मानत देकर छुड़ा लाया। गोपीशाह भी साथ था।

धनवती ने उनके आने पर कृष्ण से कहा, "मैं इतनी जल्दी आशा नहीं करती थी। मैं समझ रही थी कि सायंकाल से पहले नहीं आयेंगे।''

गोपीशाह ने कहा, "मैं भी ऐसा ही समझता था। इसलिए पुलिस की मशीन में तेल डालने के लिए मैं साथ चला गया था। ज्ञान के छूटने में कई बाधाएं थीं। कोठी की रजिस्ट्री की तस्दीक़ करानी थी, जिससे कृष्ण की ज़मानत स्वीकार हो सके। रजिस्ट्रार की तली गरम करनी पड़ी, जिससे वह ज़मानत के काग़ज़ तैयार कर दे। चपरासी का मुंह मीठा करना पड़ा, जिससे वह ज़मानत की मंजूरी की आज्ञा लेकर पुलिस थाने में पहुंच जाये। ज्ञान को थाने से जेलख़ाने में भेज दिया गया था। इसलिए पुलिस को तांगे में बिठाकर हुक्म के साथ जेलख़ाने ले जाना पड़ा। फिर जेल के कर्मचारियों का पेट भी भरना पड़ा। तभी नौ बजे घर से गये, तो एक बजे तक इसे लेकर आ सके हैं।"

ज्ञान ने कहा, "माताजी! तीन दिन से स्नान नहीं किया। स्नान कर भोजन भी करूंगा।"

धनवती उठी और ज्ञान को गुसलख़ाने ले गयी। एक धोती-कुरता ज्ञान को देकर उसने कहा, "स्नान कर साफ़ कपड़े पहनकर आ जाओ। भोजन तैयार है।"

जब ज्ञानचन्द स्नान के लिए चला गया, तो गोपीशाह ने कान्ता से कहा, "तो बहिनजी की लड़की से सुलह हो गयी है?"

"आपके आने से पहले मन में आपके ही गुणों का चिन्तन कर रही थी, परन्तु यह आपके लड़के की क्या बात थी? वह क्यों पकड़ा गया था?"

कृष्ण अपने कार्यालय में चला गया था और गोपीशाह वहां बैठक में ही बैठ गया था। उसने ज्ञानचन्द की करतूत का वर्णन कर दिया और बताया कि जब मुझे पता चला कि उसको कोई ज़ामिन नहीं मिल रहा, तो मैंने ही उसकी ज़मानत के लिए कृष्ण को तैयार कर लिया।"

"और अब यह क्या कहता है?"

"अपने मन में वह क्या समझा है, यह तो वही जाने। शराब पीनेवालों को शीघ्र समझ नहीं आती। यदि उसमें तनिक भी बुद्धि शेष होगी, तो वह अपनी पत्नी से सुलह करने का यत्न करेगा। नहीं, तो अभी और ठोकरें खायेगा।"

धनवती लड़के को स्नान करने की सुविधा देकर आयी, तो उसने कान्ता से कहा, "अब एक बज चुका है। भोजन तैयार है। यहीं खा लीजिये।"

"लड़की के घर पर भोजन कर लूं?"

"यह आपकी इच्छा है, परन्तु मैं तो अपने घर पर खाने का निमन्त्रण दे रही हूं।"

"आपका घर और रसोई कहीं अलग है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हमारी जेब लड़के की जेब से पृथक् है और जब मैं आपको निमन्त्रण दे रही हूं, तो अपनी आय में से ही खिलाने की बात कह रही हूं।"

"परन्तु आप कृष्ण की मां भी तो हैं?"

"आपकी बहिन भी हूं और आपको भोजन का निमन्त्रण आपकी बहिन दे रही है।"

वैसे शकुन्तला के पिता पहले भी एक दिन शाहजी के घर पर चाय पी चुके थे। इसलिए कान्ता बैठी रही। सब ज्ञान के स्नान कर आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। कुछ बात करने के लिए कान्ता ने पूछ लिया, "शाहजी! आप यह समझ रहे हैं कि आपके दोनों लड़कों ने आपसे झगड़ा इस कारण किया है; क्योंकि वे शराब पीते हैं!"

शाहजी ने कहा, "शराब पीना मन्दबुद्धि का लक्षण है। सही दिमाग़ वाला इस बुरी बला को कभी छूता तक नहीं। इस पर भी सब मन्दमति इसे नहीं पीते। वे मन्दबुद्धि के कारण दूसरी ख़राबियां करते रहते हैं।"

"परन्तु शाहजी! शराब पीने वाले तीव्रबुद्धि भी तो रखते हैं। इस देश के सब-के-सब हाकिम शराब पीते हैं और अब उनका देश पर राज्य हुए साठ वर्ष से ऊपर होने जा रहे हैं।"

उत्तर गोपीशाह ने ही दिया। उसने कहा, "अंगरेज इसलिए राज्य नहीं कर रहे कि उनकी बुद्धि प्रखर है। वे इसलिए राज्य कर रहे हैं; क्योंकि वे संगठित और अनुशासन में रहना सीखे हुए हैं। हम हिन्दुस्तानी शराबी और न शराब पीने वाले भी असंगठित और अनुशासनहीन हैं। देखिये बहिनजी! मैं अपने पिता से सुनी एक घटना आपको बताता हूं। लाहौर से सात-आठ मील के अन्तर पर एक गांव है—बेगम का कोट। एक बार वहां दस-बारह डाकू लाठियां-बरछे लिये हुए पहुंचे और पूरे गांव को लूटकर ले गये। गांव में सौ से अधिक घर थे। सब अपने-अपने घरों में छिपकर बैठ गये और बारी-बारी से सब लूटे गये। किसी को नहीं सूझी कि वे संख्या-बल में डाकुओं से अधिक हैं। सब यही विचार करते थे कि वह अपने घर में सुरक्षित हैं। प्रात:काल जब गांववाले घर से निकले, तो पूरा गांव लुट चुका था और डाकू लापता हो गये थे। यही बात हमारे देश की है। कुछ हज़ार गोरे सिपाही यहां हैं और हम एक-दूसरे को पिटता देखकर मौन रहते हैं। विचार करते हैं कि ऐसा हमारे साथ नहीं होगा। अंगरेजों का राज्य यहां स्थापित होने में शराब पीने का सम्बन्ध नहीं है। उनके एकजुट होकर काम करने के कारण ऐसा है। परन्तु उनका शराब पीना भी अपना रंग दिखायेगा। वह दिन भी आ रहा है, जब यह शराबी क़ौम कोई ऐसी भूल कर बैठेगी कि इसका साम्राज्य टूक-टूक हो जायेगा।

इस समय ज्ञानचन्द हजामत बनाकर और स्नान कर तथा धुले वस्त्र पहनकर आ गया। सब भोजन के कमरे में चले गये। अब धनवती ने ज्ञानचन्द से कहा, "देखो बेटा! आख़िर ख़ून का रिश्ता ही काम आता है। वे सब मित्र, जो तुम्हारे साथ मिलकर खाते-पीते रहे हैं, वह कठिनाई के समय काम नहीं आये।"

"माताजी!" ज्ञानचन्द ने कहा, "घर जाकर पता करूंगा कि मेरी ज़मानत की बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मित्रों को पता चला है अथवा नहीं। मुझे पूर्ण आशा थी कि [illegible] के साथी अवश्य आयेंगे और मुझे छुड़ाकर ले जायेंगे।"

"तो अभी पता चला या नहीं कि कोई नहीं आया। तुम्हारा भाई ही ज़मानत का प्रबन्ध करने गया था।"

"असल बात जाने बिना कुछ नहीं कह सकता।"

अब गोपीशाह ने कह दिया, "ठीक है। जाकर पता करना कि उनको तुम्हारी ज़मानत के विषय में पता भी चला है अथवा नहीं। हां, इतना स्मरण रखना कि अब तो कृष्ण छुड़ा लाया है। ज़मानत की रक़म के अतिरिक्त दो सौ रुपये लगभग व्यय हुआ है, जो तुम इस समय यहां बैठे आराम से भोजन कर रहे हो। यदि पुन: किसी कठिनाई में फंसे, तो सम्भवत: कृष्ण तुम्हारी सहायता के लिए नहीं आयेगा।"

"पिताजी! एक बार जो भूल कर चुका हूं, बार-बार वही भूल क्यों करूंगा?"

"ठीक है। यदि इनसान होगे, तो एक बार की भूल से सबक़ सीख लोगे।"

अब कृष्ण गुजरांवाला की बात बताने लगा। वहां के दो व्यक्तियों को ट्रस्ट का धन ऋण पर दिया हुआ था।

भोजन समाप्त हुआ, तो ज्ञानचन्द अपने घर को चल दिया और कान्ता अपने घर को। गोपीशाह के उदार व्यवहार का प्रभाव दोनों पर भिन्न-भिन्न हुआ था।

ज्ञानचन्द तो घर पहुंचकर अपने कार्यालय की वर्दी पहन स्टेशन चला गया। वहां वह सीधा स्टेशनमास्टर के कमरे में जा पहुंचा। स्टेशनमास्टर मिस्टर डब्ल्यू॰ सी॰ जैन्किन था। वह ऐंग्लो-इण्डियन समुदाय का था। उसने ज्ञानचन्द को देखा, तो कह दिया, "तुम्हारा पत्र पुलिस का एक व्यक्ति लाया था। मैंने तुम्हें छुट्टी पर तो लिख दिया है, परन्तु तुम्हारी ज़मानत का प्रबन्ध नहीं कर सका। एक फग्गूमल ठेकेदार से कहा था। वह कहने लगा कि लाहौर में उसकी जायदाद नहीं है, इसलिए उसकी ज़मानत स्वीकार नहीं होगी। उसने वचन दिया था कि एक-दो दिन में वह प्रबन्ध कर सकेगा। ख़ैर, तुम छूट गये हो। क्या बात थी, जो पुलिस के चक्कर में फंस गये थे?"

ज्ञानचन्द सत्य बात बताना नहीं चाहता था। इसलिए उसने कहा, "साहब! नगर में कुछ गुण्डों से झगड़ा हो गया था। गुण्डों की पुलिसवालों से मिलीभगत थी। इस कारण मुझे हवालात में डाल दिया। मजिस्ट्रेट ने दो हज़ार की ज़मानत मांगी। मैं अब एक दूर के सम्बन्धी की ज़मानत पर छूट सका हूं।"

"ठीक है। ड्यूटी पर कब आओगे?"

"मैं काम पर ही आया हूं।"

"ठीक है। सायंकाल छह बजे आ जाना।"

अभी तीन बजे थे। ज्ञानचन्द घर लौट आया। ज्ञानचन्द के लौट जाने के उपरान्त जैन्किन ने असिस्टेण्ट स्टेशनमास्टर करीमबख़्श को बुला भेजा। वह आया, तो स्टेशनमास्टर ने कहा, "तुम तो कहते थे कि ज्ञान का अपनी बीवी से झगड़ा हुआ है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"जी! मुझे उसके महल्ले में रहने वाले एक व्यक्ति ने यही बताया था।"

"तो उसे कहो कि अब पता करे कि वह छूटा कैसे है?"

"पता करूंगा।"

करीमबख़्श पूर्ण वृत्तान्त ले आया। जब उसने जैन्किन को पूरी जानकारी दी, तो जैन्किन ने कह दिया, "यह तो कुछ नहीं। इस प्रकार के पति-पत्नी के झगड़े में सरकारी हस्तक्षेप ठीक नहीं है। मैं उसे तीन दिन की छुट्टी बिना वेतन के स्वीकार कर दूंगा।"

गिरिधारीलाल के घर में भी गोपीशाह के व्यवहार का प्रभाव हुआ था। वह ज्ञानचन्द के मन की प्रतिक्रिया से भिन्न था। उस दिन कान्ता घर पर लगभग तीन बजे लौटी और गोपीशाह के घर की व्यवस्था से प्रभावित अपने पति गिरिधारीलाल की प्रतीक्षा करने लगी। सायं की चाय के समय कान्ता ने पति को बताया, "मैं आज शकुन्तला से मिलने गयी थी।"

"तो मिल आयी हो उससे?"

"जी! कल उसके श्वसुर ने मुझे दुखी देखा, तो आज आने के लिए कहा था। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने शकुन्तला को समझाया है और आज शकुन्तला अपने पहले के व्यवहार पर पश्चात्ताप कर रही थी और क्षमा-याचना कर रही थी। मैं वहां चार घण्टे के लगभग रही हूं। पूरे परिवार से मिली हूं। सबने मेरे साथ अत्यन्त सहृदयता का व्यवहार किया है।"

"तो तुम भी उस धूर्त गोपीशाह की चाल में आ गयी हो?"

"उन्होंने मेरे साथ किसी प्रकार की चालबाज़ी नहीं की। उनके मन में क्या है, इस विषय में तो मैं कुछ नहीं कह सकती। मैं तो उनके प्रत्यक्ष व्यवहार की बात कर रही हूं।"

"बस, यही तो ठगा जाना है?" गिरिधारीलाल ने चाय पीते हुए कहा।

"हो सकता है, परन्तु जब तक मेरी कोई वस्तु ठगी नहीं जाती, तब तक मैं उनके व्यवहार को ठगी नहीं कह सकती। देखिये जी!" कान्ता ने आगे कहा, "उनका लड़का ज्ञानचन्द दो दिन हुए पुलिस की लपेट में आ गया था। वह पकड़ा गया और उससे ज़मानत मांगी गयी। उसका छोटा भाई कृष्ण ही आज कोर्ट में गया और दो हज़ार रुपये की ज़मानत देकर उसे छुड़ा लाया है।"

गिरिधारीलाल ने कहा, "यह मुझे पता है। मेरे मुंशी ने पिता-पुत्र को कचहरी में भाग-दौड़ करते हुए देखा, तो पता किया कि वह वहां क्या कर रहे हैं। उसने ही मुझे सारी बात बतायी है।"

"जी! मैं जो कह रही हूं, वह यह है कि ज्ञानचन्द ने बाप को क़ैद कराने का यत्न किया था। इस पर भी, जब वह अपनी करतूत के कारण पकड़ा गया, तो पिता और छोटा भाई उसकी ज़मानत देकर उसे छुड़ा ले गये हैं। ज़मानत के अतिरिक्त कचहरी और थाने में पिता ने उसी नालायक़ पुत्र को छुड़ाने के लिए दो सौ रुपये ख़र्च भी किया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर इस सबका तुम्हारे साथ क्या सम्बन्ध है ?"

"सम्बन्ध यह है कि जो कुछ उन्होंने मेरे साथ किया है, वही कुछ उन्होंने उस पुत्र के साथ भी किया है, जिसने शाहजी को क़ैद कराने का यत्न किया था। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि उन लोगों का व्यवहार आपसे सर्वथा भिन्न है।"

"हां, वह तो होना भी चाहिए। हम लोगों के व्यवसाय भिन्न-भिन्न हैं। उन सूदख़ोर को मस्कीन लोमड़ी की भांति अपने जाल में फंसों को ठगने का अभ्यास है और मैं जो कुछ करता हूं, प्रत्यक्ष रूप में करता हूं।"

"मैं दोनों के व्यवसाय में मुक़ाबिला नहीं कर रही। मैं तो उनकी दूसरों से, विशेष रूप में अपने विरोधियों से व्यवहार की तुलना कर रही हूं।"

"तुलना में क्या अन्तर प्रतीत हुआ है ?" गिरिधारीलाल चाय समाप्त कर बात भी समाप्त करना चाहता था। वह उठकर अपने कमरे में आराम करने के लिए जाना चाहता था।

कान्ता उठ खड़ी हुई। उसने कह दिया, "दोनों में दिन और रात का अन्तर है।"

"रात कहां है ?"

"यहां इस घर में और दिन है 30 निस्बत रोड पर।"

"तो तुम रात का अन्धकार छोड़कर दिन के उजाले में चली जाओ। मेरे घर के द्वार तुम्हारे लिए खुले हैं। मैं तुम्हें रोकूंगा नहीं। न ही मूर्ख ज्ञानचन्द की भांति चाक़ू लेकर तुम पर आक्रमण करूंगा।"

इतना कहकर वकील साहब आराम करने के लिए अपने कमरे में चले गये।

कान्ता का मुंह पीला पड़ गया। वह भी अपने सोने के कमरे में चली गयी। उसकी छोटी लड़की सुमित्रा, जो इस समय नौवीं श्रेणी में पढ़ती थी, माता-पिता में झगड़ा सुन रही थी, परन्तु इसे समझ नहीं रही थी। वह भी मां के पीछे-पीछे उसके कमरे में चली गयी।

मां लेटी, तो वह उसके समीप उसके पलंग पर बैठकर पूछने लगी, "मां ! क्या बात है, तुम और पिताजी क्या कह रहे थे ?"

"वह कह गये हैं कि मैं उनका घर छोड़कर शकुन्तला के घर जा सकती हूं।"

सुमित्रा भयभीत पूछने लगी, "तो तुम यह घर छोड़ रही हो ?"

"नहीं ! यह इसलिए कि मेरे लिए अन्य कोई स्थान नहीं है।"

"तब ठीक है। मां, यहीं रहो। अक़्ल की बात यही है।"

"मैं भी यही विचार कर रही हूं, परन्तु मेरा मन इस घर से उचट गया है।"

"उसे उचट जाने दो। उसे व्यवहार में प्रकट मत होने दो। बस, काम बन जायेगा।"

शकुन्तला के मुख से भी कान्ता यही बात सुनकर आयी थी। शकुन्तला ने कहा था कि उसके पति ने उससे कहा था कि उसे अपने पिता के व्यवहार की प्रतिक्रिया को मन में रखते हुए भी प्रत्यक्ष में विनम्र ही बने रहना चाहिए। उसने कहा, "इस पर भी मैं अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मन की वर्तमान अवस्था में क्या करूंगी, विचार कर रही हूं। आज के उपरान्त क्या करना है, यही सोच रही हूं।"

"क्या करना है?"

"जब तक अपना व्यवहार स्थिर नहीं कर लेती, तब तक नहीं बताऊंगी।"

कान्ता ने इस घर में निर्लेप होकर रहने की योजना बना ली और उसी रात पति से पृथक् रहना आरम्भ कर दिया।

उस रात भोजन के समय मेज़ पर पिता और लड़की के लिए भोजन आया, परन्तु कान्ता के लिए नहीं आया। इस पर भी वह खाने के कमरे में पति के समीप बैठी हुई थी।

भोजन करते हुए सुमित्रा ने पूछा, "मां! भोजन नहीं करोगी?"

"करूंगी।"

"कब?"

"जब तुम्हारे पिताजी खा-पीकर तृप्त हो जायेंगे।"

इस पर गिरिधारीलाल के कान खड़े हो गये। सुमित्रा यह समझी कि उसकी मां अपने व्यवहार में परिवर्तन ला रही है, वह मुसकरा रही थी। गिरिधारीलाल नहीं समझा। वह प्रश्न-भरी दृष्टि से पत्नी का मुंह देखने लगा।

कान्ता ने पति के मन के भावों को समझकर कह दिया, "मुझे अपनी माताजी का व्यवहार स्मरण हो आया है और मुझे वह श्रेष्ठ प्रतीत हुआ है। वह सदा पति के भोजन कर चुकने के उपरान्त पृथक् ही भोजन किया करती थीं। वह इसे पतिव्रत-धर्म का अंग समझा करती थीं। तब से अब में अन्तर तो आया है, परन्तु माताजी का व्यवहार श्रेष्ठ ही प्रतीत हुआ है। मैं उसी का पालन करने जा रही हूं।"

गिरिधारीलाल को इससे क्रोध तो आया, परन्तु कुछ विचार कर वह चुप रहा।

रात को जब शकुन्तला की मां उसके कमरे में सोने के लिए नहीं आयी, तो वकील साहब असन्तुष्ट मन सोने की तैयारी करने लगे।

वकील साहब प्रायः रात को सोने से पूर्व एक-दो पैग शराब के लिया करते थे। उनके पीने पर कान्ता नियन्त्रण रखती थी। आज वह नियन्त्रण उठ गया।

जब कान्ता दूसरे कमरे में सोने गयी, तो गिरिधारीलाल ने अपने मन की उदासी को शराब से भरने का यत्न किया। वह नित्य से अधिक पी गया।

परिणामस्वरूप, वह रात को सोया, तो दरवाज़ा भीतर से बन्द करना भूल गया और प्रातः अपने नियमित समय पर नहीं उठ सका। जब नौकर ने पलंग के समीप आकर आवाज़ दी, तो उसकी नींद खुली। "वकील साहब! चाय!"

वकील साहब उठे और पाचक के हाथ में चाय देखकर पूछने लगे, "तो आज यह तुम लाये हो?"

पहले प्रातःकाल बेड-टी कान्ता बनाकर लाया करती थी। अतः पाचक ने बताया, "रात सोने से पूर्व बीवीजी ने कहा था कि सुबह की चाय भी मुझे ही पिलानी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और बीबीजी की चाय?"

"वह उनके कमरे में दे आया हूं। बिटिया को भी दे आया हूं।"

वकील साहब को रात में भोजन के समय की बात स्मरण आ गयी।

वह चाय पीकर ग़ुसलख़ाने में शौचादि के लिए चले गये। वास्तव में, यह समय उनका अपने कार्यालय में उस दिन के मुक़द्दमे देखने का था। आज उनकी नींद नित्य से देर में खुली थी।

अत: जल्दी-जल्दी तैयार होकर वह अपने दफ़्तर में जाने लगे, तो उन्हें बग़ल के कमरे में बत्ती जलती दिखाई दी। वह उसमें झांककर देखने लगे, तो उन्हें पता चला कि उनकी पत्नी फ़र्श पर चटाई बिछाकर बैठी कुछ पढ़ रही है। समीप चाय का ख़ाली प्याला रखा था।

वकील साहब ने दरवाज़े के पास खड़े होकर पूछ लिया, "यह क्या हो रहा है?"

"पुस्तक पढ़ रही हूं।"

"यह कौन-सी पुस्तक है?"

"भगवद्‌गीता है।"

"तो यह भी तुम्हारी मां ने बताया था कि पति को चाय पिलाने के स्थान पर पुस्तक पढ़ा करो।"

"जी नहीं। यह मेरी मां ने नहीं बताया था। वह बेचारी तो कुछ भी पढ़ी-लिखी नहीं थी। यह आपकी माताजी ने बताया था। पहले मैं यह पुस्तक दोपहर के समय पढ़ा करती थी। जब खाने-पीने के बारे में अपनी मां की बात याद आयी, तो यह पुस्तक पढ़ने से आपकी माताजी की याद आ गयी। वह इस पुस्तक को प्रात:काल उठकर पढ़ा करती थीं। इसीलिए आज अपना नया जीवन आरम्भ करते हुए मैं भी इसे प्रात:काल पढ़ने लगी हूं।"

वकील साहब को अपने कार्यालय का काम याद आया, तो पत्नी का ध्यान छोड़कर वहां से चल दिये।

शेष बात प्रात:काल का अल्पाहार लेने के समय हुई। उस समय भी कान्ता सामने बैठी थी, परन्तु कुछ खा नहीं रही थी। वकील साहब जल्दी-जल्दी टोस्ट-चाय इत्यादि ले रहे थे।

"तो तुम यह भी मेरे खा लेने के बाद लोगी?"

"जी!"

"अच्छा, सायंकाल तुमसे पूछूंगा कि इस नये ढोंग से क्या आनन्द आया?"

कान्ता चुप रही। जब वकील साहब चले गये, तो सुमित्रा ने कहा, "मां! इस प्रकार तो तुम घाटे में रहोगी।"

"तुम स्कूल किस समय जा रही हो?"

"बस, दस-पन्द्रह मिनट में तैयार होकर जा रही हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुमको सायंकाल इस प्रथा का लाभ बताऊंगी।"

शाम की चाय पर वकील साहब ने पूछ लिया, "क्या लाभ हुआ है इस व्यवहार से?"

कान्ता ने बताया, अभी एक दिन में पूरी बात नहीं बता सकती, परन्तु एक बात का लाभ तो अभी प्रतीत होने लगा है।"

"क्या?"

"जब आप खा-पी रहे होते हैं, तो मैं देखती रहती हूं कि नौकर आपको ठीक-ठीक वस्तुएं लाकर देता है या नहीं और आप उनको रुचिपूर्वक खाते हैं अथवा नहीं।"

"तो पहले यह नहीं देखा करती थीं?"

"इतनी सतर्कता से नहीं देख सकती थी, जितना अब देखती हूं।"

"सब बकवास है।" इतना कहकर वकील साहब उठकर अपने कमरे में चले गये।

: 17 :

कई दिन के उपरान्त सुमित्रा की समझ में आया कि अपना व्यवहार बदलने के कारण मां पहले से अधिक शान्त, सन्तुष्ट और प्रसन्न रहती है। एक दिन सायंकाल उसने चाय के उपरान्त पूछ लिया, "मां! तुम्हारा यह कार्यक्रम तो तुम्हारे अनुकूल बैठा है। मैं देख रही हूं कि तुम पहले से अधिक स्वस्थ और सुन्दर दिखाई देने लगी हो।"

"सच?" कान्ता ने मुसकराते हुए पूछा।

"हां, मां! मैं कई दिन से देख रही हूं और अनुभव भी कर रही हूं, परन्तु कहते हुए डरती थी। मैं विचार कर रही हूं कि मैं भी तुम्हारे साथ बैठकर ही खाया करूं, तो कैसा रहे?"

"मुझे कोई आपत्ति नहीं, परन्तु तुम स्वयं विचार कर लो। वास्तव में, मैंने तुम्हारे पिता का घर छोड़कर अपना पृथक् घर बनाने का प्रयत्न किया है। मेरे विचार में तुम्हें अभी ऐसा नहीं करना चाहिए।"

"कब तक करना चाहिए?"

"जब तक तुम्हारा विवाह नहीं हो जाता।"

"विवाह का इससे क्या सम्बन्ध है?"

"यह मैं फिर बताऊंगी। विवाह के बाद। पहले तुम समझ नहीं सकोगी।"

इस नये प्रकार के जीवन को चलते हुए एक मास से अधिक हो गया था। एक रात भोजन के उपरान्त, जब वकील साहब अपने कमरे में गये और कान्ता अपना भोजन करने लगी, तो गिरिधारीलाल पुनः लौट आया। उस समय सुमित्रा अपनी पढ़ाई करने अपने कमरे में चली गयी थी।

कान्ता समझ गयी कि वकील साहब देखने आये हैं कि वह उनसे चोरी-चोरी क्या खाती है। इसलिए अपने समीप रखी कुरसी पर ही वकील साहब को बैठने का निमन्त्रण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
देकर बोली, "तो आप देखने आये हैं कि मैं आपसे चोरी क्या खाती हूं ?"

"हां! यह भी एक बात है।" गिरिधारीलाल ने कुरसी पर बैठते हुए उसकी प्लेट में देखा।

बिना चुपड़ी रोटियां और दाल थी। साथ में शलगम का अचार था।

गिरिधारीलाल ने उसे रोटी-दाल और थोड़ा-सा अचार खाते देखकर कहा, "पर आज तो पूरी और खीर बनी थी। क्या वह खा चुकी हो ?"

"बूझ लीजिये।" कान्ता ने रोटी का ग्रास चबाते हुए कहा।

"आज सुमित्रा ने बताया कि तुम मेरे सामने खाने में संकोच अनुभव करती हो। वैसे तुम्हारा स्वास्थ्य सुधर रहा है। मैं यही देखने आया था।"

"क्या देखा है ?"

"रोटियों के साथ साग अथवा दाल और थोड़ा-सा अचार।"

"यह पर्याप्त होता है।"

"पर क्यों ?"

"आपकी आज्ञा का पालन कर रही हूं। आपने कहा था कि जाओ, रात के अंधेरे को छोड़कर प्रात: के उजाले में चली जाओ। बस, मैं अन्धकार को छोड़कर प्रकाश में आ बैठी हूं।"

"तो खीर, पूरी, हलुआ अन्धकार है और यह सूखी रोटी और दाल प्रकाश है ?"

"जी! इसीलिए तो स्वास्थ्य ठीक हो रहा है।"

"परन्तु तुम्हारे हिस्से की खीर-पूरी कहां गयी ?"

"मेरे हिस्से की बनी ही नहीं थी। मैंने पाचक को समझा रखा है कि आपके और लड़की के लिए नित्य की भांति भोजन बनाना चाहिए और मेरे लिए यही पर्याप्त होगा। सुमित्रा भी कहती थी कि मेरे मुख का रंग निखर रहा है।"

"हां, यह तो मैं भी देख रहा हूं, परन्तु इस सूखी दाल-रोटी से यह नहीं हो सकता।"

"जी, बस, यही लेती हूं।"

"परन्तु मैं एक और मतलब से आया हूं।"

"किस मतलब से ?"

"आज तुमको मेरे सोने के कमरे में आना चाहिए। तुम्हारी संगत मिले एक महीने से ऊपर हो गया है।"

"आ सकती हूं, परन्तु एक शर्त है।"

"क्या ?"

"जिस रात मैं आऊं, शराब नहीं पी जायेगी।"

"क्यों, उसने क्या कष्ट दिया है तुमको ?"

"मैं नहीं बता सकती। मुझे स्वयं भी समझ नहीं आ रहा कि उससे मुझे क्या कष्ट है। इस पर भी मेरी शर्त है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छा, आज सोने के समय आना। मैं शराब नहीं पियूंगा।"

"तब मैं आऊंगी।"

गिरिधारीलाल ने विचार किया कि कान्ता के आने से पूर्व ही वह पीकर कुल्ला कर लेगा और मुख में इलायची रख लेगा, जिससे बू नहीं आयेगी, परन्तु कान्ता सोने से पूर्व ही पति के कमरे में आयी, तो वकील साहब बोतल से गिलास में शराब लेकर उसमें 'सोडावाटर' डाल रहे थे।

कान्ता को देखकर गिरिधारीलाल बोतल छिपाने का विचार करने लगा, परन्तु कान्ता मुसकराकर कमरे से बाहर चली गयी और अपने सोने के कमरे में जाकर भीतर से द्वार की चिटकनी चढ़ाकर लेट गयी।

लेटे-लेटे वह विचार करने लगी थी कि यह 'महापुरुष' जीवन में आद्योपन्त झूठ-फ़रेब का व्यवहार करते रहे हैं। इस पर उसे बहुत दु:ख हुआ था। पिछले एक महीने में वह तीन-चार बार शकुन्तला से मिलने गयी थी। वहां उससे कोई भी तिरस्कार का व्यवहार नहीं करता था। कभी कृष्णचन्द्र के दूसरे भाइयों की बात होती थी, तो उसे यही समाचार मिलता था कि उनका कुछ भी समाचार नहीं। इस पर भी कोई उनकी निन्दा नहीं करता था। एक दिन ज्ञानचन्द की पत्नी भी वहां शकुन्तला का समाचार लेने आयी हुई थी। कान्ता ने उससे पूछा था कि क्या रजनी के पिता का समाचार मिलता है?

उसने कहा था—मैंने उनका विचार ही छोड़ रखा है।

उनके व्यवहार पर और अपने पति के व्यवहार पर कान्ता विचार करती थी, तो विस्मय करती थी।

रात बहुत देर तक वह विचार करती रही और फिर सो गयी। उसकी नींद खुली, तो उसने घड़ी में समय देखा। रात के दो बज चुके थे और द्वार पर कोई धीरे-धीरे खट-खट कर रहा था। उसने आवाज़ दी, "कौन?"

उसके पति का उत्तर आया, "मैं हूं।"

कान्ता ने उत्तर दिया, "मुझे नींद आ रही है।"

अब द्वार पर खट-खट बन्द हो गयी, तो वह यत्न कर सो गयी।

प्रात:काल उठकर वह कमरे से निकल शौचालय में जाने लगी, तो उसने देखा कि उसका पति द्वार के पास भूमि पर लेटा सो रहा है।

उसने उन्हें जगाया और फिर बांह पकड़कर उनके कमरे में ले गयी।

वहां उनको अपने पलंग पर बैठाकर उसने कहा, "अभी सेवक चाय लेकर आने वाला है। वह आपको वहां द्वार पर सोये देखता, तो मन में क्या समझता?"

"मेरे विषय में या तुम्हारे विषय में?" वकील साहब का प्रश्न था।

"दोनों के विषय में?"

"तब ठीक है। मैं बदनाम होता, तो तुम भी होतीं?"

"परन्तु आपको अपनी पत्नी को बदनाम करने में क्या मिलता है? मैं आपको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बदनाम होने से बचा रही हूं और आप मुझे ही बदनाम करने में मज़ा लेने लगे हैं।"

अभी कान्ता पति को समझा ही रही थी कि सेवक चाय का एक प्याला लेकर आया। प्याला वकील साहब के हाथ में देते हुए बोला, "बीवीजी! आपके लिए आपके कमरे में रख आया हूं।"

"यहीं ले आओ।"

सेवक गया और कान्ता के कमरे में से चाय का प्याला ले आया।

कान्ता ने प्याला लेते हुए पूछा, "बहिनजी को दे आये हो ?"

"जी हां!"

"तो जाओ।"

सेवक गया, तो कान्ता ने कहा, "देखिये, मैं चाय तो आपके साथ ले रही हूं, परन्तु रात मैं तब ही आऊंगी, जब आप शराब पीना छोड़ देंगे।"

"परन्तु तुम इसके विरुद्ध क्यों हो गयी हो ? पहले तो कभी ऐसी शर्त नहीं थी ?"

"आप लीजिये, आपकी इच्छा है, परन्तु मेरी शर्त यही है।"

चाय समाप्त हुई, तो कान्ता अपने कमरे में गीता का पाठ करने के लिए चली गयी। गिरिधारीलाल भी परेशानी में उठा और नित्मकर्म में लग गया।

अब वकील साहब पत्नी के सामने झूठ नहीं बोल सके कि वह नहीं पियेंगे और फिर चोरी-चोरी पीने की योजना बनायेंगे। उस रात उन्होंने अपना वचन पूरा किया, परन्तु स्वभाव से नित्य रात के समय पीने वाले के लिए एक दिन न पीने का प्रभाव बहुत बुरा आया। अगले दिन गिरिधारीलाल सायंकाल चाय लेने आया, तो नियमानुसार कान्ता समीप बैठी पति और लड़की दोनों के लिए चाय बना रही थी। गिरिधारीलाल ने बताया, "आज मैं तीन अदालतों में उपस्थित हुआ हूं और तीनों में ही मेरी ज़बान से वह बात नहीं निकल सकी, जो मैं कहना चाहता था। अन्त में, सबजज बहादुर की अदालत में मैंने अपनी तबीअत अलील कहकर दस दिन की पेशी ले ली है।"

"पर ऐसा क्यों हुआ ?"

"केवल इसलिए कि तुम्हारे कहने पर मैंने रात अपनी घुट्टी नहीं ली।"

"तो ऐसा कीजिये, कुछ दिन तक लगातार मत लीजिये और नित्य प्रातःकाल के अल्पाहार के समय मैं आपको बादाम का दूध पिलाया करूंगी, तब आपकी ज़बान में बल आ सकेगा और जो कुछ आप मन और बुद्धि से चाहेंगे, हो सकेगा।"

"यदि ऐसा बार-बार होने लगा, तो मेरी प्रैक्टिस समाप्त हो जायेगी। कोई भी भला व्यक्ति मुक़द्दमा लेकर मेरे पास नहीं आयेगा।"

परन्तु अपने व्यवसाय में झूठ-फ़रेब इत्यादि करने वाला अपनी पत्नी को भी धोखे में रखता रहा। वह अपनी आदत के अनुसार रात के समय, जब वह अकेला होता था, अपनी शराब की मात्रा लेता था और साथ ही अल्पाहार के समय बादाम वाला दूध भी। इस प्रकार यह प्रकट कर देता था, मानो उसने मद्य का सेवन छोड़ दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरलचित्त कान्ता पति का विश्वास करती रही। एक दिन उसने पूछा, "अब बिना मद्य के आप कैसा अनुभव करते हैं ?"

"अब तो अपना कार्य सरलतापूर्वक कर रहा हूं।"

"तो आप जिस दिन चाहें, मैं आपके कमरे में सोने के लिए आ सकती हूं।"

इस प्रस्ताव पर गिरिधारीलाल को भय लग गया। वह समझता था कि उसका सारा छल प्रकट हो जायेगा। इस पर उसने कह दिया, "यह ठीक है, परन्तु शराब छोड़ने से तो मुझमें संगत की इच्छा ही नहीं रही।"

कान्ता चुप हो रही।

परिणाम यह हुआ कि वकील साहब का पीना पुन: आरम्भ हो गया।

एक दिन कान्ता शकुन्तला के घर उसका समाचार लेने गयी, तो वहां उससे पता चला कि डॉक्टर उसके प्रसव के लिए कमरे को ठीक करा रही है। डॉक्टर के साथ वहां एक नर्स भी थी।

कमरा ठीक कर डॉक्टर जाने लगी, तो उसने शकुन्तला से कह दिया, "जब समय आयेगा, तो नौकर को भेज दीजियेगा, मैं आ जाऊंगी।"

डॉक्टर गयी और नर्स वहीं रही। शकुन्तला बाहर बैठक में मां को लेकर आ बैठी। कान्ता ने पूछ लिया, "कैसा अनुभव कर रही हो ?"

"मां! एक-दो बार पीड़ा उठ चुकी है। डॉक्टर का विचार है कि शाम के चार बजे तक आशा है। वह कह गयी है कि यदि पहले आवश्यकता पड़े, तो सेवक को भेज दूं, अन्यथा चार बजे वह स्वयं आयेगी।"

कान्ता ने भी यही उचित समझा कि वह भी वहां रहे। ज्ञानचन्द की पत्नी करुणा वहां आयी हुई थी। उसने कहा, "माताजी! आप जा सकती हैं। मैं यहा हूं। माताजी भी हैं।"

इस पर भी कान्ता ड्राइंगरूम में बैठी रही। पौने चार बजे के लगभग डॉक्टर आयी और शकुन्तला से पूछने लगी, "क्या हाल है ?"

"डॉक्टर! अब समय समीप ही 'प्रतीत' होता है।" शकुन्तला ने कहा।

"तब ठीक है। चलो अपने कमरे में।"

बैठक में करुणा, धनवती और कान्ता रह गयीं। कृष्ण भी बाहर कार्यालय में बैठा प्रतीक्षा कर रहा था।

बहुत देर नहीं लगी। चार बजकर बीस मिनट पर शकुन्तला ने लड़के को जन्म दिया। कमरे में बच्चे के रोने का शब्द हुआ, तो ड्राइंगरूम में बैठी स्त्रियां उत्सुकता से समाचार की प्रतीक्षा करती रहीं। दस मिनट के उपरान्त नर्स बाहर आयी और बता गयी कि लड़का हुआ है। इतना कहकर नर्स पुन: प्रसूति-गृह में चली गयी।

लगभग पांच बजे डॉक्टर नरूला बाहर निकली और धनवती को बधाई देने लगी, "माताजी! बधाई हो। आपके घर में एक और पोता हुआ है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनवती ने कहा, "डॉक्टर! धन्यवाद! आप दिन में दो बार देखने आया कीजिये। यह मिठाई के लिए रखिये।" इतना कह धनवती ने अपने शलूके की जेब से कुछ निकाला और डॉक्टर की मुट्ठी में देते हुए हाथ जोड़ दिये।

डॉक्टर बिना हाथ खोलकर देखे, मुसकराकर चल दी।

कान्ता ने पूछा, "बहिनजी! क्या दिया?"

"कुछ अधिक नहीं। वैसे जो कुछ भी दिया है, वह फ़ीस के अतिरिक्त है।"

तीनों औरतें प्रसूति-गृह में चली गयीं। बच्चा एक खटोले में प्रसूता के पलंग के समीप ही लेटा हुआ था।

तीनों बड़ी स्त्रियों ने शकुन्तला को देखा और उसे सन्तोषजनक अवस्था में देखकर बाहर चली आयीं।

बाहर आने पर कान्ता को घर की याद आयी। वह घर पहुंची, तो वकील साहब अपने कार्यालय में लोगों से मिलने के लिए जा चुके थे।

: 18 :

"मां! आज तो बहुत देर कर दी?" सुमित्रा ने पूछा।

"हां! आज शकुन्तला के लड़का हुआ है। उसके बच्चा होने तक वहीं बैठी रही।"

"पिताजी नाराज़ हो रहे थे।"

"क्या कह रहे थे?"

"यही कि तुम्हारा दिल अब इस घर में नहीं लगता।"

"यह तो उन्होंने ठीक ही समझा है, परन्तु सुमित्रा, इसका अभिप्राय यह नहीं कि मेरा दिल कहीं अन्यत्र लगने लगा है।"

"पर तुम्हारा दिल यहां क्यों नहीं लगता?" सुमित्रा ने पूछ लिया।

"इसलिए कि मुझे यह घर अन्धकारमय लगने लगा है। तुम्हारे पिता के साथ विवाह-बन्धन में बंधी होने के कारण मैं घर को नहीं छोड़ सकती। इसलिए इस घर में रहते हुए भी इस घर के अन्धकार को सहन नहीं कर सकती।"

"परन्तु क्या यहां अन्धकार है?"

"हां! मैं इस घर की तुलना शकुन्तला के घर से कहती हूं, तो यहां मुझे अन्धकार ही समझ में आता है।"

सुमित्रा समझी नहीं। मां का मुंह देखती रह गयी। मां ने कह दिया, "तुम अभी बच्ची हो। समझ नहीं सकतीं। कदाचित् विवाह के उपरान्त समझ सकोगी। वैसे तो मैं भी ठीक-ठीक नहीं समझती थी। मुझे अपने जीवन पर सन्तोष नहीं था, परन्तु असन्तोष का कारण नहीं जानती थी। जब से शकुन्तला का विवाह हुआ है और मैं उनके घर का चलन देखने लगी हूं, मेरे मन में प्रकाश होने लगा है। अब धीरे-धीरे समझ में आ रहा है कि यहां के सब प्राणी घोर अन्धकार में विचर रहे हैं। मैं चाहती थी कि तुम्हारे पिताजी इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
घर के वातावरण को बदल दें, परन्तु वह नहीं माने। इस कारण मैं स्वयं ही इस घर में रहती हुई भी, इस अन्धकार से अलिप्त रहने का यत्न कर रही हूं।"

सुमित्रा कुछ नहीं समझी, इस पर भी वह चुप रही। एकाएक लड़की ने कहा, "मैं दीदी के लड़के को देखने जाना चाहती हूं।"

"तो कल मेरे साथ चलना, परन्तु स्कूल से छुट्टी लेनी पड़ेगी।"

"यह तो मैं नहीं कर सकती। कुछ ही दिनों में हमारी मैट्रिक की परीक्षा होने वाली है।"

"तो ऐसा करो, आज बृहस्पतिवार है, रविवार को चलना।"

इस प्रबन्ध से सुमित्रा प्रसन्न थी। उसने पूछा, "मां! चाय आदि कुछ लोगी?"

"नहीं, मैं चाय पी आयी हूं।"

इस समय गिरिधारीलाल अपने कार्यालय से आया और पूछने लगा, "शकुन्तला के घर गयी थीं?"

"हां!"

"उसके घर क्या हुआ है?"

"लड़का हुआ है।"

"तो कल फिर जाओगी?"

"हां, जब तक वह प्रसूति-गृह में है, जाऊंगी।"

"किस डॉक्टर से प्रसव कराया है?"

"डॉक्टर नरूला आयी हुई थी।"

"वह तो बहुत महंगी डॉक्टर है?"

"मैंने पूछा नहीं कि उसकी फ़ीस कितनी है। चौबीस घण्टे के लिए एक नर्स भी रखी गयी है।"

"बहुत ख़र्च कर रहे हैं शाहजी।"

"मैं समझती हूं कि कृष्णचन्द्र सब ख़र्च स्वयं ही कर रहा है।"

"मैंने सुना था कि उसे ट्रस्ट से दो सौ रुपये महीना वेतन मिलता है।"

"परन्तु ट्रस्ट के कार्य के साथ वह अन्य काम भी तो करता है।"

"क्या काम करता है?"

"एक दिन शकुन्तला बता रही थी कि वह अपने पिता वाला काम तो कर रहा है, साथ ही उसने जापान की कुछ कम्पनियों की एजेंसी भी ले रखी है।"

"ये सब काम '*पैरासाइट*' के हैं।"

"वह क्या होता है?"

"दूसरों की आय पर जीवन चलाना।"

"यह तो सब लोग करते हैं। वकालत भी तो दूसरों के अधर्माचरण का लाभ ही है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गिरिधारीलाल पुनः अपने कार्यालय में लौटने लगा, तो कान्ता ने पूछ लिया, "तो आप दफ़्तर में जा रहे हैं ?"

"हां, कोई मिलने आया हुआ है। उसने शकुन्तला के लड़का होने की ख़बर दी, तो तुमसे पता करने चला आया था।"

"कौन है वह ?"

गिरिधारीलाल ने मुसकराते हुए कहा, "कृष्ण का भाई ज्ञानचन्द है।"

"उसकी इसमें क्या रुचि है ?"

"पता नहीं। वह किसी काम से आया था और यह बताने लगा, तो मैं तुमसे पूछने आ गया।"

"अच्छा, उसे विदा करने के बाद आइयेगा। तब आपसे कुछ कहूंगी।"

जब गिरिधारीलाल चला गया, तो समीप बैठी सुमित्रा पूछने लगी, "पिताजी से जीजाजी के भाई मिलने आये हैं ?"

रात खाने के समय गिरिधारीलाल ने कान्ता से पूछ लिया, "यह ज्ञानचन्द किसलिए आया था ? जहां तक मुझे मालूम है, वह अपने पिता के घरवालों से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखता।"

गिरिधारीलाल ने कहा, "कुछ कचहरी का काम था।"

"यही पूछ रही हूं कि क्या काम था ? पहले भी वह आया था, तो अपने ही पिता पर मुक़द्दमा करा बैठा था। अब क्या काम है ?"

"कुछ है, जो तुम्हें बताने का नहीं है।"

कान्ता चुप कर रही, परन्तु वह कल्पना करती रही कि किसी प्रकार का षड्यन्त्र रचा जा रहा है और उसका पति सब जानते हुए भी कुछ नहीं बता रहा। इस पर वह विचार करने लगी कि कुछ करना चाहिए। कृष्णचन्द्र को ज्ञान के आने की सूचना भेज दे, जिससे वह सावधान रहे।

आख़िर उसे एक बात सूझी। वह यह कि पाचक के हाथ पत्र लिखकर कृष्ण को भेज दे।

वकील साहब के भोजन कर उठ जाने पर वह स्वयं भोजन किये बिना ही उठी और अपने कमरे में जाकर पत्र लिखकर ले आयी। फिर वह पाचक के पास जाकर बोली, "विष्णु! शीघ्र भोजन कर लो। तुम्हें एक काम से भेजना है। काम जल्दी का है।"

"मांजी! कहें, तो काम करने के बाद भी भोजन कर सकता हूं।"

"नहीं, भोजन कर लो। तुम्हें घर के बाहर कहीं भेजना है।"

रात के दस बजे विष्णु को बन्द लिफ़ाफ़े में पत्र देकर उसने कहा, "शकुन्तला बीवी का घर जानते हो ?"

"जी, जानता हूं। निस्बत रोड पर है।"

"तो यह पत्र अभी वहां जाकर बाबू कृष्णचन्द्र को दे आओ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
विष्णु गया और पास ग्यारह बजे लौटा। तब तक वकील साहब सो चुके थे।

विष्णु आया, तो कान्ता ने पूछा, "पत्र किसको दिया था ?"

"मेरा विचार है कि बहिनजी के श्वसुर थे। जब मैंने पत्र दिया, तो उन्होंने मेरे सामने ही उसे खोला और फिर जेब से एक रुपया निकालकर मुझे देते हुए कहा, "इसकी मिठाई खा लेना।"

पाचक ने जेब से रुपया निकालकर दिखाते हुए कहा, "यह आप लेंगी ?"

"नहीं, यह तुम्हारे लिए है।"

पाचक ने कान्ता के चरण छुए और अपने कमरे में चला गया।

अगले दिन ग्यारह बजे के लगभग कान्ता शकुन्तला का समाचार लेने वहां जा पहुंची। वह शकुन्तला और नवजात शिशु को देखकर उनका हाल-चाल पूछ बाहर ड्राइंगरूम में आयी, तो वहां गोपीशाह मिल गया।

कान्ता के नमस्ते कहते ही गोपीशाह ने बताया, "हमें रात ही पता चल गया था कि ज्ञान की नौकरी छूट गयी है और वह बेकार घूम रहा है। इस पर भी उसका वकील साहब के पास जाने का कारण हम नहीं जान सके। मैं स्वयं उसके विषय में वकील साहब से पता करूंगा कि वहां क्यों गया था। वैसे घर पर बच्चे तथा बच्चे की मां की सुरक्षा का प्रबन्ध मैंने कर दिया है।"

कान्ता ने बात बदल दी। उसने कहा, "जीवन से निराश व्यक्ति कुछ भी ख़ुराफ़ात कर सकता है। आपके पास धन देखकर कुछ लोगों के सीने पर सांप लोटने लगा है।"

इसी समय ज्ञान की पत्नी और धनवती प्रसूति-गृह से बाहर आयीं, तो कान्ता के समीप बैठकर सुख-समाचार लेने लगीं।

उस दिन सायंकाल उत्तमचन्द कार्यालय से सीधा निस्बत रोड वाली कोठी पर ही आया। कुछ दिन हुए उसने ही यह समाचार दिया था कि ज्ञान की नौकरी छूट गयी है। उसने बताया था कि लाहौर स्टेशन के कर्मचारियों का पे-बिल उसके पास आया था। उसमें ज्ञान का नाम न देखकर वह समझ गया था कि अब वह स्टेशन पर काम नहीं करता। इसलिए वह क्लर्क से पता करने गया था।

उसी क्लर्क से उसे पता चला था कि उसे सेवा से निलम्बित कर दिया गया है। उसको कार्य से पृथक् कर उस पर आरोपों की जांच हो रही है।

गोपीशाह का प्रश्न था, "उसके साथ किसी अन्य को भी निलम्बित किया गया है ?"

"जी ! स्टेशन के पांच अधिकारी हैं। किसी करीमबख़्श की शिकायत पर यह सब कुछ हुआ है। करीमबख़्श स्वयं भी लाहौर स्टेशन से बदल दिया गया है।"

गोपीशाह ने उत्तमचन्द से कहा, "तुम्हें पता करना चाहिए कि उस पर क्या आरोप है ?"

"एक-दो दिन में सब बात पता चल जायेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोपीशाह ने दो गोरखे शस्त्रधारी कोठी की रक्षा के लिए नियुक्त कर दिये थे, जो दिन-रात कोठी की चौकीदारी करते थे। इसके अतिरिक्त नर्स और साथ ही घर के दो प्राणी सदा जच्चा-बच्चा की देख-रेख के लिए रहते थे। गोपीशाह को सन्देह था कि कहीं ज्ञान अथवा उसके साथी बच्चे को चुरा ले जाने का यत्न न करें और फिर उसको छोड़ने के लिए धन की मांग करने लगें।

तेरहवें दिन प्रसूता ने स्नान किया और बच्चे का नाम रखा गया। पण्डित ने बच्चे के जन्म का दिन-काल देखकर बताया कि 'व' अक्षर से आरम्भ होने वाला नाम रखा जा सकता है। रामेश्वरी इस संस्कार के समय उपस्थित थी। उसने सुझाव दिया कि विश्वम्भर नाम रखा जाये। इस नाम को सबने स्वीकार कर लिया।

: 19 :

लाहौर के स्टेशनमास्टर जेन्किन का तबादला अम्बाला के लिए हो गया था। उसके स्थान पर एक अन्य ऐंग्लो-इण्डियन मिस्टर एस० कार्टर आया, तो उसके साथ असिस्टेण्ट स्टेशनमास्टर करीमबख़्श का अधिक घनिष्ठ सम्बन्ध बन गया। अतः उसने ज्ञानचन्द के विरुद्ध एक 'चार्जशीट' तैयार कर, उसे और उसके चार साथियों को निलम्बित करा दिया। वह कार्रवाई जनवरी मास की पहली तारीख़ को की गयी थी। जनवरी की उनतीस तारीख़ के पे-बिल में ज्ञानचन्द का नाम नहीं था। पे-बिल उत्तमचन्द के सामने आया, तो उसमें ज्ञानचन्द का नाम न देख, वह सम्बन्धित अधिकारियों से पता करने लगा कि ज्ञानचन्द का क्या हुआ? उसका विचार था कि उसका तबादला लाहौर स्टेशन से किसी अन्य स्टेशन पर कर दिया गया होगा, परन्तु जब उसे यह बताया गया कि उसे निलम्बित कर दिया गया है, तो उसने यह सूचना पिताजी को दे दी।

नामकरण संस्कार के दिन गोपीशाह ने अपने परिवार के सभी लोगों को निमन्त्रित किया था। उत्तमचन्द, ज्ञानचन्द, रामचन्द्र, परमेश्वरी तथा राधा के परिवार को भी निमन्त्रित किया गया था। रामेश्वरी तथा उसका पति सुन्दरदास भी निमन्त्रित थे।

इस अवसर पर ज्ञानचन्द और रामचन्द्र भी आ गये। इस पर सबसे अधिक विस्मय लाला गिरिधारीलाल को हुआ। जब पुरोहित संस्कार करा रहा था, तो गिरिधारीलाल ने ज्ञानचन्द से पूछ लिया, "तो तुम्हारी अपने परिवारवालों से मेल-मुलाक़ात है?"

ज्ञानचन्द ने मुसकराते हुए कहा, "जब निमन्त्रण आया, तो मुझे विस्मय हुआ था। मेरा यहां आने का विचार नहीं था, परन्तु फिर भी कुछ विचार कर चला आया हूं।"

"वैसे तुम्हारी योजना का क्या हुआ?" गिरिधारीलाल ने कान समीप कर पूछा।

"लालाजी! कोठी की सुरक्षा का सुदृढ़ प्रबन्ध देखकर मुझे सन्देह हो गया है कि मेरी योजना का पता पिताजी को चल गया है। इस योजना की ख़बर आपको ही थी, परन्तु आपके मेरे रहस्य को प्रकट कर देने से योजना नहीं चल सकी।"

"मैंने तो किसी को कुछ नहीं बताया।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरिधारीलाल ने कह तो दिया, परन्तु उसे स्मरण हो आया कि जिस दिन ज्ञानचन्द उससे मिलने आया था, उसी दिन सुमित्रा की मां कान्ता को उसने बताया कि ज्ञानचन्द आया हुआ है। क्या उसे ज्ञानचन्द की योजना का सन्देह हो गया था? यह स्मरण आते ही उसे पत्नी पर सन्देह हुआ कि उसने ही गोपीशाह के घरवालों को कुछ बताया है।

संस्कार पर शाहजी ने एक हज़ार रुपया विभिन्न संस्थाओं और लड़कियों को दान-दक्षिणा के रूप में दिया। साथ ही बच्चे और बच्चे की मां को वस्त्राभूषण इत्यादि भी दिये। कान्ता भी सुमित्रा के साथ वहां आयी हुई थी और वह भी बच्चे के लिए वस्त्र आदि लायी थी।

अभी खाना-पीना हो रहा था कि गिरिधारीलाल ने पत्नी को पृथक् में ले जाकर पता किया, "उस दिन मैंने तुम्हें बताया था कि ज्ञानचन्द मेरे घर पर आया था। क्या यह बात तुमने शाहजी के घरवालों को बता दी थी?"

अकस्मात् कान्ता के मुख से निकल गया, "तो यह नहीं बतानी चाहिए थी?"

"वकील के घर की बातें बाहर सड़क पर नहीं कही जातीं।"

परन्तु आपने बताया नहीं था कि यह आपके दफ़्तर की बात है। मैंने पूछा था और जहां तक उसके हमारे घर आने की बात है, वह खुलेआम था, चोरी-चोरी उसने क्या बात की है, यह आपने बतायी नहीं थी और न ही मैंने किसी को बतायी है।"

"तुम भी मूर्ख ही रही हो!"

"वह तो हूं ही। अब क्या करूं? मुझमें बुद्धि होती, तो वकील न बन जाती?"

"इसीलिए औरतों को वकील नहीं बनाया जाता। उनके पेट में कुछ भी छिपा नहीं रह सकता।"

कान्ता चुप रही, परन्तु इतना तो उसकी समझ में आ ही गया था कि ज्ञानचन्द कुछ करने वाला था और उसका ज्ञान उसके पति को था। वह उसने अपने दामाद के घरवालों को बताया है, तो उन्होंने उस बात को होने नहीं दिया।

इससे उसको इतना सन्तोष हुआ था कि उसने लड़की के घरवालों का कुछ तो अनिष्ट होने से रोक दिया।

अपने पति को वहीं खड़ा छोड़, कान्ता औरतों में जा बैठी।

गिरिधारीलाल को इस बात का विस्मय था कि गोपीशाह लड़के के व्यवहार पर सन्देह करते हुए भी उसे अपने घर में बैठने तथा दूसरे सदस्यों से मिलने-जुलने दे रहा है। सबसे बड़ी बात यह थी कि ज्ञानचन्द की पत्नी करुणा भी स्त्रियों में ऐसी बैठी थी, मानो उसे किसी बात का भय नहीं। ज्ञानचन्द ने तीन मास पूर्व ही उस पर चाकू से आक्रमण किया था।

एक-एक, दो-दो कर मेहमान विदा होने लगे।

आख़िर गिरिधारीलाल ने समझ लिया कि उसे भी चलना चाहिए। कान्ता ने उससे कहा था, 'चलो, चलें।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गिरिधारीलाल कह रहा था, "थोड़ा और ठहरो, अभी चलता हूं। मैं शाहजी से अकेले में एक बात पूछना चाहता हूं।"

परन्तु वह शाहजी से मिल नहीं पा रहा था।

गोपीशाह ने ही ज्ञानचन्द को सम्बोधित कर पूछा, "तुम कब जा रहे हो?"

ज्ञानचन्द ने अभी कुछ कहा नहीं था कि रामचन्द्र ने कह दिया, "जब आप सुशीला और उसके लड़कों को विदा कर देंगे?"

शाहजी ने कहा, "मैंने उनको पकड़ा हुआ नहीं है। जाने वालों के लिए कोठी के दरवाज़े खुले हैं। वे भी जा सकते हैं।"

इस पर ज्ञानचन्द ने कहा, "पिताजी! मैं भी यहीं रहूंगा।"

"तुम्हें तो मैं धक्के दिलवा-दिलवाकर निकाल दूंगा।"

"तो निकलवा दें।"

गोपीशाह ने आवाज़ दी, "ओ कल्याणसिंह!" यह ड्योढ़ी में खड़े गोरखा का नाम था। वह आया, तो गोपीशाह ने कहा, "इस बाबू को पकड़कर कोठी के बाहर कर दो।"

कल्याणसिंह ने ज्ञानचन्द को बांह से पकड़ बाहर ले जाने का यत्न किया, तो ज्ञानचन्द समझ गया कि हठ करना बहुत बुरा होगा। गोरखा ने एक हाथ से ज्ञानचन्द की बांह पकड़ी हुई थी और दूसरा हाथ उसने अपनी खुखरी पर रखा हुआ था। इस पर ज्ञानचन्द चुपचाप कोठी के बाहर निकलकर रेलवे रोड वाले मकान की ओर चल पड़ा।

इसी समय रामचन्द्र ने पूछा, "तो पिताजी! मैं भी जाऊं।"

"यह तुम्हारी इच्छा पर है। मैंने तुम्हें जाने के लिए नहीं कहा। मैंने तो ज्ञान को कहा था कि वह चला जाये। वह स्वयं ही बीच में बोल पड़ा था।"

"तो?"

"तुम्हारी इच्छा पिता के घर रहने की है, तो रह सकते हो। सुशीला जाती है, तो ले जा सकते हो। यही बात तुम्हारे लड़कों की है। वे तुम्हारे साथ जाते हैं अथवा तुमसे पृथक् स्थान पर जाते हैं, यह उनके विचार करने की बात है। यह तुम उनसे निश्चय कर सकते हो।"

इस समय रामचन्द्र ने पत्नी से कहा, "क्यों सुशीला! मेरे साथ चलोगी?"

सुशीला का कहना था, "एक शर्त पर!"

"क्या?"

"आज से शराब बन्द करनी होगी।"

"यह तो बहुत कठिन है!"

"क्यों कठिन है? इस देश में दस हज़ार में से एक भी ऐसा नहीं, जो पीता हो। आप भी उनकी भांति बिना शराब के रह सकते हैं।"

"यह तो ठीक है, परन्तु मेरी आय सवा सौ रुपये रोज़ की है। उसे कहां फेंकूं?"

"उसकी सद्गति करना मैं अच्छी तरह जानती हूं। पिताजी के सामने सौगन्धपूर्वक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कहिये कि शराब नहीं पियेंगे, तो मैं अभी यहां से चल पड़ूंगी। मैं समझती हूं कि लड़के भी मेरे साथ ही चलेंगे।"

"परन्तु यह वचन देकर भंग भी तो कर सकता हूं।"

"तो मैं फिर चली आऊंगी।"

"तो चलो। मैं इसे छोड़ने का प्रण करता हूं।"

सुशीला तुरन्त उठी और चल पड़ी। उसका छोटा लड़का अमृतसर स्कूल में ही पढ़ता था। वह तो पहले ही जाने की तैयारी में था, परन्तु बड़े लड़के ने अनारकली बाज़ार में नीला गुम्बज चौक में ट्रस्ट से रुपया लेकर दुकान की हुई थी। इस कारण वह बोला, "पिताजी, मैं अगामी रविवार को मां से मिलने आऊंगा।"

"और मुझसे नहीं?"

"आप भी तो वहीं होंगे। आप से तो अनायास ही मुलाक़ात हो जायेगी।"

अब गिरिधारीलाल ने भी पत्नी से कहा, "भाग्यवान्! अब तुम भी चलो।"

कान्ता और सुमित्रा पहले ही चलने को तैयार बैठी थीं। वे उठीं और चल दीं।

इस सबको देख करुणा की आंखें तरल हो उठीं। गोपीशाह ने यह देखा, तो पूछ लिया, "क्यों करुणा, तुम्हारा चित्त भी करता है अपने पति के घर जाने को?"

"नहीं, पिताजी! मैं इस कारण नहीं रो रही। मुझे दु:ख इस बात का है कि मैंने पिछले जन्म में कौन से खोटे कर्म किये थे कि मेरा इस प्रकार के मूर्ख व्यक्ति से वास्ता पड़ा है?"

"तो क्या रोने से कर्मफल बदल जायेंगे? कर्मफल बदलने के लिए यत्न दूसरे हैं।"

"क्या?"

"ईश्वर-भजन और जो कुछ प्राप्त है, उस पर सन्तोष करना।"

उत्तमचन्द के बड़े लड़के की बहू मोहिनी ने कहा, "चाचाजी! आप हमारे साथ चलिये। पिछले मास हमें एक बड़ा क्वार्टर मिल गया है। लेकिन मैं सोच रही हूं कि नौकरी का क्या भरोसा? तुम्हारे पिता भी कहा करते थे कि रेल की नौकरी पक्की होती है। यह लगभग सरकारी नौकरी के समान ही है। अब देख रही हूं कि तुम्हारे चाचा बेकार घूम रहे हैं।"

"परन्तु पिताजी की नौकरी तो नहीं छूटी।"

अब उत्तमचन्द बोल उठा, "देखो सिद्धराम! इस सब में मेरा अपना ही दोष है। मुझे स्मरण है कि जब मैंने दसवीं श्रेणी पास की थी, तो मुझे पिताजी ने उनका काम करने के लिए कहा था। उस समय और बाद में भी, मेरे मस्तिष्क में यह समाया हुआ था कि ब्याज पर रुपया देना किसी प्रकार का व्यवसाय नहीं है। व्यवसाय तो दुकानदारी है अथवा नौकरी। दुकानदारी में दिन के तेरह-चौदह घण्टे काम करना होता है और नौकरी में तो छह घण्टे ही काम से वेतन मिल जाता है। इसलिए मैंने न तो पिताजी का कार्य स्वीकार किया और न ही दुकानदारी करनी चाही। अब मैं कृष्ण की बात देखता हूं, तो मुझे उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पर ईर्ष्या होती है। उस दिन कृष्ण कह रहा था कि पिताजी वही काम कर रहे थे, जो बंगाल बैंक करता है। एक बात में तो पिताजी का काम बंगाल बैंक से भी श्रेष्ठ है। बैंक तो लोगों के जमा रुपयों को ही आगे ब्याज पर चढ़ाते हैं, परन्तु पिताजी अपना पैदा किया हुआ धन ही ब्याज पर देते हैं। केवल ब्याज की बात है। कभी-कभी और कुछ लोगों से पिताजी अधिक ब्याज लेते हैं, परन्तु कृष्ण का कहना है कि पिताजी बलपूर्वक कान पकड़कर तो ऋण नहीं देते ? जिनको आवश्यकता होती है और जिन्हें बैंक से मिल नहीं सकता, वे ही पिताजी के पास और अब उसके पास आते हैं। कृष्ण ने कहा था, यदि बैंक भी आभूषण आदि रखकर रुपया देने लगे और पिताजी से कम ब्याज पर दे, तो कौन मना करता है ?"

अब बात सिद्धराम ने की। उसने कहा, "मां! जब तक नौकरी है, तब तक तो करनी चाहिए। जब तक धूप है, तब तक उसका स्वाद लेना ही चाहिए।"

करुणा ने कह दिया, "नहीं बेटा! तुम जाओ। मैं अब तुम्हारे दादाजी के आश्रय पर ही जीवित हूं। उस आश्रय को छोड़ूंगी नहीं।"

:20 :

"मुझे आशा नहीं थी कि तुम इस प्रकार मेरे साथ चल पड़ोगी। करुणा भाभी और रजनी का ज्ञान से व्यवहार देखकर मैं यही समझा था कि तुम मुझे भी डांट-डपटकर मेरे निमन्त्रण को ठुकरा दोगी।" रामचन्द्र अपनी पत्नी से कह रहा था। वे दोनों अपने छोटे लड़के मनोज के साथ रेलगाड़ी में लाहौर से अमृतसर जा रहे थे। वे सैकिण्ड क्लास में यात्रा कर रहे थे। रामचन्द्र को पास बनवाकर सैकिण्ड क्लास में यात्रा करने का अधिकार मिला हुआ था, परन्तु छोटी-मोटी यात्रा के लिए वह पास बनवाने की आवश्यकता नहीं समझता था।

पति की बात सुनकर सुशीला ने कहा, "परन्तु आप उतने ख़राब तो नहीं हैं, जितने आपके भाई हैं।"

"क्यों, उसने क्या किया है ?" रामचन्द्र ने पूछा।

"मुक़द्दमा ख़ारिज होने के कुछ दिन बाद वह घर पर आये और बलपूर्वक करुणा भाभी को पकड़कर अपने मकान पर ले जाने लगे। इस पर करुणा भाभी ने चीख़ें मारनी आरम्भ कर दीं। हम सब घर से निकलकर आपके भाई को रोकने लगे, तो हाथापाई होने लगी। उसी समय दादा दफ़्तर से घर आ पहुंचे। वह भी करुणा भाभी को छुड़ाने लगे, तो आपके भाई ने जेब से लम्बा-सा चाकूनिकालकर भाभी पर आक्रमण कर दिया। दादा ने उसे रोकने का यत्न किया। परिणाम यह हुआ कि चाकू भाभी के पेट के स्थान पर उनकी बांह में लगा और उनकी जान बच गयी।

"हम सबने ज्ञान भैया को एक कोठरी में बन्द कर दिया और दादा पुलिस को बुला लाये। पुलिस ने उन पर दूसरे के घर में घुस जाने के अपराध में मुक़द्दमा चलाया और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी दो हज़ार की ज़मानत मांग ली। उनकी ज़मानत देने वाला कोई नहीं था। इस पर पिताजी ने कृष्ण भैया को ज़मानत देने के लिए तैयार किया। ज़मानत के अलावा दो-अढ़ाई सौ रुपये ऊपर से ख़र्च करने पड़े। इतना सब करने पर भी ज्ञान भैया ने कृष्ण के लड़के को चुराने का इन्तज़ाम किया। वह उसे चुराकर ले जाना चाहता था और फिर पिताजी से उसके बदले रुपये मांगना चाहता था। इसका पता पिताजी को चल गया और उन्होंने उसकी सुरक्षा का प्रबन्ध कर दिया।

"इस पर भी वह बेशरम आज नामकरण संस्कार पर आया था। तब भी आपके पिता ने उसे घर से निकाला नहीं। उसको बैठने दिया, खाने को भोजन भी दिया। जब सब लोग विदा हो गये, तब उसे जाने को कहा था।

"परन्तु आप तो वैसे नहीं हैं। आपने मेरी एकमात्र शर्त मान ली है। मैं समझती हूं कि यदि आप शराब पीनी छोड़ देंगे, तो कुछ ही दिनों में आपकी बुद्धि पूर्ववत् सजग और सक्रिय हो जायेगी और आप वैसे ही हो जायेंगे, जैसे विवाह के बाद थे।"

"मैं भी यही विचार कर रहा हूं," रामचन्द्र ने अपने मन की बात बता दी, "यदि पिताजी मुझे भी लाहौर अथवा अमृतसर में अच्छी-सी दुकान खुलवा दें, तो मैं भी नौकरी छोड़ दूंगा।"

"परन्तु आप नौकरी में रहते हुए सरल व सादा जीवन क्यों नहीं चला सकते?"

"मैंने बहुत विचार किया है और इस परिणाम पर पहुंचा हूं कि रेलवेस्टेशन पर ऊपर की आय वेतन से कहीं अधिक होती है, परन्तु उस आय को न तो हम बैंक में जमा करा सकते हैं और न ही किसी प्रत्यक्ष वस्तु पर व्यय कर सकते हैं। यह ऊपर की आय ऊपर ही व्यय करनी होती है। इसके लिए शराब व नाच-गाना आदि ही उपाय हैं। साथ ही स्टेशन पर सब एक समान ही नंगे हैं। सब ऊपर की आय करते हैं और फिर ऐसी बातों में व्यय करते हैं। न करें, तो सब सन्देह करने लगते हैं।"

"इसीलिए तो आपकी बुद्धि मलिन होती जाती है।"

"और अब मेरी बुद्धि ठीक हो रही है?"

"आपके मन में मुझे घर ले जाने का जो विचार उत्पन्न हुआ है, उससे आपकी बुद्धि में सुधार हो रहा प्रतीत होता है।"

"क्या सुधार देखा है मुझमें?"

"यही कि आप समझने लगे हैं कि बुद्धि भ्रष्ट होने का क्या कारण है। आपने स्वयं ही कहा है कि आपकी आय में दोष है। यह स्पष्ट रूप से इस बात का लक्षण है कि आप विचार-शक्ति का प्रयोग करने लगे हैं। आपके पिताजी एक दिन सुन्दरदास वकील से कह रहे थे कि बुद्धि के प्रयोग का प्रयत्न करना ही नेक बनने का प्रारम्भिक बिन्दु है। यदि मनुष्य अपने प्रत्येक काम में बुद्धि का प्रयोग करता रहे, तो भूल करता हुआ भी, समझ आने पर वह अपनी भूलों को सुधार करने लगेगा। बुद्धिहीन व्यक्ति अपनी भूलों को स्वीकार नहीं कर सकता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रामचन्द्र ने बात बदल दी। उसने कहा, "परसों मैं विनोद की दुकान पर गया था। दुकान पर ग्राहक आ रहे थे और वह उनसे बहुत ही सज्जनता से व्यवहार कर रहा था। मुझे कुछ ऐसा समझ आया कि वह अपनी वस्तुओं को बहुत ही कम मूल्य पर बेच रहा है। उसका कहना था कि इससे ग्राहक अधिक और अधिक आते हैं। परिणामस्वरूप, बिक्री अधिक होती है और लाभ भी अधिक होता है। लाभ का प्रतिशत कम होता है, परन्तु बिक्री अधिक होने से लाभ अधिक होता है।

"मैंने पूछा था, लाभ कितना हो रहा है?

"विनोद का कहना था कि ठीक-ठीक तो जब वर्ष का हानि-लाभ का चिट्ठा तैयार करेगा, तब पता चलेगा, इस पर भी अनुमान है कि दुकान के सब प्रकार के ख़र्च निकालकर वर्ष में दस-बारह हज़ार की आय हो जायेगी।

"मैं यह विचार करने लगा हूं," रामचन्द्र ने कहा, "रिश्वत में लगभग इतना ही प्राप्त हो जाता है, परन्तु उस आय से सम्पत्ति में वृद्धि नहीं हो रही। ऐसी आय से क्या लाभ? इसलिए नौकरी छोड़कर मैं भी कोई व्यापार क्यों न आरम्भ कर दूं?"

"ठीक है, परन्तु पहले कुछ पूंजी भी तो जमा करेंगे, तभी तो कोई व्यवसाय कर सकेंगे।"

"तो ट्रस्ट पूंजी नहीं देगा?" रामचन्द्र ने कहा, "सुना है कि विनोद को ट्रस्ट ने काफ़ी धन दिया है।"

"ट्रस्ट सहायता ही तो कर सकता है। वकील सुन्दरदास ने विनोद से कहा था कि वास्तविक पूंजी तो उसके पास है। वह है—परिश्रम और इसके साथ चाहिए परिश्रम का उपयोग करने के लिए—बुद्धि। यदि ये दो बातें हों, तो धन स्वयमेव इकट्ठा हो जाता है। फिर ट्रस्टियों में विश्वास पैदा करें, तो वहां से धन की सहायता मिल सकती है। वकील साहब के एक मित्र के लड़के की नीले गुम्बज में एक दुकान थी, परन्तु अकेला होने से वह उन्नति नहीं कर सका था। वकील साहब ने उसके साथ विनोद को लगा दिया। एक और एक ग्यारह हो गये। दुकान को ट्रस्ट से ऋण दिलवा दिया। अब दुकान चलने लगी है।"

"मुझसे भी विनोद कह रहा था कि वर्ष में दस-बारह हज़ार के लाभ की आशा है। दुकान माल से भरी हुई है। अब वह बिक्री का फ़ालतू रुपया ट्रस्ट में जमा कराने लग गया है। बैंक वाले चालू खाते पर ब्याज नहीं देते थे, परन्तु पिताजी का ट्रस्ट ब्याज देता है। ट्रस्ट ब्याज लेता है चार प्रतिशत प्रतिवर्ष और जमा किये धन पर देता है तीन प्रतिशत। मैं हैरान हूं, इतने कम लाभ पर ट्रस्ट का ख़र्च कहां से पूरा होता है? ट्रस्ट का जो रुपया बड़ी-बड़ी कम्पनियों में जमा है, उसमें लाभ दस से पन्द्रह प्रतिशत होता है। ट्रस्ट का चार लाख रुपया उन कम्पनियों में जमा है और उसकी आय से कोठी का किराया, चपरासी, क्लर्क और मैनेजर का वेतन तथा अन्य फुटकर ख़र्च चलता है, परन्तु मेरे पास तो धन बचता ही नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जो भी बचे, आप मेरे पास जमा करा दें। मैं उसे एकत्र करती रहूंगी और फिर वही आपकी पूंजी बन जायेगी। हां, मैं रिश्वत का रुपया नहीं रखूंगी। यदि आपके वेतन से कुछ बचेगा वहीं जमा किया करूंगी।"

"मुझे पचहत्तर रुपये वेतन मिलता है।"

"तो ऐसा कीजिये, यह पचहत्तर रुपये मुझे दे दीजिये। इसमें से घर का ख़र्च चलाऊंगी और महीने के बाद बताऊंगी कि क्या कुछ बचा है?"

"मैं समझता हूं कि दस-बीस हज़ार जमा होने तक मैं बूढ़ा हो जाऊंगा।"

"जी नहीं। दो-तीन वर्ष में ही पूंजी के लिए कुछ हो जायेगा।"

सुशीला ने कह तो दिया, परन्तु वह नहीं जानती थी कि इतना कुछ कैसे हो सकेगा कि कोई अच्छा-सा व्यवसाय चलाया जा सके। इस विषय में वह कृष्ण से बात करने का विचार बना बैठी।

इसके लिए अवसर तब मिला, जब कृष्णचन्द्र अमृतसर आया। उसने अमृतसर में सात-आठ दुकानदारों को ऋण दिया हुआ था। वह एक लाख रुपये के लगभग था। महीने में एक-दो बार कृष्ण अमृतसर की दुकानों पर देखरेख करने आया करता था।

इस बार वह सुशीला भाभी का सुख-समाचार लेने उनके घर पर आ पहुंचा। औपचारिक समाचारों के उपरान्त सुशीला ने पति की इच्छा बता दी। कृष्ण ने पूछ लिया, "और वेतन में महीने के उपरान्त कितना बचेगा?"

"यत्न कर रही हूं, परन्तु तीस-पैंतीस से अधिक नहीं बच सकते।"

"भाभी! वह तुम कुछ मास तक नियमपूर्वक जमा कराओगी, तो मैं तुम्हें आय की वृद्धि का उपाय बता दूंगा।"

कृष्ण पिताजी की सम्पत्ति-निर्माण की विधि को जानता था। यही वह सुशीला के धन से करने लगा। सुशीला ने तीस रुपये दिये, तो कृष्ण ने उनकी रसीद दे दी। इस रुपये को उसने अपने व्यापार में लगा दिया।

कृष्ण ने सट्टा बाज़ार में तीन सौ तोले सोने की ख़रीद की। तीन सौ रुपये ज़मानत के उसने जमा करा दिये। इन तीन सौ में से तीस रुपये सुशीला के भी थे। सोने का दाम बढ़ रहा था। पांच-छह दिन के उपरान्त ही उसने सोना बेच दिया। इसमें उसे तीन सौ रुपये का लाभ हुआ, अर्थात् तीन सौ रुपये दुगुने हो गये थे। रामचन्द्र के भी तीस रुपये के साठ हो गये थे। कुछ दिन बाद, अवसर देखकर उसने पुनः सोना ख़रीदा और दस दिन के उपरान्त बेच दिया। इस बार चालीस रुपये का दूसरा लाभ रामचन्द्र को मिला।

महीने के उपरान्त मनोज तीस रुपये की दूसरी किश्त लेकर आया, तो कृष्ण ने उसे बता दिया, "मां से कह देना कि उसके तीस रुपये ने अण्डे दिये हैं और अब वह एक सौ नब्बे रुपये के लगभग हो गये हैं।"

यूरोप में युद्ध चलने लगा था और सोने का मूल्य निरन्तर बढ़ रहा था। इस कारण ख़रीदना और बेचना दोनों काम चलने लगे थे। परिणामस्वरूप, दो मास में ही रामचन्द्र के साठ रुपये के पांच सौ रुपये हो गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह समाचार कि साठ रुपये के पांच सौ रुपये हो गये हैं, मनोज ने पिता को दिया, तो रामचन्द्र हंस पड़ा। हंसते हुए उसने पत्नी से कहा, "यह तो जुआ है। मैं भी खेल सकता हूं। इसमें कृष्ण ने क्या किया है?"

उत्तर मनोज ने ही दिया। उसने कहा, "पिताजी! यही बात मैंने चाचाजी से कही थी, परन्तु चाचाजी ने कहा है कि दोनों में बहुत अन्तर है। एक में अध्ययन और अनुभव की आवश्यकता है, जबकि दूसरे में केवल भाग्य-भरोसे ही रहा जाता है। उन्होंने बताया कि उन्होंने सोने का व्यापार किया है। सोने का भाव ऊंचा होता जा रहा है। जो लोग युद्ध के समाचार बहुत ध्यान से पढ़ते हैं, वे समझ जाते हैं कि अंगरेजों की पराजय के साथ-साथ सोने का दाम बढ़ता जाता है। जिस दिन अंगरेजों की कुछ जीत का समाचार आता है, भाव गिर जाते हैं। इस कारण दिनों-दिन के समाचार और उन समाचारों से अंगरेजों की जीत होगी अथवा जर्मनी की, जो युद्ध की गति को समझते हैं, वे ही इसे जान सकते हैं कि सोने का मूल्य बढ़ेगा अथवा कम होगा। चाचाजी नित्य यही करते हैं।

"चाचाजी का कहना है कि इस समय युद्ध की स्थिति ऐसी है कि कुछ दिन तक अंगरेज सेना पीछे हटेगी। इस कारण सोने का भाव अभी और बढ़ेगा। उन्होंने दो हज़ार तोले सोना ख़रीदा हुआ है। उसमें पांच सौ तोले पिताजी का है।

"मैंने पूछा कि यदि उनका अनुमान ग़लत निकला और भाव न चढ़े, तो? उनका कहना था कि इसलिए दो-तीन दिन से अधिक का लेन-देन वह नहीं करते। उनका कहना था कि यह व्यवसाय है। इस कारण चित्त को सर्वथा स्थिर रखकर तथा बुद्धि से विचारकर जो लोग काम करते हैं, वे ही लाभ उठाते हैं।"

"परन्तु मनोज। यह तो हराम की कमाई है। जिस काम में परिश्रम न किया जाये, वह कमाई हराम की ही होती है।"

मनोज पिता से तर्क नहीं कर सका। इसलिए उसने कह दिया, "पिताजी, अधिक समझना है, तो आप स्वयं चाचाजी से मिलकर बात कर लीजिये।"

"यह ठीक है। मुझे भय है कि किसी दिन सारी-की-सारी कमाई एक ही हल्ले में नाली में बह जायेगी। मुझे पता है कि जिस लाला के पास पिताजी नौकरी करते थे, उसका भी एक दिन दिवाला पिट गया था।"

अगले मास किश्त देने रामचन्द्र स्वयं लाहौर चला गया। इन दिनों गोपीशाह धनवती के साथ हरिद्वार गया हुआ था।

"तो पिताजी फिर हरिद्वार चले गये हैं?" रामचन्द्र ने पूछा।

"उन्होंने हरिद्वार वाला मकान अपने अधिकार में रखा हुआ था। वह उसे ख़ाली करने गये हैं।"

इस पर रामचन्द्र ने कहा, "कृष्ण! मैं अपने वेतन की बचत जमा करने आया हूं।"

कृष्ण ने अपनी पॉकेट-बुक निकाली और उसमें देखकर बताया, "भैया! आपका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
साठ रुपये मूलधन आया है। उसे मैंने इन तीन महीनों में बीस बार व्यापार में लगाया है। एक बार के अतिरिक्त सब बार लाभ ही हुआ है और अब आपके खाते में दो हज़ार पांच सौ रुपये जमा हैं।"

"कृष्ण! क्या यह चोरी नहीं है? साठ रुपये से इतना बड़ा लाभ कैसे हो सकता है?"

कृष्ण ने मुसकराते हुए कहा, "यह चोरी नहीं है। न ही यह फोकट की आय है। यह मेरे कई वर्ष केअध्ययन और नित्य तीन घण्टे समाचार-पत्र पढ़कर उस पर मनन करने का परिणाम है। देखो भैया! यह इसी प्रकार है, जैसे लाहौर में डॉक्टर बेलीराम की आय है। वह केवल एल० एम० एस० है। दसवीं पास कर डॉक्टर बना है, परन्तु उसकी नित्य की फ़ीस की आय पांच-छह सौ रुपये है। बताओ, क्या वह इतनी फ़ीस हराम की लेता है?"

"नहीं! इतने वर्ष का उसका अनुभव और उसका साधारण ज्ञान उसके काम आता है।"

"मैं समझता हूं, मैं नित्य समाचार-पत्र पढ़ता हूं और फिर अनुमान लगाता हूं कि दिनों-दिन सोने का भाव गिरेगा। यह मेरे अध्ययन और चिन्तन का परिणाम है कि तीन महीने में एक दिन ही भूल हुई है। इतनी भूल तो डॉक्टर से भी हो जाती है। शायद इससे अधिक बार होती होगी।"

"तो यह आय डॉक्टर की फ़ीस के समान है?" रामचन्द्र का प्रश्न था।

"हां भैया!"

"बहुत विचित्र है!"

"कुछ विचित्र नहीं है। एक दिन मैं डॉक्टर बेलीराम की बैठक में अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रहा था, तो एक औरत, जो वहां बैठी थी, बताने लगी कि उसके लड़के को मिर्गी के दौरे पड़ते थे। तीन मास हुए वह डॉक्टर साहब से दवाई पूछने आयी थी। डॉक्टर साहब ने सोच-विचार कर बता दिया कि एक माशा हलदी का चूर्ण दिन में तीन बार गाय के दूध से उसे खिला दिया करो। उन्होंने पांच रुपये फ़ीस ले ली।

"उस औरत ने बताया, मुझे यह ठगी ही समझ आयी थी, परन्तु मेरे लड़के ने कहा, ऐसा करने में क्या हानि है? तीन मास तक हलदी खाने से उसे दौरे पड़ने बन्द हो गये हैं। मैं आज पुन: डॉक्टर साहब को लड़के को दिखाने आयी हूं।"

रामचन्द्र कुछ देर तक विचार करता रहा और फिर तीस रुपये कृष्ण के सामने मेज पर रखकर बोला, भैया! तुम जानो और तुम्हारी भाभी जाने। ये रुपये उसी ने भेजे हैं। यद्यपि मैं तुम्हारी बात का उत्तर नहीं दे सका, तथापि अभी तक भी इस प्रकार की कमाई का कुछ औचित्य नहीं समझ सका।"

रामचन्द्र अमृतसर लौट गया। अगले दिन गोपीशाह हरिद्वार से लौट आया और कृष्ण ने रामचन्द्र से हुआ वार्तालाप सुना दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोपीशाह हंस पड़ा। वह हंसते हुए बोला, "वे लोग, जो कभी बुद्धि का प्रयोग नहीं करते अथवा जिन्होंने बुद्धि के क्षेत्र का कभी निरीक्षण नहीं किया, वे नहीं जानते कि यह मार्ग शारीरिक परिश्रम से कम दुस्तर नहीं है। इस पर भी बुद्धि-बल शरीर का राजा है और जो काम शरीर वर्षों में कर सकता है, वह बुद्धि-बल से एक ही दिन में किया जा सकता है।

"परन्तु कृष्ण! एक बात स्मरण रखो कि तुम लाभ तो बांट सकते हो, परन्तु कभी हानि हुई, तो वह नहीं बांट सकोगे। कहीं हानि बांटने लगे, तो सब तुम्हें चोर-ठग कहेंगे।"

"पिताजी! मैं एक बात कर रहा हूं। वह यह कि जितना रुपया सुशीला भाभी का आया है, वह मैंने ट्रस्ट के खाते में लगा दिया है। अब तो उसके रुपये से हुए लाभ का ही सट्टा कर रहा हूं।"

"ठीक है। विचारकर कार्य करोगे, तो लाभ उठाओगे। मैंने भी अपने जीवन में सट्टे से बहुत धन कमाया है, परन्तु मैं अनाज का सट्टा करता था; क्योंकि मुझे उसके उतार-चढ़ाव का ज्ञान था। मैं जिन लालाजी की नौकरी करता था, वह भी अनाज का ही काम करते थे। मैंने एक चिट्ठा बना रखा था, उस चिट्ठे पर वर्ष-भर के अन्न-अनाज के भाव लिखता रहता था। उससे देखकर दस में से नौ बार मेरा अनुमान ठीक रहता था। प्राय: सट्टेबाज़ ऐसा नहीं करते और क़िस्मत के भरोसे व्यापार करने चल पड़ते हैं। वह प्राय: घाटा उठाते हैं।"

गोपीशाह ने आगे बताया, "मैं हरिद्वार का मकान ख़ाली कर चाबी मालिक-मकान को दे आया हूं।"

"सुन्दरदासजी आपके विषय में पूछ रहे थे।" कृष्णचन्द्र ने कह दिया।

"क्या कहते थे?"

"परसों आये थे। साथ में भाभी भी थीं। आपके विषय में पूछ रहे थे।"

"मैं सायंकाल उनसे मिलने जाऊंगा। तुम्हारी मां उनके लिए हरिद्वार का प्रसाद लायी है।"

"मेरा कल जालन्धर जाने का विचार है।"

"कोई विशेष बात है?"

"नहीं, वहां तीन दुकानदारों को धन दिया हुआ है। उनका समाचार लेना चाहिए।"

"हां!"

गोपीशाह कृष्ण के साथ कोठी के बाहर दफ़्तर में बैठा हुआ ही बातें करने लगा था। धनवती भीतर शकुन्तला के पास चली गयी थी। इसलिए घर का पाचक शाहजी के लिए चाय और बिस्कुट ले आया।

गोपीशाह हंस पड़ा। कृष्ण प्रश्नभरी दृष्टि से पिता को देखने लगा, तो गोपीशाह ने बताया, "हंसी इस कारण आयी है कि मुझे कुछ वर्ष पहले की बात स्मरण हो आयी है। मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
एक बार हरिद्वार गया था और लगभग दस बजे स्टेशन से घर पहुंचा था। तब चाय इत्यादि कुछ नहीं लेता था। मैं घर पहुंचकर शौचादि से अवकाश पाकर अपनी बैठक में चला गया था। वहां कुछ लोग मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। उनसे बात कर भीतर घर में गया, तो मूंग की दाल और आम के अचार के साथ रोटी खायी थी। बहुत स्वाद लगी थी। भूख भी लग रही थी और आज हम स्टेशन से चाय पीकर आये हैं। सैकिण्ड क्लास में यात्रा की है। शौच, दातुन, कुल्ला इत्यादि गाड़ी में ही कर आये हैं। इस पर भी घर पहुंचने पर यह चाय देखकर चित्त में एक प्रकार की गुदगुदी अनुभव हुई है। यह सुखद तो है, परन्तु ख़र्चीला भी है।"

"पिताजी!'' कृष्ण ने गम्भीर हो कहा, "आपके समय और इस समय में अन्तर आ गया है। अब मेरी एजेंसी की अपनी आय लगभग छह-सात सौ रुपये की है। डाक अथवा तार द्वारा ऑर्डर घर बैठे आते हैं और मैं भी अपने ऑर्डर डाक अथवा तार द्वारा भेजता हूं। आपका काम कभी महल्ला मोहलिया तक ही सीमित था। कभी-कभी ही नगर के दूसरे भागों से लोग आते थे और अब तो पूरे पंजाब के नगरों में हमारा लेन-देन है। यह इसलिए है कि व्यापार का ढंग इस प्रकार से बन गया है कि इसकी गति तब से अधिक है।"

"ठीक है।" गोपीशाह ने कहा, "तुम जीवन को उपलब्धियों से लम्बा कर रहे हो। वैसे तो जीवन-अवधि परमात्मा की दी हुई होती है, परन्तु इसे लम्बा करने का उपाय यह है कि इतने ही काल में अधिक काम सम्पन्न किया जाये।"

"परन्तु पिताजी! ऐसा करने के लिए मशीनें बनायी जा रही हैं।'' कृष्ण ने पिता को समझाने का यत्न किया, "देखिये, रेल बनने से पहले लोग हरिद्वार एक महीने में पहुंचते थे। अब एक रात-भर में पहुंचा जा सकता है। इसी प्रकार हमने आयु भी लम्बी कर ली है।"

गोपीशाह इसका अर्थ समझने के लिए आंखें मूंदकर विचार करने लगा था। कृष्ण ने ही इसका अर्थ समझाया, "पिताजी! एक काल है, जिससे हम अपना जीवन नापते हैं। सामान्य रूप में एक पुरुष अस्सी-नब्बे वर्ष तक जीवित रहता है। जीवन को नापने का एक अन्य ढंग भी है। वह जीवन-भर में कार्य की मात्रा है। कार्य कई प्रकार के हैं। यदि हम धन की प्राप्ति से ही जीवन की लम्बाई नापें, तो कहा जा सकता है कि जीवन-भर में एक लाख रुपया पैदा करके हमने अपना जीवन सफल कर लिया है।"

गोपीशाह बात समझ गया और हंसकर बोला, "तो तुम जीवन की केवल दो ही विधाएं समझते हो? मैं ऐसा नहीं समझता। मैं समझता हूं कि ये दोनों जीवन की उपलब्धियां नहीं हैं। मेरा अभिप्राय है कि आयु और धन की उपलब्धि साधन हैं। जीवन की मुख्य उपलब्धि इससे कुछ भिन्न है। देखो, मैं तुम्हें एक महात्मा की बात बताता हूं। मैं उनसे मिलने नित्य जाया करता था। एक दिन उन्होंने मुझसे पूछ लिया, "शाहजी! आपकी आयु कितनी है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"मैंने बताया, महाशय! इकतालीस वर्ष का हूं। वह पूछने लगे—इस आयु में क्या प्राप्त किया है? मैंने बताया, मैंने बीस वर्ष की आयु में धन एकत्र करना आरम्भ कर दिया था। इन इक्कीस वर्षों में मैंने डेढ़ लाख रुपये के लगभग एकत्र किया है। इस पर वह बोले—यह प्राप्ति नहीं है। हां, यह जीवन प्राप्त करने का साधन हो सकता है। जीवन में प्राप्तव्य कुछ अन्य है और वह है—बुद्धि का विकास। मनुष्य जीवन में वही तो एक प्राप्त करने की वस्तु है। उनका कहना था—मानव-जीवन बुद्धि-सञ्चय करने और बुद्धि को तीक्ष्ण करने का अवसर होता है। जिसने इस जीवन में बुद्धि में उन्नति नहीं की, उसने कुछ भी नहीं किया। भले ही वह एक सौ वर्ष तक जीवित रहा हो अथवा उसने लाखों रुपये कमाये हों। मैं तो उस व्यक्ति का जीवन लम्बा समझता हूं, जिसकी बुद्धि उन्नत हो। इसीलिए मैं समझता हूं कि उत्तमचन्द पशु-का-पशु ही रहा है। ज्ञान एक हिंसक जन्तु है। बुद्धिविहीन वह भी है। मैं रामचन्द्र को भी ऐसा ही समझता था, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि उसकी बुद्धि सजग हो रही है।"

:22 :

सायंकाल गोपीशाह सुन्दरदास से मिलने गया। सुन्दरदास ने शाहजी को कोठी में आते देखा, तो उठकर उनका स्वागत करने कार्यालय से निकल आया। उसने कहा, "दो दिन हुए, मैं आपसे मिलने गया था।"

"हां, पता चला है। मैं हरिद्वार का मकान छोड़ने गया था, परन्तु वहां गंगास्नान के लोभ में दो दिन अधिक लग गये।

"मुझे पता चला है कि चोरी के मामले में रेलवे-विभाग ने ज्ञानचन्द पर मुक़द्दमा चलाया है। उसके साथ पांच व्यक्ति और भी हैं। छहों व्यक्ति हवालात में हैं। पुलिस ने मुक़द्दमे की जांच-पड़ताल के लिए एक सप्ताह की मियाद मांगी है। परसों कचहरी में मजिस्ट्रेट के सामने उसे उपस्थित करने के लिए लाया गया, तो मेरी दृष्टि उस पर पड़ गयी। मैंने उससे पूछ लिया कि क्या हुआ है?"

"उसका कहना था, 'झूठा मुक़द्दमा है।'

"मैंने पूछा, 'तो फिर अपनी सफ़ाई के लिए क्या कर रहो हो?'

"उसका कहना था, 'लाला गिरिधारीलाल को बुलाया था। उसने लिख भेजा है कि दो सौ रुपये पेशगी मिल जायें, तो मुक़द्दमा ले लूंगा। रुपया मेरे पास हैं नहीं।"

"तो आपको विश्वास है कि वह बेकुसूर है?" गोपीशाह ने पूछ लिया।

"विश्वास नहीं आया। इस पर भी मैंने आपको बता दिया है। उसने ऐसा ही कहा था।"

"देखिये, वकील साहब! मैं आपसे कहूंगा कि आप उसके मुक़द्दमे को देखें। यदि यह सत्य है कि वह बेकुसूर है, तो उसे छुड़ाने का यत्न करें। ख़र्च मैं दूंगा, परन्तु यदि उसकी बात सुनने पर अथवा मुक़द्दमे में किसी समय भी यह पता चले कि वह झूठ कह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रहा है और उसने चोरी की अथवा करायी है, तो उसी समय वकालतनामा वापस कर दें और इस झगड़े से बाहर हो जायें।"

"मेरी भी कुछ ऐसी ही राय थी। मैं देखना चाहता था कि आप क्या कहेंगे ?"

"आप उसके वकील के रूप में उससे हवालात में मिल लें।"

अगले दिन मजिस्ट्रेट से स्वीकृति लेकर सुन्दरदास ज्ञानचन्द से मिलने गया। पृथक् में मुलाक़ात हुई, तो सुन्दरदास ने कहा, "मैं आपके मामले में हाथ डालना नहीं चाहता था, परन्तु कल आपके पिताजी हरिद्वार से आये हैं। मैंने उन्हें आपकी बात बतायी, तो उनका कहना था कि मुझे आपका मामला सुनना चाहिए। आरोप और उसके प्रमाणों को देखना चाहिए और यदि आप पर अन्याय हो रहा है, तो आपको बचाने का यत्न करना चाहिए।"

"परन्तु वकील साहब! आप तो दीवानी मुक़द्दमे करते हैं ?" ज्ञानचन्द का कहना था।

"आपके लिए फ़ौजदारी का भी कर लूंगा, लेकिन आपके पिताजी आपकी बात पर विश्वास नहीं करते।"

"परन्तु वकील साहब! मेरे पास देने के लिए कुछ भी नहीं है।"

"मैं आपसे मांग भी नहीं रहा। मेरा आपके पिताजी से ऐसा सम्बन्ध है कि मैं बिना कुछ लिये उनका काम कर दूंगा, परन्तु आपका मुक़द्दमा जानकर ही मैं इसमें हाथ डालूंगा।"

ज्ञानचन्द ने अपनी बात बतायी। उसने कहा, "वर्तमान स्टेशनमास्टर मिस्टर कार्टर से पहले मिस्टर जैन्किन थे। उनके समय में हम सब कुछ करते रहे हैं।

"मिस्टर जैन्किन की बदली पिछले दिसम्बर में हुई, तो यहां मिस्टर कार्टर आये। मेरे एक साथी ने, जो मेरे साथ असिस्टेण्ट स्टेशनमास्टर है, उनसे मिलकर कुछ गड़बड़ी की है और मुझे पांच अन्य कर्मचारियों के साथ पकड़वा दिया है। यह सब रहीमबख़्श ठेकेदार के सहयोग से ही हुआ है। झूठ-मूठ की डिपार्टमेण्टल जांच करायी गयी है और यह मुक़द्दमा बना दिया गया है।

"वकील साहब! वैसे तो मैं रेल के अन्य मुलाज़िमों की भांति ही हूं। जहां-जहां उनका बस चलता है, सब हेराफ़ेरी करते हैं, परन्तु मैं सौगन्धपूर्वक कहता हूं कि इस मामले में मेरा कोई दोष नहीं है। इस मामले में मैं निर्दोष हूं। डिपार्टमेण्टल जांच की रिपोर्ट मेरे घर पर मेरे सोने के कमरे में रखी है। चाबी रेलवेस्टेशन पर एक कुली रामभरोसे के पास है। आप उससे मेरे काग़ज़ों को देख लें और यदि कुछ कर सकें, तो कर दें। मैं जीवन-भर आपके गुण गाता रहूंगा।"

अगले दिन सुन्दरदास रामभरोसे से मिला और ज्ञानचन्द के घर पर जाकर उसके सोने के कमरे से उसने जांच की पूरी रिपोर्ट प्राप्त कर ली। उसने देखी और समझी। समझने के उपरान्त वह शाहजी से मिला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन्दरदास का कहना था, "मैं समझता हूं कि यह मुक़द्दमा झूठा है। एक असिस्टेण्ट स्टेशनमास्टर करीमबख़्श ने वर्तमान स्टेशनमास्टर को कहकर चलवाया है।"

"तो इस मामले से उसे छुड़ा दीजिये। शेष वह जाने और उसका परमात्मा जाने।"

"प्रयत्न करता हूं। मैं अपने साथ एक अन्य वकील रखूंगा, जो फ़ौजदारी क़ानून का जानकार हो।"

"ठीक है, कीजिये। जो भी ख़र्च होगा, कृष्ण आपको दे देगा। मैंने उसे कह दिया है।"

जिस दिन ज्ञानचन्द और उसके साथियों को अदालत में उपस्थित किया गया, जेल का वकील नहीं आया। इस पर सुन्दरदास ने अर्ज़ी दायर कर दी कि मुक़द्दमा झूठा है और किसी व्यक्तिगत झगड़े के कारण चलाया गया है। इस कारण मुलज़िमों की ज़मानत होनी चाहिए।"

अदालत ने पुलिस से पूछा, "बताओ, क्यों न मुलज़िमों को ज़मानत पर छोड़ दिया जाये?"

पुलिस इंस्पेक्टर का कहना था, "चोरी के मामले में ज़मानत नहीं होती।"

सुन्दरदास ने कहा, "लेकिन चोरी का इल्ज़ाम झूठा है। क्या आपने विभागीय जांच देखी है?"

मजिस्ट्रेट ने कहा, "वह तो पेश नहीं की गयी। उसका इस मुक़द्दमे से सम्बन्ध भी नहीं है।"

"ठीक है, परन्तु अभी तक तो अदालत के सामने कोई मुक़द्दमा ही नहीं है। एक वारण्ट पर दो पंक्तियां दी हैं कि लाहौर रेलवेस्टेशन पर चोरी के मामले की जांच हो रही है।"

इस पर पुलिस इंस्पेक्टर ने कहा, "पन्द्रह दिन की रिमाण्ड और दी जाये।"

मजिस्ट्रेट ने कहा, "ठीक है, परन्तु उससे अधिक समय नहीं दिया जायेगा। किसी के द्वारा लगाये ऐसे आरोप पर, जिसके साथ प्रमाण न हों, किसी भी व्यक्ति को हिरासत में नहीं रखा जा सकता।"

कृष्ण जालन्धर से लौटता हुआ अमृतसर में भी ठहरा था। वहां उसे रात-भर रहना पड़ा। इसलिए रामचन्द्र और सुशीला के सामने पुन: सट्टे के व्यापार की बात होने लगी।

रात के भोजन के समय सुशीला ने ही बात की। उसने कहा, "भैया! आपकी सट्टे के व्यापार की व्याख्या से मैं तो समझ गयी हूं कि इसका लाभ लेने में कोई पाप नहीं है, परन्तु मनोज के पिता इसे कोई नेक काम नहीं समझते। वैसे मुझे विस्मय होता है कि यह रिश्वत और इसी प्रकार के कामों से प्राप्त आय का प्रयोग मज़े से करते हैं और तुम्हारी इस आय को दूषित समझते हैं।"

"भाभी! यह भैया का दोष नहीं है। इनके पूर्वजन्म के कर्मफलस्वरूप परमात्मा ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इनको बुद्धि का बहुत कम अंश दिया है। साथ ही पिताजी ने इनको बुद्धि प्राप्त करने के मार्ग पर नहीं लगाया। अब यह बड़ी आयु के हो गये हैं और इनको सरल-सी बात भी समझ नहीं आती। पिताजी ने दादा और दोनों भाइयों से कहा था कि उनके व्यवसाय में उनकी सहायता करें। इन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया; क्योंकि यह ब्याज पर रुपया देना अच्छा काम नहीं समझते थे। दादा उत्तमचन्द तो एक दफ़्तर में काम करते हुए वेतन के अतिरिक्त किसी प्रकार की आय कर नहीं सके, परन्तु इन दोनों ने अवसर मिलते ही रिश्वत और चोरी से हाथ रंगने आरम्भ कर दिये। ये दोनों भाई पिताजी के काम को अभी तक दूषित ही समझते हैं। भैया ज्ञानचन्द तो अब हवालात में हैं और उन पर चोरी का आरोप लगाकर उनको क़ैद कराने का यत्न किया जा रहा है।"

रामचन्द्र ने बात बदल दी। उसने पूछा, "तो मुक़द्दमा चल पड़ा है?"

"हां! पिताजी ने भैया का मुक़द्दमा लड़ने के लिए दो वकील नियुक्त कर दिये हैं।"

"पर क्यों?" सुशीला भाभी ने पूछ लिया।

"इसलिए कि वह पिता हैं। साथ ही ज्ञान भैया ने कहा है कि वह सौगन्धपूर्वक कहते हैं कि वर्तमान मुक़द्दमा झूठा है।"

रामचन्द्र और सुशीला दोनों कृष्ण का मुंह देखने लगे। एकाएक रामचन्द्र ने कहा, "मैं इस मुक़द्दमे में कुछ रहस्य की बात प्रकट और साबित कर सकता हूं, परन्तु सोचता हूं कि जो अपने ही भाई के लड़के का अपहरण करने की बात सोचता हो, उसके लिए मैं क्यों उसके मुक़द्दमे से शत्रुता मोल लूं?"

"भैया! मैं समझता हूं कि यदि वह इस मुक़द्दमे में निर्दोष है, तो उसे बचाकर सन्मार्ग दिखाया जा सकता है।"

"पर कृष्ण!" सुशीला ने कहा, "तुम अपने भैया को भी सन्मार्ग दिखाओ न! एक बात तो इन्होंने की है कि अब यह शराब नहीं पीते। कम-से-कम मुझे इसकी जानकारी नहीं, परन्तु यह अब भी रिश्वत लेते हैं और चोरी करते हैं।"

"और वह लिया हुआ रुपया कहां व्यय करते हैं?"

"यह उसे घर नहीं लाते। कुछ तो अपने खाने-पीने में व्यय करते हैं और कुछ अपने साथियों में बांट देते हैं।"

"कृष्ण!" रामचन्द्र ने कहा, "रेलवे-विभाग में काम करूं और रिश्वत न लूं, तो काम नहीं चलता। मेरे दूसरे साथी ही मेरे खिलाफ़ हो जायेंगे और फिर मुझे भी किसी-न-किसी मुक़द्दमे में फंसा देंगे।"

"मैं समझता हूं कि यदि युद्ध की प्रगति के विषय में मेरा अनुमान ठीक रहा, तो भैया इस वर्ष के अन्त तक दस-बीस हज़ार के स्वामी हो जायेंगे। मेरा कहना है कि तब यह कोई अच्छा-सा काम करना आरम्भ कर दें। इससे इनका यह जन्म और अगला जन्म भी सुखी हो जायेगा।"

"कृष्ण!" रामचन्द्र ने कहा, "मैं एक-दो दिन में लाहौर आऊंगा और ज्ञान के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वकील से मिलकर कुछ ऐसी बातें बताऊंगा कि ज्ञान निर्दोष सिद्ध हो सकेगा।"

"तब ठीक है। मैं समझता हूं कि आपके शराब न पीने से हुई निर्मल बुद्धि का यह पहला लक्षण है।"

इस प्रकार की बातें रात देर तक होती रहीं। प्रात:काल कृष्ण लाहौर के लिए चल पड़ा।

रामचन्द्र लाहौर आया और सुन्दरदास से मिला। बहुत बातें हुईं। फिर सुन्दरदास ने रामचन्द्र से कहा कि पुलिस को मुक़द्दमा पेश कर लेने दो। तब ही आपकी सहायता का लाभ उठाया जा सकेगा।

रिमाण्ड की अवधि समाप्त होने पर पुलिस ने आरोप-पत्र दिया और उस पर सुन्दरदास ने कहा, "यह सब आरोप डिपार्टमेण्टल जांच के समय भी उपस्थित किये गये थे और उन पर साथियों और अधिकारियों के बयान लिये गये थे। मैं समझता हूं कि इनमें कुछ भी सार नहीं है। यदि इस पर भी अदालत चाहे, तो उन आरोपों और डिपार्टमेण्टल जांच पर बहस हो सकती है।"

रेलवे के वकील ने कहा, "उस रिपोर्ट के अतिरिक्त पुलिस ने भी कुछ पता किया है, वह भी उपस्थित हो जाना चाहिए। साथ ही उस आरोप पर, जो साक्षी हैं, उनके कथन पर मैं भी जिरह करना चाहूंगा।"

पुलिस ने इसका समर्थन किया, तो ज्ञानचन्द और उसके साथियों को 'ज्युडीशल लॉकअप' में भेजने की आज्ञा दे दी गयी और एक सप्ताह की तारीख़ देकर यह कहा गया कि उस दिन रेलवे विभाग के वकील अपना 'केस' उपस्थित करेंगे।

अब मुक़द्दमा नियमपूर्वक चलने लगा। सुन्दरदास का विचार था कि छह मास तो लगेंगे ही।

:23 :

मुक़द्दमे को छह मास लग गये। इन छह महीनों में दस पेशियां हुईं और बीस गवाह उपस्थित हुए। प्राय: सब-के-सब गवाह झूठ बोलते हुए सिद्ध हुए। इस समय एकाएक ज्ञानचन्द और उसके साथियों पर से रेलवे-विभाग ने मुक़द्दमा वापिस ले लिया।

मजिस्ट्रेट बहुत परेशान था। उसने कहा, "मैं मुक़द्दमा वापस लिये जाने के प्रस्ताव पर अपना निर्णय बाद में दूंगा। अभी तक जो कुछ कार्रवाई हुई है, उससे यही कहा जा सकता है कि मुक़द्दमा सर्वथा झूठा था। ऐसा पता चलता है कि निजी द्वेष के कारण किसी अफ़सर ने यह झगड़ा आरम्भ किया था और अब मुक़द्दमे में उसको अपना स्वयं का दोष सिद्ध होता दिखाई देने लगा है। इसलिए मुक़द्दमा वापस लेने की बात कर रहा है। मैं समझता हूं कि अभियुक्तों को कष्ट देने के लिए कष्ट के प्रतिकार की मांग करनी चाहिए। मैं इतना तो कह सकता हूं कि अभियुक्तों को बहुत हानि पहुंची है।"

एकाएक कृष्ण ने सोने के व्यापार को बन्द कर दिया और एक दिन अमृतसर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नक़द पसीच हज़ार रुपया लाकर भाई को देते हुए कहा, "मैं अब व्यापार बन्द कर रहा हूं। सोने के व्यापार में स्थिरता आ रही है। इसलिए मैं अभी कुछ समय तक यह व्यापार नहीं करूंगा। इसलिए आपके भाग का पूर्ण लाभ ले आया हूं।"

"भैया!" सुशीला का प्रश्न था, "आपको इसमें कितना लाभ हुआ है?"

"मैं आपका जितना रुपया इसमें लगाता रहा हूं, उससे तीन गुना अपना भी लगाता रहा हूं। इस कारण आपके पचीस हज़ार के मुक़ाबले में मुझे पचहत्तर हज़ार का लाभ हुआ। मैं समझता हूं कि भैया को अब नौकरी छोड़कर कोई व्यापार करना चाहिए।"

"क्या व्यापार करूं?"

"भैया! इस विषय में, आपको लाहौर जाकर पिताजी के साथ विचार करना चाहिए। मैं तो एजेंसी और रुपये के लेन-देन के अतिरिक्त किसी अन्य व्यापार के विषय में कुछ जानता नहीं। इसीलिए आप लाहौर आकर पिताजी से बात करें।"

रामचन्द्र ने बात बदल दी। उसने पूछा, "अब ज्ञानचन्द क्या करेगा?"

"वह तो चाहता था कि रेलवे पर हरजाने का दावा किया जाये, परन्तु पिताजी ने इसमें सहायता देने से इनकार कर दिया है। पिताजी का कहना है कि उन्होंने ज्ञान को झूठे मुक़द्दमे से तो बचा लिया है, परन्तु वह वास्तव में अपराधी है। उसने अपने समय में भारी धोखा-धड़ी की है। इसलिए अब आगे जो कुछ करना चाहता है, वह अपने बल-बूते पर करे।"

रामचन्द्र भी अब पिताजी की नीति को समझने लगा था। वह जानता था कि रेलवे कार्यालय में प्रायः सब ऊपर की आय करते हैं, इसलिए पिताजी इसमें किसी पक्ष को भी सहायता देना नहीं चाहते।

इस विवाद और विचार के परिणामस्वरूप उसने कृष्ण को उसके अमृतसर से लौटने से पूर्व ही अपना निर्णय बता दिया, "मैं शीघ्र ही सेवाकार्य छोड़ना चाहता हूं और किसी व्यवसाय में लग जाना चाहता हूं। इस विषय में पिताजी से राय करने के लिए मैं एक-दो दिन में लाहौर आ रहा हूं।"

"हां भैया! मैंने यह जो कुछ धन एकत्र किया है, इसी उद्देश्य से किया है। मैं समझता हूं कि अपने बड़ों की यह उक्ति सर्वथा सत्य है कि 'उत्तम खेती, मध्यम बान, नीच चाकरी, भीख निदान।"

"तो तुम्हारा विचार है कि मुझे खेती-बाड़ी का काम करना चाहिए?"

"खेती-बाड़ी का काम तो सर्वोत्तम है, परन्तु इस विषय पर पिताजी से एक बातचीत हुई थी। उनका कहना था किसी श्रेष्ठ किसान से काम सीखकर यह काम किया जाये, तो उसे भी बुद्धि के प्रयोग से उन्नत किया जा सकता है। अपने विषय में वह कहते थे कि उनकी शिक्षा दुकानदारी और वह भी अनाज के काम की थी। वह पांच वर्ष तक एक अनाज के व्यापारी की नौकरी करते रहे थे। इसीलिए उन्हें इसका अनुभव है। वैसे वह खेती के काम को सर्वोत्तम समझते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"अच्छा, मैं लाहौर आऊंगा।"

कृष्ण का लड़का एक वर्ष का हुआ, तो उसका जन्मदिन मनाने का कार्यक्रम बन गया। इस कार्यक्रम की इच्छा शकुन्तला के मन में हुई, तो उसने अपने मन की बात पति से कही। उसका कहना था, "घर में शुभकार्य होते रहने चाहिए।"

कृष्ण ने भी विचार किया कि इस वर्ष सोने के व्यापार में बहुत लाभ हुआ है। उसमें से कुछ राशि चित्त प्रसन्न करने के लिए, कुछ सम्बन्धियों से मेल-मुलाक़ात के लिए और कुछ दान-दक्षिणा के लिए व्यय करनी चाहिए। अत: वह शकुन्तला के प्रस्ताव को लेकर पिता के पास जा पहुंचा।

गोपीशाह ने विचार किया और कह दिया, "ठीक तो है। अपनी आय का सदुपयोग करना ही चाहिए। उसका जन्मदिन नौ फ़रवरी को होगा।"

"पिताजी! वह शुक्रवार है। इसलिए मेरा विचार है कि इस उपलक्ष्य में समारोह ग्यारह फ़रवरी रविवार को किया जाये। छुट्टी के दिन हमें भी और आमन्त्रितों को भी आने की सुविधा रहेगी।"

"ठीक है, परन्तु यज्ञ-पूजा आदि शुक्रवार को ही होनी चाहिए। हां, इस उपलक्ष्य में भोज रविवार को कर लेना।"

इस प्रकार दोहरा कार्यक्रम बन गया। नौ फ़रवरी को पारिवारिक यज्ञ-हवन और पूजा इत्यादि हुई। इस दिन परिवार के निकटस्थ सम्बन्धी ही बुलाये गये, जिनमें बालक के ताऊ और उनके परिवार, फूफियां, नानी-नाना के परिवार ही थे। इसके अतिरिक्त सुन्दरदास, रामेश्वरी और उसके लड़के भी आमन्त्रित थे।

इस दिन संस्कार के समाप्त होते ही लिफ़ाफ़ों में लड्डू देकर अभ्यागतों को विदा कर दिया गया। विदा होते समय ज्ञानचन्द ने अपनी पत्नी से पूछ लिया, "करुणा, अब तो इस एक वर्ष में रावी में बहुत जल बह चुका है।"

"हां! यह तो देख रही हूं।" करुणा का उत्तर था।

"इसलिए तुम्हें भी अपने घर चलना चाहिए।"

"पिताजी रजनी के विवाह का प्रबन्ध कर रहे हैं। इसलिए उनसे राय लूंगी।"

"तो क्या अपने घर पर रहते हुए हम रजनी का विवाह नहीं करेंगे?"

समीप बैठे कृष्ण ने कहा, "पिताजी का विचार तो यही था, परन्तु समाचार मिला है कि आपने रेलवे की सेवा करने का विचार पुन: बना लिया है। इस समाचार से बात विचारणीय हो गयी है।"

"क्या विचारणीय हो गयी है?"

"यही कि वहां की दूषित आय का उपयोग बच्ची के विवाह-संस्कार में व्यय होने दिया जाये अथवा नहीं।"

"मैंने सौगन्धपूर्वक अपने वेतन के अतिरिक्त कुछ भी अपने प्रयोग में न लाने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
संकल्प किया है।"

इस समय गोपीशाह ने बातों में हस्तक्षेप करते हुए कह दिया, "यह बात विवाह के समय सोची जायेगी। इसके लिए यह समय उचित नहीं।"

ज्ञानचन्द ने कहा, "सुन लो भाग्यवान्! तुम्हारे मेरे घर जाने का रजनी के विवाह से सम्बन्ध नह ीं है।"

"परन्तु पिछले डेढ़ वर्ष से जो संस्कार रजनी के मन पर यहां पड़े हैं, उनके मिट जाने की तो सम्भावना है।"

"जब वहां का वातावरण भी वही हो जायेगा, जो यहां का है, तो कोई विशेष परिवर्तन नहीं होगा। साथ ही अब तो मैं पिताजी की छत्रछाया में ही रहना चाहूंगा। अब पहले से अधिक मेल-मुलाक़ात होती रहेगी।"

इस पर करुणा ने अपने श्वसुर गोपीशाह से पूछ लिया, "पिताजी! मैं जाऊं?"

"जैसा तुम्हारा मन करे। देखो करुणा! जीवन में कठिनाइयां आती रहती हैं। उन कठिनाइयों के सामने परास्त हो जाना मानवता नहीं है। मानवता है—कठिनाइयों का विरोध करना। विरोध का अभिप्राय उन पर विजय प्राप्त करना है, न कि मुंह छिपाकर उनसे भाग जाना है। तुम्हारे आत्महत्या करने के प्रयास का यही अर्थ था कि तुम कठिनाई आने पर भाग खड़ी हुई थीं। ज्ञान की माता ने तुम्हारा मार्ग-दर्शन किया है और मैं समझता हूं कि तुम पुनः वैसी कठिनाई उपस्थित होने पर आत्महत्या का विचार न कर, उसका विरोध करने का यत्न करोगी। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।"

करुणा ने इसका यह अभिप्राय समझा कि उसे जीवन-संघर्ष में पुनः लग जाना चाहिए। उसने समीप बैठी रजनी से पूछा, "क्यों रजनी! तुम क्या चाहती हो?"

"मां! मैं तो तुम्हारे साथ रहूंगी। तुम जहां भी जाओगी, मैं साथ ही चलूंगी।"

"तो चलो, पिताजी ने मार्ग बता दिया है।"

दोनों, जैसे बैठी थीं, वैसे ही उठ खड़ी हुईं और चल पड़ीं। ज्ञानचन्द ने वहां से तांगा किया और घर जा पहुंचा।

ज्ञानचन्द आपनी पत्नी और लड़की को लेकर चला गया, तो सुन्दरदास ने कह दिया, "शाहजी! क्या यह समय से कुछ पूर्व नहीं हुआ?"

"वकील साहब! इसका निर्णय करना मेरा काम नहीं है।" गोपीशाह ने कह दिया। सुन्दरदास चुप रहा। वह देख रहा था कि यह वृद्ध व्यक्ति समय पर ठीक ही विचार करता है।

रविवार को भोज हुआ, तो कोठी पर ख़ूब जमघट था। भोज के उपरान्त सुन्दरदास ने कृष्ण से कहा, "कृष्ण! तुम्हें और शकुन्तला को हमारे घर में भोजन करने आये दो वर्ष होने जा रहे हैं। बताओ, कब आओगे?"

कृष्ण ने शकुन्तला की ओर देखा, तो उसने कह दिया, "मुझसे क्या जानना चाहते हैं? मैं तो अब भी भाभी के घर चलने को तैयार हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर सुन्दरदास ने कह दिया, "देखो, आगामी रविवार आपके पूरे परिवार को हमारे घर पर निमन्त्रण है।"

"भैया! पूरे परिवार से आपका क्या अभिप्राय है?"

"शाहजी, माताजी, आपके दोनों भाई और उनके परिवार। बस, अब यही तो आपका परिवार यहां रहता है।"

उत्तर गोपीशाह ने दिया, "ठीक है। कितने बजे आप हमारी प्रतीक्षा करेंगे?"

"मैं समझता हूं कि दिन के दस बजे आ जाइये और भोजन के उपरान्त दो बजे तक वहां रहने का कायक्रम बनाइये।"

घर पहुंचकर रामेश्वरी ने पूछा, "क्या आप अपने बड़े लड़के अरुण की सगाई का विचार करने लगे हैं?"

"उसके योग्य कोई लड़की दिखाई नहीं दी। हां, रजनी है। मेरा विचार है, वह अरुण से बड़ी नहीं, तो बराबर की है। साथ ही मैं अरुण को बैरिस्टर बनने के लिए विलायत भेजने का विचार कर रहा हूं।"

"तब ठीक है।" रामेश्वरी का संशय निवारण हो गया।

रविवार को जिस समय गोपीशाह का परिवार सुन्दरदास के घर जाने को तैयार था, रामचन्द्र अमृतसर से आ पहुंचा।

"आओ रामचन्द्र! आओ बैठो!" शाहजी ने कहा।

"परन्तु पिताजी! आप तो कहीं जाने के लिए तैयार प्रतीत होते हैं?"

"हां, जा तो रहे हैं, परन्तु तुम्हें भी साथ ले ज़ा सकते हैं। तुम भी चलो।"

"कहां?"

"सुन्दरदास के घर पर मध्याह्न के भोजन का निमन्त्रण है। वहां भोजन के बाद दो बजे तक रहेंगे। फिर हम यहां आ जायेंगे। यदि तुम किसी अन्य मतलब से आये हो, तो दो बजे के उपरान्त विचार कर लेंगे।"

"तो चलिये!"

इस प्रकार रामचन्द्र भी सुन्दरदास के घर जा पहुंचा।

जाते ही स्त्रियां पृथक् बैठ गयीं। रामेश्वरी धनवती, शकुन्तला और माया को लेकर कोठी के भीतर एक कमरे में जा बैठी। बाहर बैठक में सुन्दरदास गोपीशाह, कृष्ण, उत्तमचन्द और रामचन्द्र को लेकर बैठ गया। उनके बैठते ही कॉफ़ी आ गयी। उसके साथ नमकीन दालमोठ भी थी।

सुन्दरदास ने रामचन्द्र से बात आरम्भ कर दी। उसने कहा, "मैंने सुना है कि पिछले छह महीने से आपको सोने के व्यापार में बहुत लाभ हुआ है?"

"हां वकील साहब! परन्तु यह लाभ कृष्ण की भाभी का है। उसने मेरे वेतन में से प्रतिमास तीस रुपये बचाते हुए कृष्ण को भेजना आरम्भ किया था और दो सप्ताह हुए कृष्ण ने बताया था कि उस पूंजी से पच्चीस हज़ार रुपये से कुछ ऊपर ही लाभ हुआ है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"नहीं भैया!" कृष्ण ने कहा, "यह उस रुपये का लाभ नहीं है। वह रुपया, तो एक वर्ष के लगभग हुआ, मैंने ट्रस्ट के पास जमा करा दिया था। उसमें तीन प्रतिशत ब्याज मिलेगा। मैंने तो प्रथम मास के तीस रुपये ही सोने के व्यवसाय में लगाये थे। उसके लाभ को ही व्यापार में लगाता रहा हूं और भाभी का तीस रुपये महीना ट्रस्ट में उसके नाम जमा कराता रहा हूं।"

रामचन्द्र ने पुन: अपने संशय को वकील साहब के सम्मुख रख दिया। उसने कहा, "वकील साहब, क्या यह कमाई अनुचित नहीं है? इतना तो इतने कम समय में हम रिश्वत लेकर भी जमा नहीं कर सकते।"

"परन्तु रामचन्द्र! यह रिश्वत नहीं है; क्योंकि कृष्ण ने इसके प्रतिकार में किसी को अनुचित लाभ पहुंचाने का यत्न नहीं किया। जब आप किसी से एक सौ रुपये लेते हैं, तो उसे हज़ार का लाभ कराने का यत्न करते हैं, परन्तु इस पच्चीस हज़ार के प्रतिकार में न तो कृष्ण ने कुछ दिया है, न ही किसी से कुछ लिया है। एक सामान्य-सी फ़ीस चैम्बर को कमीशन के रूप में दी है। वह तब भी देनी पड़ती, जब घाटा होता। इसलिए इसकी तुलना रिश्वत से नहीं हो सकती। आज से एक वर्ष पूर्व कृष्ण ने मुझे भी बताया था कि वह सोने के व्यापार में लाभ उठा रहा है। उसने मुझे इस लाभ का रहस्य भी बताया था। मैं भी लोभ में फंस गया और जब कृष्ण ने एक सौ तोला ख़रीदता था, तो मैं दो सौ तोले ख़रीद लेता था। परिणाम यह हुआ कि कृष्ण को तो एक लाख रुपये का लाभ हुआ है, मुझे दो लाख रुपये का लाभ हुआ है।"

"परन्तु आपने परिश्रम तो कुछ भी नहीं किया।"

"किया तो है। मुझे परिश्रम करने का ढंग कृष्ण ने ही बताया था। मैं उसी प्रकार ख़रीद-फ़रोख़्त करने लगा था।"

"मेरा अभिप्राय है कि आपने शारीरिक परिश्रम कुछ नहीं किया।''

"हम वकील इसी प्रकार का परिश्रम करते हैं। कृष्ण ने भी क़ानून का अध्ययन किया है। इसलिए मैं उससे सहायता लेता रहता था। शेष मैं स्वयं विचारकर व्यापार करता था।"

रामचन्द्र समझ गया कि इस प्रकार से लाभ प्राप्त करने में उसके पेट में पीड़ा नहीं उठनी चाहिए। इस कारण उसने कह दिया, "मैं पिताजी से पूछने आया हूं कि इस रुपये के बल पर रेल की नौकरी कैसे छोड़ सकता हूं?"

इस पर गोपीशाह ने कह दिया, "मैं समझता हूं कि आप दोनों मानें, तो आप दोनों ही एक कम्पनी चालू कर सकते हैं।"

"दोनों कैसे?"

"जैसे विनोद अपने पत्तीदार से मिलकर कर रहा है।"

"तो शाहजी!'' आपका विचार है कि मैं वकालत छोड़कर रामचन्द्र के साथ पत्तीदारी कर लूं? सुन्दरदास ने पूछा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं! मैं समझता हूं कि अरुण अभी कॉलेज में पढ़ता है। उसे आप रामचन्द्र के साथ साझेदारी में कोई काम करा दीजिये।"

"मैं उसे बैरिस्टर बनने के लिए विलायत भेजना चाहता हूं।"

"बैरिस्टर बनने में क्या गुण हैं? मैं तो समझता हूं कि व्यापार वकालत से अधिक लाभ देने वाला कार्य होगा।"

सुन्दरदास विचार करने लगा कि क्या वास्तव में व्यापार वकालत से अधिक अच्छा कार्य होगा?

वह मौन होकर विचार करता रहा। गोपीशाह मुसकराते हुए उसके मुंह को देखता रहा। सुन्दरदास ने कहा, "मैं बच्चों पर पिता का एकाधिकार नहीं मानता। इसमें उनकी माता का अधिक नहीं, तो मेरे समान ही अधिकार है। इसलिए उससे राय करनी पड़ेगी।"

"तो कर लीजिये।"

"मैं क़ानून पढ़ाना चाहता था।"

"क़ानून तो वह घर में भी पढ़ लेगा और फिर आपसे भी सहायता ले सकेगा। क़ानून तो अपने मानसिक विकास के लिए है। वह कर सकता है।"

"हां, यदि कृष्ण-जैसी प्रतिभा उसमें हुई, तो वह उसकी भांति घर पर ही अध्ययन से जान सकता है, परन्तु बुद्धि-विक्रय की दुकान नहीं कर सकेगा।"

इस पर गोपीशाह ने कहा, "परन्तु कृष्ण ने तो बुद्धि की दुकान घर पर खोल रखी है। मैं समझता हूं कि ट्रस्ट के काम में उसका क़ानून का अध्ययन काम दे रहा है। एजेंसी के काम में भी और सट्टे में भी उसने मुझसे बहुत अधिक कर दिखाया है। यह उसकी बुद्धि का परिणाम है। बुद्धि की दुकान, तो जहां चाहो लगा सकते हो। वकील, डॉक्टर, हकीम, इंजीनियर सब बुद्धि की कमाई ही तो कर रहे हैं।"

इस पर सुन्दरदास को अपने ज़िले के एक इंजीनियर की बात याद आ गयी। वह बोला, "हां, यह तो है, परन्तु यदि अरुण प्रखर-बुद्धि का हुआ, तो वह बिना वकालत के भी जीवन चला सकेगा।"

इस पर शाहजी ने कहा, "और यदि बुद्धि का मन्द हुआ, तो बैरिस्टर बनकर भी मक्खियां मारा करेगा। हमारे ही नगर में एक गणपतराय बैरिस्टर है। उसकी अपेक्षा एक रामचन्द्र वकील अधिक सफल हो रहा है।"

इस उपमा पर तो सुन्दरदास विचारमग्न हो गया। एकाएक उसने कहा, "मुझे एक व्यवसाय का पता है, परन्तु अरुण की मां से राय करके ही बता सकता हूं।"

इस विषय पर बात बन्द करने के लिए रामचन्द्र ने कहा, "मैं तीन दिन की छुट्टी पर हूं और यदि कल तक आप कुछ सुझाव दे सकें, तो मैं अपनी एक समस्या से पार पा जाऊंगा।"

सुन्दरदास ने बात बदल दी। वह उस विषय में बात करने लगा, जिसके लिए उसने उस दिन के भोजन का निमन्त्रण दिया था। उसने कहा, "शाहजी! मैं देख रहा हूं कि आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्राय: बुद्धि की ही बात करते रहते हैं, परन्तु उनमें सफल होते देखकर भी मैं जान नहीं सका कि वह सफलता आपकी बुद्धि के बल पर है अथवा आपके कर्मफल के बल पर। पिछले सप्ताह आपने अपने लड़के ज्ञानचन्द के कहने पर उसकी पत्नी को उसके घर भेज दिया था। मुझे भय है कि किसी दिन वह उसकी हत्या न कर दे?"

"देखिये वकील साहब! मैं अपनी बुद्धि से विचार करता हूं और फिर उसके आदेश का अनुसरण करता हूं। मुझे स्वामी भूमानन्द ने एक दिन बताया था कि नित्य भगवत्-भजन करने वाले की बुद्धि परमात्मा से जुड़कर सुस्वर में कूकने लगती है। मैं नित्य यही किया करता हूं। मैं परमात्मा का जप करते हुए अपने मन में मनन करता हूं और फिर जो बुद्धि कहती है, वही कर देता हूं। मैंने नहीं देखा कि बुद्धि ने मुझे कभी धोखा दिया हो। पूरे जीवन में केवल दो बार धोखा खाया है। उस पर भी विचार करने पर पता चला है कि तब बुद्धि के तार ढीले हो गये हैं।"

"परन्तु आप यह मनन कैसे करते हैं?"

"बहुत सरल-सी बात है। मैं समस्या पर विचार करते समय यह प्रयास करता हूं कि मन के विकारों—काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार—से रहित होकर विचार करूं।

"इस प्रकार धीरे-धीरे तटस्थ होकर मन में विचार करने की शक्ति आयी है। मैं समय-समय पर बुद्धि के तारों को कसकर इन पांच विकारों से पृथक् रहता हूं और तब समझ जाता हूं कि मेरी बुद्धि वही विचार करने लगी है, जो परमात्मा विचार करता है और परमात्मा के काम कभी असफल नहीं होते।"

सुन्दरदास गम्भीर विचार में निमग्न हो गया।

:24:

सुन्दरदास के घर पर भोज के पश्चात रामचन्द्र विनोद की दुकान पर जा पहुंचा। विनोद दुकान से छुट्टी करने वाला था। प्रात: आठ बजे वह दुकान पर आया था। उसका साझीदार मध्याह्न दो बजे आता था, तब विनोद छुट्टी कर लेता था और उसका साझीदार रात तक दुकान पर बैठता था।

पिता को आते देख विनोद उठकर उसके साथ चल पड़ा। दुकान से दोनों चलने लगे, तो पिता ने पूछ लिया, "अब किधर जा रहे हो?"

"पिताजी! यहां से नित्य 'पब्लिक लायब्रेरी' जाया करता हूं। आज आप आये, तो आप के साथ चल रहा हूं।"

"लायब्रेरी में क्या पढ़ा करते हो?"

"अंगरेजी इतिहास की पुस्तकें पढ़ता रहता हूं। आजकल 'फ्रेंच रिवोल्यूशन' पर ऐन्थनी ईडन की एक पुस्तक पढ़ रहा हूं।"

"इससे क्या लाभ होता है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"चाचा कृष्णजी की सम्मति से मैं अध्ययन कर रहा हूं। मैं पुस्तकालय का सदस्य भी बन गया हूं और घर पर लाकर भी पुस्तकें पढ़ा करता हूं।"

रामचन्द्र ने बात बदल दी। उसने पूछा, "दुकान का क्या हालचाल है?"

"बहुत अच्छा है। मेरा भागीदार रामलाल बहुत ही भले विचारों का युवक है। उसे पढ़ने-लिखने में रुचि नहीं है। उसका विवाह हो चुका है और वह दुकान पर दो बजे के लगभग आता है। मैं उसके आने पर विधि मिलाकर हिसाब बन्द कर जाता हूं और वह रात को विधि मिलाकर चला जाता है। चाबियां मकान पर दे जाता है। अगले दिन प्रात: आठ बजे मैं दुकान खोला करता हूं।"

"खाने-पीने का क्या प्रबन्ध है?"

"मैं प्रात: का अल्पाहार साढ़े सात बजे लेकर घर से चलता हूं। बारह बजे घर का नौकर भोजन दे जाता है। समय मिलते ही मैं दुकान पर बैठा-बैठा खा लेता हूं। अब सांयकाल छह बजे के उपरान्त घर पहुंचूंगा। तब रात के भोजन तक पढ़ाई अथवा लिखाई करता हूं। रात सोने के समय घर पर दूध मिल जाता है। वह पीकर सो जाता हूं।"

इस समय वह 'माल' के किनारे पर पहुंच गये थे। रामचन्द्र ने कहा, "आज पुस्तकालय के स्थान पर चिड़ियाघर की ओर चलो। मैं तुमसे बहुत कुछ जानने के लिए आया हूं।"

"ठीक है, पिताजी! आज मैं पुस्तकालय नहीं जा रहा।"

दोनों माल रोड पर चलने लगे। विनोद ने बताया, "वर्ष समाप्त होने पर स्टॉक और जमा-पूंजी से पता चला है कि दुकान में दस हज़ार का सोलह हज़ार रुपया हो गया है। हम दोनों आजकल प्रतिमास एक-एक सौ रुपये अपने ख़र्च के लिए निकाल लेते हैं। दुकान की यह अवस्था हमारे एलाउंस और दुकान का भाड़ा तथा सेवक के वेतन इत्यादि देने के उपरान्त है।"

"अर्थात तुमने पूंजी को दुगुना कर लिया है?"

"जी! अब दूसरा वर्ष समाप्त होने वाला है। दुकान में माल रखने को स्थान नहीं है। इसलिए हमने कुछ फ़ालतू रुपया पंजाब नेशनल बैंक में और कुछ ट्रस्ट के पास जमा कराना आरम्भ कर दिया है।"

रामचन्द्र ने बात बदल दी। उसने कहा, "तुम्हारी मां तुम्हारा विवाह करने का विचार कर रही है।"

विनोद चलता-चलता खड़ा हो गया और बोला, "मां को कह दीजिये कि मुझसे पूछकर ही किसी से बात करे।"

"क्यों?"

"मेरे विवाह का प्रबन्ध वकील साहब कर रहे हैं।"

"कहां?"

"रामलाल की बहिन है। वह मुझे पसन्द है। वह अभी दसवीं श्रेणी में पढ़ती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसके पिता का कहना है कि परीक्षा के उपरान्त बात करेंगे।"

"क्या नाम है लड़की का ?"

"सन्तोष! मैंने तो विवाह की स्वीकृति दे रखी है, परन्तु वह मां और आपकी स्वीकृति, उसकी परीक्षा के उपरान्त मांगने वाले हैं।"

"उसकी पढ़ाई कब समाप्त होगी ?

"बस, इसी वर्ष अप्रैल में परीक्षा होने वाली है। उसके उपरान्त बात करने का विचार है।"

"तुम्हारी मां ने भी एक लड़की अमृतसर में देखी है।"

"नहीं पिताजी! मैं अपनी स्वीकृति यहां दे चुका हूं।"

"तुम्हारी मां से कह दूंगा।"

"उसे कहियेगा कि लड़की को देख ले और मुझसे मिल ले, तब कहीं दूसरी जगह बात करे।"

"तुम्हारी मां को कुछ रुपये की आय हुई है और वह उसमें से दो हज़ार व्यय करने वाली है।"

"इसकी आवश्यकता नहीं है। विवाह पर मुझे दुकान से रुपया मिल जायेगा।"

रामचन्द्र को इससे प्रसन्नता हो रही थी। उसने कह दिया, "मैं भी नौकरी छोड़कर किसी काम-धन्धे में लग जाना चाहता हूं।"

"क्या काम-धन्धा करेंगे ?"

"आज इस विषय पर तुम्हारे दादा से विचार करने आया था। कुछ विचार हुआ है, शेष कल होगा।"

अगले दिन प्रातःकाल ही सुन्दरदास अपने लड़के अरुण के साथ कृष्ण की कोठी पर शाहजी से बात करने आये।

शाहजी कृष्ण आदि के साथ अल्पाहार ले रहे थे। सुन्दरदास को भी मेज़ पर बैठकर कुछ लेने का निमन्त्रण दे दिया गया।

सुन्दरदास और अरुण बैठे, तो उनके सामने चाय और टोस्ट रख दिये गये। दोनों ने टोस्ट उठाकर एक ओर रख दिये और चाय पीने लगे।

बात सुन्दरदास ने ही आरम्भ की। उसने कहा, "अरुण की मां का विचार है कि अरुण को बैरिस्टर बनने की आवश्यकता नहीं है। इसलिए यह कहने आया हूं कि रामचन्द्रजी के साथ साझेदारी में अरुण को लगा दूं।"

"क्या और भी कोई काम सोचा है ?"

"जी! मैं लायलपुर का रहने वाला हूं। हमारे ज़िले में पंजाब के एक इंजीनियर ने कई सहस्र एकड़ भूमि सरकार से सौ वर्ष के पट्टे पर ली है। उसने वहां बिजली का पावर हाउस लगाया है और उससे पूरी भूमि को जल-थल कर दिया है। वह अपने भूमि में से एक-एक सौ एकड़ भूमि पट्टे पर 'सब-लेट' कर रहा है। वह मेरा सहपाठी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मित्र रहा है। इसलिए उसने मुझे भी इस विषय में बताया था, परन्तु मेरा चित्त वकालत छोड़कर खेती-बाड़ी के लिए नहीं करता था। कल ही रामचन्द्रजी का विचार जानकर मैं इस लड़के को रामचन्द्रजी के साथ लगाने के लिए तैयार हो गया हूं। अरुण की मां की भी सहमति है, परन्तु वह चाहती है कि शाहजी रामचन्द्रजी की ईमानदारी के ज़ामिन बनें। यह रेल का व्यवसाय नहीं कि चोरी को सहन किया जा सके।"

इतना कहकर सुन्दरदास शाहजी का मुख देखने लगा।

गोपीशाह का कहना था, "कितना रुपया लगाने का विचार है?"

"यदि दो सौ एकड़ भूमि मिल जाये, तो हमें भूमि के 'डेवलपमेण्ट' का ख़र्च चार हज़ार रुपये देना पड़ेगा। साथ ही काम चलाने के लिए ख़र्च करना पड़ेगा। मेरा अनुमान है कि यह व्यवसाय पूंजी पर दस प्रतिशत लाभ सुगमता से दे देगा। वहां की भूमि उर्वरा है। मुझे वहां का ज्ञान है। मैं उसी क्षेत्र का रहने वाला हूं। मेरे पिताजी भी एक ज़मींदार थे, परन्तु उनकी भूमि बीस एकड़ ही थी। पिताजी का देहान्त हो जाने के बाद और मेरे वकील बन जाने पर हमने अपनी भूमि सरकार को वापस कर दी। अब यदि रामचन्द्रजी मानें, तो मैं इस काम में रुचि लेने लगूंगा। काम तो अरुण ही करेगा, परन्तु संरक्षण मेरा रहेगा। यदि मेरी गिनती-मिनती में भूल नहीं, तो दो सौ एकड़ भूमि तीस हज़ार वार्षिक की उपज करेगी और ख़र्च निकालकर वर्ष में दस हज़ार नक़द बचेगा। इसके साथ ही मेरी कुछ अन्य योजना भी है, जो खेत पर काम आरम्भ हो जाने के उपरान्त ही चालू हो सकेगी। मेरा यह अनुभव है कि खेत पर काम दिन-भर का नहीं होता। हो सकता भी नहीं। न ही पूरे वर्ष का है। इसलिए उस ख़ाली समय में वहां घरेलू दस्तकारियां चालू की जा सकती हैं। यदि ये दोनों मेरे कहे अनुसार काम करते रहे, तो कुछ ही वर्षों में लखपति बन जायेंगे।"

रामचन्द्र ने पूछना आरम्भ कर दिया, "क्या भूमि मिल जायेगी?"

"इंजीनियर साहब मेरे मित्र हैं। कुछ दिन हुए, वह मुझे सड़क पर घूमते हुए मिले थे और उन्होंने स्वयं ही कहा था कि मैं दो सौ एकड़ का एक फ़ार्म ले लूं। मैंने उनसे कहा था कि मुझे अपने काम से फ़ुर्सत नहीं।

"यदि रामचन्द्र मानें, तो मैं भूमि अपने नाम ले सकता हूं और परस्पर लिखत-पढ़त हो सकती है। उनका पट्टा सन् 1910 में आरम्भ हुआ है और वह सन् 2010 तक चलेगा।"

"परन्तु," रामचन्द्र का कहना था, "मुझे खेती-बाड़ी का कुछ भी ज्ञान नहीं है।"

"इस सबका प्रबन्ध मैं कर दूंगा। आपको और अरुण को केवल यह करना होगा कि कर्मचारियों पर देख-रेख रखें। खेतों और माल की सुरक्षा का प्रबन्ध करें। ऐसा किया, तो एक वर्ष में ही भूमि सोना उगलने लगेगी।"

निर्याणक बात गोपीशाह ने कही। उसने कहा, "तो वकील साहब! एक 'शराकतनामा' लिखकर रजिस्ट्री करा लें। अभी पांच-पांच हज़ार दोनों इसमें लगा लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आवश्यकता पड़ी, तो ट्रस्ट से अथवा किसी व्यक्ति से ऋण भी लिया जा सकता है।"

सुन्दरदास ने कहा, "मैं यह समझता हूं कि खेत तो मेरे नाम ही हो सकेगा। इसलिए मैं एक वचन-पत्र रामचन्द्र को लिखकर दे सकता हूं। उसमें लिख दूंगा कि जब तक रामचन्द्र इसके ख़र्च में आधा-आधा देंगे और प्रबन्ध में अरुण के साथ चलेंगे, इसकी आय के आधे अधिकारी रहेंगे। दोनों भागीदारों को दो सौ रुपये मासिक एलाउंस मिलता रहेगा। इस वचन-पत्र पर आपके अथवा किसी अन्य के—जिन्हें रामचन्द्रजी चाहें—साक्षी के रूप में हस्ताक्षर होंगे।"

"क्यों रामचन्द्र! है पसन्द ?"

"पिताजी! जैसा आप कहें। मैं नौकरी छोड़कर जीवन की बाज़ी लगाने आया हूं।"

"मैं समझता हूं," गोपीशाह ने कहा, "यह ठीक ही है। आशा नहीं कि किसी प्रकार का विवाद खड़ा हो। इस पर भी कभी हुआ, तो इसी वचन-पत्र पर उचित कोर्टफ़ीस लगाकर झगड़ा किया जा सकता है।"

सुन्दरदास मुसकराते हुए बोला, "मैंने यह योजना इसलिए सोची है कि भूमि का पट्टा मेरे नाम हो सकेगा। यह दो व्यक्तियों के नाम नहीं होगा। दूसरे, इंजीनियर साहब 'सब-लेट' करने की कुछ फ़ीस न मांग लें। मुझसे वह नहीं मांगेंगे। साथ ही क़ानून है कि एक ज़मींदार ही ज़मीन ले सकता है। मैं ज़मींदार जाति का घटक हूं।"

रामचन्द्र ने कह दिया, "तो वकील साहब! आप ही यह वचन-पत्र लिख दीजिये। मैं कल प्रातः अमृतसर जा रहा हूं। आप सब प्रबन्ध कीजिये। मैंने अपना सब धन ट्रस्ट में जमा करा दिया है। उसमें से जितना आप चाहें, उसका चैक लिखकर दे जाता हूं।"

"मैं आज ही इंजीनियर साहब से मिलकर बातचीत कर लेता हूं और भूमि देखने भी जाऊंगा। तब ही पट्टा कराने का प्रबन्ध होगा। जब सब कुछ निश्चित हो जायेगा, तो आपको बुला लूंगा और आपसे लिखा-पढ़ी हो जायेगी," सुन्दरदास ने कहा।

इसके एक सप्ताह उपरान्त रामचन्द्र और सुशीला आये। सुशीला विनोद द्वारा निर्वाचित पत्नी को देखने आयी थी। उसने शाहजी को बताया, "पिताजी! सुना है, विनोद ने अपने लिए एक लड़की पसन्द की है। मैं उसे देखने आयी हूं।"

"ओह!" गोपीशाह के मुख से निकल गया, "तो यह बीमारी मेरे घर में भी आ घुसी है। मैं तो समझता था कि पुरुष रखैलों को पसन्द कर लाते हैं, पत्नियां तो माता-पिता ही पसन्द करते हैं।"

"ठीक है पिताजी! यह आपके ज़माने की बात है। आज ज़माना बदल गया है।"

"क्या बदला है ?"

उत्तर रामचन्द्र ने दिया। उसने कहा, "पिताजी! रखैल तो ज़बरदस्ती घर में घुस आती है और पत्नियां हम पसन्द कर ला सकते हैं। हम से मेरा अभिप्राय है—पुरुष वर्ग।"

गोपीशाह हंस पड़ा। उसने विचार किया और पूछने लगा, "तो सुशीला! कब देखने जाओगी ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सुना है, लड़की विनोद के पत्तीदार रामलाल की बहिन है। इसलिए पहले रामलाल से मिलना होगा। बाद में, उसके द्वारा ही लड़की और लड़की के माता-पिता को देखूंगी।"

"रामलाल सुन्दरदास का सम्बन्धी है। इसलिए मेरी सम्मति है कि बातचीत उसके द्वारा हो, तो अधिक ठीक रहेगा।"

सुशीला ने कहा, "आप सुन्दरदास से बात कीजिये। वैसे मैंने एक पढ़ी-लिखी लड़की अमृतसर में भी देखी है, परन्तु विनोद ने कहला भेजा था कि पहले उसकी निर्वाचित लड़की देख ली जाये, बाद में किसी से बात की जाये।"

:25 :

इस प्रकार सुन्दरदास गोपीशाह के परिवार के और निकट आ गया। रामलाल रामेश्वरी की बहिन का लड़का था। सुन्दरदास के अपनी साली और उसकी सन्तान के साथ सुखद सम्बन्ध थे। साली के पति का देहान्त हो चुका था और उसके दो बच्चे, एक लड़का और लड़की उसके संरक्षण में थे।

दोनों का प्रबन्ध सुन्दरदास के विचार से श्रेष्ठ हो गया। रामलाल का विवाह और विनोद से दुकान में साझेदारी भी उसी के कारण हुई थी और अब रामलाल की बहिन सन्तोषकुमारी के विवाह का प्रबन्ध भी उसकी सम्मति से हो रहा था।

जब गोपीशाह सुशीला को लेकर उसके पास पहुंचा, तो सुन्दरदास ने बता दिया, "मुझे इस विवाह के प्रस्ताव का पता है।"

"परन्तु वकील साहब! आपने पहले कभी नहीं बताया।" शाहजी ने पूछा।

"यह इसलिए कि इस सम्बन्ध के अस्वीकार होने की सम्भावना ही नहीं थी। यद्यपि लड़की विनोद से कम पढ़ी-लिखी है, तथापि वह रामलाल से अधिक सभ्य, सुशील और बुद्धिमती है। आपके और रामलाल के माता-पिता द्वारा उसके अस्वीकार होने का प्रश्न ही नहीं।"

जिस दिन रामलाल की बहिन सन्तोष का विवाह विनोद से हुआ, उसी दिन लायलपुर ज़िले में दो सौ एकड़ भूमि का पट्टा सुन्दरदास के नाम हो गया।

विवाह के उपरान्त सुन्दरदास और रामचन्द्र में लिखा-पढ़ी हो गयी। उसमें कृष्ण को साक्षी स्वीकार किया गया। रामचन्द्र ने रेल की नौकरी छोड़ दी और अपने छोटे लड़के को लेकर भूमि पर एक मकान बनाकर रहने लगा। सुन्दरदास भी अरुण को साथ लेकर लायलपुर जा पहुंचा।

चार हज़ार रुपया भूमि के विकास का व्यय देने के अतिरिक्त, तीस काम करने वालों के लिए काम करने के साधन ख़रीदने में लगभग तीन हज़ार रुपये तथा अरुण और रामचन्द्र के मकान बनाने में पांच हज़ार रुपये ख़र्च हो गये। बीज और जल-प्रवाहिका इत्यादि बनने में भी एक हज़ार रुपये के लगभग व्यय हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सब प्रबन्ध करने में तीन महीने लग गये। पहले वर्ष आधा के लगभग खेत जोता-बोया जा सका। जब कार्य होने लगा, तो आरम्भ में सुन्दरदास प्रति शनिवार लायलपुर और वहां से फ़ार्म पर प्रात: रविवार पहुंच जाया करता था। दिन-भर रहकर वह सोमवार प्रात: लाहौर लौट आया करता था।

परन्तु यह कार्यक्रम कुछ मास तक ही चला। अरुण रामचन्द्र से अधिक योग्य प्रबन्धक सिद्ध हुआ। अत: सुन्दरदास ने फ़ार्म पर जाना बन्द कर दिया।

विनोद का विवाह हुए दो वर्ष हो चुके थे और उसके घर एक लड़की पैदा हो चुकी थी। फ़ार्म की द्वितीय वर्ष की उपज मार्केट में जा चुकी थी और अरुण ने ब्यौरा लिखकर पिता के पास भेज दिया था। वह ब्यौरा लेकर सुन्दरदास शाहजी को बताने आया, तो वहां ज्ञान की पत्नी करुणा रो-रोकर कुछ बता रही थी।

ज्ञानचन्द के पुन: रेल में काम पा जाने पर उसका तबादला शाहदरा स्टेशन पर स्टेशनमास्टर के रूप में हो गया था। वहां वह सुखपूर्वक सपरिवार एक रेलवे क्वार्टर में रहता था।

उन दिन करुणा अकेली शाहजी से मिलने आयी और वहां का वृत्तान्त बताते-बताते रोने लगी थी।

सुन्दरदास ने शाहजी के समीप बैठी करुणा को देखा, तो विस्मय में देखता रह गया। बात गोपीशाह ने बतायी।

उसने कहा, "आइये वकील साहब! आप भी करुणा की कथा सुन लें।"

सुन्दरदास समीप रखी कुरसी पर बैठ गया। गोपीशाह सोफ़े पर पहले ही बैठा हुआ था।

सुन्दरदास के बैठते ही गोपीशाह ने करुणा की कथा सुना दी। उसने बताया, "यह बता रही है कि ज्ञान को घर से और अपने काम से लापता हुए दो दिन हो चुके हैं। वह रात के आठ बजे काम से लौटा करता था। परसों रात वह नहीं आया। पहले जब भी कभी उसे समय पर नहीं आना होता था, तो वह बताकर जाया करता था। उस दिन वह कुछ भी कहकर नहीं गया था। इसका अभिप्राय: यह था कि उसे सवा आठ बजे आना चाहिए था। यह रात-भर पति की प्रतीक्षा करती रही, परन्तु कल प्रात:काल रजनी का भी अपहरण हो गया। रजनी शौचादि के उपरान्त क्वार्टर के बाहर टहल रही थी कि कुछ लोग मुंह पर कपड़ा लपेटे हुए आये और छुरा दिखाकर उसे उठा ले गये। लड़की को शोर मचाते देख कुछ लोग आये, परन्तु अपहरण करने वाले लापता हो चुके थे। थाने में रिपोर्ट लिखायी गयी, तो पता चला कि ज्ञानचन्द का अपहरण तो शाम को ही हो गया था। वह स्टेशन से घर को चला था, परन्तु घर पर नहीं पहुंचा। पुलिस जांच कर रही है और यह हमारी सहायता के लिए यहां आयी है।"

सुन्दरदास ने कहा, "पहली बात तो यह कीजिये कि कृष्ण को वहां भेज दीजिये। वह वहां जाकर हमें सूचित करे कि पुलिस क्या कर रही है और किसी अपहरणकर्ता का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पता चला है अथवा नहीं।"

अतएव उसी मध्याह्नोत्तर कृष्ण करुणा के साथ शाहदरा जा पहुंचा। सायंकाल वह कोठी पर लौटा, तो उसने अपनी जांच-पड़ताल का परिणाम बताया। उसका कथन था कि ज्ञानचन्द और रजनी का अपहरण वहां के किसी व्यक्ति का काम नहीं है। वहां स्टेशन के कर्मचारियों ने यही बताया कि ज्ञानचन्द का व्यवहार सबके साथ बहुत ही मेल-जोल का था। सब उसके अपहरण पर दुखी प्रतीत होते थे।

एक व्यक्ति से यह पता चला कि अपहरण के दिन कुछ अपरिचित व्यक्ति स्टेशन पर घूमते हुए दिखाई दिये थे। एक पोर्टर ने कहा कि एक व्यक्ति उससे स्टेशनमास्टर के क्वार्टर का नम्बर पूछ रहा था। उसने नम्बर बताया था, परन्तु वह व्यक्ति उसके उपरान्त दिखाई नहीं दिया।

कृष्ण घटना का कुछ भी सुराग नह ीं लगा सका था। कृष्ण के साथ करुणा भी शाहदरा गयी थी, परन्तु वह उसके साथ लौटी नहीं थी। वह वहां के असिस्टेण्ट स्टेशनमास्टर की पत्नी के पास ठहर गयी थी और पुलिस की जांच-पड़ताल का परिणाम जानना चाहती थी।

इसके दो दिन उपरान्त कृष्ण प्रातः भ्रमण से लौटा, तो सुन्दरदास और गोपीशाह एक बन्द कमरे में बातचीत कर रहे थे। इसलिए कृष्ण को बाहर बैठक में ही उनकी प्रतीक्षा करनी पड़ी। शकुन्तला ने बताया कि पिताजी कार्यालय में बैठे थे कि सुन्दरदासजी आये और उनको लेकर इस कमरे में चले गये। द्वार भीतर से बन्द है।

लगभग आधे घण्टे बाद शाहजी और सुन्दरदास कमरे से निकले। कृष्ण को ड्राइंगरूम में बैठे देख वकील साहब ने कहा, "कृष्ण को सब समझा दीजिये। मैं जा रहा हूं।" इतना कहकर वह चले गये।

पिता के कहने पर कृष्ण पिताजी के साथ उसी कमरे में चला गया, जिसमें वह पहले सुन्दरदास से बातें कर रहे थे।

बात यह थी कि सुन्दरदास को एक पत्र मिला था। उस पत्र में लिखा था कि ज्ञानचन्द और उसकी लड़की रजनी लाहौर में ही एक स्थान पर सुरक्षित हैं। जिनके पास दोनों बन्दी के रूप में हैं, वे पचास हज़ार रुपये मुआवज़ा मांगते हैं। वे चाहते हैं कि आगामी जुम्मेरात को रात के बारह बजे के उपरान्त और रात के एक बजे से पहले रुपये सोने की मुहरों में एक थैली में रावी के रेल के पुल शाहदरा की ओर से पांचवें खम्भे के सामने रख दिये जायें। रखने के लिए जो भी व्यक्ति आये, वह हाथ में लालटेन ला सकता है। रुपये वहां रखकर वह व्यक्ति लाहौर की ओर लौट जाये। ऐसा करने के एक घण्टे के उपरान्त ज्ञानचन्द और उसकी लड़की निस्बत रोड वाली कोठी पर पहुंच जायेंगे।

पत्र में यह भी लिखा था कि आप पर और शाहजी पर हमारी निरन्तर देख-रेख हो रही है। यदि पुलिस को अथवा किसी अन्य को बताया गया और इस योजना में एक इञ्च-भर भी हेर-फेर की गयी, तो बेटी ख़त्म कर दी जायेगी, साथ ही वकील सुन्दरदास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की भी ख़ैर नहीं।

इसी सूचना पर सुन्दरदास शाहजी से एक घण्टा-भर बातचीत करके गया था।

वह दिन रविवार का था। पत्र शनिवार को सायंकाल की डाक से आया था, जो वकील साहब ने प्रात:काल डाक में देखा था। उसे पढ़ते ही, वह गोपीशाह से बात करने चले आये थे।

गोपीशाह अल्पाहार ले चुका था। कृष्ण प्रात: भ्रमण से लौटा था और उसने अभी अल्पाहार नहीं लिया था। पिता से बात करने के उपरान्त कृष्ण अल्पाहार लेने लगा, तो शकुन्तला उसके समीप बैठकर पूछने लगी। कृष्ण ने बताया, "पुलिस को कुछ पता नहीं चला। जो समाचार मैं वहां से लाया था, वही है, उससे कोई नयी बात पता नहीं चली। रेल के अधिकारियों ने भी पुलिस को सूचित किया हुआ है।"

"यह वकील साहब क्या कहने आये थे?"

"वकील साहब को एक पत्र मिला है। उसमें कहा है कि ज्ञानचन्द और रजनी यहां हैं और यदि शुक्रवार की रात के बारह बजे पचास हज़ार रुपये स्वर्ण मुहरों में उनको एक विशेष स्थान पर पहुंचा दिये जायें, तो भैया और रजनी छोड़ दिये जायेंगे।"

"तो?"

"तो वकील साहब का विचार है कि रुपया पहुंचा देना चाहिए।"

"यह तो घोर अन्याय है।"

"पिताजी का कहना है कि अन्याय इसलिए है; क्योंकि देश में योग्य व्यक्ति के हाथ में राज्य नहीं है। इसमें उत्तरदायित्व उन सबका है, जिन्होंने इस राज्य को सहयोग दे रखा है।

"शकुन्तला! इसमें सब बड़े-बड़े लोग हैं। राजे-महाराजे तो हैं ही, साथ ही रईस व रायसाहब आदि भी हैं। ये सब लोग भारत में स्वराज्य लाने में रुचि नहीं रखते। इस कारण विदेशी सरकार भी इस बात में रुचि नहीं लेती कि देश के किसी व्यक्ति की जान-माल को बचाया जाये।"

"इसके लिए आप पुलिस में रिपोर्ट नहीं कर सकते?"

"वकील साहब का विचार है कि भैया और लड़की को छुड़ाना प्रथम काम है, शेष इतना आवश्यक नहीं।"

शकुन्तला चुप रही।

रविवार के बाद कोठी पर सामान्य काम होता रहा। कोई विशेष व्यक्ति न कोठी पर आया, न कोठी का कोई व्यक्ति बाहरी व्यक्ति से मिलने गया। वकील साहब अपने किसी मुक़द्दमे के सम्बन्ध में दिल्ली चले गये। वहां जो भी उनसे मिलने आता था, उसे बता दिया जाता था कि वह दिल्ली गये हैं। यदि कोई पूछता कि वह कब तक लौटने वाले हैं, तो बता दिया जाता कि शुक्रवार को रात की गाड़ी से आने का कार्यक्रम है।

निश्चित दिन कृष्ण एक थैली में तीन हज़ार चार सौ मुहरें लेकर रात के दस बजे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
घर से तांगे में अकेला गया। तांगे में कोचवान के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं था।

शकुन्तला समझ रही थी कि उसका पति एक अतिभयावह कार्य पर गया है। वह पति के जाने के उपरान्त अपने श्वसुर से मिलने गयी। गोपीशाह कृष्ण के जाने के उपरान्त उसके कार्यालय में ही बैठा था। शकुन्तला वहां गयी, तो अंधेरा था। शकुन्तला का विचार था कि उसका श्वसुर उसी कमरे में बैठा है। इस कारण उसने धीरे से आवाज़ दी, "पिताजी!"

गोपीशाह ने उसे चुप करने के लिए मुख से 'शी' की आवाज़ की। शकुन्तला कुछ न समझती हुई द्वार पर ही खड़ी रह गयी। जब वहां खड़े दस मिनट हो गये, तो कार्यालय में बिजली जल गयी। शाहजी स्विच के पास खड़े थे। शकुन्तला पीत मुख श्वसुर को देख रही थी। गोपीशाह ने कहा, "चलो भीतर!"

दोनों भीतर चले गये। वहां शाहजी ने सेवक को बुलाया। वह आया, तो उसे कहा, "दो प्याले चाय बनाकर ले आओ।"

सेवक गया, तो शाहजी ने शकुन्तला को बताया कि कार्यालय के पिछवाड़े खिड़की के पास खड़े दो व्यक्ति सुन और देख रहे थे कि कृष्ण के साथ कौन जाता है। जब वे चले गये, तो मैं तुम्हें लेकर यहां आया हूं।

"तब तो निश्चय ही विश्वम्भर के पिता का जीवन ख़तरे में है।"

"नहीं! उसके रक्षक उसके साथ छिपे-छिपे जा रहे हैं।"

"पिताजी! मेरा मन डर रहा है।"

"बेटा! जहां तक मानव-बुद्धि का प्रश्न है, कृष्ण की रक्षा का प्रबन्ध है। शेष ईश्वराधीन है।"

"वह कब तक लौट सकेंगे?"

"तांगा पुल के पास ही खड़ा रहेगा। वह उसी में लौट आयेगा। मैं आशा करता हूं कि रात के दो बजे तक वह लौट सकेगा।"

अब प्रतीक्षा करने के अतिरिक्त करने को कुछ नहीं था। अतः सास, श्वसुर, पतोहू बैठक में बैठे अपने-अपने मन में प्रभु का चिन्तन करते रहे।

डेढ़ बजे के लगभग चौकीदार ने बैठक के द्वार पर से आवाज़ दी, "शाहजी!"

गोपीशाह और दोनों स्त्रियां चौंककर खड़ी हो गयीं। सब द्वार की ओर देखने लगे। चौकीदार ने बताया, "दो पुलिस कांस्टेबल आये हैं।"

"उन्हें भीतर ले आओ।"

दोनों सिपाही भीतर आये, तो उनमें से एक ने एक पत्र शाहजी को दिया। पत्र कृष्ण का था। उसने केवल इतना लिखा था कि अभी तक सब कुछ योजनानुसार हो रहा है। मैं टकसाली दरवाज़े के थाने में हूं। एक घण्टे तक आने की आशा करता हूं। इन कांस्टेबलों को पांच-पांच रुपये दे दीजिये।

पत्र शकुन्तला ने पढ़ा। गोपीशाह तो लुण्डी भाषा के अतिरिक्त अन्य कुछ लिखना-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पढ़ना जानता नहीं था।

शाहजी ने कांस्टेबलों को रुपये दे दिये, तो वे सलाम कर चले गये। चिट्ठी सुनकर तीनों प्राणियों के चेहरे खिल गये और कृष्ण के लौटने की प्रतीक्षा होने लगी। आज तो धनवती ने शकुन्तला से कहा, ''बेटी! कॉफ़ी बनाकर पिताजी को पिलाओ।''

अभिप्राय यह था कि उसे भी पिलायी जाये। शकुन्तला उठी और रसोईघर में चली गयी। रसोइया वहीं भूमि पर लेट रहा था। ज्योंही शकुन्तला ने बिजली जलायी कि रसोईया भी उठ खड़ा हुआ। शकुन्तला ने उसे तीन प्याले कॉफ़ी बना लाने के लिए कह दिया और बाहर चली आयी।

वह बाहर आयी, तो सुन्दरदास शाहजी के पास बैठा बता रहा था कि वह रावी के पुल से सीधा घर चला आ रहा है। कृष्ण रुपया थाने में जमा कराने पुलिसवालों के साथ टकसाली दरवाज़े गया है।

शाहजी ने कहा, "परन्तु थैली में रुपया तो है नहीं। उसमें तो ठीकरे भरे हुए हैं।"

सुन्दरदास हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, "कृष्ण जानता है अथवा नहीं?"

"जानता है। वह थाने में जाकर बतायेगा।"

सुन्दरदास ने कहा, "मैं आपको एक और बात बताने आया हूं। मैं घर पहुंचा, तो काग़ज़ का यह पुर्ज़ा दरवाज़े की सांकल में अटका हुआ था। दरवाज़ा खोला, तो पुर्ज़ा नीचे आ गिरा। मैंने इसे उठाया, तो मुझे इस पर कुछ लिखा हुआ दिखाई दिया। मैंने इसे पढ़ा, तो आपसे राय करने चला आया हूं।"

"क्या लिखा है?" गोपीशाह ने पूछा।

बैठक में शकुन्तला, धनवती और शाहजी बैठे कृष्ण की प्रतीक्षा कर रहे थे। सुन्दरदास ने बैठते हुए कहा, "किसी बच्चे की स्कूल के काम करने की कापी का एक पन्ना है। उस पर लिखा है :

"मैं अपना नाम-पता बताना नहीं चाहती। इस पर भी आपकी मदद करना चाहती हूं। हमारे मकान के पड़ोस में दो-तीन दिन से कभी-कभी किसी लड़की की चीख़ें मारने की आवाज़ आ रही है। मैं और मेरी छोटी लड़की परेशान थे। वह घर मेरे दामाद का है, जो कई दिन से सियालकोट गया हुआ है। हमारे घर में कोई पुरुष नहीं रहता। आज शाम के समय चीख़ों की आवाज़ फिर आयी, तो मैं और मेरी लड़की मकान की छत पर से कूदकर साथ वाले मकान के नीचे जाने की कोशिश करने लगे, परन्तु सीढ़ियों का दरवाज़ा भीतर से बन्द था। हमने घर से एक सलाख़ लेकर दरवाज़ा तोड़ने की कोशिश की। तीन घण्टे कोशिश करने के बाद दरवाज़ा तोड़कर हम नीचे गयीं, तो एक लड़की मकान की बैठक में अचेत पड़ी मिली। हम दोनों ने उस लड़की को होश में लाने की कोशिश की। रात के आठ बजे से कुछ पहले हम कामयाब हो सकीं। जब लड़की को कुछ खिला-पिलाकर उससे वहां बन्द होने की बात सुनी, तो हमने उसके बताये पते पर यह सन्देश भेजने की कोशिश की है। लड़की ने जो आपबीती बतायी है, वह बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दर्दनाक है। हमने उससे यह वादा लिया है कि हमारा नाम बीच में नहीं आयेगा, तो हम उसको उसके घर पहुंचाने का प्रबन्ध कर देंगी। इससे यह लिखकर अपने पड़ोस के एक लड़के को दिया है कि वह आपकी कोठी पर जाकर छोड़ आये। लड़की सुबह के चार बजे शेरांवाले दरवाज़े के बाहर पीपल के पेड़ के नीचे खड़ी मिलेगी। हम उसे वहां पहुंचा देंगी। हमारी इल्तजा है कि लड़की को आकर ले जायें और इस मामले की इत्तला पुलिस में न दें। हम पर्दानशीन औरतें थाने में जाकर बयान देने से घबराती हैं।"

"बस, यही लिखा है। नीचे कोई नाम नहीं है।"

इस समय रसोइया कॉफ़ी ले आया। तीन प्याले थे। शाहजी ने पाचक से कहा, "एक प्याला और बना लाओ। सुन्दरदास और धनवती को कॉफ़ी मिली, तो वे भी पीने लगे।

शाहजी ने घड़ी में समय देखा। अभी दो बजकर दस मिनट हुए थे। सुन्दरदास ने कहा, "मेरा विचार है कि अभी यह बात पुलिस में नहीं देनी चाहिए। पहले नियत स्थान पर जाकर लड़की को लाना चाहिए।"

धनवती ने कहा, "यह जान-जोखिम का काम है। आपको बुलाकर आपका कुछ अनिष्ट किया जा सकता है।"

गोपीशाह ने कहा, "हां, यह सम्भव है। इस कारण मैं कहूंगा, तुम में से कोई भी न जाये। मैं अकेला जाता हूं। लड़की मिल गयी, तो ले आऊंगा और यदि न मिली, तो पुलिस में रिपोर्ट लिखा दूंगा।"

सुन्दरदास ने कहा, "शाहजी! यह इस प्रकार नहीं होगा। मैं आपके साथ चलूंगा। मेरे पास अपना पिस्तौल है। हम स्थान पर से कुछ दूर तांगा खड़ा कर निश्चित स्थान पर जायेंगे। आप दस पग आगे चलियेगा, मैं पीछे-पीछे चलूंगा। यदि किसी प्रकार की दग़ा समझ में आयी तो मेरा पिस्तौल अपना काम करेगा और यदि लड़की इस चिट्ठी में लिखे अनुसार मिल गयी, तो हम उसे ले आयेंगे। अभी पुलिस को बताने की आवश्यकता नहीं है।"

धनवती और शकुन्तला वकील साहब की बात सुनकर आवाक् रह गयीं। इस पर शाहजी का कहना था कि हमें समय से पहले ही वहां पहुंच जाना चाहिए, जिससे दग़ा करने वालों से पहले पहुंचकर स्थिति का अनुमान लगा सकें।

"ठीक है! कोई चाकू-छुरी आप भी ले लीजिये। उससे कुछ तो अपनी रक्षा का प्रबन्ध हो सकेगा।"

सुन्दरदास के पास पिस्तौल के अतिरिक्त टॉर्च भी थी। शाहजी ने किचन में से साग-भाजी काटने की छुरी ली और अपनी धोती की अण्टी में टांग ली। फिर दोनों वकील साहब के साथ कोठी के बाहर निकल पड़े।

घर की दोनों ओरतें परेशानी में देखती रह गयीं। धनवती अपने सोने के कमरे में गयी और भूमि पर लगे पूजा के आसन पर बैठकर माला से राम-नाम का जप करने लगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और शकुन्तला बैठकघर में बैठ पुरुषों की प्रतीक्षा करती रही।

लगभग पौने तीन बजे कृष्ण आया। शकुन्तला ने उसे वह सब बात बतायी, जिसे जानकर सुन्दरदास और गोपीशाह शेरांवाला दरवाज़े के बाहर गये थे।

बैठक में कृष्ण की आवाज़ सुनकर धनवती कमरे से बाहर आ गयी और कृष्ण को अपने पिताजी के पीछे जाते देख बोली, "बेटा! ठहरो! दिन चढ़ने तक प्रतीक्षा करो। भगवान् हमारी रक्षा करेंगे।"

"मां! पिताजी की जान का भय प्रतीत होता है?"

"हां, यदि भय है, तो तुम्हारे लिए भी तो हो सकता है। इस प्रकार एक-दूसरे के पीछे जाने से क्या बनेगा? पुलिस में रिपोर्ट हो सकती है, परन्तु तुम्हारे थाने में जाने और वहां से पुलिस की मदद लेने में निश्चित स्थान पर पहुंचते-पहुंचते समय निकल जायेगा। अब अच्छा अथवा बुरा जो होना है, हो जायेगा। तुम्हारे जाने से कुछ नहीं बनेगा। इसलिए मेरा विचार है कि यहां बैठकर प्रतीक्षा करो। यदि पांच बजे तक वकील साहब न लौटे, तो थाने में जाने का समय होगा।"

कृष्ण बैठा, तो पाचक उसके लिए भी कॉफ़ी ले आया। तांगा तैयार हुआ खड़ा रहा और वकील साहब आदि की प्रतीक्षा होने लगी। सब यही आशा कर रहे थे कि साढ़े चार बजे के बाद कोई समाचार आ सकता है, परन्तु अभी तीन बजकर पचास मिनट हुए थे कि बाहर से तांगे के कोठी में आने की आवाज़ आयी। तीनों व्यक्ति लपककर उठे और कोठी के बरामदे में जा खड़े हुए। शाहजी, वकील साहब और रजनी तांगे से उतरते दिखाई दिये, तो सबके मन प्रसन्न हो उठे।

रजनी ने कहा, "पिताजी! मैं कल मध्याह्न की दुर्दशा से अत्यन्त थकी हुई हूं।"

इस पर कृष्ण ने पाचक को कॉफ़ी और टोस्ट लाने को कहकर रजनी को शकुन्तला के बेडरूम में भेज दिया। कृष्ण ने पूछा, "वहां रावी के पुल की बात तो वकील साहब ने बतायी होगी?"

"नहीं!" धनवती ने कहा, "वह तो आते ही रजनी को छुड़ाने चले गये थे।"

इस पर कृष्ण ने बताया, "हमारा प्रबन्ध बहुत ही अच्छा था। पुलिस पुल पर रात के आठ बजे से ही छिपी हुई बैठी थी। मैं तांगे से उतरकर पुल के नीचे रक्षकों के लिए बनी पटरी पर चला गया और कन्धे पर थैली लिये हुए ठीक स्थान पर जाकर थैली रखकर लौटा, तो मुझे कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि शाहदरा की ओर से कुछ लोग उसी ओर आ रहे हैं। मैं उनसे वहां पर मुठभेड़ करना नहीं चाहता था। साथ ही मुझे पता था कि पुल के उस किनारे की ओर भी पुलिस के लोग पिस्तौल लिये प्रतीक्षा कर रहे हैं। इस पर भी मैंने वहां से चला आना उचित समझा। मैंने अभी पुल के दो खम्भे ही पार किये थे कि पीछे से गोली चलने की आवाज़ आयी। दो फ़ायर ही किये गये और फिर शान्ति हो गयी। मैंने लौटकर देखा। पुलिसवालों की टॉर्च जल रही थी। मैं समझ गया कि डाकू पकड़ लिये गये हैं। इसलिए मैं खड़ा होकर पुलिसवालों की प्रतीक्षा करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लगा। आधा दर्जन पुलिसवाले थे और उन्होंने तीन व्यक्ति पकड़े हुए थे।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम पुल के फाटक पर पहुंचे, तो पुलिस की गाड़ी वहां खड़ी मिली। मुझे और पकड़े हुओं को थैली के साथ पुलिस की गाड़ी में बिठाया गया और टकसाली दरवाज़े की पुलिस चौकी पर ले जाया गया। वहां रिपोर्ट लिखी गयी। अभी लिखा-पढ़ी हो रही थी कि मैंने कोठी पर सूचना भेज दी। अब मुझे कल दस बजे बड़ी कोतवाली में आने का आदेश दिया गया है।

इस समय तक रजनी शकुन्तला के कमरे में कॉफ़ी पीकर सो गयी थी।

:26 :

अगले दिन कृष्ण और सुन्दरदास कोतवाली में जा पहुंचे। वहां सुन्दरदास ने रजनी के मिल जाने की सूचना लिखवा दी। उसने लिखवाया, "मेरी कोठी के फाटक के साथ उर्दू ज़बान में लिखा एक पुर्ज़ा मिला था। रात जब मैं घर पहुंचा था, तो फाटक में पुर्ज़ा लगा मिला। मैंने उसे पढ़ा। उस समय रात के तीन बज चुके थे। इसलिए पुलिस में रिपोर्ट करने का समय नहीं था। अत: मैं लड़की के दादा को साथ लेकर शेरांवाला दरवाज़े के बाहर पीपल के पेड़ की ओर चल पड़ा। लड़की वहां पेड़ का आश्रय लिये भूमि पर बैठी मिली। उस समय लड़की अत्यन्त थकी हुई थी और कई दिन से भूखी थी। इस कारण हम उसे घर पर ले गये, वह इस समय अपनी थकान दूर करती हुई सो रही है।"

इस रिपोर्ट पर कोतवाली से पता चला कि रात तीन व्यक्तियों में से एक ने कुछ बताया है। उसके कथन का समर्थन पाने के लिए पुलिस जांच-पड़ताल कर रही है। उसने बताया कि ज्ञानचन्द लाहौर में ही एक स्थान पर है। पुलिस उस स्थान पर गयी हुई है। हम उसके लौटने की आशा कर रहे हैं।

सुन्दरदास रजनी की रिपोर्ट लिखवाकर अपने काम पर चला गया। कृष्ण कोतवाली में बैठा रहा। कृष्ण और सुन्दरदास कोतवाली में साढ़े नौ बजे पहुंचे थे और ज्ञानचन्द एक बजे मध्याह्न के समय वहां पहुंचा।

ज्ञानचन्द के बयान हुए। पुलिस के सामने उसने कहा कि पिछले वीरवार को रात आठ बजे वह अपनी ड्यूटी समाप्त कर अपने क्वार्टर को जाने लगा, तो एक व्यक्ति स्टेशन की ड्योढ़ी में खड़ा था। मैंने उससे पूछा, "कहां जा रहे हो ?"

"उसने बताया कि गुजरांवाला से आया हूं और मुझे स्टेशन पर लेने वाले आये नहीं। मैं उनकी प्रतीक्षा कर रहा हूं। मैं स्टेशन से निकलकर अपने क्वार्टर की ओर जाने लगा, तो वह व्यक्ति मेरे साथ-साथ ही स्टेशन से निकला। उसी समय चार व्यक्ति गांव की ओर से आते दिखाई दिये। मैं अंधेरे में उन्हें पहचान न सका, परन्तु मेरे साथ चलने वाले व्यक्ति ने बताया कि उसको लेने वाले आ गये हैं। वह वहीं खड़ा हो गया। मैं सड़क छोड़कर पगडण्डी से क्वार्टर की ओर चला कि वे पांचों मुझ पर लपके। एक ने मेरे मुंह पर हाथ रखकर मुझे शोर मचाने से रोका और दूसरे ने मुझे बांहों से पकड़ लिया। इन्होंने मेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथ-पांव रस्सियों से बांधने आरम्भ कर दिये। दो-तीन मिनट में ही वह मुझे एक तांगे पर लादकर चल पड़े। रावी का किश्तियों का पुल पार कर मुझे शहर में लाया गया। लगभग आधे घण्टे के बाद एक मकान के कमरे में पहुंचकर मेरी पट्टी खोली गयी। जिस व्यक्ति ने मेरे मुख पर से पट्टी खोली थी, उसे मैंने दिन के प्रकाश में देखा था। वह लाहौर स्टेशन पर 'सिगनलमैन' था। नाम है ग़ुलाम नबी। वह शाहदरा का रहने वाला है। वह मेरे साथ लाहौर स्टेशन के चोरी के एक झूठे मुक़द्दमे में मुल्ज़िम था। उस मुक़द्दमे में हम सबको नौकरी से मुअत्तिल कर दिया गया था, परन्तु जब मैंने रेल कम्पनी पर झूठा मुक़द्दमा करने के हरजाने का दावा करने की धमकी दी, तो मुझे पुनः नौकरी पर बहाल कर लिया गया। उस मुक़द्दमे में मेरे साथियों में से और किसी को सेवा में नहीं लिया गया। ग़ुलाम नबी भी बेकार था।

"मैं एक सप्ताह-भर एक मकान में बन्द रहा हूं। उस समय मुझे पता नहीं चला कि मुझे बन्दी बनाकर कहां रखा गया है। आज ग्यारह बजे के लगभग मेरे कमरे का द्वार खुला, तो पुलिस के लोगों ने मुझे वहां से निकाला है।"

इंस्पेक्टर पुलिस ने पूछा, "गुलाम नबी के अतिरिक्त भी कोई व्यक्ति दिखाई दिया है?"

"एक और है, परन्तु वह मेरा जाना-पहचाना नहीं है। हां, सामने आये, तो पहचान सकूंगा।"

इस बयान के बाद अगले दिन कोतवाली में आने को कहकर ज्ञानचन्द को छोड़ दिया गया।

कृष्ण ज्ञानचन्द को लेकर कोठी पर पहुंचा, तो वहां पुलिस इंस्पेक्टर रजनी के बयान ले रहा था।

रजनी ने बताया कि पिछले शुक्रवार प्रातः जब कुछ अंधेरा था, तो मैं खुली हवा में टहलने के लिए क्वार्टर से निकली ही थी कि दो व्यक्ति, जो क्वार्टर के द्वार के बाहर खड़े थे, मुझ पर लपके। मेरे मुंह पर हाथ रखकर मुझे ज़बरदस्ती उस क्वार्टर के कुछ अन्तर पर खड़े तांगे में बिठाकर ले भागे। मैं शोर मचाने लगी, तो मेरी ओढ़नी को ही मेरे मुंह में ठूंसकर मेरी आवाज़ बन्द कर दी गयी। दिन-भर मुझे एक गांव के एक मकान में बन्द रखा गया। रात को घर से निकालकर हाथ-पांव बांधे और मुंह पर ज़ोर से पट्टी बांधकर मुझे एक तांगे में लादकर वे शहर के भीतर ले आये। उस रात मुझसे बदफ़ेली की गयी। मैं चीख़ती-पुकारती रही, परन्तु बलात्कार होता रहा। इस प्रकार नित्य होता रहा। कल सायंकाल उस मकान की छत से खट-खट की आवाज़ आने लगी। मैं समझी कि कोई मुसीबत आयी है। इस पर मैं अचेत हो गयी। जब मैं होश में आयी, तो मेरे साथ दो स्त्रियां बैठी थीं। वे मेरे मुंह पर पानी के छींटे मार रही थीं। उन्होंने मुझे पीने को पानी दिया और फिर मांस का गर्म-गर्म शोरबा पिलाया। उनके पूछने पर मैंने उनको अपनी कहानी बतायी। तब उन्होंने कहा कि वह मुझे घर पर पहुंचा देंगी, लेकिन उनका नाम बीच में न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाया जाये। मैंने वादा किया कि मैं उनके विषय में कुछ नहीं बताऊंगी। उन्होंने मुझे खिलाया-पिलाया और फिर कहा कि मैं सो जाऊं। कदाचित् रात को मुझे वह ले जाने आयेंगी। रात के तीन बजे उन्होंने मेरी आंखों पर पट्टी बांधी और मेरा हाथ पकड़कर मुझे एक तांगे में ले गयीं। लगभग दस मिनट तक तांगे में चलकर एक निर्जन स्थान पर तांगा खड़ा कर उन दोनों ने मेरे मुंह और आंखों पर से पट्टी खोली। मैं अंधेरे में खड़ी नहीं जान सकी कि मैं कहां थी। उनमें से एक ने, जो लड़की मालूम होती थी, कहा, "यह पेड़ है। इसका सहारा लेकर भूमि पर बैठ जाओ। तुम्हारे घरवाले अभी आयेंगे और तुम्हें घर पर ले जायेंगे। हमने उस पते पर चिट्ठी भेज दी है, जो तुमने बताया था। मैंने वकील सुन्दरदास का पता बताया था। मुझे विश्वास था कि उनको पता चला, तो वह मुझे छुड़ाने का यत्न करेंगे।"

रजनी के बयान पुलिस में दर्ज हो गये, परन्तु सिवा ग़ुलाम नबी के और किसी का पता नहीं चला। एक दिन ज्ञानचन्द से उनकी पहचान करायी गयी। तीन पकड़े हुए व्यक्तियों में एक ग़ुलाम नबी था और एक रामदेव था, जो लाहौर स्टेशन पर पोर्टर था। तीसरे पकड़े हुए व्यक्ति को ज्ञानचन्द पहले से नहीं जानता था।

रजनी से भी पहचान करायी गयी। रजनी ने बताया कि ये तीनों व्यक्ति उससे जबर-जिनाह करते रहे हैं।

बहुत यत्न करने पर भी अन्य व्यक्ति पकड़े नहीं गये। न ही यह पता चला कि रजनी कहां बन्दी रखी गयी थी। एक विशेष बात यह थी कि उनका मुक़द्दमा करने के लिए गिरिधारीलाल पेश होने लगा।

पुलिस को गिरिधारीलाल का पहले मुक़द्दमे के साथ सम्बन्ध भी बताया गया। साथ ही ज्ञानचन्द ने अपने बयानों में यह भी बताया कि पहले मुक़द्दमे में हारने के बाद लाला गिरिधारीलाल ने ही उसे और उसके साथियों को राय दी थी कि शाहजी के नवजात पोते का अपहरण कर उसके बदले में रुपया मांगा जाये।

यह बयान ज्ञानचन्द ने अदालत में दिया, तो गिरिधारीलाल को भी अपराधियों के कटघरे में खड़ा कर सुन्दरदास ने उस पर जिरह करनी आरम्भ कर दी। गिरिधारीलाल सहन न कर सका और वहीं खड़े-खड़े उसे दिल का दौरा पड़ गया। उसे चारपाई पर डालकर हस्पताल पहुंचाया गया, परन्तु मार्ग में ही उसका देहान्त हो गया।

:27 :

तीनों अभियुक्तों को सेशन सुपुर्द किया गया और छह महीने के लम्बे मुक़द्दमे के उपरान्त सात-सात वर्ष की कठोर क़ैद का दण्ड दिया गया।

जिस दिन अभियुक्तों को दण्ड दिया गया, उस दिन सुन्दरदास की कोठी पर दो बुर्क़ानशीन औरतें वकील साहब को ढूंढ़ती हुई आ पहुंचीं।

वकील साहब कचहरी से घर लौटे ही थे कि बुर्क़ेवाली दो औरतें कोठी के द्वार पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खड़ी मिलीं।

सुन्दरदास उन औरतों को लेकर भीतर अपने कार्यालय में चले गये। वहां उनको अपने सामने सोफ़े पर बिठाकर वह स्वयं कुरसी पर बैठ गये। जब वे औरतें बैठ गयीं, तो एक ने कहा, "मैं रजनी बहिन से मिलने आयी हूं।"

"कौन रजनी ?"

इस प्रश्न पर दोनों औरतें एक-दूसरे का मुंहा देखने लगीं। फिर वह बोली, "यह 30 नम्बर निस्बत रोड है ?"

"हां !"

"सुन्दरदास वकील की कोठी है ?"

"जी हां !"

"तो सुनिये। तक़रीबन दस महीने हुए हैं, जब हमारे मकान के पड़ोस में एक दिन चीख़ों की आवाज़ आने लगी, तो हमने उस चीख़ें मारने वाली का पता किया और फिर उसे वहां से बाहर उसके घर पहुंचाने का इन्तज़ाम किया। उसने ही यह 30 निस्बत रोड, लाला सुन्दरदास वकील का पता बताया था। उस लड़की का नाम,जो उसने बताया था, रजनी था। बताइये, कुछ समझ में आया या नहीं ?"

सुन्दरदास ने कहा, "मैं समझ गया हूं। आपने उस चिट्ठी में एक ऐसी बात लिखी थी, जिससे आपका और उस मकान वाले का पता चल सकता है, जहां रजनी क़ैद की गयी थी और उससे बदफ़ेली की गयी थी। लेकिन रजनी ने अपने छुड़ानेवालों को वचन दिया था कि वह उसका नाम और घर नहीं बतायेगी। इसलिए यह चिट्ठी, जो आपने इस कोठी पर भेजी थी, उसने ख़ुद ही लेकर जला दी थी और हमसे इसरार किया था कि आपकी बाबत कुछ न बताया जाये। मैंने और उस लड़की के बाबा ने कहा था कि लड़की का दिया वचन पूरा करना चाहिए। इस कारण पूरे मुक़द्दमे में हमने आपको बाहर रखा है, वर्ना हम जानते हैं कि आपका दामाद अब्दुल रहमान है, जिसे बचाने के लिए आपने रजनी की मदद की थी। वह पहले लाहौर स्टेशन पर 'लाइनमैन' था। उसके घर का पता भी स्टेशन का रिकार्ड देखकर मालूम कर लिया गया था, परन्तु हमने उसे मुक़द्दमे में नहीं घसीटा था। अब बताइये, आप किस मतलब से आयी हैं ?"

"हम उस लड़की का शुक्रिया अदा करने आयी हैं।"

"वह यहां नहीं है। वह अपने चाचा के पास लाहौर शहर से बाहर एक फ़ार्म पर है।"

"तो हम उसके दीदार नहीं कर सकते ?"

"देखो बीबी ! वह दस-बारह दिन तक लाहौर आने वाली है। वह इस कोठी की लड़की नहीं है। मैं उसका पता तब तक नहीं बताऊंगा, जब तक आपके आने की वजह पर यक़ीन नहीं हो जाता।"

"हम कैसे यक़ीन करा सकते हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"आप मेरी बीबी से मिलिये। अगर उसने आपकी सिफ़ारिश की, तो लड़की के आने पर, आपको, जिस पते पर आप चाहेंगी, इत्तला कर दी जायेगी।"

इस पर जो बुर्केवाली अभी तक बात कर रही थी, अपने समीप बैठे बुर्केवाली की ओर देखने लगी, तो दूसरे बुर्क़ेवाली बोल उठी, "तब ठीक है।आप अपनी बेगम साहिबा से मिला दीजिये। हम उनसे इल्तजा करेंगी।"

इस पर सुन्दरदास ने मेज़ पर रखी घण्टी बजायी, तो चपरासी भगवती आया। वकील साहब ने उससे कहा, "बीबीजी को बुलाओ।"

रामेश्वरी भीतर खाने के कमरे में चाय लगाकर पति की प्रतीक्षा कर रही थी। वह अकेली थी। बड़ा लड़का अरुण फ़ार्म पर था और छोटा लड़का कलकत्ता इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ता था।

रामेश्वरी आयी, तो सुन्दरदास ने बुर्के में बैठी औरतों का परिचय करा दिया और कहा, "ये रजनी का शुक्रिया अदा करने आयी हैं। मैं चाहता हूं कि तुम इनसे मिलकर बातचीत कर लो। अगर तुम उचित समझती हो, तो रजनी के आने पर इनको इत्तला कर देना।"

रामेश्वरी परेशानी में पति का मुंह देखने लगी। सुन्दरदास ने आगे कहा, "इनको भीतर चाय पर निमन्त्रण दे दो और फिर इत्मीनान से बातचीत कर जैसा मन में आये, वैसी सिफ़ारिश कर देना।"

"तो आओ बहिन! भीतर आ जाओ। चाय तैयार है।" रामेश्वरी ने पति की ओर देखकर कहा, "आप भी आइये, चाय तो पी ही जा सकती है।"

अब सब कोठी के खाने के कमरे में जा पहुंचे। वहां पहुंचते ही दोनों औरतों ने अपने बुर्के उतार दिये और उनमें से बड़ी आयु की औरत ने कहा, "यह मेरी लड़की रहमान है। मेरे दामाद का नाम तो आप जान ही गये हैं। इसलिए अब आपसे कुछ छिपाकर रखने की बात नहीं है। बात यह है कि मेरी बड़ी लड़की फ़ातिमा का घरवाला चाहता है कि आप लोग, लड़की और उसके घरवाले उसका क़ुसूर मुआफ़ कर दें, जिससे वह बेफ़िक्र अपना काम करता हुआ ज़िन्दगी बसर कर सके।"

सुन्दरदास का कहना था, "ठीक है। चाय लीजिये और मेरी बीवी को यक़ीन दिलवाइये कि लड़की का किसी प्रकार बुरा नहीं होगा। यह मेरे पास आपकी सिफ़ारिश करेगी और मैं लड़की के घरवालों से आपको मिला दूंगा। अभी तो लड़की यहां है भी नहीं। वह एक-दो हफ़्ते तक लाहौर आने वाली है।"

चाय समाप्त हुई, तो सुन्दरदास बाहर अपने कार्यालय में चला गया।

रामेश्वरी ने करीमन और रहमान से एक घण्टा-भर बातचीत की और उनको दो दिन उपरान्त फिर आने का निमन्त्रण दे दिया। उसने कहा, "दोपहर के खाने के वक्त आइयेगा। उस समय वकील साहब घर नहीं होंगे और मैं आपकी बातों पर ग़ौर कर आगे बात करूंगी। उम्मीद है कि मैं लड़की के घरवालों से आपका परिचय करा सकूंगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दोनों औरतें बुर्क़ा पहनकर कोठी से बाहर निकल गयीं। तीन दिन के उपरान्त मध्याह्न के भोजन के समय वही दोनों औरतें फिर आयीं। उस समय रामेश्वरी ने धनवती को बुलाया हुआ था। धनवती का परिचय रामेश्वरी ने वकील साहब की चाची कहकर कराया।

खाना-पीना होता रहा और बातें होती रहीं। मध्याह्नोत्तर तीन बजे करीमन और उसकी लड़की चली गयीं। उनके जाने के उपरान्त, जब वकील साहब आये, तो कृष्णचन्द्र, गोपीशाह और शकुन्तला भी आ गये। रामेश्वरी का विचार था कि दोनों औरतें भावुक प्रकृति की हैं। इसलिए उनका शुक्रिया अदा करने आना स्वाभाविक ही प्रतीत होता है।

:28 :

रजनी के मन पर अपहरण का बहुत गम्भीर प्रभाव पड़ा था। जब मुक़द्दमे में पता चला कि अपहरण करने वाले उसके पिता के साथी ही थे और उनकी सहायता से उसके पिता चाचा के लड़के का अपहरण कराना चाहते थे, तो वह अपने पिता के प्रति भी अत्यन्त हीन सम्मति बना बैठी।

मुक़द्दमे के दिनों में वह लाहौर में अपने चाचा की कोठी पर रहती थी। उसका पिता ज्ञानचन्द अपने काम पर शाहदरा रेलवेस्टेशन चला गया था।

मुक़द्दमा अभी चल ही रहा था कि एक दिन लायलपुर फ़ार्म से रामचन्द्र और सुशीला आये। वह अपने लड़के विनोद के घर पर ठहरे थे। एक दिन दोनों दादा के चरण स्पर्श करने निस्बत रोड वाली कोठी पर आये, तो रजनी वहां दादी के पास बैठी थी। सुशीला ने बातों-ही-बातों में रजनी से पूछ लिया, "क्या तुम आजकल यहां माताजी के पास रहती हो ?"

"हां !" रजनी का कहना था, "और कहां जाऊं ?"

"क्यों ? मां ने घर से निकाल दिया है ?"

"नहीं, मां ने तो नहीं निकाला, पर मैंने पिताजी को अपने मन से बाहर निकाल दिया है।"

"क्यों, भाई साहब का क्या दोष है ?"

"चाची ! दोष तो है। पिताजी इन गुण्डों को अपना साथी न बनाते, तो यह तलवार उछलकर उनकी तथा उनके अपनों की हत्या करने न चल पड़ती। जब विश्वम्भर के अपहरण की योजना बनी थी, तो पिताजी ने ही इन बदमाशों को बताया होगा कि उनके पिता पचास हज़ार रुपया देने की सामर्थ्य रखते हैं। यह मांस का टुकड़ा पिताजी ने ही उन ख़ूंख़ार जानवरों के सामने रखा होगा और परिणाम यह हुआ कि उनके अपनों पर ही उनकी वक्रदृष्टि पड़ी।"

सुशीला अवाक् हो रजनी का मुंह देखती रह गयी। धनवती ने कहा, "करुणा इसे अपने साथ ले जाने का आग्रह करती रहती है, परन्तु यह कहती है कि अपने पिता के घर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नहीं जायेगी।"

"तो ऐसा करो," सुशीला ने कहा, "हमारे घर चलो। वहां हमने अपने घर के सम्मुख छोटी-सी फुलवाड़ी लगा ली है। फूलों की क्यारियां हैं, घास का बड़ा-सा लॉन है और लॉन के बीचो-बीच एक वट का वृक्ष है। इस वृक्ष के नीचे एक पक्का चबूतरा है। उस चबूतरे पर सायंकाल हम कुरसियां लगाकर व बैठकर चाय पीते हैं, तो देहात और शहर का संगम बहुत सुन्दर बन जाता है। वकील साहब जब कभी वहां आते हैं, तो आस-पास के फ़ार्मों के मालिक और किसान एकत्र हो जाते हैं। एक प्रकार की धर्मसभा लग जाती है।"

"तो ठीक है!" धनवती ने कहा, "रजनी चाहे, तो वहां जा सकती है। मैंने तो इसके विवाह का प्रबन्ध किया था, परन्तु इसने विवाह न करने के लिए सत्याग्रह कर दिया. खाना-पीना बन्द कर दिया।"

सुशीला का कहना था, "यह गांधीजी ने अपनी बात मनवाने का विचित्र ढंग निकाला है। यह सत्याग्रह उतना ही प्रभावी होता है, जितने सत्याग्रही के प्रशंसक होते हैं।"

शकुन्तला हंस पड़ी और बोली, "हम सब रजनी के प्रशंसक हैं। इसलिए जब इसने सत्याग्रह किया, तो हम तुरन्त मान गये और हमने इसके विवाह का विचार स्थगित कर दिया।"

सुशीला बोली, "मैं समझती हूं कि इसे कुछ दिन हमारे घर भेज दें। वहां हमने घरेलू दस्तकारियों का एक स्कूल भी खोला है, जिसमें लड़के-लड़कियां पढ़ने आते हैं। यह चाहेगी, तो उसमें अपना जी बहला लिया करेगी।"

रजनी ने स्कूल का नाम सुना, तो लालसा-भरी दृष्टि से अपनी दादी की ओर देखने लगी। धनवती ने रजनी का आशय समझकर कह दिया, "ठीक तो है। यहां इसके मां और पिता इसको अपने घर ले जाने के लिए कहते रहते हैं और यह उनको जली-कटी सुनाती रहती है।"

इस प्रकार रजनी ज़िला लायलपुर में चक नम्बर-102 पर जा पहुंची। इस चक में दो सौ एकड़ भूमि थी और यह लाला सुन्दरदास का चक कहलाता था।

फ़ार्म के वर्तमान प्रबन्ध को चलते हुए दूसरा वर्ष जा रहा था। खेती-बाड़ी के साथ-साथ वकील साहब की योजना में वहां प्रौढ़-शिक्षा में दस्तकारी का स्कूल चालू किया गया था। उसमें खेतों में काम करने वालों के लड़के-लड़कियां और प्रौढ़ावस्था के स्त्री-पुरुष भी आने लगे थे। अभी सबको मिट्टी तथा लकड़ी के खिलौने बनाने का काम सिखाया जाता था। इस स्कूल में दस्तकारी के अतिरिक्त भाषा व गणित का ज्ञान भी कराया जाता था।

रजनी चक नम्बर-102 पर पहुंची, तो जाते ही स्कूल में हिन्दी भाषा सिखाने का काम करने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मुक़द्दमे में अपराधियों को सात-सात वर्ष की कठोर दण्ड दिया गया, तो एक दिन अरुण सुशीला से आकर बोला, "चाची! आप लाहौर कब जा रही हैं?"

"अभी तो पिछले मास हम गये थे। दादा का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। इस पर चिन्ता अवश्य रहती है और पत्र द्वारा पता करते रहते हैं।"

"तो और कुछ काम नहीं है वहां?"

"तुम लोगों ने यहां सब सुख-सुविधा का प्रबन्ध कर रखा है। इसलिए वहां जाने की आवश्यकता अनुभव नहीं होती।"

"मुझे कुछ काम था, इसीलिए पूछ रहा था।"

"क्या काम है?"

"अपनी माताजी को एक पत्र भेजना है।"

"तो डाक द्वारा भेज दो। एक आने में चार पृष्ठ का पत्र भेजा जा सकता है।"

"डाक में जायेगा, तो पिताजी खोलकर पढ़ लेंगे। मैं उनसे चोरी भेजना चाहता हूं। पिताजी को माताजी द्वारा सन्देश मिले, तो उस सन्देश पर माताजी का रंग चढ़ा होगा। तब सन्देश का स्वागत हो जायेगा। यदि कहीं मेरी बात पिताजी को पहले पता चल गयी, तो पिताजी मानेंगे नहीं और माताजी को बाद में बतायी जायेगी। मैं नहीं चाहता कि माताजी और पिताजी में मेरे विषय में मतभेद हो।"

"कहीं अपना विवाह करने का विचार है?"

अरुण हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, "पर चाची! बताऊंगा नहीं कि कहां विचार है। यह रहस्य सर्वप्रथम माताजी को ही पता लगेगा, तब किसी अन्य को पता लगना चाहिए।"

"पर मैं तुम्हारा पत्र मार्ग में ही खोलकर पढ़ लूंगी।"

"तब चाची! आपके हाथ नहीं भेजूंगा। हैं तो आप भी रेल-कर्मचारी की पत्नी।"

सुशीला हंस पड़ी। हंसते हुए बोली, "हां, यह तो है। तुम्हें रेल पर सवारी भी नहीं करनी चाहिए। उसका सम्बन्ध भी रेल कर्मचारियों से है।"

"तो लाहौर कैसे जाऊंगा? और फिर पत्र कैसे जायेगा?"

"देख लो, एक उपाय है, परन्तु वह अभी पंजाब के इस ज़िले में नहीं पहुंचा। मोटरगाड़ी बन गयी है, जो इस रेलगाड़ी से तेज़ भागती है। सुना है, कलकत्ता-बम्बई में तो वह चलने भी लगी है।"

"उसके तो यहां आने में अभी देर है। मैं समझता हूं कि पांच वर्ष के उपरान्त हमारे फ़ार्म पर भी वह आ सकेगी।"

बात समाप्त हो गयी। अरुण अपने काम के लिए स्वयं अपने कमरे में पहुंचकर विचार करने लगा। इस चर्चा को, जब सुशीला ने अपने पति रामचन्द्र को बताया, तो रजनी सुन रही थी। उसने कह दिया, "चाचाजी! इस बार आप लाहौर जायेंगे, तो मैं भी आपके साथ चलूंगी।"

"कुछ काम है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"हां, दादा के दर्शन करने को मन करता है।"
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो चलो, सब चलते हैं।" रामचन्द्र ने कह दिया।

अगले दिन रामचन्द्र अरुण को यह बताने बैठक में पहुंचा, तो अरुण अपना सूटकेस तैयार कर रहा था। रामचन्द्र ने पूछा, "अरुण, किधर की तैयारी है?"

"मैं लाहौर जा रहा हूं।"

"कब?"

"दस बजे की गाड़ी पकड़ना चाहता हूं।"

"तुम्हारी चाची और रजनी भी जाना चाहते हैं। इस बार मैं भी उनके साथ चल रहा हूं।"

"तो चलिये! सब इकट्ठे ही चलेंगे।"

"नहीं, हममें से किसी-न-किसी को यहां रहना चाहिए।"

"तब ठीक है। मैं दो दिन में लौट आऊंगा, तब आप जा सकेंगे। मैं तो अब तैयार हो चुका हूं।"

इस प्रकार अरुण लाहौर जा पहुंचा।

:29:

अरुण बिना सूचना के घर पहुंचा, तो मां ने पूछ लिया, "अरुण, क्या बात है? क्या फ़ार्म के किसी काम से आये हो?"

"नहीं माताजी! मैं अपने निजी काम से आया हूं।"

"बिना सूचना दिये? क्या काम है, जिसके लिए सूचना देने का भी समय नहीं था।"

"माताजी! वह काम आपसे ही है। पहले बताने का समय नहीं था। ज्योतिषी ने कहा है कि मुहूर्त टल भी सकता है।"

"ओह! तो स्नान या चाय-पानी का भी समय है अथवा नहीं?"

अरुण मध्याह्नोत्तर तीन बजे घर पहुंचा था। इसलिए बोला, "माताजी! स्नान तो फ़ार्म पर करके ही चला था। भोजन रेल में ले लिया था और चाय लेता हुआ अपनी बात कह दूंगा। मुहूर्त आज रात के आठ बजे तक का है और कल प्रातःकाल की गाड़ी से मैं लौट जाऊंगा।"

रामेश्वरी ने घण्टी बजायी। सेविका आयी, तो उसे चाय लाने के लिए कह दिया गया।

अरुण अपना सूटकेस अपने सोने के कमरे में रखकर खाना खाने के कमरे में लौटा, तो सेविका चाय के लिए बर्तन लगा रही थी। मिठाई-नमकीन वह लगा चुकी थी। दूध और चीनी के लिए बर्तन व प्याले रखकर वह चाय का पानी लेने चली गयी।

अरुण ने बैठकर मुंह में मिठाई का एक टुकड़ा डालते हुए कहा, "मां! मैं विवाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करूंगा।"

"ओह! तो यह बात है, किससे विवाह करोगे?"

"रजनी से।"

"तो उससे बात करके आये हो?"

"नहीं! मैं समझता हूं कि यदि उसके दादा और दादी मान जायेंगे, तो वह भी मान जायेगी और इसका प्रस्ताव उनके सम्मुख मुहूर्त टलने से पूर्व ही हो जाना चाहिए।"

रामेश्वरी हंस पड़ी। हंसते हुए बोली, "यदि उन्होंने कहा कि रजनी से पूछकर स्वीकार करेंगे और वह यहां है नहीं, तो फिर मुहूर्त टल जायेगा। तब क्या करोगे?"

"मुझे वहां के ज्योतिषी ने बताया है कि यदि आप और पिताजी दोनों मिलकर मेरा प्रस्ताव शाहजी और बड़ी माताजी के सामने रखेंगे, तो वह मान जायेंगे। शेष रही रजनी की बात, वह दादा की बात को अस्वीकार नहीं करेगी। यदि की, तो फिर मैं उससे विवाह नहीं करूंगा। यह हम दोनों के लिए अशुभ होगा।"

"तो फिर पिताजी को कचहरी से आने दो। यदि तुम्हारे पिताजी भी इस प्रस्ताव के अनुकूल हुए, तब हम शाहजी से मिलने चलेंगे और यत्न करेंगे कि वह मान जायें।"

चाय लेते हुए अरुण ने प्याला हटाकर माताजी के समीप पहुंचकर उनके चरण-स्पर्श कर धन्यवाद कर दिया।

परन्तु रामेश्वरी ने कहा, "यह धन्यवाद और चरण-स्पर्श समय से पूर्व ही है। मैं और तुम्हारे पिताजी पृथक् कमरे में बैठकर निर्णय करेंगे और तुम्हारा प्रस्ताव अस्वीकार भी हो सकता है।"

"नहीं होगा! माताजी, आप तो अनुकूल प्रतीत ही होती हैं और पिताजी आग्रह कभी टाल नहीं सकते।"

"यह कैसे कहते हो?"

"अपने पिछले बीस वर्ष के अनुभव से कहता हूं।"

"परन्तु इस बीस वर्ष में हमने अरुण के विवाह के विषय में कभी बात ही नहीं की। विवाह का विषय सर्वथा नवीन है और यह मेरे कहने पर भी अस्वीकार हो सकता है। सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि रजनी के दादा ने, जब वह यहां थी, तो कई सम्बन्ध बताये थे, परन्तु रजनी ने सबको अस्वीकार कर दिया था।"

"यह तो रजनी ने भी बताया था।"

"तो तुमने उससे बात की थी?"

"प्रस्ताव नहीं किया, केवल यह पूछा था कि विवाह कब कर रही हो? उसने बताया कि वह विवाह नहीं कर रही और वह पहले ही कई प्रस्ताव अस्वीकार कर चुकी है।"

"इसीलिए कहती हूं कि आज रात आठ बजे तक बात नहीं हो सकेगी।"

"माताजी! प्रस्ताव तो हो सकता है। यहां के बड़े तो स्वीकार कर सकते हैं। शेष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजनी की बात रखेगी। उसके विषय में विचार किया जायेगा।"

"अच्छा, तुम्हारे पिताजी आ जायें, तो विचार आगे चल सकता है। जब तक हम दोनों इस विषय पर सहमत नहीं होंगे, तब तक यह प्रस्ताव शाहजी के सम्मुख नहीं रखा जा सकता।"

चाय समाप्त कर अरुण पिता के कचहरी से लौटने की प्रतीक्षा करने लगा। साढ़े चार बजे मुंशी आया और वकील साहब का बस्ता उनके कार्यालय में रखकर भीतर सूचना दे गया कि आज बार-काउंसिल की वार्षिक मीटिंग है और वकील साहब रात खाने के समय आयेंगे।"

इस सूचना पर अरुण की मां का मुंह उतर गया। रामेश्वरी ने कहा, "तुम वहां से मुहूर्त निकलवाकर नहीं चले।"

"हां माताजी! ग़लती हो गयी है। अच्छा, तो फिर बिना मुहूर्त के ही बात होगी।"

"देख लो।"

"मेरा आग्रह है कि पिताजी के बिना ही शाहजी के सामने प्रस्ताव रख दिया जाये।"

"यह नहीं हो सकता।"

"माताजी! आप कह सकती हैं, *सबजेक्ट टू द एप्रूवल ऑफ़ पिताजी*!"

रामेश्वरी हंस पड़ी और बोली, "ऐसी बात मैं कभी नहीं कर सकती।"

"तो फिर मैं स्वयं ही कहना चाहता हूं। ठीक है न?"

"तुम फ़ार्म से यहां बिना मेरी राय के आये हो। अब वहां भी बिना मेरी राय के जा सकते हो। मेरा नाम बीच में न लाना।"

अरुण ने कहा, "ठीक है। मैं वयस्क हो रहा हूं। एक-न-एक दिन स्वतन्त्र विचार या व्यवहार बनाना ही है, तो आज से ही क्यों न स्वतन्त्रता की घोषणा की जाये?"

रामेश्वरी ने हां-ना कुछ नहीं की। वह मुसकराती हुई पुत्र का मुंह देखती रही। अरुण एक मिनट तक मां का मुंह देखता रहा और फिर उठकर कोठी से निकल गया। मां ने समझा कि लड़के के मन पर काम का भूत सवार हो रहा है। इस पर भी वह विचार कर रही थी कि शाहजी की विवेकपूर्ण बात इसे सन्मार्ग दिखा सकेगी।

अरुण 30 निस्बत रोड पर पहुंचा, तो वहां परिवार चाय पी रहा था। गोपीशाह था, शकुन्तला थी, कृष्ण था, धनवती तथा धनवती का पोता विश्वम्भर भी था।

अरुण ने बैठक के द्वार पर खड़ा होकर पूछा, "दादा! क्या मैं आ सकता हूं?"

सबने द्वार की ओर देखा और हंसने लगे। गोपीशाह ने कहा, "ओह! अरुण है, आओ बेटा! तुम्हें यहां आने की स्वीकृति बहुत पहले से मिली हुई है।"

अरुण भी एक कुरसी पर बैठा, तो पाचक ने उसके सामने भी प्लेटें तथा चाय का प्याला रख दिया।

शकुन्तला ने *सेण्टरटेबल* से मिठाई की प्लेट उठायी, उसमें दो टुकड़े मिठाई के और थोड़ा नमकीन डालकर अरुण के सामने रख दी। तदनन्तर उसके प्याले में चाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनाने लगी।

अरुण ने कहा, "दादा! कल एक विचार मन में आया था। वहां फ़ार्म पर एक ब्राह्मण देवता काम करते हैं और ज्योतिष-विद्या के ज्ञाता हैं। मैंने अपने विचार बताकर उनसे राय की, तो उन्होंने मेरी कुण्डली बनाकर कहा है कि यदि यही बात आज रात आठ बजे तक स्वीकार हो जाये, तो शुभ है, अन्यथा नज़दीक तो कोई ठीक मुहूर्त नहीं है। इसलिए उस बात की पूर्ति के लिए उचित स्थान पर आया हूं। मैं तो माताजी और पिताजी को लेकर आपसे राय करने आने वाला था। पिताजी 'बार काउंसिल' की वार्षिक बैठक होने के कारण घर नहीं आ रहे। माताजी पिताजी के बिना आना नहीं चाहतीं। इसलिए मैं मुहूर्त के समय के भीतर ही आ गया हूं।"

"तो काम किससे है? मुझसे, कृष्ण से अथवा शकुन्तला से?"

"आपसे। वैसे इसका सम्बन्ध सबके साथ है?"

"हां, तो बताओ।"

"मैं रजनी से विवाह करूंगा।"

"ज़बरदस्ती?"

"नहीं दादा! आप बड़ों की सम्मति से।"

"और तुम बड़ा किस-किसको मानते हो?"

"सबसे बड़े तो आप ही हैं और मैं समझता हूं कि 'हाथी के पांव में सबका पांव' है।"

इस समय तक अरुण भी चाय में सबका साथ देने लगा था। धनवती मुसकरा रही थी। अरुण ने एक घूंट चाय से मिठाई निगलकर कहा, "दादी मां! आप मुसकरा क्यों रही हैं?"

"यह इसलिए कि मैं तुम्हारे मन की बात समझ गयी हूं।"

"क्या समझ गयी हैं?"

"यही कि तुम विवाह का प्रस्ताव लेकर आये हो और वह भी रजनी के साथ।"

अरुण हंस पड़ा और बोला, "दादी मां! इसलिए तो मैं यहां आया हूं। आप-जैसी दूर तक देखने वाली मां से ही सफलता की आशा करता हूं।"

"हां, तो अब तुम्हारे दादा बतायेंगे कि क्या होना चाहिए।"

अब प्रश्न गोपीशाह ने किया। उसने पूछा, "रजनी से पूछकर आये हो?"

"नहीं दादा! मन में विचार आया और चला आया।"

"तो सुनो!" गोपीशाह ने बात दो-टूक कर दी, "जितने प्रस्ताव उसके विवाह के हमने अभी तक किये हैं, उसने अस्वीकार कर दिये हैं। तुम अभी तक के सब प्रस्तावों में से अधिक उपयुक्त हो। इस पर भी, अब मैं उससे प्रस्ताव न करने का निश्चय कर चुका हूं। इसलिए उसे विवाह के लिए राज़ी कर लो, तो हम उसकी बात को स्वीकार कर लेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरुण समझ गया कि वह वचन अधिक-से-अधिक है, जिसकी वह आशा कर सकता है।

इसलिए वह अत्यन्त सन्तुष्ट होकर एक भी शब्द और कहे बिना अपने स्थान से उठा और दादा के चरण स्पर्श कर हाथ जोड़कर बोला, "दादा ! अत्यन्त धन्यवाद है।"

जब वह हाथ जोड़कर सबको नमस्कार कर रहा था, तो कृष्ण ने पूछ लिया, "अरुण ! कितनी आयु है तुम्हारी ?"

"मैं समझता हूं उन्नीस वर्ष, एक महीना और तीन दिन है।"

"तुम अभी अपना विवाह दो वर्ष तक बिना माता-पिता की स्वीकृति के नहीं कर सकते।"

"क्यों ?"

"क़ानून के अनुसार तुम विवाह करने के योग्य नहीं हो।"

"चाचाजी ! दादाजी के क़ानून से मैं सयाना हूं। आपका पढ़ा क़ानून मुझ पर लागू नहीं होता।"

"ठीक है!" गोपीशाह ने कह दिया, "विवाह की स्वीकृति देने के अधिकारी का सर्टिफिकेट लाओ, तो हमारी स्वीकृति मिल जायेगी। कृष्ण को मैं समझा दूंगा।"

अरुण एक भी शब्द कहे बिना, हाथ जोड़, नमस्ते कर बैठक से निकल आया।

जब वह चला गया, तो कृष्ण ने कहा, "पिताजी ! वकील साहब और भाभी रामेश्वरी की इच्छा के बिना आप विवाह की स्वीकृति नहीं दे सकते।"

"देखो कृष्ण ! मैंने मुख्य व्यक्ति की स्वीकृति की शर्त लगा दी है। वह मेरे विचार में रजनी है। जहां तक वकील साहब और उनकी पत्नी की स्वीकृति का प्रश्न है, यह इसके और रजनी के विचार करने का प्रश्न है। रजनी अपने पति के घर में उसके माता-पिता की स्वीकृति के बिना रह सकती है अथवा नहीं। वह जब आयेगी, तो उससे युक्ति-प्रतियुक्ति करना। यह हमारे और अरुण के बीच का प्रश्न नहीं है। अरुण को भी विचार कर लेना चाहिए कि वह माता-पिता की स्वीकृति के बिना जीवन कैसे चलायेगा ?"

"परन्तु पिताजी !" कृष्ण ने अपनी आपत्ति प्रकट करते हुए कहा, "विवाह का सम्बन्ध विवाह करने वाले के अपने स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन से भी तो है।"

"पर मैं शरीर की परिपक्वता जन्म से व्यतीत हुए वर्षों से नहीं आंकता। मैं इसे युवक-युवती की बुद्धि की श्रेष्ठता से आंकता हूं। देखो कृष्ण ! जीवन के मूल्यांकन में वर्ष और एकत्र धन स्वतन्त्र परिमाण नहीं है। इनका आधार बुद्धि की श्रेष्ठता और तीक्ष्णता है। बुद्धि की परिपक्वता ही किसी के कर्मों का सही नाप-तोल है। निर्बुद्धि सौ वर्ष का भी अल्पायु होगा और बुद्धिमान् बालक भी उसका गुरु होने के योग्य हो सकता है। इसी प्रकार निर्बुद्धि लखपति भी बालक ही माना जाना चाहिए और एक निर्धन बुद्धिमान् सयाना समझा जाना चाहिए।"

"परन्तु पिताजी ! शारीरिक परिपक्वता का तो आयु से सम्बन्ध है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"बुद्धिमान् के लिए आयु गौण है। आयु की अल्पता के कारण अभाव की पूर्ति बुद्धि कर लेती है। कृष्ण! यह मेरे जीवन-भर का निष्कर्ष है। मैं भी विवाह से पूर्व तीस वर्ष का था। मुझे यौन-तृप्ति की उत्कट अभिलाषा रहती थी, परन्तु ईश्वर-प्रेरित बुद्धि का मेरे कर्मों पर नियन्त्रण था और मैं उस समय विवाह की इच्छा रखता हुआ भी इसका चिन्तन नहीं करता था। जब निपट निर्धन था, तब भी बुद्धि संयम की प्रेरणा देती थी और मेरा मन बुद्धि के अधीन था। इस विषय में उस समय मेरी बात तुम्हारी माताजी से हुई थी और यह भाग्यवान् मेरे कहे अनुसार व्यवहार करती हुई पहली सन्तान पैदा करने के लिए तब तैयार हुई, जब हमारी बुद्धि घी की चुपड़ी रोटियां और छौंक लगी दाल खाने की सामर्थ्य पैदा कर चुकी थी।"

कृष्ण पूछना चाहता था कि पिताजी पत्नी के साथ रहते हुए सन्तान होने को किस प्रकार रोकते थे, परन्तु मां के सामने बैठे होने के कारण वह चुप हो गया।

: 30 :

गोपीशाह का परिवार आशा करता था कि सुन्दरदास और रामेश्वरी अगले दिन उससे मिलने आयेंगे, परन्तु वे नहीं आये। तीसरे दिन रामचन्द्र, सुशीला और रजनी आये। जब वे कोठी पर पहुंचे, तो कृष्ण अपने दफ़्तर में बैठा काम कर रहा था। गोपीशाह रावीतट पर अपने एक परिचित साधु सन्तोषानन्द से मिलने गया हुआ था। घर पर धनवती और शकुन्तला ही थीं।

उनको कोठी में प्रवेश करते देख धनवती के मुख से निकल गया, "तो आप आये हैं?"

"हां माताजी!" सुशीला ने कहा, "कई दिन से मेरी मिलने की इच्छा हो रही थी, परन्तु पिछले रविवार यह इच्छा उत्कट हो उठी। उस दिन अरुण तैयार हुआ, तो हमने आना स्थगित कर दिया। वह कल लौटकर पहुंचा, तो हम चले आये हैं।"

इस समय तक रामचन्द्र इत्यादि अपना सामान एक कोने में रखकर बैठ गये थे। धनवती ने पूछा, "स्नानादि कर चुके हो अथवा नहीं?"

उत्तर सुशीला ने दिया। उसने कहा, "स्नान कर प्रातः का अल्पाहार हम फ़ार्म पर से लेकर ही चले थे। कुछ मार्ग में खाया है। इस पर भी अब भूख है।"

उस समय मध्याह्नोत्तर साढ़े तीन बज रहे थे। धनवती ने शकुन्तला की ओर देखा, तो वह माताजी का अभिप्राय समझकर उठी और चाय के साथ कुछ खाने के लिए बनाने चल पड़ी।

बात धनवती ने आरम्भ की। उसने कहा, "दादा तो भ्रमण पर गये हुए हैं और कृष्ण कार्यालय में है। लो, वह आ गया है।"

भाई के आने की सूचना पाकर कृष्ण कार्यालय में अपने काग़ज़-पत्र समेटकर चला आया था। वह समझ रहा था कि अरुण के प्रस्ताव पर ही भैया बात करने आये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इस कारण उसने बैठते ही पूछा, "अरुण से मिलकर आये हैं?"

तीनों रामचन्द्र, सुशीला और रजनी हंस पड़े। उत्तर रामचन्द्र ने ही दिया। उसने कहा, "हां, वह लाहौर में दो दिन रहने के लिए कहकर आया था। यह विचार कर कि दोनों का फ़ार्म से अनुपस्थित होना ठीक नहीं, हम उसके लौटने की प्रतीक्षा में थे। इसलिए हमने तीन-चार दिन के लिए आना स्थगित कर दिया था, परन्तु वह तो कुछ घण्टे यहां ठहरकर वापसी गाड़ी से लौट आया। इसलिए हम समय से पहले ही यहां पहुंच गये हैं। बताओ, पिताजी का स्वास्थ्य कैसा चल रहा है?"

"आजकल कुछ ठीक है। उनको श्वास का कष्ट था। अब कुछ ठीक हैं। एक तो ऋतु सुधर रही है और दूसरे, उन्होंने मध्याह्न के समय अपना भ्रमण आरम्भ कर दिया है।"

इस समय शकुन्तला पाचक को खाने के लिए कुछ बनाने की आज्ञा देकर बैठक में लौट आयी थी। उसने आते ही पूछा, "अरुण भैया यहां एक प्रस्ताव लेकर आया था।"

पुन: तीनों हंसने लगे। रजनी ने हंसते हुए कहा, "मैं दादी मां से पृथक् में बात करूंगी।"

इस पर सब चुप कर गये। शकुन्तला और धनवती के मन में विचार आया कि वह बताने वाली है कि विवाह तो हो चुका है। इसलिए धनवती ने पूछ लिया, "खाने के पहले अथवा उपरान्त?"

"दादी मां! जल्दी नहीं है।"

"तो ठीक है। पहले तुम्हारी मां की भूख का निवारण हो जाये, तो तुम्हारी बात भी सुन लेंगे।"

इस समय गोपीशाह अपने भ्रमण से लौट आया। चार बज रहे थे और गोपीशाह के आते ही पाचक चाय तथा खाने का सामान लगाने लगा।

चाय पीते-पीते बात हो गयी। रजनी ने बताया, "मुझे यहां से गये तीन महीने से अधिक हो चुके हैं। अरुणजी ने मुझसे विवाह की बात कभी नहीं की। न ही इस विषय पर घर में किसी ने कभी मुझसे पूछा था। एक दिन मेरे स्कूल में आने पर मुझसे पूछने लगे कि मैं विवाह कब करूंगी तो, मैंने अपना मत बता दिया। बस, इतनी बात उस दिन हुई। परसों वह लाहौर चले आये। फिर सोमवार प्रात:काल की गाड़ी से लौट आये। वहां पहुंचते ही मुझसे बोले, "मुझसे विवाह करोगी?" मेरी बरबस हंसी निकल गयी। मैंने कहा, "लाहौर से लाइन क्लीयर ले आये हैं?"

वह बोले, "स्टेशनमास्टर से स्वीकृति ले आया हूं।"

मैंने कहा, "लिखित दिखाओ।"

इस पर वह परेशानी में मेरा मुंह देखने लगे। मेरी पुन: हंसी निकल गयी। मैंने कहा, "इस मौखिक लाइन क्लीयर पर तो गाड़ी नहीं छोड़ी जा सकती।"

"इस पर वह गम्भीर होकर बोले कि मैं स्वयं आपसे मिलकर पता कर सकती हूं और हम आपसे स्वयं पता करने चले आये हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और हमें क्या कहती हो ?" धनवती का प्रश्न था।

"यह मैं दादी मां को पृथक् में बताऊंगी। आप सबने 'लाइन क्लीयर' का सर्टिफिकेट क्यों दिया है, मैं यह जानना चाहती हूं।"

उत्तर गोपीशाह ने दिया, "मैंने उसे कहा है कि पहले रजनी की स्वीकृति लायेगा, तो हम अपनी स्वीकृति दे देंगे।"

"अर्थात्, बिना विचार किये मेरी बात का समर्थन कर देंगे ?"

"हां," गोपीशाह का कहना था, "इस विषय में हम अपनी अपेक्षा तुम्हारे अधिकार को अधिक मान्यता देते हैं।"

"पर मैं तो आपके सम्मुख अभी बच्ची हूं।"

"तुम्हारे बचपन के जाने तक हम विवाह रोक सकते हैं, परन्तु रजनी! मैं तुम्हें बच्ची नहीं मानता। तुम अपने विषय में निश्चय करने के सर्वथा योग्य हो। शेष व्याख्या की बातों में हम अपनी सम्मति दे सकते हैं और गाड़ी को धीमी कर सकते हैं।"

"अर्थात मैं विवाह का निश्चय करने के योग्य हूं, परन्तु मैं अपनी योग्यता के प्रयोग की स्वीकृति दादी मां से बात करने के बाद दूंगी।"

"तो आओ!" धनवती ने उसे पृथक् बैठकर बात करने का निमन्त्रण दे दिया।

दोनों धनवती के कमरे में चली गयीं। शेष लोग बाहर बैठक में बैठे बातचीत करते रहे। रामचन्द्र ने दादा का स्वास्थ्य समाचार पूछा, तो शाहजी ने बताया, "ज्ञानचन्द के तथा रजनी के अपहरण का वृत्तान्त सुनकर मुझे ऐसा लगा था कि यह मानव-समाज अब रहने योग्य नहीं है। इससे दिल बैठता-सा प्रतीत हुआ था, परन्तु अब मुझे एक महापुरुष की बात स्मरण आ गयी। वह यह कि जीवात्मा का भविष्य उसके अपने कर्मों का फल होता है। किसी दूसरे का अच्छा-बुरा कर्म व्यक्ति के अपने कर्मफल को विकृत नहीं कर सकता। इस विचार के आते ही मैंने अपने आसपास होने वाली घटनाओं पर विचार करना छोड़ दिया है। अपने को दूसरों से अलिप्त रखने का यत्न करने लगा हूं।"

"परन्तु पिताजी!" रामचन्द्र का कहना था, "क्या संसार में रहते हुए यह सम्भव है ?"

"हां, अपनी वर्तमान मन:स्थिति में सम्भव प्रतीत होने लगा है। यद्यपि इस अलिप्त रहने में यत्न करना पड़ रहा है, तथापि जब यह ज्ञान हो जाये कि जीवात्मा की उन्नति का यही एक मात्र ढंग है, तो यत्न सफल होने लगता है।"

सुशीला का प्रश्न था, "अब गिरिधारीलालजी की ही बात है। उसके निधन का दु:ख और कष्ट शकुन्तला की माताजी को भोगना पड़ रहा है। मैं समझती हूं कि हम एक-दूसरें से ऐसे बंधे हुए हैं कि डूबेंगे, तो सब इकट्ठे ही और बचेंगे, तो सब इकट्ठे ही।"

"नहीं सुशीला बेटी! ऐसा नहीं है। हम सुख-दु:ख तब तक ही अनुभव करते हैं, जब तक हम शरीर का शरीर से सम्बन्ध मानते हैं। जीवात्मा का सम्बन्ध किसी दूसरे जीवात्मा से नहीं है। जीवात्मा किसी दूसरे के सुख अथवा दु:ख को तब तक ही अनुभव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता है, जब तक वह शारीरिक सम्बन्धों को जीवात्मा का सम्बन्ध समझता है। ज्योंही हम जीवात्मा का अस्तित्व शरीर से पृथक् समझने लगते हैं, सुख-दु:ख का अनुभव नहीं रहता, परन्तु इसका अभिप्राय: यह नहीं है कि दुखी के दु:ख-निवारण का उपाय न किया जाये। ऐसा करने से अपने को आनन्द अनुभव होता है। इसमें शर्त केवल यह है कि दूसरों के दु:ख-निवारण में यत्न किसी अपने शारीरिक स्वार्थ के लिए न हो। इसे ही भगवान् कृष्ण ने निष्काम भाव से इस संसार में रहना और कर्म करना कहा है।"

इस प्रकार की बातें हो ही रही थीं कि सुन्दरदास और रामेश्वरी आ पहुंचे। सुन्दरदास ने सबको देखा, तो पूछ लिया, "रजनी नहीं आयी क्या ?"

उत्तर शाहजी ने दिया, "आयी है। आपको उससे कोई काम है ?"

"हां! अभी-अभी अरुण का तार मिला है। तार रामेश्वरी के नाम है। उसमें लिखा है कि सोमवार रात को रजनी के दादा से बात करते हुए देर हो गयी थी और गाड़ी का समय हो गया था। रजनी अपने चाचा के साथ लाहौर आ रही है। मेरा काम कर दीजिये।"

"बहुत लम्बा तार दिया है।" शाहजी ने पूछ लिया।

"हां! ऐसा प्रतीत होता है कि उसे सन्देह हो रहा है कि कोई अज्ञात व्यक्ति पुन: उसका अपहरण करने वाला है और वह यह नहीं चाहता।"

पूर्व इसके कि गोपीशाह उत्तर दे, धनवती और रजनी कमरे से बाहर आ गयीं। बाहर आकर धनवती ने सबसे कह दिया, "मैंने रजनी को अपना आशीर्वाद दे दिया है। वह अरुण से विवाह करना चाहती है।"

इस पर कृष्ण ने कह दिया, "तब तो आपत्ति करने का कोई कारण ही नहीं रहा।"

"हां, यदि अरुण के माता-पिता मानें, तो दो दिन में ही विवाह हो जाना चाहिए।"

"क्या कुछ गड़बड़ी प्रतीत होती है ? " रामेश्वरी ने पूछ लिया।

"नहीं! कुछ गड़बड़ नहीं। सब कुछ कुन्दन की भांति शुद्ध है। इसी से प्रेरित होकर रजनी विवाह के लिए तैयार हुई है।"

* * *

Central Library
167910
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar
081
167910

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
वर्ग संख्या R089:9143 GUR-J आगत संख्या 167910

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

8 दिसम्बर, 1894 को लाहौर (अब पाकिस्तान) में जन्मे श्री गुरुदत्त हिन्दी साहित्य के एक देदीप्यमान नक्षत्र थे। वह उपन्यास-जगत् के बेताज बादशाह थे। अपनी अनूठी साधना के बल पर उन्होंने लगभग दो सौ से अधिक उपन्यासों की रचना की और भारतीय संस्कृति का सरल एवं बोधगम्य भाषा में विवेचन किया। साहित्य के माध्यम से वेद-ज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने का उनका प्रयास निस्सन्देह सराहनीय रहा है।

श्री गुरुदत्त के साहित्य को पढ़कर भारत की कोटि-कोटि जनता ने सम्मान का जीवन जीना सीखा है।

उनके सभी उपन्यासों के कथानक अत्यन्त रोचक, भाषा अत्यन्त सरल और उद्देश्य केवल मनोरंजन ही नहीं, अपितु जन-शिक्षा भी है। राष्ट्रसंघ के साहित्य-संस्कृति संगठन 'यूनेस्को' के अनुसार श्री गुरुदत्त हिन्दी भाषा के सर्वाधिक पढ़े जाने वाले लेखक थे।

प्रस्तुत है, उनके महत्त्वपूर्ण उपन्यास 'ज़िन्दगी' का शुद्ध एवं प्रामाणिक संस्करण, जिसे अधिकारी सम्पादकों के कुशल निर्देशन में तैयार किया गया है।

परम्परा बुक्स

ISBN 978-81-904864-8-4

Gurukul Kangri Collection, Haridwar